देवी वीरा

रूस की सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारिणी
महिला की आत्म-कथा

मूल लेखिका—
वीरा फिगनर

भाषान्तरकार
श्री सुरेन्द्र शर्मा
[भू० सहकारी सम्पादक 'प्रताप']

भूमिका लेखक—
बाबू पुरुषोत्तम दास जी टण्डन

प्रकाशक—
नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाऊस
रैन बसेरा :: देहरादून

दूसरा संस्करण]   मार्च, १९३४   [मूल्य १।।)

Printed by

S P. Khare

at

The Hindi Sahitya Press, Allahabad

विषय-सूची

भूमिका

इस पुस्तक के लेखक पंडित सुरेन्द्र शर्मा से मुझे ज्ञात हुआ कि स्वर्गीय गणेशशङ्करजी विद्यार्थी ने इसकी भूमिका लिखने का वचन दिया था, परन्तु कानपुर के हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों मे उनके बलिदान के कारण यह भूमिका न लिखी जा सकी। शर्माजी ने आग्रह किया कि जो काम विद्यार्थीजी करने वाले थे उसे मैं करूँ। साधारण अवस्था मे तो मैं इस काम से क्षमा माँगता, किन्तु मेरे प्रिय मित्र विद्यार्थीजी की याद दिलाकर उनके नाम पर जब यह काम मेरे सामने रक्खा गया तो उसे स्वीकार करना पड़ा।

यह पुस्तक बीराफिगनर की लिखी हुई पुस्तक के अँग्रेजी अनुवाद Memoirs of A Revolutionist के आधार पर लिखी गई है। शर्माजी ने मुझे अँग्रेजी पुस्तक भी देखने को दी थी। मैंने उसे पढ लिया था। वह पुस्तक लम्बी है। उसकी मुख्य बातें और मुख्य विचार कम स्थान में लिखे जा सकते थे। शर्माजी ने हिन्दी पढने वालों के लिए उसकी मुख्य बातें ले ली हैं। इस पुस्तक मे पुराने रूसी क्रान्तिकारियों के काम का चित्र प्रेम और उत्साह से खींचा गया है। रूस मे क्रान्ति की पुरानी आग बहुत दिनों से सुलग रही थी। रूस के जारो ने क्रान्तिकारियों के मार्ग बदलने के अवसरों को किस प्रकार छोड दिया, यह भी इस पुस्तक में चित्रित है, किन्तु साथ ही इसके पढने के बाद

हृदय पर यह असर नहीं पडता कि छिप छिप कर जो काम क्रान्तिकारियों ने करना चाहा उसमें उन्हें उनके त्याग के अनुकूल सफलता मिली। रूस का पीछे का इतिहास यह प्रकट करता है कि क्रान्ति की सफलता वहां तब दिखाई पड़ी जब कुछ विशेष अधिकारियों की जान लेने की फिक्र छोड़कर, क्रान्तिकारियों का ध्यान, जनता को समझाने, उनमें अपने अधिकारों और अपनी उन्नति के विचारों को उत्पन्न करने और उनको कष्ट-सहन के लिए तैयार करने में लगा। वास्तव में सब ही स्थायी क्रान्तियों के भीतर विचार परिवर्त्तन का काम सदा मुख्य होता है। विचार-परिवर्त्तन करने में क्रान्तिकारी को जो कुछ भी खुले तौर पर कष्ट सहना पड़े वह उसके कार्य्यो में मदद देता है और उसके विचारों को और फैलाता है। क्या सामाजिक और क्या राजनीतिक, क्रान्तिया सब इसी प्रकार होती हैं। लूथर, कार्ल मार्क्स, लेनिन, गाँधी—इन सब क्रान्तिकारियो के भिन्न भिन्न रास्ते हुए हैं। किन्तु इन सबों ने ही जनता के खुले क्षेत्र में निडर होकर अपने सिद्धान्तों का प्रचार करना और जनता को जगाना—इन कामों को, बम या पिस्तौल से दस बीस आदमियों को मारने की अपेक्षा, अधिक उपयोगी देखा।

हिंसा और अहिंसा के विवाद को छोड़कर भी, यह अनुभव से देखा गया है कि एक ऐसे आदमी का त्याग और बलिदान जो अपने सिद्धान्तों पर बराबर दृढ़ रहता है और अपने सिद्धान्तों को खुले आम पुकारता हुआ उनके लिए कष्ट सहन करता

फिर 'प्रताप' के सम्पादक श्रद्धेय श्रीगणेशशङ्करजी विद्यार्थी के हाथों मे यह पुस्तक दी गई। उन्हें जेल से आये हुए बहुत थोडे दिन हुए थे। सार्वजनिक काम और घरेलू चिन्ताएँ उनकी जीवन सहचरी के तुल्य थीं। इन दोनों बातों से उन्हे समय मिलना कठिन था। वे अपनी स्वाभाविक मृदुल मुसकान के साथ बोले—"इस दशा मे, जब कि जेल से बाहर आये हुए मुझे ८-९ दिन हुए हैं, तुम मेरे हाथ में इस काम की जिम्मेदारी छोड कर, मेरे साथ जुल्म कर रहे हो।" मैंने ज़रा गम्भीर होकर कहा—"हाँ, बात तो कुछ ऐसी ही है, परन्तु जहाँ मैंने अब तक के जीवन में आपको अनेक कष्ट दिये हैं, वहाँ यह एक कष्ट और सही, यह काम तो आप ही को करना है।" कुछ सोच कर विद्यार्थीजी ने कह दिया कि पुस्तक छोड जाओ, ३-४ दिन मे भूमिका लिखकर मैं इसे भेज दूँगा।

मैं भूमिका की प्रतीक्षा मे था। २३ मार्च सन् १९३१ तक विद्यार्थीजी इस पुस्तक को पढते भी रहे। २४ मार्च को कानपुर का हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा शुरू होगया। २५ मार्च की शाम को विद्यार्थीजी के रूप मे 'प्रताप' का सूर्य्य अस्त होगया। राष्ट्रीयता के दीपक की वह जगमगाती हुई ज्योति बुझ गई जिसके आलोक से कानपुर नगर देश भर मे चमकता हुआ दिखाई पडता था। स्वदेशानुराग की वह मञ्जुल मूर्त्ति, जो अद्भुत आकर्षण से बडे से बडे प्रभावशाली व्यक्तियों तक को बरबस अपनी ओर खींच लेती थी, अनन्त के गर्भ मे सदा के लिए

विलीन होगई। निस्पृह मेधा, त्याग और बलिदान के कुसुमों की यह नव कुसुमित लतिका, जिसके सौरभ से इस देश का सार्व जनिक वातावरण सदा सौरभित होता रहता था, मुट्ठीभर जीवित शव के समान कायर प्राणियों के निर्दय हाथों ने बड़े बुरे समय में तोड़ डाली। अपनी उज्ज्वल कृतियों के बल पर नर से नारा यण बन जानेवाली महान आत्मा, इस पतित भारतीय समाज के आत्मोद्धार के लिए बलि चढ़ गई और उस अमर लोक में जा पहुँची, जहाँ पहुँच कर कभी कोई वापस नहीं आता।

त्यागमूर्त्ति बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन ने स्वर्गीय विद्या र्थीजी की स्मृति में, उन्हींके नाम पर, इस पुस्तक की भूमिका लिख देने का जो कष्ट उठाया, उसके लिए थोड़े से शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना, उस स्नेहभाव के गौरव को कम करना है, जो वे उनके लिए अपने हृदय में रखते हैं।

—सुरेन्द्र शर्मा



रेशी गीग—



रूस की प्रसिद्ध क्रान्तिकारिणी महिला
देवी वीरा फिगनर
(जेल जाने से पूर्व)

अपनी बात

ससार के इतिहास में रूस की राज्य क्रान्ति का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह क्रान्ति आधुनिक युग की सबसे बड़ी और जबर्दस्त घटना है। इस महाक्रान्ति की घड़ियाँ निकट लाने, और रूस की भव्य भूमि पर स्वतत्रता देवी का विशाल मन्दिर खड़ा करने के लिए वहाँ की जनता को बड़े से बडे बलिदान देने पड़े। क्रान्ति के पहले बहुत दिनों तक रूस म जारशाही का बोलबाला रहा। शासन के प्रत्येक क्षेत्र मे जोर-जुल्म का दौर दौरा था। जार की मशीन के पुर्जों ने, समय समय पर सार्वजनिक हितो को कुचलने और समूचे रूसी जीवन का सत्य के लिए अन्त कर डालने के उद्योग में रत्ती भर भी और कसर नहीं रखी। उस निरंकुशता के त्रासमय वातावरण में दिनदहाड 'जिसकी लाठी उसकी भैस' की नीति की तूती बोलती थी। चारो ओर उस त्रास-युग (Reign of Terror) का आतङ्क जम रहा था, जिसकी कल्पना से आज भी हृदय काँप उठता है। उस वातावरण में सचमुच लोक हित नाम की कोई चीज नहीं रह गई थी। जनता सरकार के लिए थी, 'सरकार जनता के लिए' नहीं।

बहुत दिनो तक जारशाही ने सुख और स्वार्थ के लिए अबाध गति से रूसी जनता का दोहन होता रहा। राज्य का शासन विधान, नियम-कानून आदि सभी बातें, सार्वजनिक हित



रूस की प्रसिद्ध क्रान्तिकारिणी महिला

देवी वीरा फिगनर

(जेल जाने से पूर्व)

अपनी बात

संसार के इतिहास में रूस की राज्य-क्रान्ति का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह क्रान्ति आधुनिक युग की सबसे बड़ी और जबर्दस्त घटना है। इस महाक्रान्ति की घड़ियाँ निकट लाने, और रूस की भव्य भूमि पर स्वतन्त्रता देवी का विशाल मन्दिर खड़ा करने के लिए वहाँ की जनता को बड़े से बड़े बलिदान देने पड़े। क्रान्ति के पहले बहुत दिनों तक रूस में जारशाही का बोलबाला रहा। शासन के प्रत्येक क्षेत्र में जोर-जुल्म का दौर दौरा था। जार की मशीन के पुर्जों ने, समय समय पर सार्वजनिक हितों को कुचलने और समूचे रूसी जीवन का सदा के लिए अन्त कर डालने के उद्योग में रत्ती भर भी कोर-कसर नहीं रखी। उस निरंकुशता के त्रासमय वातावरण में दिनदहाड़े 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' की नीति की तूती बोलती थी। चारों ओर उस त्रास-युग (Reign of Terror) का आतङ्क जम रहा था, जिसकी कल्पना से आज भी हृदय काँप उठता है। उस वातावरण में सचमुच लोक हित नाम की कोई चीज नहीं रह गई थी। जनता सरकार के लिए थी, 'सरकार जनता के लिए' नहीं।

बहुत दिनों तक जारशाही के सुख और स्वार्थ के लिए अबाध गति से रूसी जनता का दोहन होता रहा। राज्य का शासन विधान, नियम-कानून आदि सभी बातें, सार्वजनिक हितों

की माघ में, बहुत ही गरम विचार के जोशीले देशभक्तों ने रूस मे क्रान्तिकारी आन्दोलन का श्रीगणेश कर दिया।

धीरे धीरे क्रान्तिकारी आन्दोलन की आग रूस भर में फैल गई। उस आग की लपटें राज प्रासादों से लेकर झोंपडियों तक में जा पहुँचीं। किसान बहुत ही हीन दशा में थे। इसलिए इस आन्दोलन में बहुत आगे बढने की शक्ति उनमें न थी। फिर भी अन्त तक क्रान्तिकारियों के साथ उनकी पूरी सहानुभूति रही। कारखानों के मजदूरों से तो इस आन्दोलन को बहुत सहायता मिली।

जारशाही से क्रान्तिकारियों की कशमकश शुरू होगई। उस कशमकश में युवक और युवतियाँ दोनों ही आगे बढे। दिनदहाडे वह सम्राट एलेक्जेण्डर द्वितीय मारडाला गया, जिसे रूस की सम्पूर्ण शासन सत्ता के अधिनायक की हैसियत से राज सिंहासन पर आसीन होने का गर्व था और जिसने स्वय करोडों प्राणियों के ऊपर शासन करने की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ले ली थी। जार की हत्या के फल-स्वरूप अनेक उत्साही युवक फाँसी के तख्ते पर लटका दिये गये। इसी समय वह वीराङ्गना सोफिया पैरौव्स्काया हँसते हँसते शूली पर चढ गई जिसने अपने अनुपम बुद्धि-कौशल के बल पर, पहले से क्रान्तिकारी पार्टी द्वारा किये गये सारे आयोजन को पलट कर, एक क्षण में नये सिरे से जार की हत्या का प्रबन्ध कर डाला और जिसे अपने उद्योग मे पूरी सफलता मिली। क्रान्तिकारियो का यह सब उद्योग, एक सङ्गठित

और सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा जारशाही का अन्त कर, रूस में साम्यवाद की भित्ति पर, एक ऐसी प्रजातंत्र शासन प्रणाली स्थापित करने के लिए था, जिसमें साधारण से साधारण आदमी का भाग रहे, और जिसकी छत्र-छाया में सर्वत्र स्वतन्त्रता, समता, न्याय, बन्धुत्त्व, प्रेम और मानवीयता के समान अधिकारों की विजय दुन्दुभी बज उठे। बस, संक्षेप में, 'देवी वीरा' की आत्मकथा के साथ इस पुस्तक की राम कहानी का यही आधार है।

इस पुस्तक की मूल लेखिका देवी वीराफिगनर का नाम रूस के प्रसिद्ध क्रान्तिकारियों मे बड़े आदर के साथ लिया जाता है। यौवनकाल ही से अपने देश के आत्मोद्धार के लिए उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन मे खुलकर भाग लिया। इस काम के लिए उन्होंने व्यक्तिगत सम्बन्ध, सुख, स्वार्थ, पारिवारिक बन्धन आदि सभी मोह पाशों को तोड़कर सदा के लिए बालाएन्ताक रख दिया। इन सब बातों से ऊपर उठ कर उन्होंने देश-सेवा की पवित्र वेदी पर अपना सम्पूर्ण जीवन ही उत्सर्ग कर दिया।

क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने और सशस्त्र विद्रोह खड़ा करके जारशाही को रूस की भूमि से उखाड़ फेंकने के उद्योग मे 'देवी वीरा' को फाँसी की सजा का हुक्म हुआ। किन्तु बाद में यह सजा बदल कर उन्हे आजीवन कालेपानी का दण्ड दिया गया। अपने यौवन-काल में कितनी सरगर्मी से उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन में योग दिया, और फिर, २० वर्ष तक जेलों की

चहारदीवारी में बन्द रह कर, उन कामों के पुरस्कार उन्होंने कैसी भयङ्कर यातनायें सहीं, आदि बातों का सजीव चित्र इस आत्म-कथा मे देखने को मिलता है। रूस की जेलों और साइबेरिया के निर्वासन से, उन दिनों किसी आदमी का जीवित लौटकर आना, सचमुच मौत के मुँह में से बचकर निकल आने के समान था। सन्तोष की बात इतनी ही है कि जारशाही का दमन चक्र 'देवी वीरा' की अत्यन्त पराक्रमी और साहसी आत्मा को पीस डालने मे असमर्थ रहा। इससे वे अपने जीवन काल ही में आजाद रूस की भूमि पर स्वातत्र्य-सूर्य्य की सुनहली रश्मियों का प्रसार देखकर, अपने और उन स्वर्गीय साथियों के उद्योगों को सफल होते हुए देख सकीं, जिनके साथ आज़ादी की लडाई मे, उन्हे कन्धे से कन्धा मिलाकर, अपने शक्तिशाली शत्रुओं के दाँत खट्टे कर देने का स्वर्ण अवसर मिला था।

देवी वीरा के अनेक साथी अपने देश की आजादी की दीप-शिखा पर पतङ्ग की भाँति बलि चढ गये। अपने जीवन मे वे रूस के स्वातन्त्र्य प्रभात के दर्शन भी न कर सके। परन्तु इससे क्या, उनके पवित्रतम जीवन के बलिदानों का वह महत्त्व भुलाया जा सकता है, जो रूस के नव्य राष्ट्र के निर्माण के लिए, उसकी नीव में अपनी अस्थियाँ गला कर, सदा के लिए विस्मृति के गहरे गर्त्त में गिर पडने से उन्हें प्राप्त है? असल बात यह है कि वे वास्तव मे स्वतन्त्रता के पुजारी थे और युद्ध मे बडे गौरव के

ाथ वीर-गति प्राप्त करके उन्होंने इसका पूरा मूल्य चुका दिया ! पनी अमर कृतियों से उन वीरों ने रूस के इतिहास में वह मकता हुआ गौरव-पूर्ण अध्याय जोड़ दिया जो विश्व के लिदानों के इतिहास में अपना सानी नहीं रखता।

जो लोग रूसी स्वतंत्रता की लड़ाई में काम आगये, अथवा ांसी पर चढ़ा दिये गये, वे अपने जीवन में उस महाक्रान्ति की वाला धधकते हुए नहीं देख सके जिसका अमर बीज उन्होंने ू और अपने हृदय का रक्त देकर उसे सींचा था। परन्तु ससे यह तो हर्गिज नहीं कहा जा सकता कि उनका बलिदान र्थ ही गया, अथवा उन्हें सफलता नहीं मिली। क्यों ? इस-लए कि, रूस में इस युग में जो महाक्रान्ति की ज्वाला जगी, ह रूसी जनता के प्राय सौ वर्ष से ऊपर के असन्तोष, सङ्घ-ण, अनुपम त्याग और बलिदानों के धीरे धीरे एकत्रित होने ाले विराट पुञ्ज के फल-स्वरूप थी और उसके जगाने में प्रत्येक ्रान्तिकारी का छोटे से छोटा बलिदान बड़ा जबर्दस्त कारण था।

वीराफिगनर ने २० वर्ष के लम्बे जेल-जीवन के बाद यह आत्मकथा लिखकर अपने और अपने साथियों के उन विकट उद्योगों पर खुल कर प्रकाश डाला है, जिनके कारण रूस से जार की निरकुश सत्ता का नामोनिशान मिट गया, और आगे चल कर, वहाँ पूर्ण स्वतंत्रता के प्रकाश में, एक सुदृढ साम्यवादी आधार शिला पर, सोवियट प्रजातन्त्र शासन की स्थापना तक

हो सकी। देवी वीरा का जीवन त्याग और कष्ट-सहन का ए आदर्श जीवन रहा है। उनके जीवन की पुण्य गाथा हृदय वे बहुत ऊँचा उठाने वाली है। हीनता और दुःखों के गहरे ग मे गिरे हुए जीवन को, कर्मक्षेत्र में खडा होने के लिए, उस आशा और नव स्फूर्ति का सन्देश मिलता है। इसी कार उनकी आत्म-कथा के अँगरेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर कर का साहस किया गया।

मूल पुस्तक रूसी भाषा मे है। अँगरेजी में 'एक क्रान्तिका की स्मृतियाँ' Memoirs of A Revolutionist के नाम उसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। अँगरेजी पुस्तक बहुत ब है। इसलिए ज्यो का त्यो अनुवाद न करके, उसके आधार प आवश्यक बातें लेकर यह पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक तैयार कर मे अपने परम हितैषी आदरणीय कुँ० भुवनपालसिंह साहब बी ए०, आन्सन, (केटला, आगरा) से मुझे बहुत सहायता मिल है, इसके लिए में उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। यदि उनका इतन अधिक समय और श्रम इस काम में न लगता, तो यह पुस्त इतनी जल्दी तैयार न हो सकती।

इस पुस्तक की भूमिका की एक लम्बी, किन्तु दर्दना कहानी है। आरम्भ मे,भूमिका लिखने के लिए, यह पुस्तक देश सम्मान्य नेता भू० पू० राष्ट्रपति प० जवाहरलाल नेहरू के हा में दी गई। उन दिनों त्रिपुरी-काग्रेस की तैयारी म वे इतने व्य थे कि भूमिका लिख देने का वचन देकर भी, न लिख सके

है, अन्य बहुत से आदमियों को उसकी ओर खींच लेता है, और उसीके समान बलिदान करने को तैयार कर देता है। इस प्रकार बढता हुआ यह चक्र जबर्दस्त साम्राज्यों के रोके भी नही रुकता और दुष्टता और अन्याय को अपने भ्रमण मे समाप्त करता जाता है।

भारतवर्ष मे आज क्रान्ति की चारों ओर चर्चा है। इसलिए दूसरे देशो के क्रान्तिकारियों की कथायें स्वभावत रोचक होती हैं। यह पुस्तक भी इसी आधुनिक समय की लहर में लिखी गई है। पाठकगण इसे पढकर रूस के सम्बन्ध में अपनी जानकारी बढावेंगे। किन्तु उन्हें रूस के क्रान्तिकारियो के कार्य्यों को अपने अनुभव की तराजू पर तौलना होगा। ससार मे जिस प्रकार दो मनुष्य बिलकुल एक नहीं होते, उसी प्रकार ससार के इतिहास में दो घटना-समूह भी कभी एक नही हुए। एक-ही मार्ग सब स्थलों मे नहीं चल सका। हमे भी सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि भारतवर्ष की स्थिति मे रास्ता खोलने-वाले के लिए किसी की नकल शक्तिदायिनी न होगी। हमे अपने जल-वायु, स्वभाव, अपनी मर्य्यादा और सस्कृति के अनुकूल रास्ते निकालने होंगे और उन रास्तों पर खुली रीति से जनता को ले चलना होगा। उभरी हुई, सुलझी हुई, बलिदान देने के लिए तैयार, शक्तिवान् जनता पर ही हमारा अन्तिम भरोसा है।

पुरुषोत्तमदास टण्डन

देवी वीरा

एक क्रान्तिकारिणी महिला की आत्म-कथा

१

मेरा परिवार



मेरा जन्म २४ जून सन् १८५२ को कैजाँ प्रान्त में एक समुन्नत और कुलीन परिवार में हुआ था। मेरी माँ ने वही साधारण घरेलू शिक्षा प्राप्त की थी जो उस समय प्राय स्त्रियों को दी जाती थी। मेरे नाना टैटीऊशी जिले के जज थे। उन्होंने अपने जीवन में अपना धन-माल खूब बर्बाद किया। ऊफा प्रान्त में उनके पास लगभग १७ हजार एकड़ जमीन थी। इसके अतिरिक्त एक दूसरे जिले में उनके पास कुछ और भी जमीन थी। इस पर भी, जब वे मरे, तब उनके ऊपर इतना अधिक क़र्ज़ था कि उनके वारिसों को अपना पैतृक अधिकार छोड़ देने को विवश होना पड़ा।

मेरे पिता निकोलाइ एलेक्ज़ेण्ड्रो विच फ़िगनर ने जङ्गलात की शिक्षा प्राप्त की। पढाई समाप्त होने पर वे जङ्गलात के महक्म के एक अफ़सर बना दिये गये। उस पद पर पहले उन्होंने मैमा डीशी ज़िले मे और बाद को टैटीऊशी ज़िले में काम किया। परन्तु गुलामों के छुटकारे के बाद, जब तक स्थानीय मजिस्ट्रेट का पद रहा तब तक वे उस पर काम करते रहे।

उन दो बच्चों के सिवा, जो बचपन ही में इस दुनियाँ म चल बसे, हमारे परिवार में ६ आदमी थे। मेरे माँ बाप दोनों ही बडे कार्यशील व्यक्ति थे। काम करने की उनमे अद्भुत शक्ति थी। उनके शरीर का गठन बहुत सुदृढ था, और वैसी ही उनकी इच्छा शक्ति भी दृढ थी। इस दृष्टि से उनसे हमे बहुत अच्छे पैतृक सस्कार मिले थे। मैं अपने बहिन-भाइयों में सबसे बडी थी। निरङ्कुश और एकतत्र सत्ता के विरुद्ध सङ्घर्षण के युग में, मैंने क्रान्तिकारी आन्दोलन मे भाग लिया। फलस्वरूप मुझे प्राण दण्ड का हुक्म मिला और मैं श्लूसैलबर्ग के दुर्ग मे कैद कर दी गई। मेरी बहिन लिडीआ क्रान्तिकारी दल की मेम्बर थी। वह दल कारखानों के मजदूरों मे साम्यवाद का प्रचार कर रहा था। उमे कई वर्ष के लिए सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया गया। परन्तु सीनेट ने यह सजा बदल कर, उसे जन्म भर के लिए पूर्वी साइबेरिया में निर्वासित कर दिया। मेरा भाई पीटर, पर्म और ऊफा के प्रान्तों मे खानों का इञ्जीनियर था। मेरा भाई निकोलाई गान विद्या में बडा प्रवीण था। वह थियेटर में गाना

सुना कर, तथा स्टेज पर खेल दिखा कर लोगों को मुग्ध कर देता था। लोगों को मुग्ध करने में उसकी सुन्दरता और भी सहारा देती थी। अपने २५ वर्ष के जीवन में, अनुपम सङ्गीत और नाट्य-कला के बल पर, उसने हजारों आदमियों को आनन्दित किया था।

सन् १८८० में शाही महल में जो धडाका हुआ, उसके फलस्वरूप मेरी वहिन ईञ्जीनिया के नागरिक अधिकार छिन गये और निर्वासित करके वह साइबेरिया भेज दी गई। मेरी सबसे छोटी वहिन औल्गा बहुत योग्य लडकी थी। उसमे काम करने की बडी क्षमता थी। उसने भी क्रान्तिकारी आन्दोलन मे कुछ भाग लिया। उसने डाक्टर फ्लौरौव्स्की के साथ विवाह किया। जब अधिकारियों ने डाक्टर साहब को निर्वासित करके साइबेरिया भेज दिया तब वहिन भी वहाँ गई। औम्स्क मे रहकर वह भी अपने पति के साथ साहित्यिक काम मे लग गई। इसके बाद औल्गा ने यारोस्लाव मे काम किया, फिर अपने पति की मृत्यु के बाद वह सेन्टपीटर्सबर्ग मे रहकर काम करने लगी। साइबेरिया में मेरी बहिन लिडीया और ईञ्जीनिया ने पहले राजनैतिक कैदियों स्टाकेविच और साजिन के साथ व्याह कर लिया। वे लोग बल, बुद्धि, प्रतिभा आदि मे बहुत योग्य थे।

मेरी इच्छा

पिता के कथनानुसार मैं वचपन में बहुत सुन्दरी थी। इसी-लिए बाहर से आने वाले लोग मेरे ऊपर खास तौर से ध्यान

देते थे। माँ-बाप अपने सब बच्चों के साथ एक-सा व्यवहार करते थे। बाहर के आने-जाने वाले आदमी मुझे थपथपाते,छोटी मोटी चीजें दे देते, और मेरी बातचीत से अपना मनोरञ्जन करते थे। अपनी से अधिक उम्र के आदमियों के साथ स बड़ी जल्दी मेरा विकास हुआ और मेरे अन्दर ऐसे ख़याल पैदा हुए, जो प्राय इतनी कम उम्र में नहीं हुआ करते।

एक बार हम मैमाडीशी मे अपनी बुआ के यहाँ गये। बुआ के एक मित्र आँण्ड्रे आण्ड्रेविच काटकोव अपना सारा दिन वही विताते थे। वह मेरे साथ हँसी मजाक करते और मुझसे खेला करते थे। वह मुझे अक्सर अपनी स्त्री कह कर, और मैं उन्हें अपना प्यारा स्वामी कहकर पुकारा करती थी। फिर हम लोग टैटीऊशी ज़िले मे चले गये। उस समय मैं ७ वर्ष की भी न थी। वहाँ आँण्ड्रे का एक पत्र आया, जिसे मेरी चाची ने जोर से पढा। उसमें लिखा हुआ था कि आँण्ड्रे की शादी होने वाली है। इस ख़बर से मैं बहुत खीझ गई और सोचा कि जब वह मुझे अपनी स्त्री कहकर पुकारा करता था, तब उसे शादी करने की हिम्मत कैसे हुई? इस दशा मे, जब कि मैं यह ख़याल करती थी कि वह मुझसे बँधा हुआ है, यह उसका विश्वासघात था, और थी मुझे अपमानित करने के लिए एक कमीनी हरकत। मैंने बहुत आँसू नही बहाये, मेरे दिल ने मुझसे कहा कि अपने से बडे आदमियों से इस सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं करनी चाहिए, इसलिए मैं चुप रही।

मेरा परिवार

जब मैं नौ वर्ष की थी, तब बाद में भी, मुझे इसी तरह की घटना हुई। उन्ही दिनों मौसी हमारे साथ रहने को आगई। वह नवयुवती थी। हालही में रौड्यौनोव्स्की कैथरीन इन्स्टीट्यूट मे वह ग्रेजुएट हुई थी। उसी समय से ट्रैटीऊशी मे रहनेवाले पल्टन के अफसर हमारे यहाँ आने-जाने लगे। उनमें से यरगौल्स्की नाम का एक आदमी मुझ से बातचीत करने के लिए अपना जरा भी वक्त न देता था और मैं ख़याल करती थी कि मेरा उस पर खास अधिकार है। जो कुछ हो, मैंने यह जाँच लिया कि वह मेरी मौसी पर आशक्त था। इससे मुझे ईर्षा हुई। मैंने एक दिन ऐसा मौका निकाल लिया, जबकि में और वह दोनों, एक ऐसी गली मे, जो एक बाग तक गई थी, अकेले रह गये। उस समय मैंने उससे बहुत कहा-सुनी की। उस दिन से मैं नियमित रूप से यरगौल्स्की से मिला करती थी।

यरगौल्स्की अब मेरी ओर आकर्षित होने लगा। उल्लू न बनाकर, अब उसने मुझे सान्त्वना देना आरम्भ किया। अपने पीछे कुछ प्रेमियों की दौड़ धूप से मुझे यह ख़याल हुआ कि मैं बहुत सुन्दरी हूँ, परन्तु साथ ही यह भी सोचने लगी कि मैं इन लोगों के काबिल नहीं, बल्कि किसी बहुत बड़े व्यक्ति के योग्य हूँ।

इसी जिले में, क़स्बे से ३ मील दूर, ल्यूडौगौव्का के सुन्दर इलाके में दो ऐसी कुलीन महिलाएँ रहती थी जिनका शाही महल मे आना-जाना लगा रहता था। उन्होंने अपना सारा

जीवन सेंटपीटर्सबर्ग में विताया था, और अब ढलती उम्र में वे यहाँ आकर बस गई थी। वे स्वय रात दिन ताश खेलकर मनोरञ्जन करती थी और लोग उनके यहाँ शौक से आते जाते थे। उनमे से छोटी बहिन जानती थी कि मेरे माँ-बाप मुझे सेंटपीटर्सबर्ग के 'स्मोल्नी इन्स्टीट्यूट'* मे भेजना चाहते हैं। जब कभी मैं उससे मिलती, तब आरामकुर्सी पर मुझे वह अपने पास बैठा लेती और उक्त स्कूल तथा मेरे भविष्य के बारे मे चर्चा किया करती थी। वह मुझसे पुकार पुकार कर कहती—"पढने में तुम जितना अधिक परिश्रम कर सकती हो, करना और अपने दर्जे में प्रथम रहने से कभी न चूकना। यदि तुम दर्जे में प्रथम रहोगी तो तुम्हें एक स्वर्ण पदक मिलेगा। ग्राण्ड-ड्यूक्स और ज़ार स्वय उस स्कूल को देखने आते हैं। वे तुम्हें देखेगे और यदि तुम्हें स्वर्ण पदक मिला, तो, वे अपनी दरबारी स्त्रियों में तुम्हे स्थान देंगे। तुम महल मे रहोगी और बडे-बडो के साथ नाचोगी।" इसी तरह की बहुत सी बातें वह कहती थी।

उस समय तक अपने गाँव से अधिक में और कुछ नहीं जानती थी। मैंने उन दोनों बहिनों की कहानी इस प्रकार सुनी जिस प्रकार बच्चे "सहस्र रजनी-चरित्र" की कहानियाँ सुनते हैं। मेरा दिमाग और भी बढ गया।

* स्मोल्नी इन्स्टीट्यूट केवल उच्च घरानों की लड़कियों का बोर्डिंग स्कूल था। सन् १९१७ में यह बोल्शेविकों का सदर मुकाम होगया।

उन दिनों नियम के अनुसार माँ हमारे सामने शायद ही ज़ोर से कभी कुछ पढती थी। फिर भी, जब तब वह कुछ पढा करती थी। एक बार वह इतिहास से, प्राचीन मास्को के ज़ारों में से किसी एक ज़ार का जीवन-चरित्र पढ रही थी। किस ज़ार का, यह मुझे ठीक याद नहीं। माँ ने पढा कि जब ज़ार के विवाह का समय हुआ तब उसने एक घोषणा निकाल कर रूस भर के रईसों को हुक्म दिया कि वे अपनी सब सयानी लडकियों को मास्को लावें। मास्को में ज़ार अपने महल में इकट्ठा हुई लडकियों को देखता और जो उसे सब में अधिक सुन्दर दिखाई देती उसीको अपनी स्त्री बना लेता था। फिर आगे चलकर माँ ने यहाँ तक कहा कि ज़ार के दुलहिन पसन्द करने में कैसी चालबाजियों से काम लिया जाता था और कैसे षडयन्त्र रचे जाते थे, और, किस प्रकार एक युवती, जिसने ज़ार को मोह लिया था और ज़ारीना होने वाली थी, चालबाज़ों ने ज़ाहिरा तौर पर उसकी खूबसूरती को बढाने के लिए, उसके बाल इतने ज़ोर से कस कर बाँध दिये कि वह बेहोश होगई तथा उसके ज़ारीना होने का मौका टल गया।

मैं सोचने लगी—"जब ज़ार शादी करना चाहते हैं तब घरवाले मुझे भी मास्को ले जायँगे, और शायद वहाँ सब लडकियों में ज़ार मुझे ही पसन्द करेंगे। मैं ज़ार की रानी होजाऊँगी। तब मेरी टहलनी मुझे सोने-चाँदी से सजायेगी। मैं हीरे-जवाहरात पहनूँगी।"

मैं नहीं जानती कि यदि मैं स्मोल्नी जाती, जो कि धनी और अमीर लोगों के बच्चों के स्कूल के लिए बहुत मशहूर था, तो वहाँ क्या घटना होती। पर मैं वहाँ गई ही नहीं। जब कैजाँ में घरवालों ने मुझे भेजा तब वहाँ के शिक्षा के ढंग मे एक सुखद परिवर्त्तन हुआ। किसी तरह इस संस्था के सादगी और साधुता के वातावरण में, बिना किसी बाहरी आदमी की सलाह के, दरबार और सुनहली मुकुट के ऊपरी चमक-दमक के मेरे मूर्खता-पूर्ण विचार दिमाग से निकल गये। जो कुछ हो, बिल्कुल एक अद्भुत ढंग से, मेरा जीवन तरह तरह की आशाओं से ओत प्रोत हो उठा और मैंने, यदि जारशाही नहीं, तो किसी भी तरह एक बादशाही जरूर पा ली!

श्लूसैलबर्ग मे, क़ैदियों मे दो कैदिनें भी थीं। एक वोलेन्स्टाइन और दूसरी मैं। हमारे साथी कभी कभी अपनी मधुर बातों मे कोमलता का पुट देकर हमारे जीवन की विपन्नता को चमका देते थे। वे हमे 'रानियाँ' कहकर पुकारते थे। मैंने हीरे-जवाहरात और शाही ताज तो नही पहने, किन्तु पहना क्या, जेल का एक ऐसा खाकी कोट जिसकी पीठ पर हीरे ही की शक्ल का एक पीला थेगरा लगा हुआ था।

घर पर

मैं बचपन में एक चपल और होशियार लडकी थी। चालाक घमंडी और झगडालु भी थी। अक्सर अपने बराबर के भाई

बहिनो को गाली दे बैठती। जब में झगड़े मे व्यस्त रहती, तब वे मुझे अलग घसीट ले जाते और कहते—"लड़ाई बन्द करो!" इसके उत्तर मे मैं पुकार उठती—"मैं लडना चाहती हूँ!" मैं क्रोध में भर कर जमीन पर उसी तरह उछल-कूद मचाने लगती जिस प्रकार ऐसे अवसरों पर शैतान लडके विचित्र तरह की हरकतें किया करते हैं। मेरी इस तरह की हरकते पिता के सामने कभी नही हुई।

मुझे गुडियों मे खेलना पसन्द न था। खेल ही खेल में, बिना जाने मैं लिखना पढना सीख गई। मुझे ठीक याद नही कि मैंने लिखना पढना असल मे कब सीखा। मैं केवल यह जानती हूँ कि क्रिस्टोफोरोव्का मे एक कुर्सी पर घुटनों के बल इसलिए खड़ी होजाती थी कि मैं मेज़ तक पहुँच जाऊँ। सम्भवत अपने जीवन मे पहली बार, मैंने अपनी उस चाची के लिए, जिसे हम मैमार्डीशी मे छोड आये थे, एक सिलसिले मे बहुत से अक्षर लिख डाले थे। उस समय मुश्किल से मैं ७ वर्ष की थी।

स्कूल मे भरती होने के समय तक, मेरी माँ, जिसके लिए मैं अपने मानसिक विकास के अन्तिम दिनों मे इतनी अधिक कृतज्ञ हुई, अपने बच्चों के लिए बहुत कम समय देती थी। जब मेरी सबसे छोटी बहिन ओलगा का जन्म हुआ तब मैं १० वर्ष की थी। इस बीच में माँ के छ: बच्चे हुए थे।

अपने घरेलू जीवन के दूसरी ओर समय समय पर हमे जब तब कुछ अद्भुत मूर्त्तियाँ दिखाई देती थीं। कभी वे प्रकट हो जातीं

और कभी आँखों से ओझल, परन्तु वे सदा हमारे लिए अन नयी होती थीं। सब से पहला आदमी मैमाडीशी का एक बूग जर्मन था। बाद में घर का इन्तजाम करने के लिए एक दूसरा बेढगा आदमी आया। उसका मुँह हर वक्त सूजा सा रहता था और उसका नाम भी बडा भद्दा था। अन्त में एक दूसरा बूग आदमी हमें लेखन कला सिखाने के लिए बुलाया गया। वह पहल हमारे बाबा का गुलाम था। वह अपने सम्बन्धियों के साथ क्रिस्टोफौरौव्का में रहता था। उसकी पोशाक अपने सम्ब न्धियो से निराली थी।

हमारे माँ-बाप हमेशा हमसे दूर रहते थे। उन्होंने कभी हमसे घनिष्टता नही बढाई। हमारे सगे-सम्बन्धियों मे कोई ऐसा आदमी नही था जिसकी आदत बचपन से ˜ ॰ होकर बच्चो से मिलने-जुलने की होती। घर के बडो का ।॰ तो सब से छोटी बच्ची औल्गा के भाग्य में बदा था। ॰ आठ बरस की थी, तभी पिता का देहान्त हुआ।

हम अपनी माँ को प्यार करते थे। मेरी बहिन और मै माँ के अधिक से अधिक पास रहने के लिए एक दूसरे के प्रति द्वन्द्वी थे। माँ के कमरे के एक कोने पर एक दूसरा कमरा था। वह पीली लकडी का बना हुआ था। उसमे पवित्र मूर्त्तियाँ भरी हुई थी। उनमे ईसा, सेंटनिकोलस, सर्जा तथा अन्य सन्तो का मूर्त्तियाँ सोने चाँदी के जडाऊ चुगा पहने हुई थी और प्रकृति की प्रतिमा मोतियो से सुशोभित थी। कमरे के सामने, छत

के ऊपरी भाग में एक छोटा सा लैम्प लटक रहा था और उसकी लौ कमरे के आधे हिस्से को प्रकाशित करती हुई टिमटिमा रही थी। हम लोग वहाँ लेट गये, परन्तु माँ अभी तक बिस्तर पर नहीं आई थी। वह कमरे के सामने खड़ी हुई प्रार्थना कर रही थी। माँ घुटनों के बल खड़ी हुई, मूर्त्तियों की ओर एक टक ध्यान लगाकर बड़े जोश में प्रार्थना कर रही थी। प्रार्थना मे वह बहुत धीरे धीरे मुँह से कुछ कहती भी जाती थी। क्या कहती जाती थी, यह कुछ सुनाई नहीं पड़ता था।

बहुत बड़े सुखों, अथवा परेशान करनेवाली मुसीबतों के बिना, माँ के जीवन का प्रवाह एक-सी चाल से चला जारहा था। उस जङ्गली गाँव मे, जहाँ कोई बाहरी आदमी से नहीं मिलता, कोई प्रलोभन नहीं थे, और न, वहाँ कोई ऐसी चीज थी जो चित्त में बुरी भावना पैदा करती।

उन प्रान्तों में, जीवन,—खासकर एक स्त्री का जीवन—छोटे-मोटे स्वार्थों के तङ्ग दायरों के अन्दर बन्द था, और वैसे भी प्राकृतिक सुख मे मनुष्य की आत्मा इस कारण सन्तुष्ट रहती थी कि न तो आज-कल के से बनावटी अनुभव थे और न, सासारिक पदार्थों की इतनी आकाक्षा थी, और न, उस दायरे से बाहर जाने की कोई उम्मीद रखता था।

नैतिक पाठ

एक दिन शाम को माँ ने हम सब बच्चों को एक नैतिक पाठ पढ़ाया। अपने नियम के सर्वथा विरुद्ध, उसने हम सब

बच्चो को एक ही कमरे मे बुला लिया और बड प्रेम से समभ
कर कहा—

"सुनो,आज वे एक छोटी लडकी को लावेगे। वह हमारे सा
रहने को यहाँ ठहरेगी। वह लडकी बडी दुखिया है। तुम स
लोग चारों ओर दौड सकते हो, पर जब से उस बुखार आ
तभी से, उसकी दोनों टॉगे मारी गई। वह और बच्चों व
तरह चल फिर नही सकती, पर केवल धीरे धीरे रेंग सकती है
खबरदार, उसे देखकर हँसने का खयाल भी न करना। तु
स्वय देखोगे कि वह कितनी चतुर और भली है।"

वह लडकी हमारी चचेरी बहिन थी। वह जीवन भर लँगड
रही। इस बात के थोडे दिन पहले मेरे साथ एक ऐसी घटना घट
जिसने सदा के लिए मेरे हृदय पर एक गहरी छाप लगा दी।
उस घटना को 'टूटे हुए ताले' की कहानी के नाम से पुकारूँगी

एक छोटे से चौडे कमरे मे लोहे का एक बडा भारी सन्दू
रखा था। उसमे हमेशा ताला बन्द रहता था। वह 'टहलनियं
का कमरा' था। हमारे बाबा के जमाने से उसका नाम हं
'टहलनियों का कमरा' पड गया था। यह इसलिए कि, घर क
नोकरानियॉ उसी कमरे में चौखटों पर बेल-बूटे बनाया करतं
थी। यहाँ लोहे के बक्स में वे चीजें बन्द रखी थीं, जिनका कभं
कभी काम पडता था। पुराने ढङ्ग का मेज पर बिछाने क
कपडा, नर्सों के हाथ की तैयार की हुई चीजे, रेशमी और ऊनी
कपडे, चॉदी आदि बीसियों चीजें बक्स मे बन्द रखी थीं। उन

कपडों को काम में लाने की नौबत ही न आती थी। एक बार माँ ने बक्स खोला और उसे देखना आरम्भ किया। बहिन और मैं उसके पास चक्कर काटने लगीं। हमने धीरे से सुनहला तमगा और लैस छू ली और चाँदी की तश्तरी और प्याले की प्रशसा करने लगीं। परन्तु सब से ज्यादा हमें बक्स का लटकता हुआ ताला पसन्द आया। यह ताला अमेरिकन ढङ्ग का, पीतल का बना था। उसकी शक्ल शेर की थी, सचमुच शेर की, जिसमें पूँछ और अयाल थे। और एक टेढी तश्तरीनुमा जगह मे उसमें ताला लग जाता था। हमने उस ताले को कई बार खोला और बन्द किया। इसका खोलना और बन्द करना सचमुच बडा अच्छा लगता था। अन्त में जब माँ ने बक्स मे ताला लगाया तब ताली नही लगी।

माँ ने कहा—"ताला किसने तोड दिया?" इस पर एक साथ ही हम दोनों ने पुकार कर माँ को विश्वास दिलाया कि हमने नही तोडा। माँ ने फिर कहा—"पर किसी ने इसे बिगाड तो जरूर डाला।" मैंने कहा—"यह लिडी के पास था।"

माँ ने जल्दी से लिडीआ को पकड लिया और उसके चाँटे लगाये। उसने रोना आरम्भ किया, परन्तु मैं लज्जित हुई। यह बात दया की नहीं, बल्कि शर्म की, सचमुच शर्म की, है। मैं दोषी थी, शायद मैंने ही वह शेरनुमा ताला तोडा था, पर सारा दोष मेरी बहिन के मत्थे मढा गया, और वह इसलिए और भी कि, मैंने कह दिया कि वह शेर उसके पास था।

सम्भवत बहिन मेरी इस काली करतूत को जल्दी भूल गई, क्योंकि हम लोग ५ और ७ बरस की बचियाँ थीं, पर मैं उस लज्जा को, अपने जीवन की पहली लज्जा को, भूल नहीं सकी। इस घटना ने मुझे जीवन भर को एक सबक सिखा दिया। वह सबक था "दोष अपने ऊपर ओढ़ लेने" अथवा अपना अपराध स्वीकार कर लेने का।

गुलामी

जिस दशा में मेरा बचपन बीता उसमे मैं गुलामी का अर्थ समझ नही सकी, और जब इस नाशक प्रथा का अन्त हुआ तब भी उसका मेरे ऊपर कोई गहरा प्रभाव नहीं पडा। हमारे प्रारम्भिक घरेलू जीवन में गुलामों पर ताना-शाही हुक्मो का आतङ्क जमा रहता था, परन्तु बाद में, हमारे बाप का चरित्र और व्यवहार बदल जाने से उसमें परिवर्त्तन हुआ।

६ वर्ष तक हम जङ्गल में रहे, इससे हम, जमींदार और किसान के जीवन से अलग हो गये। क्रिस्टोफौरौव्का (Khristoforovka) मे लगभग २० मकान तो हमारे बाबा के गुलामों से आबाद थे। इस बात की जाँच करने का कोई साधन नहीं मिला कि किसान और जमींदार का पारस्परिक सम्बन्ध कैसा है। किसानों से जबर्दस्ती बेगार कराने की प्रथा मैंने कभी नहा सुनी थी, और न, मैंने कभी किसी पर जुल्म होते हुए

देखा था। मैं यही नहीं समझी थी कि मालिक और गुलामो का पारस्परिक सम्बन्ध या व्यवहार कैसा होता है। केवल उन्ही गुलामो को मैं जानती थी जो हमारे घर के नौकर थे। माँ सदा उनपर दयालु रहती थी। माँ के अन्दर सन्तोष और मनुष्यता का गुण था। जो लोग उसके पास रहते थे वे सदा उसपर प्रेम करते थे। मेरे पिता का मिजाज गरम था। वे नौकरो के लिए खरे और बहुत सख्त थे। वे हमारे लिए भी उतने ही कड़े थे। जब तब वे बावर्ची पर नाराज हुआ करते थे। जब कढी की रकाबी मे मक्खी पड जाती, अथवा रोटी कम सिकती, तब वे क्रोध मे भभक उठते थे। ऐसे मौके पर, जब पिताजी को क्रोध आता था, तब माँ हमेशा चुपचाप आँखें नीची किये बैठी रहती थी। हमारे सामने कभी उसने पिताजी से मुँह-जोरी नहीं की, और न, उनके साथ कभी झगडा किया। इसी-लिए उन दोनो मे हमने कभी झगड़ा होते नहीं देखा। यदि पिताजी बक-झक करते थे और माँ कुछ भी नही कहती थी, तो बिना कुछ कहे-सुने हम समझ जाते थे कि उसका चुप रहना पिता-जी को अपराधी ठहराना था, और इसलिए, हम सदा उससे सहमत रहते थे।

एक बार जङ्गल मे गुलामों के और हमारे सम्बन्ध मे एक शोचनीय घटना होगई। घर में हर एक आदमी—माँ और नर्स से लेकर छोटी सी गुलाम लडकी तक—एक अजीब शोर-गुल के चक्कर में पड गया। पिताजी घर मे नहीं थे। सब लोग

बडी परेशानी में उनके आने का इन्तजार कर रहे थे। उन सब ने धीरे से कुछ बातें की और मैंने वे सुन लीं। वे लोग घुडसाल में प्रोकौफी (Prokofs) को पीटने जा रहे थे। इसका कारण मुझे याद नहीं, शायद यह हो कि वह तीन दिन के लिए गायब रहा था। अहाते में घण्टी व्यर्थ ही उसे घर बुलाने को बज रही थी। सब लोगों ने कहा कि वह आदमी जङ्गल में स्वयं खोगया और वह गाय भी खोगई जो इधर उधर भटकती फिर रही थी। अन्त में किसी तरह गाय घर आगई। यह बात ठीक है या नहीं, अथवा उस आदमी ने आज़ाद होने को भागने के लिए यह असफल उद्योग किया, और बाद में वापस आगया, यह भी नहीं कह सकती। परन्तु उस नौकर की मरम्मत नहीं हुई, क्योंकि माँ ने पिताजी का क्रोध शान्त कर दिया था।

गुलामी का अन्त होगया। हमे यह बात तब मालूम पड़ी जब कि, माँ की दो उन दासियों ने, जो बहुत वर्षों से हमारे साथ रहती थीं, बडी घृणा के साथ अब अधिक समय तक हमारी टहल करने से इन्कार कर दिया। वे क्रिस्टोफौरोव्का मे अपने परिवारों के साथ रहने को चली गईं। वहाँ उनकी शादी भी हो गई। एक अनाथ लडकी पराशा (Parasha) हमारे साथ रह गई। एक नर्स, हमारे [illegible] मे ही आज़ाद हो चुकी थी, अ[illegible] केवल प्रेम-बन्धन में ही बँधी थी

मेरा परिवार

१९ फरवरी सन १८६१ ई० को, मुझ ऐसी एक बालिका की समझ में, नैतिक और आर्थिक परिणामों के साथ वे उलट-फेर हरगिज न आ सकते थे, जो उस समय साधारण लोगों के जीवन में हो रहे थे। उस दशा में, स्कूल में जितने दिन तक भी मैं रही, तब तक गुलामी और गुलामों के छुटकारे, अथवा जमीन के बँटवारे या लूट के सम्बन्ध में, किसी ने एक शब्द तक नहीं कहा। यह बात उन दिनों तक अनसुनी थी।

छुट्टी के दिनों में, मैं अक्सर अपने मकान के बरामदे में किसानों के झुण्ड देखती थी, और पिताजी की लाइब्रेरी में उनकी वह गर्जती हुई आवाज भी सुना करती थी, जो वे न्यायाधीश की हैसियत से, किसानों से समझौते की चर्चा करते वक्त किया करते थे। वे किस तरह के समझौते की चर्चा करते थे, यह मैंने पूछा नहीं, और न, मुझे दिलचस्पी ही थी। गाँव में पुस्तकें, माँ का साथ, जंगल का सैर-सपाटा, नहाना, मछली का शिकार आदि बहुत सी आकर्षक बातें थीं। वर्ष में हमें केवल ६ हफ्ते की छुट्टी मिलती थी। वे हफ्ते इस तरह जल्दी से बीत जाते थे कि जब तक हम लौट कर फिर स्कूल न पहुँच जाते, तब तक अपनी ओर देखने का हमें तनिक भी समय नहीं मिलता था।

उन दिनों मेरे पिता, परिवार के लोगों के इकट्ठा होने के समय, गर्मियों में शाम को, अथवा दिन में भोजन के समय, अपने सार्वजनिक कामों के सम्बन्ध में कोई बात-चीत करना पसन्द न करते थे। एक बार, जबकि मैं काफी बड़ी और सम-

फ्रार होगई, पिताजी ने गरीबाल्डी के व्यक्तित्व और प्रसिद्ध लेखक डेमर्ट (Demert) के लेखों की चर्चा करते हुए कहा था—"यदि गुलाम आजाद न किये जाते और वे विद्रोह खड़ा करते, तो मैं उनके विद्रोह का पथ प्रदर्शन करता !" पिताजी के यह शब्द स्मरणीय हैं। इनसे मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ।

उस समय मैं इस बात को बिल्कुल नहीं समझ सकी कि पिताजी इस तरह की कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने को तैयार हैं।

यह बात बाद में मुझे बाहर वालों से मालूम हुई कि न्यायाधीश की हैसियत से, सब मामलों मे, पिताजी किसानों के हितों को ध्यान मे रखते थे। हर तरह से वे किसानों को ऐसे इकरारनामे करने से रोकते थे जो उनके लिए अहितकर हों। इसी तरह का एक मामला, भिखारियों की मुआफी की जमीन के रद्दोबदल का था। यह सब कुछ होते हुए भी, क्रिस्टोफौरौव्का के लोगों ने, जहाँकि हम रहते थे, स्वतन्त्र रूप से एक बँटवारा मजूर कर लिया, उसके लिए बाद मे उन्हे हमेशा पछताना पड़ा। इसी कारण पिताजी गुस्से में भर कर धूर्त्त लोगों को बुरा भला कहा करते थे, उन धूर्तों को, जिन्होंने लोगों को यह सलाह दी कि हाल ही में प्रकाशित हुई विज्ञप्ति में जिस 'स्वतन्त्रता' की चर्चा की गई है वह वास्तव मे स्वतन्त्रता नहीं है,—वास्तव मे स्वतन्त्रता तभी आयेगी जबकि, मालिकों की सब जमीन किसानों के हाथ में मुफ्त आजायगी।

२

विद्यालय



सन् १८६३ में, मैं विद्यालय में भर्ती हुई। अपने परिवार और गाँव से अलग होने में मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। छोटी छोटी लड़कियों के साथ में पढ़कर, मैंने अपने आपको, तुरन्त ही, नई परिस्थितियों और स्थायी रहन-सहन के साथ जीवन के नये ढाँचे के अनुकूल बना लिया।

दो महिलाएँ मेरी निरीक्षक थीं। उनका रहन-सहन एक दूसरे के विपरीत था। उनमें से एक मैर्या स्टीपानोव्ना (Marya-Stepanovna) बड़ी हँसमुख थी। उसका चेहरा सादा और मर्दानी छवि का था, और पीठ पर एक बड़ा कूबड़ होने के कारण वह और भी भद्दी लगती थी। परन्तु वह अपने स्वभाव से सबको मुग्ध कर लेती थी। उसकी धीमी, किन्तु भरी हुई आवाज आदमी के हृदय तक पहुँच जाती थी और उसकी मुस्कुराहट और भूरी आँखों की प्रेम भरी चितवन दूसरों को अपना विश्वास पात्र बना लेती थी। वह युवती थी। उसके

गुलाबी गाल और काले बाल बडे आकर्षक थे। वह असल में एक साहसी स्त्री थी। उसके व्यक्तित्व में सहानुभूति थी और कोई चीज ऐसी थी जो मातृ-भावना से पूरित थी। उसका चरित्र ढीला-ढाला और मलिन नहीं था। हम उस पर प्यार करते थे और उसका आदर भी। इसका कारण किसी अंश में यह था कि वह बहुत शिक्षित थी और पेचीदा समस्याओं को सुलझाने में सदा हमारी सहायता करती थी। विद्यालय में जो महिला निरीक्षक अयोग्य थी उनका हम कम आदर करते थे।

दूसरी स्त्री, जो हमारी निरीक्षक थी, बडे ही रूखे स्वभाव की थी। वह बूढी थी। ऐसा मालूम पडता था कि केवल उसका शरीर ही सूखा नहीं था, बल्कि उसकी आत्मा भी सूखकर बिल्कुल मुर्दा बन गई थी। हमें उससे कोई सहायता नहीं मिली। हमने भी, विद्वत्ता का घमण्ड रखने वाली उस बूढी औरत से, साधारण ऊपरी व्यवहार के सिवा और किसी बात की आशा नहीं रखी। उसने हमारी पढाई में कोई मदद नही दी, बल्कि पढाई से खाली घटों में हमें फ्रेंच इबारत में लगा कर हमारा हर्ज और किया।

परिणाम

विद्यालय मे ६ वर्ष रहकर मुझे क्या मिला ? इस प्रश्न का उत्तर बहुत आसान है। बोर्डिङ्गस्कूल की एक कुटिया में रहने और दूसरे विद्यार्थियों के साथ एक साधारण विद्यार्थी का जीवन

व्यतीत करने से, मेरे अन्दर बहुत ही अच्छे ढङ्ग से रहने के तौर-तरीके और बन्धुत्त्व का भाव पैदा हुआ। इसके सिवा अध्ययन के नियमित क्रम और बहुत ही सख्ती से समय पर पूरा किये जाने वाले दैनिक कामों ने मुझे एक निश्चित ढँग के अनुशासन का आदी बना दिया। स्कूल में भर्ती होने से पहले मैंने अपनी इच्छा से अध्ययन किया था, परन्तु यहाँ दिमागी काम करने की आदत कुछ और भी बढ़ गई। परन्तु जहाँ तक वैज्ञानिक योग्यता और दिमागी तालीम का सम्बन्ध है, वहाँ तक इन वर्षों में, स्कूल में रहने से मुझे कुछ नहीं मिला, बल्कि यहाँ मेरी आत्मिक उन्नति में धक्का और लगा। यहाँ मैं उस हानि की चर्चा नहीं करती जो कि, जनता से अलग रहने के कारण हुई। लोगों से अलग रहकर, एकान्त में पड़े रहकर जीवन व्यतीत करना अस्वाभाविक है।

विद्यालय में अध्यापक सन्तोषजनक नहीं थे। अध्यापकों में सबसे अच्छे एक वह प्रोफ़ेसर थे जो रूसी भाषा और विदेशी साहित्य पर लेक्चर दिया करते थे। उनकी साहित्य मे बडी अच्छी गति थी। रूसी साहित्य मे हमने बैलिन्स्की* का नाम कभी नही सुना। इसके बाद के समालोचकों की चर्चा मैं नहीं करती। हमने समकालीन गल्प और काव्य-साहित्य भी नहीं पढा। हम "मू-मू" (Mu Mu) की एक कहानी के द्वारा,

* १८१०—१८४८—एक प्रसिद्ध समालोचक और प्रजा-सत्तावादी युवक दल का नेता।

जो कि हमें एक बार व्याख्या करने को दी गई थी, केवल तुर्गनेव (Turgenev) से परिचित थे।

नेमेन्स्की (Znamensky) नामक एक अध्यापक ने, इतिहास में हमें वर्ष भर तक केवल ग्रीक और रोमन लोगों के पौराणिक उपाख्यानों और फारस और बेबीलोन के इतिहास ही में अटकाये रखा। मध्य-युग और आधुनिक इतिहास में हमने इलोवेस्की (Ilovaisky) की किताबें पढ़ीं। ऊँचे दर्जों में, नीज (Knize) नाम के भूगोल के अध्यापक बहुत अच्छे थे। अन्य अध्यापक ऐसे भी न थे जिनके नाम का उल्लेख करना उचित हो। लिनेएडौव्स्की जानवरों और वनस्पति के विषय पर लेक्चर देते थे, लेकिन उन्होंने कभी न तो हड्डियों का ढाँचा, या भुस भरा हुआ जानवर* दिखाया और न, कोई पौदा ही। हमें कभी खुर्दबीन में नहीं देखा। हमे रक्त, मास अथवा शरीर अन्य अवयवों के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं था। दो अध्यापक जो शरीर-शास्त्र और धातु विद्या पढाते थे, हमें कुछ बतला सकते थे, परन्तु उनके दर्जा में, वर्ष भर तक, पढाई सप्ताह केवल एक बार होती थी और उन कक्षाओं के पाठ्य-क्रम बहुत ही संक्षिप्त थे।

---

* जानवर की खाल के अन्दर का गोश्त वगैरह सब निकाल घास-फूँस अथवा और चीजों से भर देते हैं, फिर खाल सींकर जान को वैसा का वैसा ही खड़ा कर देते हैं।

चार वर्ष तक अध्यापको ने लेखन-कला म अटकाये रख कर हमे बडा कष्ट दिया। सात वर्ष तक हम ड्राइङ्ग सीखते रहे। इस अवधि के भीतर हममे से किसी ने भी इस विषय में अपनी प्रतिभा का परिचय नही दिया। ड्राइङ्ग-मास्टर का हमने आदर नही किया इसलिए कि, वह जानता ही न था कि हममे काम करने का उत्साह कैसे पैदा किया जा सकता है। उसके पास पढते समय कभी किसीने कुछ काम नहीं किया। इस पर भी हर एक विद्यार्थी ने पूरे नम्बर पाये। सङ्गीत सीखना अनिवार्य्य नहीं था। इस विषय को सीखने के लिए अलग से फीस देनी पडती थी। हमारा सङ्गीत सीखना हमारे माँ-बाप की इच्छा पर निर्भर था।

शाम को जब दर्जो की पढाई खत्म होजाती थी तब हम दूसरे दिन के लिए सबक़ तैयार करते थे। कुछ लोगों का बहुत सा समय लिखने में, और कुछ का विविध विषयों पर लिये हुए नोटों की नक़ल करने मे लग जाता था। इलोवेस्की के इतिहास के सिवा और कोई पाठ्य-पुस्तकें नहीं थीं। उस समय हमने जो कुछ सीखा, वह अध्यापक के मुँह से निकले हुए शब्दो ही से सीखा। परन्तु कैसे? सबसे होशियार दो या तीन विद्यार्थी बहुत जल्दी संक्षिप्त नोट्स लिख लेते थे उन बातो के, जिनका अध्यापक हमारे सामने वर्णन करते थे। फिर उन नोटों का मिलान करने और छूटी हुई बातों के भरने में किसी अधूरे शब्द के वास्तविक अर्थ निकालते समय हम परेशान हो जाते

में उसके सम्बन्ध में क्या कहूँ ? इस प्रकार की वहाँ कोई शिक्षा नहीं दी जाती थी। उस वायुमण्डल में किसी को यह भी ख़याल न था कि हमें यह बतावें कि अपने प्रति, अथवा अपने परिवार, समाज और देश के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है।

विद्यालय में पढ़ने का उत्साह नहीं दिलाया गया और उन सब वर्षों में, जब तक कि मैं वहाँ रही, किसीने इसकी आवश्यकता पर एक शब्द तक नहीं कहा। मुझे छोड़कर, मेरी सब साथिनों में, केवल ३ ४ लडकियाँ नोटबुक के सिवा कभी कभी कोई किताब उठा लेती थीं। शाम को जबकि मेरा नियत काम हो चुकता था, तब मैं चुपचाप अपने निरीक्षक की आँख बचा कर डैस्क में से पुस्तक निकाल लेती। इस पर भी मुझे सन्तोष नहीं होता था और मैं रात को पढ़ती थी। इस प्रकार छिप कर रात को पढ़ने वाली केवल मैं ही अकेली लड़की थी। जिस कमरे में हम सोते थे वहाँ बहुत कम उजाला रहता था। कमरे के एक कोने में, जहाँकि ऊँचे दर्जे की लड़कियाँ सोती थीं, एक छोटी सी मेज रक्खी थी। उस पर ईसा की मूर्त्ति थी। मूर्त्ति के सामने ही एक छोटा सा दीपक जलता था। वह मानों हमारे उत्साह की गवाही देता था। दीपक के लिए हम अपने पैसों से तेल मोल लेते थे। जब तेल चुक जाता था तब मैं दीपक को अरण्डी के तेल से भर देती थी। रात के वक्त एक बुढ़िया तैनात रहती थी। वह ठिंगने क़द की और दुबली पतली थी। काली पोशाक पहनती थी। वह रात को हर वक्त कमरे

थे और स्मरण-शक्ति तथा कल्पना के सहारे उन नोटों को पूर करते थे। इसके बाद छोटी लडकियाँ अपनी कापियों म न नोटों की नकल कर लेती थी। ऐसा करने में हमारे दिमा पर बहुत बोझ पडता था। इसके सिवा पादरी ने हमें नो लिखने की बडी भारी कापियाँ दे रखी थी। उनमें ईसाइयों क प्रार्थना पद्धति और उनके कर्तव्य ("Liturgy and Christia Duties") पर लेक्चर थे। उन नोटों की भी हमे नकल करन पडती थी। हमने इतिहास, रूसी भाषा, विदेशी साहित्य वनस्पति शास्त्र, प्राणी-शास्त्र, शरीर-विद्या, धातु-विद्या, भाषण शैली आदि सब विषय लिखे हुए नोटों से पढे।

विद्यालय का एक बगीचा था। उसके चारों ओर नींबू के पे लगे हुए थे और बाहरी ओर एक गहरा खड्ड था। उसकी ओ झाँकने मे हम डरते थे। गर्मी के दिनों में अक्सर हम उस बगी में घूमने जाया करते थे। जाडों में हम केवल दो तीन बार ही विद्य लय के फाटक के बाहर ले जाये जाते थे। जाडों के लिए हमा पास गरम कपडे नहीं थे। हलके मामूली कपडे पहन कर ही ह दिन काटते थे। हम व्यायाम तो बिल्कुल ही न करते थे। सप्ता में केवल एक घंटे नाच लेते थे, यही हमारी कसरत थी इसीलिए उन दिनों हम कमजोर और बीमार होगये थे।

यदि विद्यालय में छोटी लडकियों के शारीरिक विकास प और थोडा-बहुत ध्यान भी दिया जाता था, तो वहाँ जीव संग्राम की तैयारी के लिए जो नैतिक शिक्षा दी जानी चाहि

मैं उसके सम्बन्ध में क्या कहूँ ? इस प्रकार की वहाँ कोई शिक्षा नहीं दी जाती थी। उस वायुमण्डल में किसी को यह भी ख़याल न था कि हमें यह बतावें कि अपने प्रति, अथवा अपने परिवार, समाज और देश के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है।

विद्यालय में पढ़ने का उत्साह नहीं दिलाया गया और उन सब वर्षों मे, जब तक कि मैं वहाँ रही, किसीने इसकी आवश्यकता पर एक शब्द तक नहीं कहा। मुझे छोड़कर, मेरी सब साथिनों में, केवल ३ ४ लड़कियाँ नोटबुक के सिवा कभी कभी कोई किताब उठा लेती थी। शाम को जबकि मेरा नियत काम हो चुकता था, तब मैं चुपचाप अपने निरीक्षक की आँख बचा कर डैस्क मे से पुस्तक निकाल लेती। इस पर भी मुझे सन्तोष नही होता था और मैं रात को पढ़ती थी। इस प्रकार छिप कर रात को पढ़ने वाली केवल मैं ही अकेली लड़की थी। जिस कमरे में हम सोते थे वहाँ बहुत कम उजाला रहता था। कमरे के एक कोने में, जहाँकि ऊँचे दर्जो की लड़कियाँ सोती थीं, एक छोटी सी मेज़ रक्खी थी। उस पर ईसा की मूर्त्ति थी। मूर्त्ति के सामने ही एक छोटा सा दीपक जलता था। वह मानो हमारे उत्साह की गवाही देता था। दीपक के लिए हम अपने पैसों से तेल मोल लेते थे। जब तेल चुक जाता था तब मैं दीपक को अण्डी के तेल से भर देती थी। रात के वक्त एक बुढ़िया तैनात रहती थी। वह ठिंगने क़द की और दुबली पतली थी। काली पोशाक पहनती थी। वह रात को हर वक्त कमरे

मे अपने विस्तर पर प्रार्थना किया करती थी। इस प्रकार वह अपनी युवावस्था के पापों का प्रायश्चित करती थी या स्वभावत ही धार्मिक थी, यह में नहीं जानती। बुढिया की प्रार्थना का देखकर में कोने की मेज पर चली जाती थी और वहाँ घुटनों के वल खडी होकर पढने मे तल्लीन हो जाती थी। वीच वीच में बुढिया अपनी प्रार्थना को वन्द करके सोने के सब कमरों का चक्कर लगाती थी। उसके चलने की आवाज बिल्ली के कदमो की सी होती थी। उस आवाज को सुनकर मैं घुटनों के वल खडी हो जाती और अपने माथे को बार बार जमीन से तब तक लगाती रहती थी, जब तक कि, बुढिया मेरी पीठ के पास खड़ी रहती थी, परन्तु जब वह देखती कि मेरी प्रार्थना का कभी अन्त ही नहीं होता, तब वह वहाँ से चली जाती थी। बुढिया के चले जाने पर मैं अपनी किताब मेज के नीचे से फिर उठा लेती थी। मैं अधिकतर अँगरेजी के उपन्यास पढती थी।

विद्यालय मे एक पुस्तकालय था, परन्तु हमे उसकी पुस्तकें देखने को कभी नही मिलीं। पुस्तकें ताले मे वन्द रहती थीं। ताली एक इन्स्पेक्टर के पास रहती थी। वह इन्स्पेक्टर यूनीवसिटी का डीन था। वह विद्यालय मे कभी कभी बुलाया जाता था। एक बार विद्यालय के प्रवन्धक ने वेलिन्स्की (Belinsky) की लिखी हुई एक पुस्तक दी। परन्तु में गम्भीर विषय की पुस्तकें पढ़ने की बिल्कुल आदी नहीं थी। इस पुस्तक में थियेटर के

सम्बन्ध मे तथा हेमलट (Hamlet) के रूप में मोकालौव (Mochalov) के रङ्गमञ्च पर खेल दिखाने के लेख थे। जिस समय मैं ग्रेजुएट हुई उस समय तक मैं कभी थियेटर देखने को न गई थी। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि लेखो मे मुझे कोई दिलचस्पी नहीं मालूम पडी। मैं केवल उपन्यास और कहानियाँ पढती थी, और मेरे विद्यालय के जीवन के ६ वर्षों में, बेलिन्स्की की इस एक पुस्तक के सिवा, गम्भीर विषय की एक भी पुस्तक मेरे हाथो में नहीं आई।

साहित्यिक प्रभाव

छुट्टियों मे, माँ की देख-रेख मे, मैं पढा करती थी, इससे मेरी बुद्धि का और भी विकास होगया। घर पर मैं दिन भर पढती थी, पर केवल उसी तरह की कहानियाँ और उपन्यास देखा करती थी जैसेकि विद्यालय में देखने को मिलते थे। घर पर पढी हुई कहानियाँ भी उन सबमे अच्छी होती थीं जो तत्कालीन पत्रिकाओं में निकलती थीं।

मैं १२ वर्ष की थी, तब मुझे माँ ने एक छोटा सा उपन्यास पढने को दिया। उपन्यास का नाम था "इच्छा की बीमारियाँ" (Diseases of the Will)। इसका लेखक बहुत प्रसिद्ध न था। मैंने यह सारा पढ डाला। इससे मैं उलझन में पड गई। इस उलझन में कि,ग्रन्थकार ने कहानी का ऐसा अद्भुत नाम क्यों रखा? मैं सोचने लगी कि पुस्तक के चरित्र-नायक को सत्य से प्रेम और असत्य

में घृणा थी, यही गुण उसकी विपत्ति और दुर्भाग्य का कारण बन गये, और इसीसे, अपने सगे-सम्बन्धियों और मा-बाप तक से विगाड होगया। उसने वही किया जो कि उसे करना चाहिए था। इस दशा मे "इच्छा की बीमारी" कहाँ है? अपनी उलझन को लिये हुए मैं माँ के पास पहुँची। माँ ने कहा कि यह ठीक है कि एक आदमी को हमेशा सच बोलना चाहिए और दूसरों से भी यही आशा करनी चाहिए, पर ऐसे मामलों मे, जो बहुत महत्त्व-पूर्ण न हो, किसी व्यक्ति को असली बात से इस प्रकार न भटक जाना चाहिए जैसाकि कहानी में युवक ने किया है। यदि लोग थोडा बहुत मामूली झूठ बोलते हैं तो उनसे अपना सम्बन्ध न तोड दो, नही तो, तुम अकेली पडी रह जाओगी और तुमसे किसीका कोई सम्बन्ध ही नहीं रहेगा, इस दशा मे तुम ऐसी ही दुखी रहोगी जैसाकि टालस्टाय का अभागा नायक था। माँ के कथनानुसार नायक की अत्यधिक सत्य प्रियता ने एक बीमारी का रूप धारण कर लिया। इस व्याख्या से मेरी दृष्टि मे माँ का आदर कम हो गया। मैं असन्तुष्ट और दुखी होकर वहाँ से चली गई।

एक वर्ष बाद, मेरे चाचा एक पत्रिका की दो भारी जिल्दें विद्यालय मे मेरे पास ले गये। उसमें बडी अद्भुत कहानिया थीं। उनमें एक उपन्यास था—एक व्यक्ति रण-भूमि मे योद्धा नहीं है (One Man in the Field is No Warrior)। इस उपन्यास ने मेरे उपर अमिट प्रभाव डाला। मैंने चरित्र की खूबी और कहानी

की सामाजिक दिशा, सिलविया और लियो की सुन्दर कामनाएँ और उस पूँजीवादी वायु-मण्डल का भद्दापन, जिससे लियो ने गलती से सहायता और सहानुभूति चाही, अच्छी तरह से हृदयङ्गम कर लिया। मेरे मानसिक क्षितिज को इतना विस्तृत और किसी उपन्यास ने नहीं बनाया जितना कि इस उपन्यास ने। इस उपन्यास ने तो मेरे हृदय पट पर दो विरोधी चित्र खींच दिये। एक चित्र में उच्च आदर्श, सङ्घर्षण, और कष्ट-सहन की भावना अङ्कित थी, और दूसरे में सन्तोष, खोखलापन और जीवन की बाहरी सुनहली चमक की प्रतिछाया। १३ वर्ष की उम्र में जो जानकारी मुझे हुई, वह इतनी ठीक थी कि जब बहुत वर्षों के बाद मैंने यह पुस्तक फिर पढ़ी तब मुझे उन बातों में विचार-परिवर्त्तन करने की तनिक भी ज़रूरत नहीं पड़ी।

मानव-चरित्र उन चीजों के प्रभाव से बनता है जो विभिन्न समुदाय के लोगों, अनेक पुस्तकों और आस-पास के जीवन से सहायता के रूप में मिलती हैं। कभी कभी कोई बात हृदय पर इतना गहरा असर डालती है जिससे चरित्र निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है। नेकरासौव (Nekrasov) की 'साशा' (Sasha) नामकी कविता ने मेरे चरित्र पर बहुत प्रभाव डाला।

उस कविता का मतलब बहुत स्पष्ट है। अगारिन नामका एक शिक्षित और चालाक युवक एक गाँव में गया। वहाँ वह एक ऐसी युवती से मिला जिसकी बुद्धि और प्रतिभा का अभी

विकास नहीं हुआ था। युवक ने अपरिपक्व युवती के हृद म एक नई जागृति पैदा कर दी। अपनी ओजस्वी बातों से उसे सामाजिक प्रश्नों और जनता की भलाई के कामों का बोध कराया। इन आदेशा के प्रभाव से साशा (Sasha) के हृदय में आदर्शवादी भावनायें उठने लगी। परन्तु एक-दो वर्ष के बाद जब साशा उस युवक से फिर मिल तब उसे धोखा हुआ। साशा का अब बौद्धिक और नैतिक विकास होचुका था। अब अगारिन उसके सामने एक खोखला और बकवादी आदमी के रूप में प्रकट हुआ—ऐसा बकवादी, जो दुनिया मे इधर उधर घूमकर 'बडे भारी खतरे की बातों का ढूँढता फिरता है, और चारो ओर कोरा बातूनी जमाखर्च करता है, किन्तु जीवन के लिए कोई व्यावहारिक काम करके नहीं देता। साशा यह देख कर कि युवक की बातो और उसके कामों में जमीन आसमान का अन्तर है, धोखा खाती है, और सदा के लिए उसे अपने मन से ही निकाल देती है।



३

मेरा पडोस



न् १८६९ मे मेरी विद्यालय की पढ़ाई समाप्त होगई। मैं एक चपल, हँसमुख और खिलाडी लड़की के रूप मे विद्यालय के बाहर आई। मैं देखने में कमजोर थी, किन्तु मन और शरीर दोनो ही से स्वस्थ थी। ६ वर्षों के एकान्तवास से मैं दुखी नही थी। मुझे वास्तविक जीवन का, तथा अपने समाज का ज्ञान था। यह ज्ञान मैंने केवल उपन्यास और कहानिया पढकर अर्जन किया था। सभी बातें बोर्डिङ्गस्कूल की चहारदीवारी के भीतर न आती थीं। घर पर में और मेरी बहिन छुट्टियों का समय बिताते थे। वहा हम अपने सम्बन्धियों के सिवा किसी बाहरी आदमी से कभी नहीं मिले। मेरे माँ बाप बराबर उसी पुराने स्थान मे रहते थे। विद्यालय की पढाई समाप्त होने पर मैं अपने उसी पुराने वायुमण्डल मे रहने को आगई जहाँकि मेरी छुट्टिया व्यतीत होती थीं। यह शान्त, सरल और स्वच्छ वातावरण किसी व्यक्ति को गम्भीर विचारों मे तल्लीन कर देने के लिए बहुत उपयुक्त था।

गम्भीर विचारों मे निमग्न रहने के लिए विद्यालय में ही मुझे एक प्रेरणा मिल चुकी थी। जो महिला मेरी कक्षा का प्रबन्ध करती थी वह बड़ी चतुर और कार्य्यशील थी। एक बार वह अपनी एक छात्रा से, उसका आलस छुड़ाने के लिए, बहुत ज़ोर देकर कह रही थी—"क्या तुम यह सोचती हो कि जब तुम विद्यालय छोड़ दोगी, तब तुम्हारी पढ़ाई समाप्त हो जायगी! नहीं, तुम पढ़ना हर्गिज़ बन्द मत करना। जीवन भर छूट जाने के वक्त तक, तुम पढ़ाई बराबर जारी रखो।" यह सचाई असल मे सब लोगों के लिए एक साधारण बात थी। परन्तु मैंने यह बात पहले उसी समय सुनी। इसने मेरे दिमाग मे प्रकाश की एक रेखा खींच दी। उक्त शब्दो को मैं कभी भूल नहीं सकती। इन शब्दों ने मेरे जीवन पर बड़ा नैतिक प्रभाव डाला। इसके लिए उस महिला प्रबन्धक की मैं बहुत कृतज्ञ हूँ।

सबसे पहले मैं अपनी माँ की कृतज्ञ हूँ इसलिए कि, विद्यालय छोड़ते ही मैंने दिमागी काम करना शुरू कर दिया। उसने मुझे अच्छी से अच्छी पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तके पढ़ने को दीं। उसके पुस्तकालय मे बहुत-सी अच्छी किताबें थीं। असल में माँ बचपन में किसी स्कूल में पढ़ी लिखी नहीं थी, परन्तु अपने ही स्वतंत्र उद्योग से उसका हृदय, मन और मस्तिष्क विकास की चरम सीमा तक पहुँच गया था। वह सचमुच बहुत शिक्षित और समझदार थी।

मेरा सामाजिक वायुमण्डल वही पहले वाला था। ज़मींदारों और उनके परिवारों में से हम किसीको नहीं जानते थे। मेरी

सी अवस्था और शिक्षा के, वहाँ कोई लड़के नहीं थे। हमारे सम्बन्धियों के दो परिवार वहा रहते थे। उनमे कुल चार आदमी थे। उनमें दो हमारे चचा चाची थे, तथा दो स्त्री-पुरुष और थे। उन्हींसे अक्सर हम मिला-जुला करते थे। वे सब लोग ज़िले में रहने वाले लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक उच्च श्रेणी के थे। असल में वे सासारिक जीव थे। साम्यवादी नहीं थे। उनके मुँह से साम्यवाद की शिक्षा का मैंने कभी एक शब्द भी नहीं सुना। साम्यवादी सिद्धान्तों के प्रसिद्ध प्रवर्त्तक फूरिये (Fourier), सेसिमौं (Saint Simon), तथा और लोगों के नामों की उन्होंने कभी चर्चा तक नहीं की। उस लासाल (Lassalle) ऐसे महापुरुष का मैं नाम तक नहीं जान पाई जिसकी ज्वलन्त कृतियों की धाक किसी समय जर्मनी भर मे थी। जब मैं पहले पहल अपने देश से बाहर गई तब मजदूरों की एक बहस देखने गई। बहस थी इसी नेता लासाल के सम्बन्ध में। मैं चक्कर में पड़ गई। लासाल और लाप्लास नाम के लेखकों के नामों का अन्तर ही न समझ सकी। अपने अज्ञान पर मुझे बड़ी शर्म आई। मेरे सम्बन्धी प्रजातन्त्रवादी नहीं थे। वे स्विट्ज़रलैंड और संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के राजनैतिक सङ्गठन की प्रशंसा करते थे।

मेरे वे सम्बन्धी, जिनकी ऊपर चर्चा की गई है, पीसारैव (Pisarev)* के अनुयायी थे। उन्होंने प्राकृतिक विज्ञान को बड़ा

* १८४१—१८६८-साहित्य-समालोचक और भौतिकवाद की उस प्रगति का प्रचारक जिसका नाम आगे चलकर निहिलिज़्म पड़ गया।

महत्त्व दिया। उन्हीं की सलाह से मैंने डार्विन, लायल (L,
लूइज़ (Lewes) और वौग्ट (Vogt) की किताबें प६
और पीसारेव के कुछ प्रसिद्ध लेख भी देखे। परन्तु इस
के विषयों से अनभिज्ञ होने के कारण अधिक न समझ सका
मेरे चाचा और एक दूसरे सज्जन गौलौव्न्या प्रजा-सत्तावादी
और धार्मिक, सामाजिक तथा जाति-गत विद्वेषों से।
बिल्कुल मुक्त थे। वे विश्व-व्यापी सार्वजनिक शिक्षा,
लम्बी श्रम और स्त्रियों के समान अधिकार के पक्षपाती थे।
सादगी से जीवन विताना पसन्द करते थे। मेरे
जो परिवार के लोगों में सबसे अधिक शिक्षित और समझदा
थे, मेरी पहनी हुई सुनहली अँगूठी और तरह-तरह की फैश
के कपड़ों को देखकर हँसते थे। वे कहते—"प्यारी वीरा
बताओ तो सही कि बालियों के रूप में तुम्हारे कानों में कित
पौंड अनाज लटक रहा है!" पास ही में कहीं से इसका उत्त
मिलता—"अठारह सौ पौंड (साढ़े बाईस मन)!" फिर चाच
पूछते—"तुम्हारे इन सुन्दर ऊनी कपड़ों से कितने कुशल ज
तैयार हो सकती है?" इसी तरह के वे बहुत से प्रश्न करते थे
यह खयाल करके कि विद्यालय में मेरे मन में सामाजिक सुख
और धन की कामना पैदा कर दी गई है, मेरे सम्बन्धी अक्सर
कहा करते कि मुझे किसी बूढ़े मालदार आदमी के साथ शादी
करनी चाहिए। मेरा खयाल है कि वे पहले मेरे सम्बन्ध में बहुत
अच्छी राय नहीं रखते थे। यही कारण था कि मुझे अपने बार

मे झूठी चापलूसी की बातें सुनने को मिलीं। इस प्रकार की बातें मुझे बहुत कडवी लगीं और मुझे चोट भी लगी। एक रात को मेरी नींद उचट गई। गर्मी के दिन थे। घर का हर एक आदमी उस वक्त सो रहा था। परन्तु घर की दो स्त्रिया छज्जे पर बैठी बातें कर रही थीं। उनमे एक हमारी मौसी वैरेनका (Varenka) थी और दूसरी चचेरी बहिन, जो कैज़ाँ से हमारे पास आई थी। वे मेरी बहिन लिडीआ और मेरे सम्बन्ध में बातें कर रही थीं। मौसी ने कहा—"लिडीआ बहुत सुन्दरी होगी और कुछ कर दिखायेगी। परन्तु वीरा एक सुन्दर गुडिया है। वह उस सुन्दर सुर्ख लालटेन की तरह है जो एक कमरे के कोने में लटकी हुई शोभा देती है। केवल देखने में सुन्दर है, पर है असल में गुणहीन।"

यह बातें सुनकर मे अपना सर तकिया पर लगाकर खूब रोई। मैंने उस समय सोचा कि गुणवती कैसे बनूँ।

मेरे चाचा चर्नीशैव्स्की, डौब्रोलीयूबौव* और पीसारैव ऐसे विद्वानों के प्रशसक थे। उन्होंने मुझे पीसारैव की बहुत कम पुस्तकें पढने को दीं। मैं चर्नीशैव्स्की को अच्छी तरह समझ भी नहीं सकी। अपने घर में हम सार्वजनिक प्रश्नों पर खूब बात चीत करते थे। बातचीत में इस बात पर बडा महत्त्व दिया जाता था कि जीवन, अपने और परिवार ही के झगडों में न

* १८३६–१८६१—साहित्य-समालोचक और साहित्य क्षेत्र में चर्नीशैव्स्की का सहयोगी।

लगकर, समाज की सेवा में लगना चाहिए। विद्यालय समय मेरे दिमाग में किसी भी तरह के सामाजिक और रा नैतिक विचार नहीं थे। मेरा मानसिक क्षेत्र बिल्कुल अछूता औ विशुद्ध था। उसमें विज्ञान और ज्ञान के लिए आदर तथा प्राप्त करने की भावनाएँ पल्लवित हो सकती थीं। उसी भूमि राज्य प्राप्त करने और सामाजिक काम करने की कामना भी हो सकती थी। यही भावनाएँ मेरी मानसिक भूमि में उन बी से उपन उठीं जो इच्छा से, और कुछ अनिच्छा से, मेरे आ पास रहनेवाले सम्बन्धियों ने बोये थे।

मेरी प्रवृत्ति

जबसे मैं विद्यालय से ग्रेजुएट होकर निकली, तबसे यहा १ महीन बीत गये। बिना किसी उद्देश के, एकान्त ग्राम-जीवन में असन्तुष्ट रहने लगी। मैं सोचने लगी कि मुझे अब करना चाहिए? किसी नाट्य शाला के रङ्ग-मञ्च पर जाऊँ, अथ स्कूल मास्टरों में शामिल होजाऊँ? पहला काम मेरे मन मे व्यर्थ और अनिश्चित-सा जँचता था और दूसरे के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त थी। इसका अनुभव मुझे तब हुआ जब मैं अपनी बहिन ईव्जीनिया को स्कूल के लिए पढा रही थी।

विश्वविद्यालय की पढ़ाई की इच्छा करना उन दिनों स्त्रि के लिए बिल्कुल एक नई बात थी। सुसलोवा (Suslova) ज्यूरिच (Zurich) में डाक्टरी का डिप्लोमा प्राप्त कर लिय

था। वह चीड़ फाड़ का काम भी अच्छी तरह सीख गई थी। इस बात की खबर एक अखबार में निकली। इससे मुझे आगे पढ़ने के लिए एक रास्ता मिल गया। मुझे डाक्टरी पढ़ने की इच्छा हुई। लोगों की भलाई के ख्याल से गाँव मे डाक्टर बनकर रहने के लिए नहीं, और न "प्रायश्चित करते हुए एक अमीर आदमी" की भावना मे ही, मुझे डाक्टर बन जाने की धुन सवार हुई थी। इस प्रकार के विचार तो बाद में साहित्य के प्रभाव से बने थे। इस समय इस विचार के उत्पन्न करने वाली मेरी प्रवृत्ति थी।

उन जीवनोपयोगी शक्तियों ने, जिनका मुझे पता न था, पर जो मेरे रोम-रोम मे समा रही थीं, मुझे उत्तेजित किया और आज़ादी की मस्त बनादेने वाली सनसनी हृदय के बाहर आगई। जब मैंने जीवन के क्षेत्र मे पदार्पण किया तब यह अत्यधिक हर्ष ही था, जो मेरी मानव-सेवा की भावनाओं का वास्तविक साधन बना। मेरे मन में उत्साह की तरङ्गें उठ रही थी और कुछ काम करने की इच्छा होती थी। इस दशा में ऐसा जीवन, जो मेरे व्यक्तित्व की सार्वजनिक झलक स्पष्ट रूप से न दिखावे, ध्यान ही मे न आता था। शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से, मैं अपने आपको, अपने मित्रों की अपेक्षा अधिक सुखी और प्रसन्न समझती थी। इस बात ने, तथा इस ख्याल ने भी कि मेरे पास रहने वाले लोग, औरों की अपेक्षा मुझ पर अधिक स्नेह करते हैं, मेरे मन मे कृतज्ञता की एक अपरिमित भावना उत्पन्न कर दी। कृतज्ञता की भावना किसके लिए थी? अपने मित्रों के

लिए जो मुझ पर स्नेह करते थे और जो मुझ से डाह न रख
थे। मेरे हृदय में कृतज्ञता का भाव था अपने अध्यापकों, मात
पिता तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए। सूरज और तारों के लिए भ
मेरे मन मे कृतज्ञता थी। यह सब इसीलिए कि, अध्यापकों
मुझे प्रथम श्रेणी प्राप्त करने मे यथाशक्ति सहायता दी थी, माँ
बाप ने मेरे कठिन तथा साहसी बचपन मे, बडी सावधानी
मेरी देख रेख की थी और मुझे उन्होंने वह हर एक चीज़ दे रख
थी, जो स्कूल से बाहर किसी लडकी को आनन्दित कर सकत
है। सूरज खेत के चारो ओर अपना सुनहला प्रकाश फैला रह
था और तारे रात को बाग के ऊपर चादर-सी ताने हुए सुन्द
दिखाई देते थे। ससार के आशीर्वादों के रूप मे, वास्तवि
जीवन के आशीर्वादों के लिए मैं किसी को धन्यवाद देना चाहत
थी। मैं कोई अच्छा काम करना चाहती थी—ऐसा अच्छा, ज
मेरा और दूसरों का भला करे।

एक गल्प-लेखक की कहानी मे आता है कि मैडौना (Ma
donna) नामकी एक महिला ने मन्दिर की छत पर खडे होक
दुनिया के लिए अपने हाथ बाहर फैला दिये थे। और उन हाथ
से निकले हुए सुनहली धागों से, उन लोगो को, जो प्रेम औ
सहानुभूति के इच्छुक थे, आश्रय और प्रकाश मिला था। य
चित्र उस अवस्था का हो सकता है, जिसे प्रत्येक स्वस्थ युव
शुभ घडियों में अपने जीवन क्षेत्र में प्रवेश करते समय स्वभाव
अनुभव करता है।

मेरे चारों ओर गाँव का वायुमण्डल था। यहाँ ग़रीबी, गन्दगी, रोग, और मूर्खता का राज्य था। परन्तु सुसलोवा (Suslova) के सेवा-मार्ग ने परोपकार के जो सुनहले तार मेरे हृदय में अङ्कित किये थे, वे गाँव के निवासियों तक पहुँचने लगे। सेवा और परोपकार की उन्हीं भावनाओं में मानव-समाज और हमारी मातृ भूमि की सेवा की भावना भी शामिल होने लगी।

सबसे पहले अपने चाचा से मैंने उपयोगितावाद का सिद्धान्त सुना। इस विषय पर उन्होंने मुझे एक लेख दिया। उन्होंने कहा—"अधिक से अधिक आदमियो की अधिक से अधिक भलाई करना" प्रत्येक व्यक्ति का उद्देश होना चाहिए। इस बात का मेरे ऊपर बहुत प्रभाव पडा। जिस बात से मैं पूर्णतया सहमत थी, चाचा ने उसीको शब्दों मे कह डाला। यह तो मेरे खयाल से बाहर था कि जिस बात को मैं सच मान लूँ उसके अनुसार काम न करूँ।

इन सब बातों का यह परिणाम अनिवार्य्य था कि मैं अपने परिवार के साथ गाँव के जिस शान्त वातावरण मे जीवन बिता रही थी, उससे अलग होजाऊँ। उस समय, में एक ऊँचे और दूरस्थ लक्ष्य के बिना, निकम्मा जीवन बिताने के विचार तक को सहन नहीं कर सकी। सुसलोवा (Suslova) ने मेरा कुछ भविष्य तो निश्चित कर दिया था। मैंने किसी विश्वविद्यालय में भरती होने के लिए अपना काम शुरू कर दिया। मेरा विचार था कि या तो मै किसी विदेशी विश्वविद्यालय मे भरती होजाऊँ,

या कैजा में। कहीं भी पढती, मुझे असल में पढना था। मैं डाक्टर होना चाहती थी और अपने ज्ञान को देहात में फैला हुई बीमारी, गरीबी और अज्ञान के दूर करने मे लगा देने का मेरी इच्छा प्रबल थी। परन्तु पिताजी ने मुझे विदेश जाने की आज्ञा इसलिए नही दी कि उन दिनों लडकियों का बाहर सामयिक कल्पना के बाहर था।

एक बार बडी खुशामद से मैंने पिताजी से पूछा—"शायद आप यह खयाल करते हैं कि मैं अपने उद्देश्य को पूरा न सकूँगी, और मुझमे उसे पूरा करने की सामर्थ्य नहीं है ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"नही, मैं जानता हूँ कि यदि तुम एक काम की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लो, तो उसे पूरा कर डालोगी।"

मैं नहीं जानती कि इस प्रकार का विश्वास उनमे कैसे पैदा हो गया, परन्तु इसने मेरे आत्म निर्भरता के भाव को जरूर मजबूत कर दिया।

इससे भी अधिक महत्त्व की घटना वह थी, जो मेरे ग्रेजुएट होने के बाद पहले व ' हुई थी। मेरे सामने सुलझाने के लिए एक गम्भीर और जटिल समस्या थी। पिताजी बीमार थे। शाम का वक्त था। वह एक आरामकुर्सी पर बैठे हुए थे। मैं उनके पास ही बैठी हुई थी। मैंने अपनी बात कही और उनकी सम्मति पूछी।

पिताजी ने अपना मुँह फेर लिया और झुँझलाकर कहा—"मैं नहीं जानता।"

मैं उठ खड़ी हुई।

मैं सोचने लगी—"मैं क्यों बोली? मैंने क्यों उनसे कहा?" मैं बड़ी लज्जित हुई इसलिए कि, मैंने पिताजी के सामने अपना हृदय खोलकर रख दिया। तुरन्त ही मेरे मन में यह विचार उठा—"किसी व्यक्ति को अपना मार्ग स्वय ही निश्चित करना चाहिए।" उसी क्षण यह विचार मेरे हृदय मे सदा के लिए दृढ हो गया।

नाच में

मैं किसी विश्वविद्यालय में जाने का विचार कर रही थी, परन्तु माँ-बाप, मुझे कैजाँ लेगये इसलिए कि, सामाजिक आनन्दों का मुझे प्रलोभन दिलायें; और मेरी दृढता की परीक्षा करें। वे उन्नतिशील व्यक्ति थे। परन्तु समाज मे यह चाल थी कि परिवार मे यदि कोई जवान लड़की हो तो वह लोगों के सामने लाई जाय। लोग उसे देखें और वह उन्हे अपनी चमक-दमक और हाव भाव दिखावे।

जिले में पिताजी से बहुत लोगों से जान पहचान थी। फिलीपौव नामका एक बूढ़ा जमींदार था। पिताजी की तरह वह भी स्थानीय मजिस्ट्रेट था। वह उनका मित्र था। वह बारहों महीने एकान्त में रहा करता था। उसकी स्त्री अपने बच्चों को पढाने लिखाने के अभिप्राय से कैजा में रहती थी। कैजां में फिलीपौव ने हमें अपनेघर ठहराने को निमन्त्रित किया। इसके फलस्वरूप जब दिसम्बर में हम रवाना हुए,

तब उसके परिवार के मेहमान बनने का अवसर हम मिला तभी कैजा में फिलीपोव के सबसे बडे लडके एलेक्सी वि रौविच (Alekse, Victorovich) से मेरा परिचय हुआ। वह कानून का पण्डित था। उस समय वह मजिस्ट्रेट के पद प काम कर रहा था। वह हमसे नित्य मिलता था। थियेटर, कुला पुरुषों की सभा और कमर्शल क्लब के नाच में वह बराबर साथ रहता था। उस समय तक, मैं पहले कभी थियेटर में न गई थी। मै कह नहीं सकती कि पहले पहल नाच मे शामिल हुई। वहाँ जाकर मैं अपने आपको भूल-सी गई मे प्रकाश से जगमगाती हुई नाट्य-शाला मे खडी हुई थी वहा मर्द-औरतों के जोडे बाजे की तानो के अनुसार नाच र थे। चारो ओर बहुत से सुन्दर स्त्री पुरुष खडे थे। मेरे लि सब अजनबी थे। मुझे वहा मालूम हुआ कि मैं निराली और अकेली सी हूँ। उस समय मैं रो भी सकती थी इतने ही में एलेक्सी तथा दूसरे नवयुवक मेरे चारों ओर वि आये, और मैं भी उस भीड में शामिल होकर डर और मुसीब सब भूल गई। आगे चलकर तो मैं बहुत साहसी होगई औ सामाजिक मनोरञ्जन की बातों मे कुछ कुछ रुचि भी बढने लगी कैजा मे हम बहुत दिनों तक न रहे। जब हम लौटकर गाँव शान्त वातावरण में आगये तब कैजा की सब बातें हवा होगई

उस घटना के थोडे दिन बाद ही एलेक्सी का कैजा से टैटीऊ को तबादिला होगया। वहाँ वह हमसे मिलते-जुलते रहते थे

न्होंने मेरे विचारो से सहमत होकर मेरे कार्य्यक्रम से पूरी सहानुभूति दिखाई। हम दोनों साथ-साथ पुस्तकें पढते थे और विश्व-विद्यालय में भरती होने के सम्बन्ध में हम दोनों का एक मत था। हम दोनों को परिचित हुए एक वर्ष भी न बीता था कि १८ अक्टूबर सन १८७० को निकीफौरोवो (Nikiforovo) के गिरजे मे हम दोनो की शादी होगई।

कुछ सप्ताह के बाद मेरे पिता का देहान्त होगया। इसके बहुत दिन पहले ही मेरी मा और दो बहिनें कैजा चली गई थी। वहा मेरे भाई पीटर और निकोलाई लडकों की एक प्राथमिक पाठशाला मे पढ रहे थे और बहिन लिडीआ विद्यालय मे अपनी पढाई का काम समाप्त कर रही थी। हम लोगों ने निकीफौरोवो में अपना घर बना लिया, और जिले की राजधानी हमें तनिक भी आकर्षित नहीं कर सकी।

शादी के बाद मेरे जीवन मे कोई परिवर्त्तन नही हुआ। अब मेरा विद्यालय में भरती होना बिल्कुल निश्चित था। अब पढने के लिए जूरिच जाने को केवल रुपये का प्रश्न था।

चर्नूसोवा की मैं बहुत कृतज्ञ हूँ। उससे मैंने जर्मन भाषा अच्छी तरह सीख ली। मेरे ग्रेजुएट होने के बाद ही मा ने मुझे शिलर और गटे की पुस्तके कैजा से लाकर पढने को दी थीं, और अब यहाँ विश्व विद्यालय के लिए तैयारी करते समय मैंने जर्मन भाषा की योग्यता बढा ली। इसके अतिरिक्त एलेक्सी से मैंने रेखागणित और बीजगणित भी सीख लिया। मैंने एलेक्सी

से, नौकरी छोडकर अपने साथ स्विट्जरलेंड चलने का अनुरोध किया। मेरा यह विश्वास था कि आदमी अज्ञान और गरीबी के ही कारण जुर्म करने को विवश होता है। मजिस्ट्रेट के काम को मैं बुरा समझती थी और उसने मेरे हृदय पर चोट पहुँचाई थी। मैंने एलेक्सी के आगे यह प्रस्ताव रखा कि वह भी डाक्टर बन जावें, अथवा अपने लिए कोई दूसरा काम ढूँढ ले। उनकी वह घृणित जगह छुडा देने के लिए मैं कितना भी नुक़सान उठा सकती थी। अन्त मे एलेक्सी से उनकी पहली नौकरी छुडवाकर डाक्टरी पढने के लिए, अपने साथ उन्हें विदेश ले जाने में मु सफलता मिली।

इस समय मित्रों और सम्बन्धियों से हमारा पारस्परि व्यवहार बहुत अच्छा था। मेरे काम के साथ उन सबकी सह नुभूति थी। सब लोग हृदय से मेरी सफलता चाहते थे। अ मैं यह अच्छी तरह समझती थी कि पहले जिन लोगों ने मे उन्नति में किसी भी तरह सहायता दी है उनके साथ क्या बर्ता होना चाहिए।

चुनाव का समय करीब था। डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चेयरमेन पद के लिए प्रिंस वोकोंस्की भी उम्मेदवार था। वह चतुर, किन्त बडा आलसी जीव था। उसने बडे रूखेपन से कहा कि मैं केवल वेतन के लिए काम करता हूँ, और मैं सुअरों का घेरने वाला अथवा स्थानीय मजिस्ट्रेट, मेरे लिए दोनों हालतों मे रहना ग की बात है। जिला-बोर्ड के चेयरमेन के पद के लिए वोकोंस्की क

अयोग्यता का ख़याल करके मेरे चाचा नाराज़ थे। मुझे आशा थी कि वह स्वयं उम्मेदवार होंगे। परन्तु वह खड़े नहीं हुए। बड़े दुःख के साथ मुझे कहना पड़ा कि बोर्ड का चेयरमैन ज़िले की राजधानी में रहने को बाध्य है। यदि चाचा बोर्ड के चेयरमैन हो जाते तो उनके शांत जीवन और खेती-बारी के कामों में विघ्न पड़ता। उसी समय मुझे मालूम हुआ कि मेरी स्वर्गीय चाची के पति वैरेन्का (Varenka) स्वयं किसानों पर इसलिए अत्यधिक अत्याचार कर रहे हैं कि उनकी रियासत में अनाज का नुक़सान हो गया है। यही व्यक्ति किसी समय विद्यालय से इसलिए निकाला गया था कि बैज़ना (Bezdna)* में जो किसान गोली से मारे गये थे, उनकी स्मृति में उसने जुलूस निकाल कर शोक प्रदर्शित किया था। उधर मैं यह चाहती थी कि एक व्यक्ति के कामों का उसकी कही हुई बातों के साथ सामञ्जस्य होना चाहिए।

इस बीच में हमारे विदेश जाने का जल्दी प्रबन्ध न हो पाया। विद्यालय में चार वर्ष तक पढ़ने के लिए हम रुपया इकट्ठा कर रहे थे। इसी बीच में मैंने कैज़ा जाकर विद्यालय में भरती होने का निश्चय किया। वहाँ मैं अपनी बहिन लिडीआ के साथ रहना चाहती थी। वह विद्यालय में अपनी पढ़ाई समाप्त कर चुकी थी।

* सन् १८६१ की विज्ञप्ति प्रकाशित होने के बाद यहाँ ग़दर हो गया था।

कैजा मे रसायन और शल्य-विद्या के अध्यापकों की देख रेख मे हमने पढाई आरम्भ कर दी। पहले अध्यापक थे तो अच्छे स्वभाव के, परन्तु उन्होंने हमारी पढाई में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, हमें केवल अपने ही प्रयत्नों पर छोड दिया। दूसरे अध्यापक ने हमारे हृदय मे अध्ययन करने की प्रवल इच्छा उत्पन्न कर दी। अपने सब विद्यार्थियों मे उन्होंने अपने ही बराबर विज्ञान के लिए उत्साह और आदर-भाव उत्पन्न कर दिया। उन्होने एक अध्यापक और व्यक्ति दोनों ही के रूप में, हममें हार्दिक प्रेम उत्पन्न कर दिया था। सभी विद्यार्थी उन पर प्रेम करते थे। सबने उनके योग्य विद्यार्थी बनने का उद्योग किया।

शल्य विद्या के उक्त अध्यापक का नाम था लेशाफ्ट (Lesha ft)। उनकी देख रेख मे हमारी पढाई पूरी रफ़्तार पर हो रही थी। हम अनुभव करते थे कि हमारे लिए उन आश्चर्य्य-जनक चीज़ो की दुनियाँ बन रही है जिनका हमने कभी स्वप्न में भी खयाल नही किया था। एक दिन सुबह रसायन-शाला में जाने पर हमने देखा कि काम करने की मेज़ें खाली पडी हुई हैं। यह जान कर हमारे आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा कि लेशाफ्ट विद्यालय से अलग कर दिये गये। सुना यह गया कि कुछ अध्यापकों ने, लेशाफ्ट के निर्भीक तथा दृढ चरित्र से नाराज होकर, सेंटपीटर्सबर्ग मे अधिकारियो से शिकायत की है कि वह यूनिवर्सिटी के युवकों पर हानिकारक प्रभाव डाल रहे हैं। इस बात से हम सबको बडा क्रोध और दुःख हुआ। लेशाफ्ट के जाने

से पहले हम लोग उनसे मिलने गये। हमने उन्हें सदा की तरह शान्त और प्रसन्न पाया। हमने उन्हें कष्ट के साथ प्रणाम किया और चले आये। उनके चले जाने के बाद फिर वहाँ ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो हमें अधिक समय तक कैज़ा में रखता। एक बार फिर मैं टैटीञ्शी जिले के गाँव में चली आई। सन् १८७२ की वसन्त ऋतु में हम तीनों व्यक्ति—मैं, बहिन लिडीआ तथा मेरे पति—नीकीफ़ौरौवो से ज़ूरिच के लिए रवाना हो गये।



४

ज़्यूरिच में



रिच के विश्वविद्यालय में पहुँच कर मेरा विच डाक्टरी पढने का था। मैं इस काम में तन्म से जुट जाना चाहती थी। धीरे धीरे वा हमारा मेल-जोल बढ गया और कुछ हम मित्र भी बन गये। मेरी बहिन लिडीया खा कर रूसी छात्राओं में बहुत घुल मिल गई, यहाँ तक कि, व उन्हींके पास रहने लगी। यहाँ बहुत से नये आदमी थे नई बातें और नई घटनाएँ देखने को मिलीं। विद्यार्थियों लिए पुराने और अस्त-व्यस्त पुस्तकालय की जगह ए नया और सुव्यवस्थित पुस्तकालय खोल दिया गया था स्त्रियों के लिए वाद विवाद करने को एक क्लब था। इस विचारों के विकास के लिए बड़ा अच्छा मसाला मिल ग था। यहाँ बड़े जटिल प्रश्नों और उच्च विषयों पर वा विवाद होता था। उनमें विद्यार्थी बड़ा उत्साह दिखाते थे। क्ल की बैठकों में बड़ा हुल्लड मचता था। इसीलिए यहाँ ए सिद्धान्तों के ढूँढ निकालने का कम अवसर था जिन पर सब ल

मत हो। स्त्रियों का क्लब, तो ५ ६ हफ्ते में खत्म होगया। एक दूसरा 'फ्रीची क्लब' (Frichi Club) था। यह पहले से अधिक अच्छा था। वहाँ हमने सामाजिक, और मजदूरों से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं तथा साम्यवाद के इतिहास का अध्ययन किया। इतना करने पर भी, हमने विश्वविद्यालय की पढ़ाई मे तनिक भी बेपरवाही नहीं की। अध्यापक एक स्वर से अपनी रूसी छात्राओं के उद्योग की प्रशंसा करते थे। थोड़े दिन बाद अचानक रूसी सरकार का एक अपमान-जनक हुक्म आया कि हम लोग विश्वविद्यालय छोड़ दें। इस हुक्म के निकालने का बहाना यह किया गया था कि हम लोगों का चरित्र अप्रमाणित है। एक सभा की गई और उसम सरकार के इस काम का विरोध किया गया। हम लोगों में, जो बहुत दकियानूसी थे, वे अलग होगये, और विरोध में उन्होंने हमारा साथ नहीं दिया। इसी समय से जूरिच की सुसाइटी तितर बितर हो गई।

मेरे पति और मैं, दो विपरीत मार्गों का अनुसरण कर रहे थे। वह दकियानूसी विचारों की ओर झुके हुए थे और मैं सदा गरम दल की ओर अधिकाधिक आकर्षित होती गई। मेरा यह विश्वास होगया कि डाक्टरी केवल एक बहाना है। इससे समाज और देश की सेवा नहीं हो सकती। वह सेवा तो केवल सामाजिक और राजनैतिक सुधारों ही से हो सकती है। अपने साथियो के साथ मुझे भी यह विश्वास होगया कि अन्यायपूर्ण नाशक सामाजिक ढाँचा ही सब सामाजिक बुराइयों की जड़ है,

द्वारा प्रचार करने के प्रोग्राम पर अमल किया। दल के मम्बर कारखाने के केन्द्रों में विभाजित हो गये। कुछ लोग मॉस्को के कारखाने में घुस गये। कुछ एक जगह जाकर जुलाहों का काम करने लगे। कुछ लोग कियैव (Kiev) में शक्कर के कारखाने मे काम करने लगे। चोथा दल तुला (Tula) म जाकर प' गया। सन १८७५ की शरद ऋतु में हमारा यह दल छिन्न भिन्न होगया। वे सब आदमी, जिनका दल से सम्बन्ध था, तथा बहु से मजदूर कैद कर लिये गये। परन्तु इतने जबर्दस्त धक्के के बाद भी, कुछ लोग बच गये। उन्होंने काम जारी रखने के लि नया प्रोग्राम बनाया।

आगे चलकर क्रान्तिकारी दल के बचे हुए आदमियों को याद आया कि इस दल के कुछ आदमी विदेशों में भी हैं औ वे इस बात की प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि "सब लोग एक के लिए और एक सबके लिए" सदा काम करेंगे। मार्क नैटन्सन ने डौरौ एप्टेकमेन और मुझसे प्रार्थना की कि हम लोग मॉस्को पार्टी को नियमित रूप से चलाने का प्रबन्ध करे। बड़ी कशमक के बाद मैंने यह काम करने का निश्चय किया। मैंने वसन्त के दिनों मे अपने पति को लिख दिया था कि अब मैं आपसे आर्थि सहायता नहीं लूँगी, मेरे साथ अब कोई भी सम्बन्ध न रखिये। बस, तभी से मेरे मार्ग मे उनकी कोई रुकावट नहीं रही। परन्तु मैं डाक्टरी के डिप्लोमा के लिए क्या करती ? मेरी पढाई समाप्त होने मे ५-६ महीने बाकी थे। डाक्टरी की परीक्षा के लिए उ

लेख लिखना पड़ता है उसका विषय मैंने सोच लिया था। मैं एक दो महीने में उसे लिखना आरम्भ करने वाली थी। मेरी माता, मित्रों तथा सम्बन्धियों को बड़ी बड़ी आशाएँ लग रही थीं इस बात की कि, मैं बहुत ही योग्यता से डाक्टरी पास करके बड़े परिश्रम और साहस का काम करूँगी। परन्तु यह सब बातें व्यर्थ हुईं। जबकि लक्ष्य बिल्कुल मेरी आँखों के सामने था, तभी यह सारी आशाएँ अपने ही हाथों से मैंने धूल में मिला दीं। मैंने इस समस्या के दोनों पहलुओं पर विचार किया। एक ओर तो मेरे मित्रों की यह आशा थी कि मैं डाक्टरी पास करूँगी, इस-लिए इस काम में उन लोगों ने मुझे हर तरह से सहायता दी थी। और दूसरी ओर, वे आदमी थे जिन्होंने इन भावनाओं और अपनी व्यक्ति-गत कामनाओं का त्याग कर दिया था और अपने सम्बन्धियों की इच्छाओं के आगे भी सर नहीं झुकाया था। मैंने सोचा कि यह आदमी जेलों में कष्ट सहन कर रहे हैं और उन सख्तियों और कठिनाइयों को अनुभव कर रहे हैं जिनके लिए मन म हम सब लोग तैयारी कर रहे हैं। मैंने यह भी अनुभव किया कि एक डाक्टर के लिए जो ज्ञान आवश्यक है वह मैंने अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है, केवल उसके लिए एक सरकारी मुहर की कमी है। जो लोग हमारे सब मामलों से परिचित थे, उन्होंने कहा कि मेरी इसी क्षण जरूरत है और इस समय मैं उस काम के लिए बड़ी उपयोगी हो सकती हूँ जिसके लिए मैंने तैयारी की है। इन सब बातों का खयाल करके मैंने जूरिच से

जाना ही निश्चित किया इसलिए कि, मेरे काम मेरी बातों को झूठी साबित न कर सके। मैंने खूब अच्छी तरह समझ-सोच कर दृढ निश्चय किया था, इसलिए उसके लिए पीछे से मुझे कभी पछताना नही पडा। दिसम्बर सन'१८७५ में, मैंने स्विट्जरलैण्ड छोड दिया। यहाँ से मैं अपने साथ उन दिनों की ज्वलन्त स्मृति लेगई जिनमे मुझे वैज्ञानिक ज्ञान, अच्छे और मित्र और इतना ऊँचा लक्ष्य मिला था, जिसके सामने सब बलिदान तुच्छ जान पडते हैं। उन्ही दिनों जबकि मैं रूस लौट रही थी, मेरी माँ अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए स्विट्ज़रलैंण्ड जाने की तैयारी कर रही थी। लिडीआ की गिरफ्तारी से माँ का स्वास्थ्य बहुत बिगड गया था। मेरे इस प्रकार लौटने की कोई आशा नहीं थी, अत सेटपीटर्सबर्ग में अचानक माँ से मेरी भेंट होगई। यह कहना व्यर्थ है कि मेरा रूस लौट आना उसके लिए कितना दुखदायी हुआ। कुछ दिन के बाद मेरी छोटी बहिनों औल्गा और ईब्जीनिया को साथ लेकर माँ चली गई।

माँ के चले जाने के बाद मैं मॉस्को में रहने लगी। यहाँ उजडे हुए क्रान्तिकारी दल का केन्द्र था। मैं और मेरे साथी पुलिस की निगाह मे न पडें, इसलिए मैं अपनी बहिन लिडीआ से भी न मिल सकी। लिडीआ मॉस्को के एक थाने में कैद थी। इस बात पर बडी आसानी से मैं सहमत हो गई, क्योंकि मैं मॉस्को उसके लिए तो आई नहीं थी। मुझे यह पूरा निश्चय और आशा थी कि मेरे सामने जो सार्वजनिक काम है वह मेरे

मानसिक और आध्यात्मिक साधनों के सामने ऐसी विस्तृत माँग पेश करूँगा कि मेरे जीवन से व्यक्तिगत बातें बिल्कुल अलग हो जायँगी। अत्यन्त कटु और वास्तविक स्वप्न मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ मित्रों ने, मेरी तरह क्रान्तिकारी कामों की आवश्यकता अनुभव की। उन्होंने एक पार्टी का सङ्गठन कर लिया। उसका सङ्गठन और व्यवस्था अच्छी नहीं थी। उन लोगों को अनुभव न था, इसलिए काम करने के लिए वे कोई व्यावहारिक ढाँचा भी नहीं बना सके। जो सबसे अच्छे और योग्य आदमी थे, वे तुरन्त ही गिरफ़ार कर लिये गये। स्थानीय युवकों ने काम की कोई तैयारी नहीं की थी। उन मजदूरों ने, जिनके हम ससर्ग मे आये, हमारी पाकेट-बुकों का दुरुपयोग कर के मारा गुड गोबर कर दिया। इस ढँग से काम करने से कोई लाभ नहीं था। लोग अलग अलग टुकडियों मे बँट गये थे। उनकी कोई नियमित प्रणाली और सङ्गठन नहीं था। किसी भी तरह मैं अपने आपको इस गडबडी में न रख सकी।

जेल में अपने मित्रों से मिलने-जुलने का काम मेरे सुपुर्द किया गया। सारे दिन मैंने इशारों की भाषा मे पत्र लिखने में बिता दिये। शाम को मैं गन्दे शराबखानों मे जाकर कुछ लोगों से मिलती, या मॉस्को के अँधेरे रास्तों और गलियों मे उन पुलिस वालों से मिलती थी, जिनसे मिलने का मेरा समय नियत रहता था। इन लोगो का सहारा तकना बडा घृणित काम है। किमी समय भी यह लोग दोनों ओर के आदमियों को धोखा

देसकते हैं। हमने कुछ मित्रों को जेल से छुड़ाने का प्रा...
बनाया था, परन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला, उसमें बहु
सा खर्च और होगया।

क्रान्तिकारी दल की दशा अच्छी न थी। सरकार के जुल्
से अब-तक बने हुए सब दल अस्त-व्यस्त होगये। न्याय विभा
के मिनिस्टर की रिपोर्ट के अनुसार लगभग आठसौ आदम
विभिन्न अपराधों के अपराधी थे। जो स्थायी रूप से हवालात
कैद थे, अथवा जिनके मामले की जाँच हो रही थी, उनक
सख्या तो बहुत अधिक थी। इस प्रकार सरकारी दमन
दिनों प्लेग की तरह भयङ्कर रूप धारण कर रहा था—उसक
भट्टी में हर एक आदमी ने अपना कोई मित्र या सम्बन्धी
दिया। इससे न जाने कितने परिवार दुखी थे। परन्तु यह स
आफतें उस जबर्दस्त धक्के के मुकाबले कुछ भी नहीं थी,
क्रान्तिकारी प्रचार आन्दोलन को लगा था। बहुत से कार्
कर्त्ताओं की आशाएँ धूल में मिल गई। जो प्रोग्राम इतन
आशा-प्रद और उपयोगी मालूम पड़ता था, उससे कोई नती
नहीं निकला। जो आदमी जनता में बड़े उत्साह से प्रचार कर
गये थे, उनका उत्साह एक दम भङ्ग होगया। हमारे काम क
पुराना तार तो टूट गया, परन्तु अभी तक कोई नया रास्त
नहीं सूझा।

कुछ कार्य्यकर्त्ताओं ने इधर-उधर बिखरी हुई शक्तियों क
फिर से सङ्गठित करने की व्यर्थ ही चेष्टा की। सब लोग तितर

ंतर हो गये। उनके नेताओं ने अपनी पुरानी नीव पर, पुराने ों विचारों के अनुसार काम का ढाँचा बनाया था। परन्तु मार्क टन्सन दो और क्रान्तिकारी पार्टियों को मिलाने में सफल हो गये। इनमें से एक दल लैवरिस्ट लोगों का था। यह दल लैवरौव (Lavrov) का अनुयायी था। इसने 'फारवर्ड' पत्र को धन आदि से सहायता देकर चलाया था। महीने के अन्त में यह पार्टी टूट गई। इसके बाद प्रचारकों का एक दल नेजनी नौव्गौरौड (Nizhni Novgorod) नामक स्थान में काम करने गया, परन्तु वहाँ से उसे जबर्दस्ती वापस कर दिया गया। पुलिस की निगरानी वहाँ बड़ी सख्त थी। किसी भी नये काम की झलक इतना सन्देह पैदा कर देती थी कि प्रचारकों का देहात में रहना असम्भव हो गया।

इन उद्योगों के बाद नई नई बातों के आयोजन बिल्कुल लुप्त हो गये। मैं स्वयं इतनी परेशान थी कि मर जाने की इच्छा की। उस समय जिन लोगों में मेरा परिचय था, उनमें एक व्यक्ति एण्टौन टैक्सिस की मुझे अब भी याद है। वह लैवरिस्ट पार्टी के आदमी थे। वह एक झूठा पासपोर्ट दाखिल करके वहाँ रहते थे। बड़ी निराशा के क्षणों में उन्होंने मुझे उत्साह दिलाया और धीरे-धीरे मेरे मन में वे सिद्धान्त जमा दिये जिन्हें मैं कभी भूली नहीं। उन्होंने मुझे वे कारण बतलाये जिनसे क्रान्तिकारी आन्दोलन असफल हुआ। एक सच्चे लैवरिस्ट की तरह उन्होंने उक्त काम की असफलता का वास्तविक कारण बतला दिया कि

आन्दोलन सिद्धान्तों की दृष्टि से तो बहुत अच्छा था, पर उतना व्यावहारिक नहीं था। कार्य्य-कर्त्ताओं ने यथोचित तैयारी न की थी, और न, उनके काम के ढँग में कोई खूबी थी। क्रान्तिकारी आन्दोलन के भविष्य में उन्हें पूरा विश्वास था। वर्तमान अवस्था को वे क्षणिक और ऐसा परिवर्तन-काल समझते थे जो किसी भी आन्दोलन के लिए अनिवार्य्य है। उन्होंने मेरे ऊपर प्रभाव डाल कर बराबर यही समझाया कि अपने उद्देश की पूर्ति के लिए क्षणिक जोशीले वलगों की जरूरत नहीं, बल्कि बहुत ही धैर्य और तत्परता से काम करने की जरूरत है। यह हो सकता है कि इस प्रकार के कठोर परिश्रम का प्रत्यक्ष फल कुछ न मालूम हो, परन्तु फिर भी हमें निराश न होकर इसी तरह काम करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। आगे चल कर एन्टौन टी... ने कहा कि प्रत्येक नया विचार धीरे धीरे जीवन में प्रवेश करता है, और एक ऐतिहासिक स्थिति ऐसी भी आ सकती है जब एक व्यक्ति अपने कामों की प्रगति उस क्षेत्र की ओर मोड़ दे जो उसके सामने खुला पड़ा हो। उन्होंने मुझे इसलिए भी प्रेरित किया कि मैं मास्को छोड़ कर देश में कहीं अन्यत्र बस जाऊँ और स्वयं देखूँ कि रूसी लोग किस प्रकार एक जन्तु विशेष की तरह हैं।

बसन्त के दिनों में मेरे काम का भार एक दूसरे आदमी ने ले लिया। इसलिए मैं यरोस्लाव चली आई। एक अनुभवी व्यक्ति की सलाह पर, मैंने अपनी विदेश-यात्रा और जूरिच विश्वविद्यालय

-य मे पढने की बात छिपा ली। इससे कोई भी व्यक्ति मेरे रित्र पर सन्देह कर सकता था। इसी दशा मे मैंने यरोस्लाव अस्पताल मे जाना शुरू कर दिया। ६ सप्ताह के बाद ासिस्टेंट सर्जन की जगह के लिए मेडिकलबोर्ड की परीक्षा हुई। ोर्ड के इन्स्पेक्टर के कथनानुसार मैंने "पुरुष विद्यार्थी की रह" प्रश्नों के उत्तर दिये और स्वय उसकी अपेक्षा में लैटिन ापा अच्छी जानती थी। मेरे डिप्लोमा मे कहा गया कि ने बहुत ऊँची योग्यता के साथ परीक्षा पास की है।

यरोस्लाव (Yaroslavl) से मैं कैजाँ चली गई। यहाँ मुझे छ घरलू बातों का निपटारा करना था। मैं और मेरे पति, ानूनी ढँग से पारस्परिक सम्बन्ध विच्छेद करने पर सहमत हो ये। कुछ महीनों के बाद हम दोनों का सम्बन्ध विच्छेद हो ाया। लौटकर सेंटपीटर्सबर्ग जाने पर, डाक्टरी विद्यालय मे नि दाई का इम्तिहान पास किया। नवम्बर सन् १८७६ मे मेरे ाब सासारिक झगडे तय होगये। मैंने बडी दृढता से बीता ुआ घटना-चक्र भविष्य के गर्भ म गाड दिया। २४वें वर्ष मे तो ारा जीवन पूर्णतया रूस के क्रान्तिकारी आन्दोलन से सम्बद्ध ा गया।



५

कार्यक्रम



न् १८७६ के अन्त तक रूस के क्रान्तिक दल दो मुख्य शाखाओं में बँट गए। शाखा में थे प्रचारक और दूसरी में विद्रोह पहला दल उत्तर मे और दूसरा दक्खिन फैला हुआ था। पहले दल के विचार लैव (Lavrov) के 'फारवर्ड' पत्र के अनु थे और दूसरे के विचार बाकुनिन (Bakun के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों के। इस बात पर दोनों ही दल स थे कि हमारा काम देहातियों में होना चाहिए। दोनों दल काम करने की शैली बिल्कुल निराली थी। प्रचारकों ने म कि साधारण जनता कोरे कागज की तरह है, जिस प साम्यवादी अक्षर लिख देंगे। उन्होंने निश्चय किया कि उ को नैतिक और मानसिक रूप से अपने ही बराबर उठा दें उसमे अल्प संख्या बहुत ही मजबूत और होशियार लोग कायम कर दें, जो समय पर निश्चय ही एक प्रारम्भिक सङ्गठित विद्रोह खड़ा कर सकें। साम्यवादी सिद्धान्तों

दर्शों को साधारण जनता में फैलाना भी प्रचारकों का काम था। काम के लिए अथक उद्योग और व्यक्तिगत योग्यता की जरू- थी। दूसरी ओर विद्रोही लोग थे। वे साधारण जनता को ाने का इरादा नहीं रखते थे। उनका कहना था कि जनता हमें शिक्षा लेनी है। उनकी राय में, वर्त्तमान परिस्थिति के ही रण लोग स्वयं साम्यवादी हो चुके थे और सामाजिक क्रान्ति लिए अब वे बिल्कुल तैयार थे। वे वर्त्तमान शासन प्रणाली घृणा और सदा उसका विरोध करते थे। क्रियात्मक रूप से, यवा निष्क्रिय प्रतिरोध करते हुए, वे सदा से एक विद्रोह की ा में रहते चले आरहे थे। पढ़े लिखे लोगों का यह काम था इन छोटे मोटे व्यक्तिगत विरोधों और उपद्रवों को एक सूत्र बाँध कर एक प्रबल जल धारा की तरह शक्तिशाली बना लें। ान्तिकारियों ने काम करने का जो ढँग अख्तयार किया, उसमें ान्दोलन करना, अशान्ति फैलने वाली अफवाहें फैलाना, कैती डालना, शाही गद्दी के दावेदार खड़े कर देना आदि बहुत ी बातें शामिल थीं।

कोई नहीं जानता था कि जनता बदला लेने के लिए कब उठ खड़ी होगी। लोगों में ज्वाला भड़काने वाला मसाला तना इकट्ठा हो चुका था कि एक छोटी सी चिनगारी ासानी से उस अनल-ज्वाल को प्रज्ज्वलित कर सकती थी। ाद में वही ज्वाला बड़ी भारी आग की लपटों में परिणत हो सकती थी।

किसानों की अवस्था ऐसी थी कि केवल एक
जरूरत थी। पढ़े लिखे लोग तो चिनगारी का काम
यह जरूर था कि विद्रोह में लोगों की हालत बहुत
होजाती, उनमे शान्ति और व्यवस्था का नाम न रहता,
उनकी राष्ट्रीय भावना आगे चलकर उन्हें रास्ता दिखाती,
वे नये सिरे से अपनी व्यवस्था बना लेते। इस प्रोग्राम को
करने के लिए आन्दोलनकारियों में किसी खास सङ्गठन
अनुशासन की जरूरत नहीं थी। हर जगह ल
तैयार थे। यह निश्चय करने की जरूरत ही न थी कि
कहाँ से आरम्भ किया जाय। पहली चिनगारी कहीं भी
किसी भी समय आग चारों ओर फैल जायगी।

दक्षिण की अपेक्षा, उत्तर में क्रान्तिकारी
दशा अच्छी थी। धीरे धीरे यहाँ की हालत अधिकाधिक
हो रही थी। उसमें स्थायित्व था इसलिए कि, काम करने
लोग अनुभवी थे। इधर दक्षिण में काम करने वाले
हो गये। उनका कोई परम्परागत अस्तित्व भी न बचा।
मे वे मिटा दिये गये। उनमें जो कुछ थोडे से आदमी बचे,
दलो मे शामिल होगये।

उत्तर मे लोग बराबर अपना काम कर रहे थे। सन्
मे चैकौव्स्की (Tchaikovsky) के दल ने एक नई
स्थापना की। इस समिति का नाम था 'लेण्ड एण्ड
(भूमि और स्वतन्त्रता)। आगे चलकर सन् १८७९ में,

मति से 'विल आफ दी पीपुल' (जनता की इच्छा) नाम की दूसरी पार्टी बन गई।

जहाँ तक लोगों में व्यावहारिक काम का सम्बन्ध है, वहाँ 'प्रचारक' और 'विद्रोही' उपर्युक्त दोनों ही दल असफल। पहले के निश्चित किये हुए कार्यक्रम को पूरा करने में, लोगों मार्ग में सचमुच ऐसी बाधाएँ आईं जिनकी कभी आशा नहीं और जो दूर नहीं की जा सकती थीं। फिर भी, कुछ लोग न्तिकारी कामों को जारी रखने और एक निश्चित कार्यक्रम करने को तैयार थे। बहुत से कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये। जो कुछ उनमें बचे, वे बहुत अनुभवी थे। उन्होंने पिछले नुभव के बलपर बिल्कुल नये ढँग से क्रान्तिकारी कार्य करना रम्भ कर दिया। इन उद्योगों के फलस्वरूप एक नया कार्यक्रम काश में आया। वह प्रोग्राम 'नैरौडनीकी'*(Narodniki) के म से प्रसिद्ध हुआ। इस कार्यक्रम में उक्त दोनों पार्टियों का ग्राम सम्मिलित था।

इस कार्यक्रम के मूल सिद्धान्त प्राय वैसे ही थे, जैसेकि, तिहासिक विकास की अवस्था में प्रत्येक देश के हुआ करते। रूसी लोगों का अपना एक दृष्टिकोण था। वह उन नैतिक ौर मानसिक विचारों के अनुसार था जो उनकी वर्तमान रिस्थितियों के अनुसार बने थे। इसी दृष्टिकोण का अङ्ग होने के

*नैरौड(Narod) का अर्थ है जनता। नैरौडनिक (Narodnik) ा अर्थ हुआ सार्वजनिक (Populist)।

कारण, कोई भी व्यक्ति समझ सकता है कि राजनैतिक आर्थिक प्रश्नों की ओर सार्वजनिक प्रवृत्ति कैसा साधारण स्थिति में, शासन-संस्थाओं का परिवर्तन करने से इन विचारों का बदलना बहुत कठिन था। इसलिए यह था कि क्रान्तिकारी कार्यों में सबसे पहले, लोगों की और उनकी इच्छाओं का उपयोग करने का प्रयत्न किया और क्रान्तिकारी झण्डे पर उन आदर्शों को चित्रित जाता जो जनता के दिमाग में घर कर चुके थे। आर्थिक मे इस प्रकार का आदर्श था भूमि पर उन लोगों के का, जो उसे जोतते हों। जब तक जिस जमीन को एक जोतता रहे, तब तक उसपर उसीका अधिकार रहे। प्रकार का दूसरा सार्वजनिक आदर्श था जन-सङ्घ के और उसके द्वारा समस्त भूमि को जप्त कर लेने का। यह साम्यवाद की शिक्षा से मिलता-जुलता था। किसानों के से जार का विश्वास हटा देने के लिए यह आवश्यक था उनके सामने समुचित रूप से यह सिद्ध कर दिया जाता जार साधारण जनता का हितैषी नहीं है। इस काम के कोई भी व्यक्ति लोगों को उभाड़ता और उन्हें जार के दरख्वास्तें लेकर भेजता, जब उन्हें अपनी तकलीफें दूर में सफलता न मिलती तब उससे उनका स्वप्न अपने आप होजाता। इसके अतिरिक्त क्रान्तिकारी, गाँवों में क्लर्क डाक्टर और छोटे छोटे दुकानदार के रूप मे किसानों में

की सोयी हुई निकम्मी शक्ति और समझ को जागृत करने लग गये।

'भूमि और स्वतन्त्रता'

सन १८७६ के अन्त में 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' (भूमि और तन्त्रता) नामकी समिति बन गई। इसकी स्थापना करने लों में से मै भी एक थी। परन्तु इसमें पथ प्रदर्शक थे चैकौव्स्की Tchaikovsky) दल के पूर्व सदस्य मार्क नैटन्सन (Mark-atanson)। वे हालही मे निर्वासन से लौटकर आये थे। यह म भी, 'भूमि और स्वतन्त्रता' नामकी उस समिति की ति में चुना गया था जो सन् १८६० के आरम्भ मे अपना म कर रही थी। हमारा कार्यक्रम था समाज के सब व्यक्तियों काम करना, पल्टन, नौकरशाही, देहात मे रहने वाले धिकारी तथा छोटे मोटे पेशेवर आदमियो पर अपना आतङ्क साना और सरकार के विरुद्ध लोकमत सङ्गठित करना। इन्ही द्योगों के फलस्वरूप सेण्टपीटर्सबर्ग में कैज़ाँ के गिरजे मे एक ड़ा जुलूस निकाला गया था। उसके नेताओ मे एक युवक लेखानौव* (Plekhanov) भी थे। उस अवसर पर पुलिस के ारा बहुत से आदमी पीटे और गिरफ़्तार किये गये। बाद मे न आदमियों पर मुक़दमा चला और वे जेल भेज दिये गये।

*१८५७—१९१८—वे रूस में कार्लमार्क्स के साम्यवाद आन्दोलन के प्रवर्तकों में से एक थे।

ापदर आर छा

ो उम्र मे, मैं उस बच्चे की तरह लोगों के सामने आई जिसके ाथों में उन्होंने एक अद्भुत और असाधारण उद्देश छोड दिया।

सबसे पहले मैंने उन कामों में अपना हाथ लगाया जिनके रा करने की मेरे ऊपर जिम्मेदारी थी। ३० मे से १८ दिन तक । मैं घर से दूर गाँवों और छोटे नगलों का दौरा करती रही। न दिनों में सचमुच गरीबी और दुखों के अथाह सागर म डूब ई। मैं प्राय एक झोपडे पर ठहर जाती। वहाँ गाँव के मुखिया ा उसके सहायको से मेरे आने की खबर पाकर २०-४० रोगी कट्ठ हो जाते। उनमे बूढे और जवान, बहुत सी स्त्रियाँ और नसे भी अधिक वे बच्चे होते थे, जिनकी चीख पुकार चारों ोर गूँज उठती थी। इन मैले-कुचैले और दुबले मरीजों को ई आदमी बराबरी के भाव से नहीं देख सकता। उनके धिकाश रोग बहुत पुराने थे। उनके सिर-दर्द और गठिया रोग १० से १५ वर्ष तक के पुराने थे। चमडे के रोगों से ाय सभी पीडित थे। कुछ ही गाँवो मे नहाने धोने का बन्ध था। बहुत से आदमी सन्निपात, साँस, गर्मी आदि यङ्कर बीमारियों के शिकार थे। असल में वे दायमुल-रीज थे। उनके कपडे और रहने के मकान बहुत ही मैले-कुचैले ौर गन्दे थे। भर-पेट भोजन तक उन्हें नसीब नहीं था। इस शा में उन्ह देखकर बडे शोक और विस्मय से मैंने अपने ापसे पूछा—यह सब पशुओं का जीवन है, या मानव-नुधारियों का? जब इन अभागों के लिए मैं दवा तैयार

इसके बाद हममें से कुछ लोग सेंटपीटर्सबर्ग मे रह गये, बाकी सैराटौव और एस्ट्रखान के प्रान्तों में चले गये। हम जो दल 'सैपरेटिस्ट, कहलाने लगा था, उसने अपना काम के लिए समारा प्रान्त चुन लिया। मैं वहाँ अगस्त सन् १८७ पहुँच गई।

पहला उद्योग

मैं समारा (Samara) मे, जिले के एक युवक डाक्टर पास सिफारिश करके भेज दी गई। वह डाक्टर बिल्कुल मे से विचारों के थे। उन्होंने मुझे अपने जिले के स्टूडेन (Studentsy) नाम के एक बडे गाँव मे नियुक्त करा दिया। मेरे सर्किल मे १२ गॉव थे। हर महीने उन सब गॉवों का दोरा करती थी। अपने जीवन मे पहली बार यहाँ साधा जनता के साथ मुझे देहाती जीवन का सामना करना पडा। से मेरे सम्बन्धी, परिचित मित्र और शिक्षित आदमी बहुत थे। यह मैं मानती हूँ कि यहाँ किसानों के जन-सागर में मैंने अ आपको अकेली, निर्बल और असहाय अनुभव किया। मैं तक न जानती थी कि एक देहाती आदमी से बात चीत करनी चाहिए।

अब तक मैंने दुखी किसानों के रहने के स्थानों को पास नहीं देखा था। मैं पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखो और आँकड़ों लोगों की गरीबी और उनके दुख जानती थी। अब २५ व

ो उम्र में, मैं उस बच्चे की तरह लोगों के सामने आई जिसके
ाथों में उन्होंने एक अद्भुत और असाधारण उद्देश छोड़ दिया।

सबसे पहले मैंने उन कामों में अपना हाथ लगाया जिनके
रा करने की मेरे ऊपर जिम्मेदारी थी। ३० में से १८ दिन तक
मैं घर से दूर गाँवों और छोटे नगरों का दौरा करती रही।
न दिनों मे सचमुच गरीबी और दुखों के अथाह सागर म डूब
ई। मैं प्राय एक झोपड़े पर ठहर जाती। वहाँ गाँव के मुखिया
ा उसके सहायकों से मेरे आने की खबर पाकर ३०-४० रोगी
कट्ठे हो जाते। उनमें बूढ़े और जवान, बहुत सी स्त्रियाँ और
नसे भी अधिक वे बच्चे होते थे, जिनकी चीख पुकार चारों
ोर गूँज उठती थी। इन मैले-कुचैले और दुबले मरीजों को
ोई आदमी बराबरी के भाव से नहीं देख सकता। उनके
धिकाश रोग बहुत पुराने थे। उनके सिर-दर्द और गठिया
रोग १० से १५ वर्ष तक के पुराने थे। चमड़े के रोगों से
ाय सभी पीड़ित थे। कुछ ही गाँवों में नहाने धोने का
बन्ध था। बहुत से आदमी सन्निपात, साँस, गर्मी आदि
यङ्कर बीमारियों के शिकार थे। असल में वे दायमुल
रीज थे। उनके कपड़े और रहने के मकान बहुत ही मैले-कुचैले
ोर गन्दे थे। भर पेट भोजन तक उन्हें नसीब नहीं था। इस
शा में उन्हें देखकर बड़े शोक और विस्मय से मैंने अपने
ापसे पूछा—यह सब पशुओं का जीवन है, या मानव
नुधारियों का? जब इन अभागों के लिए मैं दवा तैयार

करती थी तब अक्सर मेरी आँखों से आँसुओं की झड़ी ल
जाती थी।

शाम तक बड़ी शान्ति से मैं मरीजों को दवा बाँटती
किसी को चूरन देती और किसी को मरहम। साथ ही यह
बतलाती जाती थी कि वे दिन में तीन या चार बार कैसे
इस्तेमाल कर। काम कर चुकने पर मैं जमीन पर अपने लि
के लिए बिछी हुई घास के ढेर पर पड़ रहती थी। निराशा
बादल मुझे घेर लेते। मैं सोचने लगती—क्या इस
गरीबी का कभी अन्त भी होगा? चारों ओर फैली हुई गन्द
में ये सब नुस्खे एक ढकोसला नहीं हैं? ऐसी अवस्था में वि
का कोई विचार भी होसकता है? उन लोगों से, जिन
शारीरिक दशा बिल्कुल कुचल गई है, विरोध और सङ्घर्ष
बात भी करना, उनके ताना मारना नहीं है?

तीन महीने तक रोज मैं यही दृश्य देखती रही। इतने प
से देखने पर ही किसी व्यक्ति को हमारी जनता की स्थिति
वास्तविक परिचय मिल सकता था। यह तीन महीने,
लिए, सार्वजनिक जीवन की भौतिक दिशा के बड़े भया
अनुभव के थे। इस दशा में लोगों की आत्मा को देखने
मुझे अवसर ही न मिलता था। प्रचार के लिए मेरा मुँह खु
भी न सका।

उस समय समारा (Samara) में चेपुरनौवा (Chepurnov
नाम की एक महिला गिरफ्तार कर ली गई। उसके कागजों

तरे तथा अन्य मित्रों के लिए लिखे गये पत्र भी पाये गये। इसके लिए पीटर्सबर्ग से हमें चेतावनी दी गई और वहाँ से मेरा तबादिला कर देने के लिए एक आदमी भेज दिया गया। मेरे चले आने के एक हफ़्ते बाद स्टुडेंट्सी (Studentsy) गाँव में हथियारबन्द पुलिस रख दी गई।



६

गाँव में



क्या ट्कौव्स्की, और सौलौयैव दोनों आ[illegible] गाँव में लुहार की दूकान करते थे। वह उन्होंने छोड दिया। अब उन लोगों क[illegible] मिलकर मैंने वौरौने (Voronezh) में बसने का निश्चय किया। हम आदमी वहीं रहने लगे। इसके थोडे ही बाद १९३ अभियुक्तों के मामले का फैसला सुना दिया ग[illegible] उसमें हमारे बहुत से साथी छोड दिये गये इसलिएकि, वे [illegible] लात में ही काफी सजा भुगत चुके थे। उनमें से देश में [illegible] करने के लिए कुछ आदमी हमें मिल सकते थे। इसी विचार[illegible] वौग्डानौविच और मैं वौरौने से सेंटपीटर्सबर्ग को रवाना[illegible] गये। वहाँ हमें बडा आनन्द मिला। राष्ट्र के युवक बड़ा[illegible] मना रहे थे। पुराने और नये सभी मित्रों ने जेल से छूट[illegible] आदमियों का स्वागत किया। कैद से छूट कर आये हुए ल[illegible] मानों मौत के मुँह में से निकल कर आये थे। उनका शरीर ज[illegible] होगया था। परन्तु वे जेल के कष्टों को एक दम भूल ग[illegible] जवानी की उमङ्ग और बहुत दिनों तक रुकी हुई शक्ति का ला[illegible]

न, उन्होंने एक स्वप्न के रूप में विचार किया कि अपने उद्देश को पूरा करने के लिए फिर नये सिरे से उद्योग किया जाय। अपने विचारों को कार्य्य रूप में परिणत करने के लिए उन्होंने नया प्रोग्राम सामने रखा। सवेरे से रात तक उनके यहाँ लोगों की भीड़ लगी रहती थी।

क्रान्तिकारी क्लब की एक बैठक हुई। वहाँ एक दिन में ९० से १०० आदमी तक आये। मित्र लोग अपने साथ उन अजनबी आदमियों को भी ले आये, जो क़ैद से छूटे हुए उन आदमियों से मिलने को उत्सुक थे, जिन्हें वे यह ख़याल कर चुके थे कि वे ज़िन्दा ही क़ब्र में दफ़न कर दिये गये। इस समय मेरा बहुत से उन आदमियों से परिचय हुआ, जो सन् १८७० की पहली अर्द्ध-शताब्दी में क्रान्तिकारी आन्दोलन में सम्बन्ध रखते थे। उनमें से एक सोफ़िया पैरौव्स्काया भी थी। उससे मेरा पहली बार अभी परिचय हुआ। मैंने उसकी बड़ी तारीफ़ सुनी थी। मैं उसकी प्रजातन्त्रवादी प्रवृत्तियों, और रहन-सहन, उसकी सादगी तथा चरित्र की सुशीलता से बहुत प्रसन्न थी। उसके मरने के समय तक, जबकि जेल के भीतर से उसने अपने साथियों पर सुखानौव और वैरौव्का की देख-रेख का भार सौंपा था, उसके साथ मेरी मित्रता बनी रही।

उन लोगों ने, जो जेल जाने से बच गये थे, तथा उन्होंने, जिन्हें अदालत ने छोड़ दिया था, फिर से अपना सङ्गठन करने का निश्चय किया। लगभग ४० आदमियों की एक पार्टी वन

गई। मेम्बरों की एक आम सभा में पहले की 'पौपुलिस्ट' पार्टी का प्रोग्राम पढ कर सुनाया गया और वह पास हो गया। उसी सभा मे सेएटपीटर्सबर्ग में रह कर पार्टी के कामों की व्यवस्था के लिए, एक कमेटी बना दी गई। इन बातों को तय कर देने के बाद सब मेम्बर तितर बितर हो गये। हम लोग गाँवों में बसने के लिए चले गये। कुछ लोग अपने घर वालों का प्रबन्ध करने तथा उनकी आर्थिक समस्याएँ सुलझाने के लिए चले गये। कुछ लोग अपना स्वास्थ्य ठीक करने को चले गये। दुर्भाग्य से हमारी पार्टी का इस समय खात्मा हो गया। जार ने अदालत के उक्त फैसले को मंजूर नहीं किया। इसका नतीजा यह हुआ कि पार्टी के बहुत से मेम्बर फिर पकड लिये गये और अधिकारियों की आज्ञा से वे निर्वासित कर दिये गये। कुछ लोग विदेशों को भाग गये। हमारी कमेटी टूट गई। कुछ लोग, जिन्होंने अपनी उचित व्यवस्था कर ली थी, या जो निर्वासन से भाग खड़े हुए, एक के बाद एक सेएटपीटर्सबर्ग लौट आये और 'लेएड एण्ड फ्रीडम' नाम की पार्टी में शामिल हो गये। सब लोगों ने मुझसे भी सेएटपीटर्सबर्ग मे ठहर कर काम करने का अनुरोध किया। यह इसलिए कि, वे मुझे पढ़े लिखे लोगों मे काम करने के लिए अधिक उपयुक्त समझते थे। परन्तु मैं अपने विश्वास पर जमी हुई थी। मैंने इस समय सब काम छोड दिये थे इसलिए कि, स्वयं अब तक के अनुभवों ने सिद्ध कर दिया था कि इस प्रकार के काम व्यर्थ और अनुपयोगी हैं। मेरा लोगों में जाकर रहने का विचार

ी पक्का रहा। सैरटौव (Saratov) में उस समय कुछ काम पूरा किया जा चुका था। गाँवों मे लगभग एक दर्जन कार्य कर्त्ता रहते थे। उनमें अध्यापक, क्लर्क, मोची, मजूर, बिसाँती आदि लोग थे। सैरटौव खास में शहर के मजदूरों में प्रचार किया जा रहा था। एलेक्जेण्डर मिखेलौव सिनेनकिये नामके गाँव मे रहते थे। वह ईसाई मजहब के विरोधी सम्प्रदाय में एक गैरसरकारी उपदेशक का काम करते थे। उस सम्प्रदाय के लोगों की वह बडी प्रशंसा करते थे। उन्होंने विचार किया कि एक ऐसा नया बुद्धिवादी सम्प्रदाय बनाया जाय जिसका मूल सिद्धान्त हो व्यावहारिक सङ्घर्षण। उन्होंने बडी उत्सुकता से 'भगोडों' और 'यात्रियों' के चरित्रों का, तथा मजहब के विरोधी उन अध्यापकों के उदाहरणों का वर्णन किया जो अपने बौद्धिक विकास और साधारण दृष्टिकोण म किसानों की अपेक्षा कहीं अधिक ऊँचे थे।

हमारे साथियों ने जिले मे कुछ ऐसी जगहों पर काम करने का प्रबन्ध किया जिससे वे लोगों के संसर्ग मे आसकें। पैट्रोव्स्क (Petrovsk) जिले मे मुझे भी एक जगह मिल गई। मेरी बहिन ईव्जीनिया भी मेरे साथ रहने को आगई। सैरटौव मेडिकल बोर्ड के सामने उसने हाल ही में डाक्टरी का इम्तिहान पास किया था। हमारे वहाँ पहुँचते ही लोगो मे एक सनसनी फैल गई। वहाँ का जन-समाज इस प्रश्न पर बडे चक्कर में पड गया कि हम लोग यहाँ क्यो आये? हम पढे लिखे और अच्छी स्थिति

,मी होकर भी, गाँव मे रहने के लिए किस मतलब ? सौभाग्य की बात है कि हमारे रहन-सहन ने उनके लिए यह असम्भव कर दिया कि व हमे निहिलिस्ट करे। इसी बीच म जिलाबोर्ड के चेयरमैन और उनकी स्त्री से हमारी मित्रता होगई। इससे हमारा रास्ता बिल्कुल साफ होगया। कुछ अधिकारी हम पर सन्देह करते थे, इसलिए उन्होंने हम पर निगरानी रखने का निश्चय कर लिया।

इस दशा मे हमने अपना काम आरम्भ किया। किसानों के लिए, एक स्त्री का डाक्टर होना बडे ताज्जुब की बात थी। वे पादरियों के पास यह पूछने गये कि मैं स्त्री-पुरुष सभी का इलाज करने को नियुक्त हुई हूँ, या केवल स्त्रियों ही का ? जब उन्हें मालूम होगया तब तो मै मरीजों से घिरी रहती थी। गरीब देहाती लोग सैकडो की सख्या मे मेरे पास ऐसे इकट्ठे होते थे, मानो मैं कोई अद्भुत काम करनेवाली मूर्त्ति थी। सवेरे से रात तक डाक्टर का छोटा-सा झोपडा छकडा-गाडियों से घिरा रहता था। मेरी ख्याति बडी जल्दी फैल गई। उन तीन कस्बों के बाहर भी, जहाँ मैं काम करती थी, मेरे इलाज की चर्चा होगई। थोडे दिन बाद ही जिले भर मे मेरे नाम की धूम मच गई। मैं किसी डाक्टर की मातहती मे काम नहीं कर रही थी। मैं सीधे मेडिकल बोर्ड से, जितनी जरूरत होती उतनी दवा मँगा लेती। इसी बात से किसानों को मालूम होगया कि मैं उनकी सहायता कर सकती हूँ, क्योंकि जितनी उन्हे जरूरत पडती थी उतनी ही दवा मैं खर्च कर देती थी।

ग्क अभागी किसान स्त्री ४०-५० मील से पैदल चलकर
ास आई। उसे रक्त-प्रदर की बीमारी थी। घर लौटते समय
कहा कि जैसे ही मैंने उसे छुआ वैसे ही उसके खून गिरना
होगया। कुछ लोग पानी और तेल लेकर मेरे पास आये
कहने लगे कि इस पर "मन्त्र पढ दो।" उन्होंने सुन रक्खा
कि मैंने "मंत्र पढकर" अद्भुत सफलता के साथ लोगों की
ारियाँ दूर करदी हैं! लोग कुछ ऐसे बूढे आदमियों को मेरे
लाये जिनकी आँखें १५ और २० वर्ष पहले से खराब
हे थीं। वे मेरी सहायता से, मरने से पहले एक बार फिर
ा देखना चाहते थे। जिस प्रकार मरीजों को मैं ध्यान मे
ी थी, और लोगों से उनकी बीमारी के सम्बन्ध में तरह
के प्रश्न करती थी, तथा जिस प्रकार बडी होशियारी से
दवा इस्तैमाल करने का तरीका बतलाती थी, वे सब बाते
ों के लिए सचमुच बडे ताज्जुब की थी।

पहले महीने में मेरे पास आठसो और दस महीने में ५
ार मरीज आये। मेरे पास आने वाले मरीजो की सख्या
ल में उतनी ही थी, जितनी कि, जिले के मुख्य नगर में एक
बडे डाक्टर के यहाँ, जिसके साथ कई छोटे छोटे डाक्टर
ते हैं, एक वर्ष मे होती है। यदि इस काम मे मेरी बहिन
जीनिया ने हाथ न बँटाया होता, तो इतना बडा काम करना
ी ताकत के बाहर होजाता।

थोडे दिन बाद ही हमने एक स्कूल खोल दिया। ईव्जीनिया

ने किसानों को खबर कर दी कि अगर वे अपने लड़कों का
मे भेजा करें तो यह उन्हें बिना कुछ लिये योंही पढा देगा।
पास स्कूल की सब किताबें थीं। लडकों के घरवालों को
क़लम और प्राइमर खरीदनी नहीं पडती थी। तुरन्त ही
घर पर ७५ लड़का लड़की पढने के लिए आने लगे।
के तीनों परगनों में एक भी स्कूल नहीं था। ईनीनिया
दूसरे गाँवों से भी लडके आते थे। कभी-कभी तो १५
तक से पढने को लडके लाये जाते थे। छात्रा मे छोटे
सिवा युवक भी थे। कुछ किसानो ने बहिन से कहा
हिसाब सिखा दो, गाँव के कामो मे हिसाब आदि रखन
यह चीज बडी जरूरी है। इस काम के लिए मेरी बहिन
अच्छा-सा खिताब भी मिल गया।

डाक्टर के झोपडे ही में स्कूल और अस्पताल था।
लोगों को दवा बाँटने का,तथा स्कूल का काम खत्म कर चुके
गाँव मे कहीं किसानों के घर चले जाते। अपने साथ कोई
ले लेते, अथवा करने को कोई दूसरा काम। उस रात
घर पर छुट्टी रहती थी। लोग इधर-उधर दौड कर अप
सियों और सम्बन्धियों को बुलाने लगते कि वे आकर
बातें सुनें। पढना आरम्भ हो जाता और रात के १० ११
लोग हमसे लगातार पढते चले जाने का अनुरोध कर
उन्हे प्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकें और कहानियाँ पढ कर
अथवा किसी पत्रिका से कोई लेख, या कुछ चुनी हुई ऐति

ा। हमें सदा ऐसा अवसर मिलता था जिसमें लोगों से
ानों के जीवन, उनकी खेती बारी, जमीदारों और अधि-
ार्यो से उनके पारस्परिक सम्बन्धों पर बात-चीत करते थे।
किसानों की जरूरतों को समझने की कोशिश करते, उनकी
ायतों और दुखों को सुनते तथा उनके साथ सहानुभूति
ाते और उनके सुख-दुख में हाथ बँटाते थे। कभी कभी
ान मुझसे कोई पुस्तक छोड़ जाने के लिए कहते, जिसमें वे,
बात जो उन्हें बहुत पसन्द आई है, फिर से पढ़ सकें, या
ानी याद कर सकें। किसान लोग हमें गाँव की पञ्चायत में
े का निमन्त्रण देते जिससे हम क्लर्क की धोखा-धड़ी, रिश्वत,
ाच आदि तथा मुखिया के बेईमानी से भरे हुए कारनामें ढूँढ
ालें और ऐसा करके हम ग्रामसङ्घ की रक्षा करें। गाँव के
े से किसान घृणा करते थे। वे चाहते थे कि उस जगह पर
ीनिया काम करे। उन्होंने हमसे यह भी कहा कि हम लोग
े की अदालत और वहाँ के बोर्ड में आया करें, जिसमें क्लर्क
ी-गलौज देकर उनका अपमान अथवा उनके साथ कोई बुरा
व न करने पावे। जब हमारे घर जाने का समय होता तब
उनके सामने यह पक्का वादा करके आना पड़ता था कि हम
के बच्चों को पढ़ा लिखा कर "ऐसे ही विद्वान्" बना देंगे जैसे
हम स्वयं हैं।

हमारा यह जीवन, जिसमें किसानों से हार्दिक सम्बन्ध था,
ा सुखद था। उसकी याद आते ही, आज भी, मैं आनन्द में

गद्गद हो जाती हूँ। प्रतिक्षण हम यह अनुभव करते यहाँ हमारी जरूरत है। हमारा जीवन व्यर्थ नहीं, बल्कि योगी है। इस दशा में, जब एक आदमी यह खयाल करे कि मेरा जीवन बड़ा उपयोगी है, तब उसकी इस भावना में जबर्दस्त आकर्षण रहता था। इसी भावना से प्रेरित होकर के युवक गाँवों में काम करने के लिए चले आते थे। उस वायुमण्डल में केवल वही व्यक्ति ठहर सकता था जो बहुत हो और जिसका हृदय साफ हो। यदि उस जीवन से, इन सब कामों से हम बिलकुल वञ्चित कर दिये गये, तो इसमें कोई दोष नहीं था।

हमारे विरुद्ध जो कशमकश चल रही थी वह कुछ विचित्र थी कि यहाँ उसका वर्णन करना बहुत जरूरी है। मित्र दूसरों के नाम से बनावटी पासपोर्टों में रहते थे, किन्तु अपने ही पासपोर्ट लेकर रहते थे। जिले में यह बात कोई जानता था कि हमारी एक बहिन साइबेरिया में है। हमें गाँव अच्छी तरह घुल मिल जाने का अवसर भी न मिला था इतने ही में, किसानों ने हमें खबर दी कि हमारे जिले का पादरी हमारे सम्बन्ध में यह अफवाह फैला रहा है कि हमारे पास पासपोर्ट नहीं है, हमने कभी कहीं पढ़ा लिखा नहीं और वह उतना ही डाक्टर है जितने कि हम लोग हैं। किसान लोग 'देवी' कहकर पुकारते थे, परन्तु पादरी ने हमें एक जगह नि करने में इन्कार कर दिया था यह कह कर कि, मैं नहीं

प्राप लोग कौन हैं, कहाँ से आई हैं और विवाहित हैं या वाहित। इसके थोड़े ही दिन बाद, उसी पादरी ने जिला- में यह फतवा दे डाला कि जब से हम लोग व्याजमीनो yazmino) में आये हैं, तबसे लोगों की धार्मिक प्रवृत्ति ı गई है, गिरजे में बहुत कम लोग आते हैं, उनका धार्मिक ाह मन्द पड गया है, और लोग गुस्ताख और हठी होगये बोर्ड में किसानों की ओर से पादरी से कह दिया गया कि र प्रकार मे डाक्टर की हैसियत से अपना काम करती हूँ, से इन बातों का कोई सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उन्हें इन बातों कोई मतलब नहीं। फिर हमारे स्कूल के सम्बन्ध मे जाँच- ताल होने लगी। जमींदार का मैनेजर, क्लर्क, पादरी, सभी ग स्कूल के बच्चों को बुलाकर उनसे पूछ-ताछ करते थे। बच्चो एक दिन मेरी बहिन से कहा—"वे हमेशा हमसे पूछते हैं कि प हमें प्रार्थना सिखलाती हैं या नहीं?" इव्जीनिया लड़कों बराबर प्रार्थना सिखाती थी। फिर भी सैरटौव (Saratov) शिकायत पहुँची कि इव्जीनिया लडकों में यह भाव भर रही कि "न कहीं ईश्वर है और न, जार (Tsar) की कोई रूरत है।" इन्हीं दिनों जिला-बोर्ड के अधिकारियों से गाँव यह अफ़वाह उड़ी कि हम फरार हुए लोगों को आश्रय देते हैं। सके बाद से, जब कभी कोई आदमी हमारे यहाँ आता, चाहे ह कोई भी हो, तब उसकी निगरानी रखने को, किसी बहाने गाँव का चौकीदार जरूर आता था। जब हम कस्बे मे घूमने

गय तव मित्रों ने हममें कहा कि प्रिंस चेगोंडायैव ने आदमी को यह विश्वास दिला दिया है कि हम किसानों के मे हर जगह जाते हैं, और वहाँ क्रान्तिकारी घोषणायें सुनाते हैं, तथा हम एक भी बीमार आदमी को ऐसा नहीं देते, जिसके सामने यह बात न कहते हों कि सब जगह का राज है और हर एक अधिकारी बेईमान है।

जब किसानों ने यह बात सुनी तब उन्हें सचमुच क्रोध हुआ। अब वहाँ हमारी स्थिति डवाँडोल थी। इसी ऐलक्जेण्डर सौलौयैव हमसे आकर मिले। उनका प्रोग्राम कि सेंटपीटर्सबर्ग जाकर एलेक्जेण्डर द्वितीय की हत्या करें, यह हमसे इसी मामले में सलाह करने आये थे। उन्होंने रूस की वर्त्तमान स्थिति पर बातें कीं और यह भी बतलाया साधारण जनता मे क्रान्तिकारी काम करने के सम्बन्ध में, क्या विचार रखते हैं। उनके विचार मे सबसे पहली बात थी। रूस की वर्त्तमान स्थिति में, जहाँ जनता के हितों के लडाई लडना, कानून, पूँजीपतियों, और अधिकारियों की मे अन्याय और गैरकानूनी है, यदि कोई व्यक्ति इन सब का समर्थन करे, तो यह महज आत्म तुष्टि के सिवा और कुछ है। इस कानूनी आधार पर काम करने से हमें सफलता की आशा नहीं थी, इस दशा में भी, जबकि न्याय और सार्व हित का हथियार हमारे हाथ मे था। सासारिक सम्पत्ति, और अधिकार-सत्ता का बल तो हमारे विरोधियों की ओर था

इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुए, सैरटौव में हुई नम कमेटी में, हम इस नतीजे पर पहुँचे कि गाँवों मे जमी- श्रौर पुलिस के विरुद्ध मार काट का त्रासमय वातावरण कर दिया जाय श्रौर पूरी शक्ति से न्याय की रक्षा की जाय। लोगों ने मार-काट का जो प्रोग्राम बनाया था वह बहुत श्यक था। लोग गरीबी में बिल्कुल पिस गये थे, श्रौर जोर- र की उन माँगो से बहुत श्रपमानित श्रौर परेशान हो गये थे लगातार उनके सामने पेश की गई थीं। लोगों मे श्रब इतना न रह गया था कि प्रतिकार के लिए वे स्वय ऐसा ढँग श्रख्त्यार ने। ऐसे काम के लिए नई क्रान्तिकारी शक्तियों की जरूरत थी। र मे इन शक्तियो का दौर दौरा खत्म होचुका था। प्रतिक्रिया र कष्टों ने पढे लिखे लोगों की शक्ति श्रौर उनका वह विश्वास चूर कर दिया था जिससे वे देश में काम करने की श्राशा फलते-फूलते देख सकते। क्रान्तिकारी युवकों ने उन लोगों परिश्रम से कोई श्राशा प्रद परिवर्त्तन होते हुए न देखा जो ले जनता में काम कर चुके थे। प्रतिक्रिया की लहर के सामने पने लिए कोई रास्ता न पाकर, बडी बडी जबर्दस्त शक्तियाँ ट हो गईं। इस समय रूस मे सार्वजनिक कामों का बिल्कुल त्मा हो चुका था, इस स्थिति मे प्रतिक्रिया बढ ही सकती थी, ट नहीं।

सौलौयैव ने कहा--सम्राट की मृत्यु से सामाजिक जीवन परिवर्त्तन होगा, श्रौर वातावरण साफ हो जायगा। पढ़े लिखे

आदमी अधिक समय तक सराय में न पड़े रह कर,
काम करने के लिए, एक विशाल और फलप्रद क्षेत्र में
करेंगे। देश के सभी स्थानों में सच्ची युवक-शक्ति
उमड़ उठेगा। ठीक यही स्रोत है,—हमारी तरह कुछ
व्यक्तियों का उत्साह नहीं—जो रूस के समस्त किसानों
पर प्रभाव डालने के लिए ज़रूरी है।

हम लोगों का जो एक साधारण विश्वास है, सौलों
को दुहरा रहे थे। हमने यह स्पष्ट देख लिया कि जनता में
काम कर रहे थे वह कुछ उपयोगी न था। हमारी इस
क्रान्तिकारी दल को दूसरी बार हार खानी पड़ी। पर
हार अपने मेम्बरों के अनुभव की कमी, अथवा इसके
के सैद्धान्तिक हीन ही से उसे नहीं हुई। हार इसलिए
हुई कि दल ने लोगों में बाहरी उद्देश और दुर्लभ आद
प्रचार करने की इच्छा की थी। न यह हार इसलिए
अपनी शक्तियों और साधारण जनता की तैयारी
अत्यधिक आशायें थी। इनमें से किसी भी कारण से हमा
नहीं हुई। हमें तो मैदान उस समय छोड़ देना पड़
कि हम यह अच्छी तरह जानते थे कि हमारा का
जीवन के अनुकूल है, इसकी माँगें राष्ट्रीय स्थिति में एक
विक आधार रखती हैं, और राष्ट्रीय स्वाधीनता न होने
सारी कठिनाइयाँ उठ खड़ी हुई हैं।

यदि निरङ्कुश अधिकारियों, अथवा राजा से जनता

-श्यकताओं और समाज की इच्छाओं की पूर्त्ति में किसी
मे कुछ सहायता मिले, तो राजनैतिक स्वाधीनता का
न दबाया भी जा सकता है। इस दशा में यह भी हो सकता
क लोग उस अभाव को बहुत गम्भीरता से अनुभव न करें।
तु यदि राज-सत्ता इन दोनों बातों को भुलाकर, अपने ही
र चलती जाय, यदि लोगों के करुण क्रन्दन, मजदूरों की
ा और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की आवाज सुनने के लिए
के कान बहरे हो जायँ, यदि विद्वानों की ढूँढ निकाली हुई
ीर बातों, और अर्थशास्त्रियों द्वारा निकाले हुए आँकड़ो की
उपेक्षा करे, यदि उसकी प्रजा का एक भी समुदाय अपने
ाजिक जीवन पर प्रभाव डालने का कोई भी साधन न रखे,
सारे आधार व्यर्थ हो जायँ, सारे रास्ते रोक दिये जायँ, यदि
कों के रूप मे समाज का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग अपने कामो
लए कोई क्षेत्र न पावे, और उसके सामने सार्वजनिक हित के
र पर कोई ऐसा काम न हो, जिसमे वह अपना हार्दिक
ाह लगा सके—तो इस दशा मे स्थिति असहनीय हो उठती
और समाज का सारा रोष अपने आप उस आदमी पर
टूटा हो जाता है जो उस शाही अधिकार का प्रतिनिधित्व
ता है, जो सामाजिक जीवन से बिल्कुल अलग है, लोगों को
र आता है उस राजा पर, जो राष्ट्र के जीवन, उसकी भलाई
र प्रसन्नता के लिए स्वयं अपने को जिम्मेदार ठहराता है,
तु जो करोड़ों आदमियों की बुद्धिमत्ता और बल की अपेक्षा,

७

अपनी बुद्धिमत्ता और अपने ही बल की क़ीमत अधिक
है। और यदि, उस राजा को सन्तुष्ट करने के लिए
किये गये सारे ढङ्ग व्यर्थ सिद्ध हुए हों, तब क्रान्तिकारियों
केवल एक ही,—हिंसा का, छुरे का, पिस्तौल का, डाइन
का—मार्ग रह जाता है। यही कारण है कि सौलोवैव ने पि
उठा ली।

क्रान्तिकारी दल की शहर की शाखाओं के मेम्बर
नतीजे पर पहुँचे। वीरा जैसुलिक (Vera Zassulich)
जूरी ने फ़ैसला करके छोड दी थी और जो हाल ही
रखी हुई थी, फिर गिरफ़्तार कर ली गई। उस समय,
सारा रूस अदालत के उस फैसले की सराहना कर रहा था,
के परिवार के लोग ट्रैपौव (Trepov)* को देखने गये।
१९३ अभियुक्तों का मामला पेश हुआ, तब सीनेट ने
सजाएँ कम कर देने की सिफारिश की, परन्तु ज़ा
उनकी सजाएँ और भी सख्त कर दीं। अपने नौक
धाँधली और ज़्यादतियों के विरोध में कीगई
कोशिशों का, जार ने अधिकाधिक प्रतिक्रिया और दमन
दिया। जो थोड़ी-सी राजनैतिक हत्यायें हुईं, उनके फल
चारों ओर धर-पकड़ मच गई। स्वयं मालिक को अकूत

*ट्रैपौव सेंटपीटर्सबर्ग की पुलिस का प्रधान अधिकारी था।
ज़ैसुलिक ने उसे मारने की कोशिश की थी इसलिए कि,
राजनैतिक क़ैदियों को गालियाँ दी था।

...ह, एक ऐसे नोकर को, जिसने अपने मालिक का हुक्म बजाया
...सजा देना, बडा भद्दा लगता था। राजनैतिक हत्याओं ने
...मावत लोगों को जार की हत्या की ओर प्रेरित किया। जार
...हत्या का खयाल गोल्डेनबर्ग और कोविलौन्स्की के दिमाग में
... उसी समय आया जब कि उसे सौलौयैव ने सोचा था और
...ो उसके जीवन मे व्याप्त हो गया था। अब मैं सोचती हूँ कि
...द हम सब इसका विरोध करते तो वह इसका उद्योग कभी
...करता। उसे अपने इस उद्योग की सफलता में पूरा विश्वास
...। जब मैंने उसके सामने यह बात रखी कि इस उद्योग की
...फलता से, और भी अधिक भयङ्कर प्रतिक्रिया की लहर पैदा
...सकती है, तब उसने मुझे बडी दृढता और उत्साह से विश्वास
...ाया कि विफलता का तो खयाल भी नहीं करना चाहिए, मैं
...ा मौका तो कभी आने ही नही दूँगा, मैं तभी इस जिम्मेदारी
... उठाऊँगा, जबकि इसकी सफलता का हर एक अवसर होगा,
...र यदि, वह विफल हुआ भी, तो मेरा जीवन न रहेगा। जब
...लौयैव ने इतनी दृढता से इस काम मे अपनी सफलता का
...श्वास दिलाया, तो मैंने यही खयाल किया कि उसकी आशाएँ
...क हो सक्ती हैं। सचमुच इस आदमी के जीवन में एक वीर
...साहस, एक तपस्वी के आत्मत्याग और एक बालक की सी
...ालुता का समावेश था। बस, आगे चलकर हम इसके बाद
...त दिनों तक बडी चिन्ता के साथ सेंटपीटर्सबर्ग के समाचार
... प्रतीक्षा करने लगे। इसी बीच में गाँव की स्थिति, पहले से

भी अधिक खराब होगई। अब अधिक समय तक हमारा
पडा रहना व्यर्थ और असहनीय था।

२५ अप्रैल को सेंटपीटर्सवर्ग मे समर-गार्डन के पास सौ
ने ज़ार पर रिवाल्वर से गोली चलाई। एक किसान न
कुहनी में धक्का दिया, इससे गोली खाली गई। मई में सौ
को फाँसी दे दी गई। उस समय मैंने सोचा कि हमें अपना
करते रहना चाहिए। प्रतिक्रिया की शक्ति का नाश क
अपेक्षा, हमने उसे और भी अधिक बढने का मौक़ा दिया।
वक्त हमारे दूसरे साथी वौल्फ जिला छोड देने को विवश
इधर कुछ मित्रों ने सेंटपीटर्सवर्ग से हमे लिखा कि यह बा
निकाली गई है कि सौलौयैव सैरटौव के जिले में जाकर
और उनकी कार्रवाइयों का पता लगाने के लिए एक
कमीशन नियुक्त होगया है। इसके बाद ही सैरटौव से ख़बर
कि यह कमीशन शहर में पहुँच गया और वौल्फ वि
रवाना हो रहा है। हमारे मित्रों ने हमसे वहाँ से चले ज
इस डर से अनुरोध किया कि यह बात मालूम कर ली
कि हमारा और सौलौयैव का सम्बन्ध था। अन्त में
ज़िले से एक आदमी यह खबर लाया कि अधिकारियों
कोचवान का पता लगा लिया जिसने सौलौयैव को
पैट्रोव्स्क जिले मे पहुँचाया था। इसके बाद वहाँ से हमारा
ज़रूरी था। वहाँ से साथ मेरे चले आने के एक दि
व्याचर्गानो मे पुलिस पहुँचे गई।

उस दशा से, जो इस समय गाँव की थी, हमें यह अन्छ
ह मालूम हो गया कि वर्त्तमान स्थिति में लोगों में काम करन
भव नहीं है। इन सब बातों को देख-सुनकर, हम इस नतीजे
पहुँचे कि सब कामों से पहले इस दशा का अन्त कर देन
ज़री है। साथ ही हमें यह भी मालूम होगया कि लोगों ने या
न लिया कि हम उनके शुभचिन्तक हैं। जब पुलिस के सिपाह
जमींनो में पहुँचे तब किसानों ने कहा—"यह सब इसलि
रहा है कि वे हमारी तरफ़दार थीं। बाद में जब क्लर्क ने यह
वाह फैला दी कि हम गिरफ़ार कर लिये गये और ईव्जीनिया
सी पर लटका दी गई, तब किसान लोग रात को हमारे मित्रों
पास इन बातों की सचाई का पता लगाने गये। यह बात
ठी निकलने पर, वे लोग संतुष्ट और प्रसन्न होकर घर लौट
ये। कुछ महीने बाद में एक जवान लड़की से मिली। वह
ले हमारे पास ही रहती थी। उसने मेरी गर्दन में अपनी
नों बाँहे डालकर बड़े हर्ष से कहा—"आप यहाँ व्यर्थ ही
ही रहीं।"

सैरटोव में अन्तिम बार हमारा छोटा-सा दल इकट्ठा हुआ।
स समय मैंने कहा कि मैं 'लैंड एण्ड फ्रीडम' नामकी पार्टी में
ामिल होना चाहती हूँ, इसलिए अपने आपको इस दल से
अलग करती हूँ। मैं उचित कारण नहीं समझती इसके लिए कि,
कि छोटा-सा दल स्वतंत्र होकर इस तरह बना रहे, मैं उस पार्टी
। उन लोगों का समर्थन करूँगी जो ज़ार की हत्या के लिए फिर

मे नया उद्योग करना चाहते हैं। दूसरी पार्टियों के लिए म
सरकार से लड़ाई लड़ना बहुत जरूरी होगया था। इसका
हम लोग तितर वितर होगये।

'लैंड एण्ड फ्रीडम' नामकी पार्टी ने, मेरी इच्छा पर वि
करके, पौपौव के द्वारा मुझे मेम्बर बन जाने के लिए निमं
त्रिया। मैंने अपनी अनुमति दे दी। पौपौव ने मुझसे कहा
वौरौने में पार्टी की एक बैठक होगी। बाद में पार्टी के कुछ
मेम्बरों के साथ हम वहाँ गये।

वर्त्तमान स्थिति

सन् १८७६ के अन्त से १८७९ की गर्मियों तक, जब
वौरौने में पार्टी की बैठक हुई, क्रान्तिकारी दल की अवस्था
डवाँडोल-सी रही। कई अलग अलग दल काम कर रहे थे।
दलों को मिलाकर अखिल रूस के एक विराट दल के रू
सङ्गठित होजाने की पार्टी की कोई इच्छा ही नहीं थी। इ
नतीजा यह हुआ था कि एक उद्देश्य, एक साधन, और एक
प्रोग्राम के होते हुए भी, छोटे छोटे स्वतन्त्र दल तितर-बितर
गये। वे सब दल एक दूसरे से, मेम्बरों के व्यक्तिगत परि
से मिले हुए थे। उत्तर में 'लैंड एण्ड फ्रीडम' सुसाइटी एक
सुदृढ़ संयुक्त दल के रूप में अपना सङ्गठन कर रही थी।
एक आम क़ानून से बँधी हुई, तथा मेम्बरों के पारस्परिक सम
से नियंत्रित थी। मेम्बरों के अधिकार और उनके कर्त

:रूप-रेखा भी खींच दी गई थी। उधर दक्षिण के लोग रूसी
ता का प्रदर्शन कर रहे थे। उनमें अनुशासन नहीं था और
में तथा क्रान्तिकारी युवक-दल में बहुत थोड़ा अन्तर था। वे
ली आदमियों की तरह, ओडैस्सा, खारकौव और कियैव में
ते फिरते थे। सन् १८७७ से १८७९ तक सरकार के बेहद
मों ने इन शहरों में आन्दोलन दबा दिया था। मुक़दमों ने
न्तिकारियों को अपनी सबसे उत्कृष्ट शक्तियों से वञ्चित कर
ा था। इस प्रकार की कठिन परीक्षाओं ने उत्तर में ऐसे
ङ्कर परिणाम पैदा नहीं किये थे। यह इसलिए कि सङ्गठित
ों ने, केन्द्रस्थ सभा के मेम्बरों में तनिक भी कमी होने पर,
प्रान्तों में नई शक्तियों की धारा बहा दी थी। सन १८७९
गर्मियों में, 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' सुसाइटी के रूप में क्रान्ति-
रियों का केवल यही एक ऐसा सङ्गठित दल था, जिसके हाथ
एक अखबार और बहुत से मेम्बर थे। पार्टी के ऊपर भी एक
द्रस्थ दल था। उसका सदर मुकाम था सेण्टपीटर्सबर्ग। यह
त प्रेसों का सञ्चालन, अखबारों का प्रकाशन और पार्टी के
मों आर्थिक मामलों का प्रबन्ध करता था। यही केन्द्रस्थ दल
ब प्रान्तों से सम्बन्ध रखता था और उनके पास इस ढँग से
पनी स्कीमें भेजता था जिससे उसे प्रान्तों के काम से सीधा
ोई सम्बन्ध न रहे। इसके सिवा यह पार्टी का क्षेत्र और उसकी
क्ति बढाता तथा गाँवों में नये कार्यकर्त्ता भेजता था। प्रान्तीय
म्बर 'सङ्घ-बद्ध' होकर कई जिलों में फैले हुए थे। वे सब

स्थानीय शासन और स्थानीय मामलो मे स्वतन्त्र थे। सेवर्ग मे पार्टी के मेम्बरो का ध्यान अधिक से अधिक हाकिमों की निरकुशता और जोर-जुल्म को दबाने में ल था, इसलिए व, प्रान्तो मे किये हुए अपने साथियों के काम बहुत कम नजर रख पाते थे। उनके सारे आदमी और शक्तियाँ राजनैतिक कैदियों को छुड़ाने और मार-काट क मे अटक रही थीं।

आगे चलकर क्रान्तिकारी सिद्धान्तों पर लोगों में बढने लगा। सेण्टपीटर्सबर्ग में पार्टी के मेम्बर कुछ तो के नशे मे मतवाले बन गये, या लडाई के उस जोश में लता के कारण क्रोधित हो उठे, जो उनकी सारी शक्ति उद्योग चाहता था, पर साथ ही उसने आन्दोलन के बहुत उत्तम मारन दिये थे। पार्टी के मेम्बर तैम्बौव और गाँवों के शान्त वातावरण को बडी घृणा से देखने लगे। बात से कि, गाँवों में दर्जनों कार्य-कर्त्ता रहते हैं, फिर भी कोई नतीजा नहीं निकला, और न व्यावहारिक रूप से ला कोई चिह्न ही दिखाई दिये, उनके हृदय में खलबली मच गई। दर्जनों क्रान्तिकारी, जिन्होंने दो वर्ष से अधिक समय तक गाँ काम करने मे अपने आपको लगा दिया, लोगों मे जीवन न मरे, और कोई ऐसा ठोस काम न कर सके जिससे भविष्य मे सार्वजनिक विद्रोह की तैयारी की जा सके, तो अधिक समय तक उनके यहाँ पड़े रहने से क्या लाभ था?

...र किसानों को उस सरगर्म लडाई से कुचला हुआ दिखाई ...। था, जिसमे कि, उन्होंने बडे उत्साह मे योग दिया था। ...र पौपुलिस्ट लोगों ने सोचा कि पार्टी के शहर मे रहने वाले ...युवक आग से खेल रहे हैं, जिनकी उज्ज्वल प्रतिभा मुख्य काम ... उस जनता से जिसे उनकी युवक शक्ति की बडी भारी ...रत है—अलग बहक रही है। उनकी नजर मे सेनापतियो ...र पल्टन के अफसरों की हत्या का काम उतना उपयोगी और ...री नहीं था, जितना कि गाँवो मे सार्वजनिक भूमि के बरावर ...वारे के सम्बन्ध में त्रासमय वातावरण पैदा कर देने का काम ...। गाँवो मे मार-काट के त्रासमय काम खूब होते रहे, उनकी ...र किसी का ध्यान भी न था। कोई यह भी देखने वाला नहीं ... कि उन कामों का वहाँ क्या प्रभाव पड रहा है। उन कामो ... कोई धूम मचाने वाला, अथवा उनपर कोई आँसू बहाने ...ला भी न था। उन कामो ने स्वय उन क्रान्तिकारियो तक को ...ही उभाडा, जो चिन्ताओं, खतरों और लडाई के आनन्द के ...च न रहकर, शहरों में बसे हुए थे। उन लोगों ने पहाडों के ...कान्त मे, तथा किसानो के जन-समुद्र में अपने उन साथियो ... लिए चार आँसू तक नहीं बहाये, जिनका नाश हो चुका था।

७

कलह



हरों और गाँवों के क्रान्तिकारी दलों में आपस में मन-मुटाव तो हो ही रहा था, अब धीरे धीरे सेंटपीटर्सबर्ग की केन्द्रस्थ कमेटी के भीतर भी तनातनी शुरू हो गई और लोगों में मत-भेद बढ़ने लगा। जिन सरकारी अफसरों के मनमाने घोर जुल्म बहुत ही शर्मनाक हालत को पहुँच गये थे, उनको मारने के लिए, एक के बाद दूसरे प्रयत्न किये जा रहे थे। क्रान्तिकारी दल हथियारों के बल पर अधिकारियों के क्रूर कारनामों का दृढता से विरोध कर रहा था। इन सब बातों से युवकों में ऐसा जोश फैला और ऐसे व्यावहारिक साधन दिखाई देने लगे जिससे दमन पर सीधा और बड़ा जबर्दस्त घूँसा लग सके। केन्द्रस्थ कमेटी के भीतर एक ऐसा दल उठ खड़ा हुआ जो इस बात के पक्ष में था कि सरकार से खुलकर लोहा लिया जाय। इस दल के लोगों के लिए, केन्द्रस्थ सरकार पर वार करने का प्रश्न बड़े महत्त्व का था, परन्तु पौपौव, प्लेखानौव, और उनके साथियों

ने केन्द्रस्थ कमेटी मे उस दल के प्रोग्राम का बहुत विरोध किया। उन्होंने कहा कि मार-काट के कामों से पार्टी का बहुत नुकसान हुआ है, तथा सरकार का दमन भी अधिक बढ गया है, और इसीसे, युवक उस जनता में रचनात्मक तथा उचित कामों के करने से बहक गये हैं, जिसकी सहायता की पार्टी को बडी जरूरत है। झगडा बहुत बढ चुका था। जब मै सेटपीटर्सबर्ग पहुँची तब दल की बैठको में हुई आपस की तू-तू-मैं-मै से मुझे चोट पहुँची।

दलबन्दी

सौलोयैव के असफल उद्योग के बाद प्लेखानौव और पौपौव ने एक बडी कान्फ्रेंस की, यह निश्चय करने के लिए कि हिंसात्मक क्रान्ति का क्या रूप हो। उन्हें यह विश्वास था कि जो क्रान्तिकारी प्रान्तों में काम कर रहे हैं वे हमारी ओर होंगे और मार-काट के विरुद्ध अपना जोर लगावेंगे। इस बात से डर कर, उस दल ने जो अधिक गरम था, 'लैंड एण्ड फ्रीडम' पार्टी के अन्दर ही स्वय एक अलग पार्टी बना ली और मेम्बरों की भर्ती शुरू कर दी। हिंसात्मक कार्यक्रम के प्रचार के लिए, उस दल का एक अखबार निकलता था, और उसके विशेषाक के रूप में एक पर्चा भी निकला करता था। उसकी विज्ञप्तिया "कार्यकारिणी कमेटी" की ओर से जारी की जाती थीं। कियैव में क्रान्तिकारी घोषणाओं में भी इसी नाम से दस्तखत किये जाते थे।

यह दल अपनी हस्ती अलग कायम रखने के लिए तैयारियाँ करने लगा। इस दशा मे मुख्य पार्टी से इसका झगडा होना जरूरी सा हो गया। इसने अपना निज का प्रेस और रासायनिक प्रयोगशाला खोलने की तैयारी कर दी। किबैलचिह (Kibalchich) मे इस दल को एक ऐसा आदमी मिला जो सन् १८ के प्रारम्भ में, अपने जेल से छूटने के वक्त से, घर पर डाइनामाइट बनाने की समस्या को हल करने में लग रहा था, और निसने इस काम के लिए जरूरी बातों का केवल अध्ययन ही नहीं किया था, बल्कि अपनी प्रयोगशाला मे स्वय बनाया भी करता था।

जब यह निश्चय हुआ कि 'लैंड एण्ड फ्रीडम' पार्टी की एक बैठक वौरौन मे हो, तभी गुप्त कार्य्यकारिणी कमेटी के मेम्बरों ने उससे पहले लिपेट्स्क (Lipetsk) मे अपनी निज की एक कांग्रेस करने का विचार किया और दक्षिण के मुख्य मुख्य क्रान्तिकारियों को उसमे आने के लिए निमंत्रित कर दिया। वाद विवाद करने के बाद इस दल ने अपने निश्चित नियम और कानून बना लिये और अपना उद्देश स्थिर कर लिया कि निरकुश शासन-सत्ता को उलट, सरकार से सशस्त्र युद्ध करके, देश में राजनैतिक स्वतत्रता स्थापित करेगे। इसके बाद वे 'लैंड एण्ड फ्रीडम' की कान्फ्रेंस में शामिल होने के लिए वौरौनै चले गये।

प्रान्तों के पारस्परिक अविश्वास और सेंटपीटर्सवर्ग के झगड़ों ने बड़ी तनातनी का वायुमण्डल पैदा कर दिया था। वहाँ पार्टी के मेम्बर पारस्परिक अविश्वास को साथ लेकर इकट्ठे

हुए थे। उन्हें डर था कि कान्फ्रेन्स के इस अधिवेशन में झगड़ा होगा। परन्तु कान्फ्रेंस शुरू होते ही यह मालूम होगया कि मत-भेद इतना तीव्र नहीं था जिसके लिए वे डरते थे। चारों ओर शान्ति छागई और लोगों के मन में बड़ी भारी इच्छा यह हुई कि मेल बना रहे तो अच्छा है। आपस की सफाई और वाद-विवाद के बाद 'लैंड एण्ड फ्रीडम' की पार्टी का प्रोग्राम और उसके नियमोपनियम बिना किसी परिवर्त्तन के योंही छोड़ दिये गये। यह निश्चय किया गया कि आम तौर पर काम जारी रखा जाय, मगर उसमें किसानों को जरूर शामिल कर लिया जाय, इसलिए कि, किसानों के बिना रूस ऐसे मुल्क में कोई आन्दोलन देश-व्यापी नहीं होसकता। शहरों में मार-काट और ज़ार को मारने का उद्योग भी होता रहे। इन सब बातों से प्लेखानौव सहमत नहीं हुआ और इसीलिए वह पार्टी से अलग होगया।

यह कान्फ्रेंस कुछ जोरदार न हुई। मौरौज़ौव मेरे पास आये। उन्होंने मुझसे गुप्त समिति में भर्ती हो जाने का अनुरोध किया, परन्तु मैंने ऐसा करना अनुचित समझा इसलिए कि, एक गुप्त समिति के भीतर दूसरी गुप्त समिति बनाना बिल्कुल अनावश्यक था।



८

पार्टी के झगड़े



रौन की कान्फ्रेंस के बाद मेरा जाली पासपोर्ट से रहने का जीवन आरम्भ हुआ। मैं क्व-कौस्की के साथ सेटपीटर्सबर्ग को रवाना हो गई। वह मुझे लैजनुआ मुहल्ले में वहाँ लेगये, जहाँ उन्होंने और ईवानोव (Iwanova) ने क्रान्तिकारी दल की बैठकों के लिए स्थान बना रक्खा था। यह स्थान 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' पार्टी के उन लोगों का सदर-मुक़ाम था जो सशस्त्र क्रान्ति के पक्ष में थे। गर्मी के दिन थे। यहाँ सदर-मुक़ाम खुल जाने से कई लाभ थे। हम सब लोगों के पास जाली पासपोर्ट थे और इसी तरह के बहुत से आदमी छिपकर हमारे पास शाम से आया करते थे। पार्क में लगे हुए छोटे-छोटे देवदारु के वृक्षों के झुण्ड में, जहाँ का वातावरण बिल्कुल शान्त था, दल की बैठकों का प्रबन्ध करना बड़ा आसान था। हम काफ़ी दूर ऐसी जगह जाकर इकट्ठे होते थे, जहाँ लोग कभी जाना भी मालूम ही न करते। हम लोग जहाँ-तहाँ देवदारु के वृक्षों

के नीचे फैल जाते। वहाँ कोई भी अजनबी आदमी दूर ही से दिखाई दे सकता था। उस रास्ते कोई भूला भटका भी न आ सकता था। हमारे यहाँ पहुँचते ही दल की बैठकें होने लगी। परन्तु यह बैठकें 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' पार्टी की नहीं थी, बल्कि उन लोगों की थीं जिन्होंने लिपेट्स्क की सभा मे भाग लिया था और जो लेवनुआ मे इकट्ठे हुआ करते थे। पहली ही बैठक मे कुछ आदमियों ने गाँव मे रहने-वाले अपने साथियो के काम की शिकायत की और कहा कि वे मार-काट के कामों मे रुकावट डालते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जार की हत्या के सम्बन्ध मे, वौरौने की कान्फ्रेंस के निश्चय के अनुसार, काम बिना किसी विलम्ब के तुरन्त किया जाना चाहिए, अन्यथा, जब एलेक्जेण्डर द्वितीय क्रीमिया से सेंटपीटर्सबर्ग लौटेगा, तब यह काम हो नहीं सकेगा। इसी बीच मे उन स्थानों मे बहुत काफी डाइनामाइट भेज दिया गया जहाँ होकर जार क्रीमिया मे लौटने वाला था। इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए काफी आदमी भेज दिये गये। परन्तु उन लोगों ने पहले की तरह कहा कि मार-काट के कार्य्यक्रम के विरोधी हर सम्भव ढग से इसके पूरा करने मे देर कर रहे हैं। पार्टी की शक्ति आपस के लड़ाई-झगड़े मे खर्च होरही थी। भविष्य मे कुछ सुधार और समझौतों की आशा जरूर थी, किन्तु किसी निश्चित और सर्व सम्मत कार्य की नहीं। वौरौनै में जो कान्फ्रेंस हुई थी, उसने आपसी झगड़े को मिटाया नहीं, बल्कि दबा दिया। दलो को आपसी झगड़े से

बर्बाद न होने देने के लिए यह जरूरी था कि लोग अपना शक्तियो को बाँट लें और प्रत्येक को अपने ही रास्ते जाने का अवसर मिल सके। लोगों ने अपने मुख्य काम के सम्बन्ध में वार वार बहस की, परन्तु अब कोई विरोध करने वाला नहा था। जो लोग विरोधी थे, वे मौजूद ही न थे। वौरौनै मे सोफिया पैरौव्स्काया और मैंने दल की एकता कायम रखने के लिए कोई खास उद्योग नही किया था। परन्तु अब, जबकि काम करने का वक्त आगया, तब हमने विरोध नही किया। हमारे सेंटपीटर्सवर्ग के साथियो ने हमे दिखा दिया कि वे सब साधन, जिनके बल पर आगे के काम का उद्योग किया जाने वाला है, तैयार हैं, और अब, यह हमारे ऊपर निर्भर है कि एक जगह पडे रहने की अपेक्षा, हम अपने प्रोग्राम को पूरा करें। लोगों की इच्छा दल बन्दी करने की थी। 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' पार्टी का भविष्य और उसको विभाजित कर देने का प्रश्न सामने आगया, और अन्त में पार्टी को विभाजित कर देना ही ठीक समझा गया।

दोनों ओर के प्रतिनिधि चुने गये इसलिएकि, वे ऐसा ढङ्ग निश्चित करदे जिससे पार्टी विभाजित होजाय। उन्होंने प्रस्ताव किया कि वह प्रेस, जिस पर पार्टी का समाचार छपता है, उन लोगो के हाथ मे रहे जो पुराने प्रोग्राम के समर्थक हैं। इस बात पर दोनों दल सहमत होगये। मिखेलौव की पार्टी ने तुरन्त ही प्रेस के लिए कम्पोजीटरों का प्रबन्ध कर लिया। एक साथी ने पैसा बराबर बाँट लेने का भी निश्चय कर लिया, परन्तु उस

समय वे ऐसा न कर सके। इमीर्ट्रीलिज़ोगन नामका एक व्यक्ति चैकौव्स्की (Tchaikovsky) का अनुयायी था। वह बड़ा खुशहाल था। उसके जमीन-जायदाद भी खूब थी। वह इन सब चीजों का पूरा अधिकार ड्रीगो (Drigo) को दे चुका था। उस पर वह पूरा भरोसा रखता था इस बात का कि, वह ईमानदारी और उचित ढङ्ग से उस सब जायदाद का उपयोग करेगा। उसने उसे हर एक चीज़ बेच देने और उसका रुपया 'लैण्ड एण्ड-फ्रीडम' पार्टी को सौंप देने का अधिकार दे दिया। लिज़ोगव कई महीने ओडैसा में क़ैद रहा। अन्त मे, चूबारौव के मामले मे उसे फाँसी होगई। ड्रीगो ने विश्वासघात करके अपने आपको सरकार के हाथ बेच दिया, इस आशा से कि, वह अपने उदार और विश्वासी मित्र की सम्पत्ति से खूब लाभ उठा सकेगा। एलेक्जेण्डर मिखेलौव के द्वारा 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' पार्टी के मेम्बर ड्रीगो से रुपया पैसा लेते थे। परन्तु ड्रीगो ने ए० मिखेलौव को कभी एक कौड़ी तक नहीं दी। वह बड़ी कठिनता से ड्रीगो के विश्वासघात का शिकार होने से बच सके।

जहाँ तक मुझे याद है वहाँ तक 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' के हमारे साथियों को कुछ नहीं मिला। एक और सिलसिला था, जहाँसे हमें २३ हजार रूबल मिलने को थे। 'मृत्यु की विजय' (Victory of Death) नामकी एक दूसरी पार्टी के मेम्बरों ने यथा समय यह रक़म हमें दे दी। वे लोग हमारे मार-काट के राजनैतिक कार्यक्रम से पूरी सहानुभूति रखते थे।

'लैएड एएड फ्रीडम' पार्टी दो दलों में बँट गई थी। यह बात आपस में तय हो चुकी थी कि इनमें से कोई दल अपने पहले नाम का उपयोग न करेगा। पहले नामसे पार्टी ने क्रान्तिकारी क्षेत्र मे बडा नाम पैदा किया था। दोनों ओर के आदमी इस हक़ के लिए लडने लगे। दोनों मे से एक भी झुकने को तैयार न था। जो पार्टी सगठित होकर अपना काम कर रही थी, उसके सामान्य अधिकार दोनों ही दल अपने हाथ में जारी रखना चाहते थे। पुरानी परम्परा के समर्थकों ने, जिनका ध्यान ज़मीन के बँटवारे और किसानो के आर्थिक हितों की ओर था, अपने दल का एक विचित्र सा नाम 'ब्लैक पार्टीशन' (काला बँटवारा) रख लिया। हमने सबसे पहले राज-सत्ता को उलट कर, एक आदमी की इच्छा की जगह, सार्वजनिक आकांक्षा को स्थान दिया था। इसीलिए हमने अपने दल का नाम 'जनता की आकांक्षा (The Will of the People) रख लिया।

'जनता की आकाक्षा'

'ब्लैक पार्टीशन' नाम की बनी हुई नई पार्टी ने अपने प्रोग्राम का ढाँचा प्राय 'लैएड एएड फ्रीडम' के ढँग पर ही रखा और लोगों मे सीधे जाकर काम करने, तथा पूँजीवादियों के विरुद्ध आर्थिक लडाई छेड़ देने के लिए अपने आपको सङ्गठित करने की आवश्यकता पर बहुत जोर दिया। इधर हमारे दल के—'जनता की आकांक्षा' के—मेम्बर बिल्कुल नए

सिद्धान्त मे काम लेकर अपना प्रोग्राम पूरा करने के लिए आगे बढ़े। इस नये सिद्धान्त का आधार इस भावना पर था कि केन्द्रस्थ राजसत्ता का प्रभाव लोगों के जीवन की प्रत्येक दिशा पर पड़े। लोगों की राय मे, इस भावना ने हमारे समूचे इतिहास भर मे बहुत बड़ा काम किया। पुराने जमाने मे, इस राज-सत्ता ने, प्राचीन रूस की राजनैतिक व्यवस्था में उपस्थित संयुक्त राज्य के सिद्धान्तों को बिलकुल कुचल दिया था। लोग बिल्कुल एक टैक्स अदा करने वाली जाति के रूप मे परिणत कर दिये गये थे। वे पहले जमीन के बन्धन मे थे और बाद मे व्यक्तिगत गुलामी से जकड़ गये थे। देश में पहले तो रईसों की एक ऐसी जाति बन गई जो दूसरो की सेवा करे, परन्तु बाद में, वह जमींदारों की ऐसी जमात बन बैठी, जिसके ऊपर अधिकारियों के कर्त्तव्य का कोई भार ही न रहा। १८ वीं शताब्दी के आरम्भ में जब यह जमात बहुत कङ्गाल हो गई और बड़े बड़े नामी रईसों के मकान बिल्कुल उजड़ गये, तब उन लोगों को दया करके बड़ी बड़ी खालसा जागीरें बख्श दी गईं और साथ ही खिदमत करने के लिए बहुत से गुलाम भी दे दिये गये। बस, तभी रईस और धनी लोगों की उन बड़ी बड़ी रियासतों की नींव पड़ी, जो गुलामों के छुटकारे के समय मौजूद थीं। अब हमारे समय मे, उसी राज-सत्ता ने, जिसने सन् १८६१ में गुलामों को व्यक्तिगत गुलामी से मुक्त किया था, समूचे राष्ट्र के श्रम को दोहन करने का काम स्वयं अपने हाथ में ले लिया।

इसने किसानों को भूमि का ऐसा बँटवारा करके दिया जो उनके लिए नाकाफी था। इस नाकाफी जमीन के साथ किसानों पर बेहद टैक्सों का ऐसा बोझ लादा गया, जिसमें खेत से मिला हुई उनकी सारी पैदावार चली जाती थी, और कभी कभी करों का यह बोझ, जमीन की पैदावार से दो सौ फीसदी या इससे भी अधिक बढ जाता था। इस भयानक स्थिति में देश का बहुत बड़ा बजट तैयार किया जाता था। उस बजट का ८० से ९० फीसदी तक रुपया गरीब लोग ही देते थे। परन्तु सरकार उस बजट का कुल रुपया फौज और जहाजी बेड़े पर, तथा उस सरकारी कर्ज को अदा करने में लगाती थी, जो इन्हीं सब कामों के लिए लिया जाता था। बजट में बहुत थोडा-सा रुपया देश के हित के लिए खर्च होता था, जिससे लोगों की सार्वजनिक शिक्षा आदि की खास जरूरतें पूरी हो सकती थीं।

इन सब बातों से यह सिद्धान्त प्रकट होता था कि जनता सरकार के लिए है, सरकार जनता के लिए नहीं। सरकार ने जनता को ऐसा चूस लिया जिसके सामने व्यक्ति-गत दोहन कुछ भी नहीं थे। परन्तु सरकार अपने इन कारनामों से सन्तुष्ट नहीं हुई, इसलिए उसने ऐसा हर तरीका अख्त्यार किया जिससे व्यक्ति गत दोहन को उत्तेजना मिले। पुराने जमाने में सरकार ने जमीदारों की एक जमात बना दी थी, अब उसने मध्यस्थिति के लोगों का गरोह खड़ा कर ने का प्रयत्न किया। साधारण जनता के हितों की ओर ध्यान न

की अपेक्षा, उसने व्यक्ति-गत लाभ उठाने वाले, बडे बडे व्यवसायियों, और रेलवे के मालिकों को प्रोत्साहन दिया। प्रत्येक अर्थ-शास्त्री ने इस बात को जॉच करली कि गुलामों के छुटकारे से लेकर, अब तक बीते हुए २० वर्षो मे एक भी ऐसा काम नही किया गया जिससे जनता की आर्थिक दशा मे कुछ भी सुधार हो सके। आर्थिक सहायता, एकाधिकार से निश्चित मुनाफा, चुङ्गी-भाडे आदि साधनो से पूँजीपतियों को पैदा करने और उनकी आर्थिक सहायता करने में सरकार की सारी शक्ति काम मे लाई जा रही थी। पश्चिमी यूरुप के देशो मे, केन्द्रस्थ शासन धनिकों के अस्त्र की तरह, तथा उनके प्रतिनिधि की हैसियत से काम कर रहा था और सारी राज-सत्ता उसी के हाथ में थी, परन्तु हमारे देश मे केन्द्रस्थ शासन एक स्वतन्त्र ताकत, और बहुत हद तक, इन पूँजीवादियों की श्रेणियों का उत्पादक था।

इस प्रकार आर्थिक क्षेत्र मे हमारे जमाने की सरकार, हमारी पार्टी 'विल आफ दी पीपुल' की नजर मे, पूँजीपतियो मे सबसे बडी और देश के श्रम का स्वतत्र रूप से नाश करने वालों म मुख्य ठहरी, जो कि अपनी शक्ति और छोटे-मोटे पूँजीपतियों को खडा रहने में लगाती थी। सरकार ने उस दशा में, जबकि, स्वय जनता पर आर्थिक दृष्टि से जुल्म कर रही थी, सब जातियो को बिना किसी राजनैतिक अधिकार के पगु बना कर छोड दिया था। उन दिनों रूस में धार्मिक स्वतत्रता नही थी, तभी तो, विभिन्न सम्प्रदायों के एक करोड से अधिक आदमियो

को बुरी तरह से दबाया और कष्ट दिया जा रहा था। सरकार, कर सम्बन्धी, और पुलिस के अड्डों ने लोगों को एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में आन्दोलन करने के अधिकार से वञ्चित कर दिया था। नि शुल्क शिक्षा के अभाव ने उन्हें जबर्दस्ती मूर्ख बना रखा था। लोगों के पास ऐसा कोई साधन नहीं था जिससे वे सरकार को अपनी जरूरतें बतला सकते, क्योंकि अर्जी देने तक का उन्हें कोई अधिकार नहीं था। असल में सबसे बड़ी बात यह है कि हर बात में देश का सारा जीवन शासन की स्वेच्छाचारी और निरंकुश सनक के अधीन था। समाज के पास, सरकार पर, और उसके द्वारा जीवन पर, प्रभाव डालने के लिए केवल एक ही साधन है—साहित्य और प्रेस। यह दोनों ही चीजें बिल्कुल दबा दी गई थीं। एक ऐसे देश में, जहाँ वैज्ञानिक खोज करने, अथवा भाषण देने की आजादी न हो, वहाँ प्रेस का क्या मूल्य हो सकता है ? सबसे अच्छे वैज्ञानिकों, अथवा प्रेस के प्रतिनिधियों को निर्वासित किया जा चुका था। जो लोग जेल जा चुके थे, उन्हें अब पुलिस की निगरानी में रहना पडता था। विद्यार्थियों के रूप में, समाज का एक छोटा सा अङ्ग, कमेटी आदि बनाने के अपने अधिकार से वञ्चित कर दिया गया था। विद्यार्थियों पर पुलिस बहुत पास से निगरानी रखती थी।

किसी भी उद्योग से, वर्तमान स्थिति में परिवर्तन करने के लिए, या तो हृदय की भावनाओं के विरुद्ध काम करना पडता था, या फिर, जुल्म सहने पडते थे। जब युवक साधारण जनता

मे शान्ति-मय ढँग से प्रचार का काम करने लगे तब सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया और जेल में बन्द कर दिया, या साइबेरिया मे निर्वासित कर दिया। इससे रूसी युवक आपे से बाहर हो उठे और उन्होंने सरकार के कुछ आदमियों को सज़ा दी। सरकार ने इसका जवाब फौजी शासन और फाँसियो से दिया। सन् १८७८ के मध्य से १८७९ तक रूस में १८ राजनैतिक अपराधियो को फाँसी दे दी गई! इस दशा में, सरकारी मशीन एक ऐसे देवता की तरह थी, जिस पर, जनता का आर्थिक हित, नागरिकता के अधिकार और मनुष्यता आदि सभी चीजे बलि चढा दी गई थीं!

रूसी जीवन के स्वामी के रूप मे, यह राज-सत्ता थी, जो बडी भारी पल्टन और शक्तिशाली शासन के बल पर अपनी रक्षा कर रही थी। 'जनता की आकाक्षा' नाम के क्रान्तिकारी दल ने इसी राज-सत्ता के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यही सरकार जनता का सबसे बडा दुश्मन थी। अब जरूरत इस बात की पडी कि क्रान्तिकारी आन्दोलन का रूप बदल दिया जाय। इस काम के लिए यह सोचा गया कि क्रान्तिकारी दल का केन्द्र देहात से हटा कर शहर मे ले जाया जाय। सार्वजनिक विद्रोह के लिए नहीं, बल्कि षडयन्त्र द्वारा उच्च अधिकारियो का नाश कर, उनकी जगह खुद अधिकारी बन बैठने के लिए। इन सब बातों से क्रान्तिकारी क्षेत्र में बडा जबर्दस्त परिवर्त्तन हो गया। इन विचारों ने, पहले के क्रान्ति-

कारी विचारों को दबा दिया और रूस के साम्यवादी तथा केन्द्रस्थ शासन की परम्परा समाप्त हो गई, और पहली शताब्दी में क्रान्तिकारी कामों का जो सिलसिला बन चुका था, वह अब बिल्कुल टूटगया। इसलिए इसमें कोई ताज्जुब नहीं कि क्रान्तिकारी क्षेत्र में विरोध को दबाने और पुराने विचारों को हटाकर, मुख्यतया नये विचारों की सत्ता जमाने के लिए, दल को एक वर्ष से अधिक समय तक अथक उद्योग करना पड़ा। जब पार्टी का वह मुखपत्र निकला, जो पहले कभी एकतन्त्र सत्ता के गीत गाता था, तब लोग असन्तुष्ट हुए। परन्तु अब उसी पत्र ने निकलते ही घोषणा कर दी कि जारशाही का अन्त हो रहा है! इस पर सब लोगों में पहली मार्च सन् १८८१ को हर्ष का पारावार उमड उठा इसलिए कि, एलेक्जेण्डर द्वितीय की हत्या हुई थी।

सबसे पहले हमने अपने कार्यक्रम में यह निश्चय किया कि हम "प्रजातन्त्रवादी साम्यवादी" हैं। पहले के नाम में हमारे पुराने कार्यक्षेत्र का भी नाम बना रहा और यह भी प्रकट हो गया कि हमने अब जो नई पार्टी बनाई है, वह केवल राजनैतिक नही है, और न, राजनैतिक सफलता प्राप्त करना उसका एकमात्र उद्देश ही है। लोगों तक पहुँचने और उनकी उन्नति तथा आवश्यकताओं का, स्वतन्त्रता के वायुमण्डल द्वारा राजमार्ग खोल देने का यह एक साधन है। साम्यवादी दृष्टि से हमारा उद्देश यह होगया कि आर्थिक क्षेत्र की सबसे उपयोगी

बीज, उपज और जमीन, किसान-सङ्घ के हाथ में पहुँच जाय और राजनैतिक क्षेत्र मे एकतन्त्र अधिकार की जगह, प्रजातन्त्र राज्य स्थापित होजाय। इन सब बातो को पूरा करने और वर्तमान शासन-पद्धति को मिटाने के लिए हिंसात्मक क्रान्ति का केवल एक ही साधन था। इससे फिर, हम सार्वजनिक मत से अपने सामाजिक ढाँचे को, अपनी सभ्यता और परम्परा के अनुसार बना सकते थे। जमींदार और पादरी के रूप मे ज़ारशाही के दो मुख्य आधार थे, और यह तीनों ही, एक दूसरे के जीवन-मरण के साथी थे।

कार्य्यकारिणी कमेटी

अपने शक्तिशाली शत्रु से युद्ध करने के लिए, हमने पार्टी को सङ्गठित करने का ढाँचा समस्त देश व्यापी ढँग पर बनाया। देश भर में गुप्त समितियो और पार्टी के सदस्यो के छोटे छोटे दलों का जाल फैला दिया गया। कुछ लोग किसी खास जगह में ऐसे काम मे लग जाते, जो आमतौर पर क्रान्तिकारी ढँग का हो। दूसरे आदमी किसी विशेष उद्देश से अपने लिए किसी भी तरह का काम चुन लेते। क्रान्तिकारियों के इस जाल का एक केन्द्र था कार्य्यकारिणी कमेटी मे। इसी केन्द्र के द्वारा सब लोग एक सूत्र में बँध गये। स्थानीय दल इसी कमेटी का हुक्म बजा लाने, और जरूरत पड़ने पर इसे अपनी सारी शक्तियाँ अर्पण कर देने को बाध्य थे। पार्टी के, तथा रूस भर के सब काम इसी

केन्द्रस्थ कार्य्यकारिणी कमेटी की देख-रेख में होने लगे। विप्लव के समय, यही कमेटी पार्टी की सब शक्तियों को राज्य करने और क्रान्तिकारी कामों के लिए उन्हें बुलाकर इकट्ठा कर सकती थी। परन्तु ऐसे समय के आने तक, इसका ध्यान एक ऐसे षड्यंत्र की रचना करने में लग रहा था, जो एक ऐसी क्रान्ति की सम्भावना पैदा करदे, जिससे हमारे सरकार, जारशाही को छीनकर जनता के हाथों में सौंपी जा सके। पार्टी की शक्ति प्राय उसी दिशा में लग रही थीं। बाद में मार-काट करने वाले दल का जो नाम पड़ा, वह बड़ा विचित्र था। इसके प्रत्यक्ष रूप में होने वाले कामों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित हुआ और इसीसे उसने दल का ऐसा विचित्र नाम रख दिया।

पार्टी का यह उद्देश कदापि न था कि वह अपने लिए मार काट करे। यह साधन तो केवल आत्म रक्षा के लिए था, आन्दोलन के लिए बड़ा जबर्दस्त हथियार समझा जाता था और केवल उसी काम में इसका प्रयोग किया जाता था जिसके पूरा करने में पार्टी लग रही थी। इस काम में जार की हत्या पहली बात थी। सन् १८७९ के अन्त में, हमारे सारे प्रोग्राम में मार काट की बात ही खास थी। इसीसे जार की हत्या और आम तौर पर मार काट जारी कर देने का खयाल पैदा हुआ। इस इच्छा ने कि अब आगे ऐसी प्रतिक्रिया न बढे, जिसने हमारे सङ्गठन के काम में रुकावट डाली थी, और जल्दी से जल्दी काम शुरू कर देने की भावना ने हमें पार्टी की कार्य्यकारिणी कमेटी बनाने का

रित किया। फिर कार्य्यकारिणी ने ही यह निश्चय किया कि एक ही समय में चार स्थानों पर जार को मार डालने का उद्योग किया जाय। साथ ही, कमेटी के मेम्बर पढे लिखे और श्रमजीवी लोगों में व्यावहारिक रूप से प्रचार कर रहे थे। जैल्याबौव खारकौव में प्रचार कर रहे थे और कौलौड्कैविच और मैं औडेसा में। कुछ लोग मास्को, कौर्वा और सेंटपीटर्सबर्ग मे काम कर रहे थे। प्रचार और सङ्गठन का काम सदा मार काट के काम के साथ ही साथ होता था। यह काम गुप्त रूप से होता था, परन्तु इसका फलना-फूलना भाग्य में नही बदा था।

जो बातें सरकार के विरुद्ध थी, उनको मिलाकर सरकार के खिलाफ एक षडयन्त्र की रचना करते हुए, पार्टी यह अच्छी तरह जानती थी कि सरकार को उलटते समय, किसानों के विद्रोह से कितनी सहायता मिलेगी। इसके अनुसार पार्टी ने जनता में काम करने के लिए एक क्षेत्र नियत कर लिया, और जो व्यक्ति इस क्षेत्र में काम करना चाहता था, उसे वह अपना स्वाभाविक मित्र समझती थी।

कार्य्यकारिणी कमेटी के वे सब नियमोपनियम, जिनके अनुसार हमें काम करना पडता था, उन लोगों ने बनाये थे, जिन्होंने कि लिपेट्स्क में कांग्रेस की थी। कमेटी के विधान में यह सब बातें थीं —

"प्रत्येक सदस्य को पारिवारिक बन्धन, व्यक्तिगत सहानुभूति, प्रेम और मित्रता को भुलाकर, अपनी सारी मानसिक और

आध्यात्मिक शक्ति क्रान्तिकारी काम मे लगानी पडेगी। यदि ज़रूरत हो, तो, विना किसी बात का ख़याल किये प्रत्येक मेम्बर को अपनी जान भी दे डालनी पडेगी। कोई आदमी व्यक्तिगत सम्पत्ति न रखेगा, और न कोई चीज ऐसी रखेगा, जिसमें आम तौर पर पार्टी का हिस्सा न हो। हर एक आदमी अपने आपको बिल्कुल गुप्त समिति के काम में लगा देगा और अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को छोड देगा, और बहुमत से पार्टी के जो आर्डिनेंस निकलेंगे उन्हें मानने को बाध्य होगा। पार्टी की स्कीमों प्रस्तावों, आदमियों, और सब मामलों के सम्बन्ध में सब बातों को गुप्त रखना पडेगा। कोई आदमी प्राइवेट, सामाजिक ढँग के, या अधिकारियों के कामों और घोषणाओं में अपने आपको कार्यकारिणी कमेटी का मेम्बर नहीं, बल्कि उसका एजेंट बतावे। जो आदमी पार्टी से अलग हो वह इन सब मामलों को गुप्त रखे और उन बातों को कतई जाहिर न करे, जो उसकी आँखों के सामने हुई हैं, या जिनमे उसने भाग लिया है।" *

यह बातें सचमुच बहुत बडी हैं। परन्तु जिस आदमी के हृदय मे क्रान्तिकारी आग जल रही थी, उसने बडी आसानी से यह बातें पूरी कर दिखाईं उस भावना के साथ, जो विघ्न-बाधाओं की पर्वा न कर, तथा अपने पीछे और दाएँ बाएँ भी न देखकर सदा आगे बढती है। यदि यह बातें कम जरूरी होतीं, यदि इतने हृदय की आग इतनी गहरी न उभड़ती, तो यह हमें कभी सन्तुष्ट

...ही न कर सकतीं। परन्तु अब, उनकी कड़ी और ऊँची प्रवृत्ति ने ...में ऊँचा उठा दिया और हमें छोटे-मोटे या व्यक्ति-गत ख़यालों ...से बिल्कुल मुक्त कर दिया। हममें से हर एक का यह ख़याल था ...कि हमारे अन्दर सचमुच एक आदर्श है। यह आदर्श तो रहना ...ही चाहिए।



९

क्रान्तिकारी उद्योग



जब सिद्धान्तों को अमल मे लाने और पार्टी सङ्गठन का काम पूरा हो चुका, तब कमेटी व्याव हारिक काम पर आई। उसने निश्चय किया कि एलेग्ज़ेण्डर द्वितीय के क्रीमिया से लौटते समय तीन अलग अलग स्थानों मे उसके मारने का उद्योग किया जाय। तुरन्त ही मास्को, खारकौव और औडेसा जाने के लिए तीन आदमी नियुक्त कर दिये गये। प्रत्येक स्थान पर, डाइनामाइट ही एक एर्स नाशक चीज थी, जिसका इस्तैमाल किया जाने वाला था। उसी समय सेंटपीटर्सवर्ग में कमेटी, विण्टर पैलेस में एक धडाका करने की तैयारियाँ कर रही थीं। यह बात बहुत गुप्त रखी गई था। इस काम का प्रबन्ध एक कमीशन के हाथ मे था। इस कमीशन में वे तीन आदमी थे, जो, कमेटी ने अपने मेम्बरों में से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मामलों के लिए चुने थे।

इन सब कामों पर मैंने अपनी स्वीकृति तो दे दी थी, किन्तु यह विचार मेरे लिए असहनीय था कि मैं अपने ऊपर केवल

तिक जिम्मेदारी ही रखूँ और व्यावहारिक रूप से, उन कामों करने में भाग न लूँ, जिनके लिए मेरे साथियों को, भारी भारी ज़ाएँ देकर धमकाया जाता था। मैंने पार्टी को यह समझाने बहुत उद्योग किया कि उसकी स्कीमों को पूरा करने के लिए के भी व्यावहारिक रूप से काम करने दिया जाय। इस पर मेरे न्तोप के लिए, रियायत करके, उन्होंने डाइनामाइट लेकर मुझे डेसा भेज दिया। पार्टी की इजाज़त से, उसीके कामों के लिए वश्यक ठहरने का स्थान ठीक करने को, मैंने अपनी बहिन ज्नीनिया से कहा कि वह सेंटपीटर्सवर्ग आकर मेरी जगह ले। इसके थोड़े ही दिन पहले वह स्याजों प्रान्त से आकर, नैरेस्काया नामसे सेंटपीटर्सवर्ग में रहने लगी। गर्मी के दिन सने स्याजों में बिताये थे। इस बात का ख़याल न करके कि, नुभव न होने के कारण मेरी बहिन ने बहुत से आदमियों को पने नये नामका परिचय दे दिया, मैंने सलाह दी कि उसे उसी पासपोर्ट में क्याट्कौव्स्की के साथ रहने को भेज दिया जाय। यह एलेक्जेण्डर वासलीयेविच के दुर्भाग्य का अप्रत्यक्ष कारण था।

कालिज की वौगौस्लाव्स्काया नामकी एक लड़की ने, जो उसके भावी पति ने दोषी ठहरायी थी, कह दिया कि मेरे पास पुलिस को जिस मासिक पत्र की प्रतियाँ मिली हैं, वे मुझे पौनैरैस्काया ने दी थीं। शहर के टाउनहाल आदि में तलाशी लेने के बाद, २४ नवम्बर सन् १८७० को ईव्जीनिया और

क्याट्कौरस्की पकड़े गये । सन् १८८२ में क्याट्कौरस्की
फाँसी होगई और ईव्जीनिया निर्वासित करके साइबेरिया
में गई। मकान मे पुलिस को डाइनामाइट और
का एक ऐसा टुकडा मिला, जिसे अचानक गिरफ्तार होने
कारण क्याट्कौरस्की जला नहीं सका था, और मसल कर
एक कोने मे फेंक दिया था। पुलिस वालों ने कागज का
टुकडा उठा लिया, परन्तु वे उसका मतलब नहीं समझ सके
कागज पर एक ढाँचा और एक जगह काटने का चिह्न बना हुआ
था। वही कागज का टुकडा क्याट्कौरस्की की जान का
बन बैठा। ५ फरवरी सन् १८८० को विएटर पैलेस मे हुए
के बाद, पुलिस ने ढूँढ निकाला कि उक्त कागज का ढाँचा
भवन का था, और भोजनालय के कमरे के ऊपर कटा हुआ
चिह्न बना दिया गया था। यही कमरा विस्फोट के लिए
गया था इसलिए कि, सारा शाही परिवार यहीं आकर इकट्ठा
होता था।

जितने डाइनामाइट की जरूरत थी, उतना लेकर, मैं
सितम्बर के आरम्भ मे ओडैसा गई। वहाँ मुझे केवल निकोलाई
इवानोविच किवैलकिक मिल गये। उन्होंने मुझसे कहा कि
के कामों के लिए तुरन्त ही एक मकान का इन्तजाम करना
चाहिए। मकान ऐसा हो, जहाँ मीटिङ्ग और विस्फोटक पदार्थ
के प्रयोग कर सकें, तथा विस्फोट के लिए आवश्यक सामान
कर सकें। थोडे दिन के बाद हमें एक अच्छा मकान मिल गया

यहाँ हम सब साथ ही बस गये। मैंने अपना नाम इवानिट्स्की रख लिया। यहाँ हमारे पास तीन आदमी और आगये। हमारा मकान ऐसा था जहाँ आम सभा की जाती थी। सब कान्फ्रेंसें वहाँ हुईं। वहाँ डाइनामाइट जमा रहता था और अनेक विस्फोटक पदार्थ तैयार किये जाते थे। अनेक प्रकार के औजारों के साथ प्रयोग किये जाते थे। यह सब काम वहाँ किबैलकिक की निगरानी में हो रहा था, परन्तु अक्सर इसमें और लोग भी काफी सहायता करते थे, जिनमें मैं भी शामिल थी। रेल की पटरी के नीचे डाइनामाइट बिछाकर, रेलों को उड़ाने की स्कीम भी हमारे सामने थी। यह तरकीब सोची गई कि ओडैसा के आस-पास रात में रेल की पटरी के नीचे, एक के बाद दूसरी गाड़ी छूटने के बाद, बीच बीच में, हम डाइनामाइट बिछा दें, जिससे बाद में खेत में एक तार रखा जा सके। परन्तु इस काम की तैयारी, और उसके पूरा करने में बड़ी असुविधा और कठिनाई हुई। हमने निश्चय किया कि सबसे अच्छा तरीका यह है कि हममें से एक आदमी रेल की पटरी का इन्स्पेक्टर बन जाय, और वह अपनी जाँच की जगह से जमीन के नीचे एक तरह का बम रख दे। काम का वक्त बताने के लिए इससे अधिक निश्चित और सुविधा का मार्ग नहीं सोचा जा सका। ऐसी जगह ले लेने का काम मैंने अपने ही ऊपर ले लिया। यदि इसमें मुझे सफलता मिले, तो निश्चय हुआ कि फ्रौलैनको उस जगह को ले ले, और लैरैडैवा उसकी स्त्री बन कर रहे, जिससे वह विवाहित

मालूम पडे। तहकीकात के बाद मैंने गवर्नर जेनरल टौटलनैन के दामाद वैरन् को दरख्वास्त दी, और उसपर उन्होंने सिफारिश लिख दी। इस समय क़ायदे के मुताबिक़ मैं मखमल की पोशाक पहन कर रेलवे-सुपरिन्टेन्डेन्ट के यहाँ दरख्वास्त देने के लिए गई। वहाँ मेरे साथ बहुत अच्छा वर्त्ताव हुआ और मुझसे कहा गया कि उम्मेदवार को दूसरे दिन अपने साथ लाऊँ। मैंने फ्रौलैनको का नाम बदल कर, उसे सीमेन एलेक्जाण्ड्रौव के नाम से ओडैसा से आठ मील दूर, निलियाकौव में जगह दिलवा दी। वहाँ वह टैटियाना इवानौव्ना लैबीडवा को अपनी स्त्री बनाकर ले गया। वहाँ गोल्डैनबर्ग ने आकर यह कहा कि अब जार यहाँ न आकर, मास्को-कुर्स्क रेल रोड पर होकर निकलेगा, इसलिए निलियाकौव की डाइनामाइट मास्कोदल के पास पहुँचा दिया गया। गोल्डैनबर्ग पकडा गया और फ्रौलैनको और लैबीडेवा भी ओडैसा का प्रदेश छोड कर चले गये। बाद को हमें पता चला कि शाही ट्रेन खारकोव में होकर सही सलामत निकल गई और एलेक्जाण्ड्रौव्स्क में जो धडाका होने वाला था, वह इस कारण नहीं हुआ कि सब प्रबन्ध ठीक होते हुए भी, विस्फोटक पदार्थो में बिजली द्वारा ठीक समय पर चिनगारी न लग सकी। मास्को कुर्स्क रेल रोड पर भी रेल उड़ाने के लिए हमारा प्रबन्ध था। दो शाही गाडियाँ १९ नवम्बर को वहाँ होकर निकली, जहाँ डाइनामाइट लगा हुआ था। पहली ट्रेन में जार था, लेकिन दुर्भाग्य से,'स्टीफैन शिरियायैव विनती

जगाने के लिए पहले सिगनल पर न पहुँच सका, इसलिए दूसरी ट्रेन, जिसमें दरबारी आदि थे, उड़ा दी गई और पहली ट्रेन साफ बच गई। यह बात बुरी जरूर हुई, किन्तु इसका असर यूरुप भर में—खास कर रूस मे—बहुत पड़ा।

अब दमन की बारी आई। क्यात्कौस्की और शिरियायेव मार डाले गये। हमारी पार्टी का छापाखाना भी नष्ट कर दिया गया, परन्तु उसके अधिकारी बड़ी बहादुरी के साथ लड़े। दिसम्बर में किबैलकिक ओडैसा से चला गया और जनवरी मे कौलोड्नेविच प्रभावशाली मेम्बरो को साथ लेकर चला गया। यहाँ के सारे काम का भार मुझ पर, या कुछ दूसरे अप्रसिद्ध आदमियों पर आ पड़ा।

मेरा काम प्रचार करने का था। तीन महीने तक, मुझे अधिकतर घर ही में छिप कर काम करना पड़ा। इससे मैं बाहरी आदमियों से मिल-जुल न सकी और न अधिक महत्त्वपूर्ण कामों मे भाग ही ले सकी। मेरे साथी अयोग्य थे, इस कारण विवश होकर वे मुझे छोड़ देने पड़े।

अब मैंने अपना मेल जोल खूब बढाया। यहाँ तक कि मेरी मित्रता बड़े और छोटे सब तरह के आदमियों से होगई। उनमे प्रोफेसर, सेनापति, जमींदार, विद्यार्थी, डाक्टर, सरकारी अधिकारी, श्रमजीवी आदि सभी दर्जे के लोग शामिल थे। जहाँ मौका मिलता था, वहीं मैं क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करती और अपनी पार्टी के कामों का समर्थन करती थी। मेरा मुख्य

कार्यक्षेत्र नवयुवकों मे था, क्योंकि स्वभावत वे जोशाने सच्चे होते थे।

विएटर-पैलेस में धडाका

सेंटपीटर्सबर्ग में भी काम जारी था। कमेटी के प्राग्राम यह भी शामिल था कि यहाँ भी धडाका किया जाय। हमें माल एलेक्जाएड्रौन्स्की और ओडैसा की कार्रवाइयों से भी क बल मिल चुका था।

हमारी पार्टी का एक मेम्बर स्टीफैन हैल्टर्यूरिन था। व बहुत पढा लिखा और समझदार था। फर्नीचर बनाने का उसक पेशा था। हमारे उद्योग से विएटरपेलेस मे उसे काम करने क मिल गया। हमारा उद्देश यह था कि वह एलेक्ज़ेंडर द्वित की हत्या कर डाले। हैल्ट्यूरिन शाही महल के कमरों और वहां की सारी स्थिति से खूब परिचित हो गया। वहाँ के नौकरों क वह मित्र बन गया और पुलिस-जमादार उससे खास तौर प खुश रहने लगा इसलिए कि, वह उसे अपनी लडकी के लिए उपयुक्त वर समझता था। शाही नौकर-चाकर तथा खुद हैल्ट्यू रिन महल के सबसे नीचे के हिस्से मे रहते थे।

हैल्ट्यूरिन ने महल की देख भाल कर ही ली थी। अब उसने एक बक्स मे डाइनामाइट भरना शुरू किया और अपना काम करने का निश्चय कर लिया।

५ फरवरी सन् १८८० को बैटिनबर्ग का राजकुमार आने वाला था। उसके सम्मान मे शाही महल मे एक दावत होने

वाली थी। हैल्ट्य रिन ने यही मौका उपयुक्त समझा, क्योंकि सारा राज-परिवार उस भोज मे शामिल होने को था। भोज की तैयारी के वक्त उसने डाइनामाइट सुलगा दिया। इस समय शाही परिवार भोजन के कमरे मे घुस ही रहा था। डाइनामाइट की कमी पडी। महल के नीचे से डाइनामाइट का जो धडाका हुआ, उससे उसके ऊपर का हिस्सा नष्ट होगया, परन्तु भोजन का कमरा, जो और भी ऊपर था, साफ बच गया और राज परिवार के लोगों पर आँच भी न आई। इतना जरूर हुआ कि उस कमरे का फर्श धक्के से बहुत हिला और मेज पर रखी हुई तश्तरियाँ वगैरह सब गिर पडी।

इस घटना के बाद ही जार ने लौरिस मैलीकौव को डिक्टेटर बना दिया। उसपर भी क्रान्तिकारी ने गोली चलाई, पर वह पकडा गया और तीन-चार दिन बाद उसे फाँसी दे दी गई। फाँसी पर चढते वक्त उस वीर के चेहरे पर बडी अद्भुत मुस्कुराहट थी।

समाज के समझदार आदमियों ने हमारे कामो की बडी सराहना की। उन्होंने यही नही किया, बल्कि हमारे कामों पर अपनी सहमति की मुहर लगा दी। लोगों से हमें आर्थिक सहायता भी खूब मिली। इस दशा मे यह कहना अनुचित न होगा कि हम जनता के सच्चे प्रतिनिधि की हैसियत से अपना क्रान्तिकारी काम चला सकते थे। अदालतों में अब सरकारी वकील भी यह कहने लगे कि जनता क्रान्तिकारियो को सहायता

देती है। हमारा आन्दोलन देश-व्यापी असन्तोष पर आधारित था, अब उसे नष्ट करना असम्भव होगया। यह आन्दोलन तभी बन्द हो सकता था जब जनता की माँगें पूरी करदी जातीं और चारो ओर असन्तोष की जगह सतोष फैल जाता।

मार्च या अप्रैल सन १८८० में दो आदमी ओडैसा में मेरे पास कमेटी का हुक्म लाये कि सम्भवत जार गर्मियों में क्रीमिया को यहाँ होकर जायँगे, इसलिए धडाके का प्रबन्ध यहाँ होना चाहिए। इधर मैं पैन्यूटिन की हत्या के उद्योग में लग रही थी। यह गवर्नर-जनरल का दायाँ हाथ था और सरकार के भीतरी मामलों में इसीका हाथ था। प्रजा इसको बडा जालिम समझती थी। उसने शहर से क्रान्तिकारियों को नेस्तनाबूद करदेने का बीडा उठा रखा था। वह अध्यापक, लेखक, विद्यार्थी, अधिकारी, मजदूरों आदि को पकडवा कर निर्वासित कर देता, अथवा उनपर बडे पाशविक अत्याचार करता था। जो लोग पकड जाते थे उनके सम्बन्धियों, और स्त्रियों के साथ भी सैक्रेटरियेट मे वह बहुत ही अपमान-जनक बर्त्ताव करता था। एक दिन एक कैदी की रोती हुई गर्भवती स्त्री से कहने लगा— यहाँ से भाग, क्या यहीं बच्चा पैदा कर देगी ?

मैंने पैन्यूटिन को मारने का पूरा इन्तज़ाम कर लिया था। उसके मारने वाला, दिन और समय भी नियत कर दिया था। परन्तु कमेटी के हुक्म के मुताबिक मुझे अपना यह प्रोग्राम छोड देना पडा।

सैब्लिन और पैरोव्स्काया, यही दो व्यक्ति कमेटी का हुक्म लाये थे। उनके पास जार पर आक्रमण करने का यह प्रोग्राम था कि यह दोनों एक दुकान लेकर व्यापार करें, तथा स्वामी और स्त्री बन कर रहें। जिस सडक पर होकर जार निकले, उसके नीचे डाइनामाइट लगा दिया जावे। इस काम की निगरानी के लिए बाद में इज़ाइयैव नामका एक दूसरा आदमी भी आगया।

दुकान किराये पर ले ली गई और काम शुरू होगया। सडक के नीचे डाइनामाइट रखने का इन्तज़ाम भी होगया। इज़ाइयैव की गलती से, डाइनामाइट रखने का इन्ज़ाम करते वक्त उसकी तीन उँगलियाँ उड गई और उसे अस्पताल जाना पडा। इस डर से कि, जार के निकलने के रास्ते में मकानों की तलाशी ली जायगी, सब सामान मेरे मकान पर पहुँचा दिया गया। उसी समय यह खबर हुई कि शायद जार आवेंगे ही नहीं, इसीलिए हमारे पास काम बन्द कर देने के लिए कमेटी का हुक्म भी आगया। हमने इस सामान का उपयोग करने के लिए गवर्नरजनरल टौटिलनैन को उडा देने की इजाजत माँगी। परन्तु कमेटी ने यह कह कर हमारी प्रार्थना को मजूर नहीं किया कि उडाने का तरीका केवल जार ही के लिए सुरक्षित रखा गया है। परन्तु कमेटी ने यह इजाजत दे दी कि टौटिलनैन को किसी और तरह से खत्म कर दिया जाय।

इसके बाद मैं और सैबलिन, गवर्नरजनरल की रहन-सहन, उठना बैठना, इधर-उधर आना-जाना आदि बातों पर निगाह

रखने लगे। इस कारण कि, वह क्रान्तिकारियों के खून का प्यासा था, और हमारे बहुत से साथियों का खून कर चुका था इसका बदला लेने के लिए हम भी, उसके खून के प्यासे थे। हमारे पास डाइनामाइट के सिवा और कोई चीज न थी, और डाइनामाइट का उपयोग करना कमेटी ने रोक दिया था। इधर गवर्नरजनरल का तबादिला होगया, इसी कारण हम उसे मार न पाये। पर साथ ही यह निश्चय कर लिया कि एक के बाद दूसरा जो कोई गवर्नरजनरल आवे, उसीको, हम मार डालेंगे, जिससे कि वह ओहदा ही खत्म होजाय। न रहे बाँस, न बजे बाँसुरी।

गवर्नरजनरल के चले जाने के बाद वह दुकान तोड़ दी गई और सब लोग वहाँ से चले गये। आगे चल कर मैं जुलाई मे सेंटपीटर्सबर्ग चली गई और मेरी जगह ट्रिगोनी ओडैसा आगये।

सेंटपीटर्सबर्ग में जार की हत्या के लिए इन्तजाम होरहा था, और यह मामला हमारी पार्टी के कार्य्य-भारी कमीशन के हाथ में पहुँच गया था।



१०

सैनिक-सङ्गठन



न १८८० के अन्त, और सन् १८८१ के आरम्भ का, पार्टी के बड़े जोरों में प्रचार और सङ्गठन के काम का समय था। इसी ज़माने में प्रान्तों के साथ काम करने का क्षेत्र और भी विस्तृत हो गया। स्थानीय दल पहले की अपेक्षा अधिक सङ्गठित हो गये और विभिन्न स्थानों में कार्य क्रम अधिकाधिक दृढ़ता के साथ अमल में ाया जाने लगा। कमेटी के एजेंट देश भर में पहले ही से चुनी ई जगहों पर घूमा करते थे, परन्तु उनके रहने के सदर-मुकाम न स्थानों पर होते थे जो क्रान्तिकारी दृष्टि से साम्राज्य भर मुख्य केन्द्र थे। हमारी पार्टी के मुखपत्र की ग्राहक-संख्या हुत बढ़ गई, और हमारी कमेटी के प्रोग्राम ने जनता को आक-र्षित कर लिया। देश भर से कमेटी में प्रतिनिधि आने लगे। व मेटी के आदेशानुसार काम करने के लिए अपनी सेवाएँ र्पित करने लगे और यह ज़ोर डालने लगे कि हमारे आदमी ाकर स्थानीय दलों को सङ्गठित कर दें। कमेटी ने इस अवसर

को हाथ से नही जाने दिया, क्योंकि अब वह समय आगया था, जबकि वह अपने श्रम और आत्मत्याग के फल लगते हुए देखती। अब सब लोगों की यही अकांक्षा थी कि सङ्गठित रूप से सरकार से खुलकर लोहा लिया जाय। सब लोगों के हृदय में वीरता के अङ्कुर जम गये और इस सैनिक-कार्य्यक्रम ने राष्ट्र की जबर्दस्त शक्तियों को अपनी ओर खींच लिया, यहाँ तक हुआ कि लोगों के दिल से मृत्यु का डर भी जाता रहा। सान सेटपीटर्सबर्ग मे सब काम बडी सरगर्मी से हो रहा था। लोरिस मेलिकौव की जुल्म ज्यादतियों और सिपाहियों के साथ लड़ाइयों ने हमारा कार्य्यक्षेत्र ऐसा विस्तृत बना दिया, जिसमें हमें यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियो और मजदूरों मे काम करने का खूब मौका मिला। सन् १८७० के बाद हमारे जो उद्योग विफल हुए थे, उनसे लोगों में बडा असन्तोष फैल गया था। परन्तु अब नई नई आशाओं के प्रभाव से हम यह अनुभव करने लगे कि रूस के युवकों का रक्त व्यर्थ तो कभी बहा ही नहीं। मेलिकौव की नीति को सब समझते थे। उसने किसी को धोखा नहीं दिया। अब लोक-मत की यह माँग जोर पकड गई कि ज़ार की हत्या जरूर कर दी जाय, और साथ ही, मेलिकौव भी न छोडा जाय, क्योंकि वह दिखाने को उदार बनता था, पर कहता कुछ था, और करता कुछ। कमेटी का वैज्ञानिक विभाग बम के प्रयोग को सफल बनाने के उद्योग मे लग रहा था।

इन ज्वलन्त कृतियों के समय, कमेटी ने अपना सैनिक

विभाग स्थापित किया। क्रौन्स्टाट में रहने-वाले नौसेना के अफसरों की कमेटी ने लेफिटनेन्ट सुखानौव के द्वारा, और सेंटपीटर्सवर्ग के तोपखाने की पल्टन से डिगाइयैव के द्वारा अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। डिगाइयैव क्रौन्स्टाट के किले में तोपखाने में, और तोपखाने के विद्यालय में काम कर चुका था। अपने राजनैतिक विचारों के कारण वह वहाँ से अलग कर दिया गया।

वास्तव में उस समय, जीवन का प्रवाह कुछ ऐसा वह रहा था कि सामयिक घटनाएँ शाही फौजों पर अपना कुछ न कुछ प्रभाव डाले बिना रह नहीं सकती थी। उस समय का साहित्य, जो जनता की ओर से स्वयं अपील कर रहा था, युवक आन्दोलन, जिसका मार्मिक चित्र दिलों को फाडे डालता था, राजनैतिक मुकद्मे और उनकी अनुचित और पाशविक सजाएँ, रूस भर के शहरों की गिरफ़ारियाँ, सरकार के दमन-चक्र की भीषण मार-पीट आदि बातो ने रूस के लोक-मत में आग लगा दी थी। यह असम्भव था कि, फौजी दायरे के बाहर होने वाली इन सब बातों का प्रभाव फौजों और नौसेना पर न पडता। असल में बात यह थी कि सन् १८७८ में क्रौंस्टाट में नौसेना में भी एक सङ्गठित दल क्रान्तिकारी प्रचार के लिए मौजूद था। रूस और टर्की की लड़ाई तथा गुलाम बल्गेरिया के आजाद होजाने से भी फौजों पर असर पड़ा था। दिन-दहाडे जान-बूझ कर सरकार की ओर से जनता को लूटना, वसूल हुए रुपये का दुरुपयोग, सिपाहियो की ओर की गई उपेक्षा तथा उनकी मुसीबतों और जरूरतों की

ओर से सरकार का आँखें बन्द कर लेना, आदि बातें ऐसा थ
जिन पर फौजी अफ़सर विचार करके उनके दूर करने का उपा
न ढूँढ निकालते, तो उनके पास और चारा ही क्या था? वह
लोग यह ख़याल करते थे कि गुलाम बल्गेरिया को आ
करने के लिए तो हमने अपना ख़ून बहा दिया, परन्तु ह
गुलाम ही बने रहे। सन् १८८४ में एक आदमी ने अप
मुक़दमे मे यहाँ तक कह दिया कि दूसरे मुल्क को आज़ाद कर
की अपेक्षा, यदि हम स्वयं अपने को आज़ाद करलेने का ख़या
करते तो अच्छा होता।

फ़ौज की उच्च शिक्षा के लिए जो स्कूल और कालिज खु
हुए थे, उनसे भी ऐसे आदमी निकले, जिनके दिमाग में आज़ा
की बू भरी हुई थी और जिनका यह ख़याल था कि अपने समा
और देश को सुखी और स्वाधीन कर दें।

देशभक्ति की भावना से भरी हुई इन्हीं महान् शक्तियों से
हमारे क्रान्तिकारी दल का सैनिक-सङ्गठन हुआ। सैनिक-दल क
सङ्गठन भी उसी ढाँचे पर आधारित था जिसपर कि, हमारी
पार्टी थी। सैनिक-सङ्गठन, फौजी होने के कारण, वैसे तो हमारी
पार्टी से बिल्कुल स्वतन्त्र था, परन्तु उसके प्रधान अधिकारी
हमारी कार्य्यकारिणी कमेटी के नामज़द किये होते थे। अस
मे सैनिक विभाग का सिलसिला ऐसा बन गया कि देश भर
स्थानीय सैनिक-दल केन्द्रस्थ सैनिक-दल के अधीन होगये और
केन्द्रस्थ सैनिक-दल हमारी कार्य्यकारिणी कमेटी के।

जिस समय नौसेना के अफ़सरो ने क्रौस्टाट में अपना सङ्गठन किया, उसी समय सेटपीटर्सबर्ग के तोपखाने ने भी अपना सङ्गठन कर डाला। हमारी कमेटी और सैनिक-सङ्गठन दोनो ही में साम्राज्य भर के, चुनेहुए प्रसिद्ध आदमी थे। उन्होंने देहातो में जा जा कर अपनी शक्ति को देखा, सँभाला और सङ्गठित किया, तथा जाँचकर इस बात का भी पता लगा लिया कि शाही फौज के ये आदमी जिनको हमसे सहानुभूति है, कहाँ कहाँ और कितने कितने हैं।

हमारी पार्टी ने अब यूरुप के दूसरे देशो में भी अपना प्रचार आरम्भ किया। प्रचार का उद्देश यह था कि रूसी सरकार की घरेलू नीति का भण्डाफोड करदें और साथ ही, बाहर के लोगो को यह भी बतादें कि सरकारी दमन के प्रतिकार के लिए हम क्या कर रहे हैं। सरकार की काली करतूतों को दिखाकर हम बाहरी लोगों की सहानुभूति प्राप्त करना चाहते थे। इस प्रकार हमारा मतलब यह था कि देश मे बम से शाही तख्त हिला दे, और देशों के बाहर अपने प्रचार द्वारा उसे अपमानित कर दे, और जिन देशों मे उसे घृणित बनावें, जारशाही के विरुद्ध अपने लाभ के लिए उनका हस्तक्षेप भी करा सके। इस काम में वे लोग हमारी सहायता करने को तैयार थे, जो अपने राजनैतिक विचारो के कारण रूस से यूरुप के अन्य देशों मे निर्वासित कर दिये गये थे।

इस काम के लिए हार्टमेन और लैवरौव विदेशों में हमारे एजेंट नियुक्त हुए। उनके सामने मुख्य काम यह था कि रूस की

आर्थिक और राजनैतिक दशा पर छोटे छोटे पर्चे निक॰, लेक्चर दें और अखबारों में लेख लिखें। हार्टमन अमेरिका जा जानेवाला था। पश्चिमी यूरूप के सब साम्यवादी नेताओं ने इस काम में सहयोग करने का वादा किया। हमारी कमेटी न रोक फोर्ट के कार्ल मार्क्स मे लिखकर प्रार्थना की कि वह हार्टमैन को रूसी राज-सत्ता के विरुद्ध प्रचार करने में हर तरह की सहायता दे। कार्लमार्क्स ने यह प्रार्थना सहर्ष स्वीकार करली और उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन की बडी प्रशसा की। अब यूरूप के अखबार रूस की क्रान्तिकारी खबरों को एक दम ले उडे। जर्नेलिस्टों के लिए रूस की वर्त्तमान दशा पर कुछ भा लिखना बडा महत्त्वपूर्ण हो गया।

अब हमारे लिए यह जरूरी होगया कि अप्रमाणित खबरों को छपने से रोकने, और प्रमाणित खबरों को इस भारी माँग के अनुसार अधिक सख्या में भेजते रहने के लिए, रूस के ताजा से ताजा समाचार बाहर भेजते रहे। इसलिए सन् १८८० के अन्त मे कमेटी ने पत्र व्यवहार के काम के लिए मुझे अपना वैदेशिक मत्री नियुक्त कर दिया। मैंने हार्टमैन से पत्र-व्यवहार जारी कर दिया। उनके पास मैंने पत्रों की नकलें, फाँसी पाये हुए, अथवा गिरफ्तार हुए आदमियो के जीवन चरित्र और चित्र, क्रान्तिकारी पुस्तको के नये सस्करण, रूसी पत्रिकाएँ, अखबार आदि चीजें भेजी और आमतौर पर वह सब माँग पूरी कर दी, जो अपनी शक्ति के अनुसार में कर सकती था।

पनीर की दुकान

सेंटपीटर्सबर्ग में मानेज एक जगह है। वहाँ ज़ार अक्सर सैर करने जाया करता था। यह निश्चय हुआ कि उसके रास्ते में सडक के सहारे एक दूकान ले ली जाय। वहाँ बैठकर डाइनामाइट गाड़ दिया जाय। जब शाही सवारी सडक पर होकर निकलेगी, तभी धडाका कर दिया जायगा। पनीर की दुकान खोलने की बात तय हुई। मैंने राय दी कि उस पर बौग्डानोविच बैठाया जावे। वर्ष के आरम्भ मे बौग्डानोविच और याकिमोवा उसकी स्त्री बनाकर दुकान पर नियुक्त कर दिये गये। उन्होंने डाइनामाइट रखने को जमीन खोदना शुरू कर दिया।



११

ज़ार की हत्या



च फरवरी में, एक दिन जार मानेज जाने के लिए उसी सडक पर होकर निकला, जहाँ हमारी दुकान थी। परन्तु दुःख की बात यह थी कि सडक के अन्दर जमीन खुद चुकने पर भी, वहाँ डाइनामाइट नहीं रखा गया था। अब न जानें, जार के दुबारा वहाँ होकर निकलने के लिए कितने दिन तक इन्तजार करना पडता!

जार की हत्या के लिए छै बार असफल उद्योग होचुका था। कमेटी ने यह निरचय किया कि अबकी बार जो उद्योग हो, वह अन्तिम और ऐसा हो कि किसी भी हालत में जार के प्राण न बचें। कमेटी ने यह आदेश दिया कि पहली मार्च तक सारा इन्तजाम पूरा कर लिया जाय, और डाइनामाइट, बम वगैरह सब चीजें यथा-स्थान पहुँचा दी जायँ। इस सातवें अन्तिम उद्योग के लिए एक ही समय में जार पर तीन तरह से वार करने का निश्चय हुआ। पहला तरीक़ा यह था कि जिस वक्त शाही सवारी सड़क पर डाइनामाइट वाली जगह पर होकर

निकले, उसी वक्त पनीर की दुकान से, धडाका कर दिया जाय। दूसरा ढङ्ग यह था कि यदि किसी तरह धडाका ज़ार की सवारी के निकलने के पहले या बाद में हो, तो फिर, रीसाकौव, ग्रीनैविट्स्की, टिमौफे और इमैलियानौव नाम के चारों व्यक्ति, सडक के दानों ओर से ज़ार के ऊपर बम बरसाना आरम्भ करदें। यदि इसमें सफलता न मिले, तो, तीसरा उद्योग यह था कि जैल्यावौव छुरे से ज़ार का काम तमाम कर दें।

बौग्डानोविच और याकिमोवा व्यापार के काम मे दक्ष नहीं थे। इससे उनके वहाँ दुकान करने से पडोस के दुकानदार प्रतिद्वन्द्विता के भाव से जलते नही थे। हमारे पास रुपया भी इतना नहीं था जिससे दुकान मे व्यापार के लिए हम काफी माल भर सके। दुकान मे जो पीपे रखे हुए थे, उनमें माल की अपेक्षा, सडक के नीचे की खुदी हुई मिट्टी भरी हुई थी। हमारा साथी ट्रिगौनी, संयोग से, नैव्स्की मुहल्ले मे एक ऐसे मकान में रहता था, जहाँ खुफिया पुलिस का एक जासूस भी रहा करता था। इसके साथ ही हमारे आदमियों मे अनुभव की कमी, और सडक के नीचे किसी सुरङ्ग में रात को काम करने वाले मजदूरों मे पैदा हुए सन्देह के कारण, पुलिस की निगाह हमारी दुकान पर पड गई। २७ फ़रवरी को अपने मकान पर, ट्रिगौनी और जैल्यावौव पकडे गये। उसी वक्त यह खबर उडी कि जिस मुहल्ले में हमारी दुकान है, वहाँ पुलिस को किसी महत्त्वपूर्ण बात का पता चल गया है। इसी बीच में बौग्डानोविच ने, जो कौबोजैव

१०

के नाम से काम कर रहा था, आकर कहा कि हमारी दुकान पर सैनिटरी कमीशन (स्वास्थ्य-सम्बन्धी जाँच पड़ताल करने वाला कमीशन) के बहाने से कुछ लोग आये थे, और उनमें से एक आदमी ने यह भी पूछा था कि दुकान में तरी क्यों है ? इसका जवाब यह दे दिया गया कि मेले के दिनों में यहाँ बहुत सा दही फैल गया था। खैर यह हुई कि उन लोगों न पीपे खुलवाकर नही देखे। यदि वे पीपों को खुलवाकर देखते तो हमारे दो वर्ष के उस काम पर पानी फिर जाता, जिसे हमने अपनी जान ख़तरे में डाल कर बडी मिहनत से किया था, और अब जबकि, उस काम की सफलता देखने का समय आगया था। हमें अपने आदमियों की रक्षा की चिन्ता नही थी, बल्कि चिन्ता तो यह थी कि उस समय, जबकि, हम उन सब बातों का अन्त कर रहे थे, जिनके कारण हमारे २१ आदमी फाँसी पर चढ़ चुके थे, और हमें अपरिमित कठिनाइयाँ झेलनी पडी थीं, हमारा रहस्य न खुले। आज शनिवार का दिन था, और पहली मार्च इतवार के लिए यह सब तैयारियाँ थीं।

खुफ़िया पुलिस के महकमे में हमारा एक मित्र क्लैटोचनिकौव क्लर्क था। वह हमें अपने महकमे की सब ख़बरें लाकर देता था। ऐसे मौक़े पर उसकी अनुपस्थिति और जैल्याबौव की गिरफ़्तारी से हमारे काम को बड़ा धक्का लगा। जैल्याबौव उक्त बार बम फेंकने-वालों का मुखिया था। उसके मरने से हमें विस्फोटक पदार्थ तुरन्त ही हटा लेने पड़े, और उस जगह को भी छोड़ दे

पड़ा, जहाँ पर बम फेकने-वाले इकट्ठा होकर अपनी तेयारियाँ करते थे। यह जगह छोड़ देने का कारण यह था कि वहाँ पुलिस पहुँच चुकी थी। इन दो बातों के अतिरिक्त, हमारे दुख की सीमा न रही उस वक्त, जब हमे यह मालूम पड़ा कि कल पहली मार्च को ज़ार निकलेगा, और यहाँ अभी तक, न तो यथा-स्थान डाइनामाइट ही रखा गया है और न उसके सुलगाने के लिए तारों में से एक भी तार तैयार है।

इन कठिनाइयो का सामना करते हुए, हमने उस दिन २८ फरवरी शनिवार को, कमेटी की बैठक की। सूचना न मिलने के कारण उसमे सब मेम्बर न आ सके। मीटिङ्ग मेरे मकान पर ३ बजे हुई। सब मेम्बरों के हृदय में एक ही भावना थी। जब पैरोव्स्काया ने पूछा कि यदि कल ज़ार, दुकानवाली सडक मे होकर न निकले और दूसरे रास्ते से चला जाय, तब क्या किया जाय, तब सब लोगों ने एक स्वर मे कहा—कुछ भी हो, कल काम ज़रूर कर डालना चाहिए। रात ही मे डाइनामाइट भी लग जाय और बम भी तैयार कर लिये जायँ, क्योंकि धड़ाके के साथ, सम्भवत बम का प्रयोग करना भी जरूरी हो सकता है।

इज़ाइयैव डाइनामाइट रखने और सुलगाने को तार लगाने के लिए तुरन्त ही दुकान पर भेज दिया गया। यह निश्चय हुआ कि अब हम सब लोग दूसरे दिन इतवार को सुबह मिलेंगे, तभी हर एक का निश्चित काम बतला दिया जायगा। मेरे मकान पर सुखानौव, किबैलकिक, ग्राचैव्स्की, पैरोव्स्काया और मे, बम

बनाने में जुट गये। मुझे वैज्ञानिक अनुभव न था, किन्तु जहाँ जरूरत पड़ती थी, वहीं मैं हाथ लगा देती थी। पैरौव्स्काया बन थक गई थी, उसे सुला दिया और रात के २ बजे मैं भी इसलि सोगई कि साथियों को मेरी जरूरत न थी। बाक़ी तीनों आद मियों ने सुबह तक दो बम पूरे तैयार कर डाले और पैरौव्स्काय उन्हें सैबलिन के मकान पर ले गई।

फिर सुरानौव भी चला गया। बाक़ी हम तीनों ने सुबह बजे तक दो बम बनाकर और तैयार कर लिये। इस प्रकार चा आदमियों ने १५ घंटे में ४ बम तैयार कर लिये। १० बजे चा बम फेंकने वाले सैबलिन के यहाँ जाकर इकट्ठे हुए। पेरौव्स्का ने जैल्याबौव की जगह लेकर सबको काम बतला दिया औ यह भी समझा दिया कि काम पूरा करने के बाद वे कहाँ मिलें।

रविवार

मेरा यह काम था कि मैं २ बजे तक मकान पर रहूँ औ दुकान से लौटे हुए आदमियों को वहीं मिलूँ। बौग्डानोविच क काम था कि ज़ार की सवारी आने से एक घंटे पहले दुकान छो दे और याकिमोवा उस वक्त दुकान छोड़े, जबकि, सिगनल उसे यह मालूम होजावे कि शाही सवारी नैव्स्की मुहल्ले में आ गई। फ्रोलैंको के जिम्मे यह था कि दुकान में यथा समय डा नामाइट की बिजली के तार का बटन दबा दे, और अगर ज़िन्द रहे तो, एक ग्राहक की तरह दुकान से धीरे धीरे खिसक जाव

१० बजे फ्रौलैङ्को मेरे मकान पर आया। उसके पास लाल शराब की एक बोतल और खाने का कुछ सामान था। वह मेज पर खाने पीने में लग गया। मैंने पूछा कि हजरत, क्या कर रहे हो। उसने हँसते हुए कहा कि मैं मजे मे खाना खा रहा हूँ, जिससे काम करने के लिए वक्त पर मुझमें पूरी शक्ति रहे। मैंने मन ही मन उस वीर को प्रणाम किया इसलिए कि, उस दिन वह जो काम करने जा रहा था, उसमे उसका बचना प्राय असम्भव था। मैं रात को २ बजे तक जगी थी, इसके सिवा मैंने और कोई अधिक खतरे का काम भी नहीं किया था, परन्तु उस दशा में भी, मुझे खाना पीना कुछ न सूझा। मुझे ताज्जुब तो यह था कि जो आदमी अभी हाल मौत से खेलने जा रहा है, उसे मजे में खाने पीने की सूझ रही है।

मेरे यहाँ दुकान से कोई नही आया। इज़ाइयैव जरूर लौटा और यह खबर लाया कि ज़ार दुकान की ओर आया ही नहीं, बल्कि सीधा मानेज से घर लौट गया। परन्तु मैं यह बिल्कुल ही भूल गई कि इज़ाइयैव को ज़ार के लौटने के रास्ते के हाल का पता नहीं है, और कल की कमेटी की तय की हुई यह बात भी मुझे याद न रही कि कहीं भी हो, ज़ार मार जरूर डाला जायगा। मैं यह खयाल करके घर से निकल पडी कि शायद किसी कारण यह उद्योग हुआ ही नहीं।

असल मे ज़ार सैडोवाया सडक पर, जहाँ कि दुकान थी, आया ही नहीं। इस अवसर पर सोफिया पैरौव्स्काया ने अपनी

सूझ-बूझ का अच्छा चमत्कार दिखाया। वह फौरन ताड़ गई कि जार ईकैटेरिनिन्स्काया नहर के बाँध के रास्ते लौटेगा, इसलिए उसने पहला सारा प्रोग्राम बदल कर, केवल बम का प्रयोग करने का निश्चय किया। उसने बम फेंकने-वाले चारों आदमियों को दूसरे रास्ते पर लाकर नई जगहों पर खड़ा कर दिया और हुक्म दे दिया कि जैसे ही उसका रूमाल हिले, वैसे ही जार पर बम बरसा दिये जायँ!

दो बज ही पाये थे कि एक के बाद दूसरी तोप छूटने की सी आवाज हुई। यह आवाज बमों की थी। रीसाकौव के बम ने शाही गाडी को चूर चूर कर डाला और ग्रीनियेविट्स्की का फेंका हुआ बम जार के लगा। इससे वह और जार दोनो ही बुरी तरह घायल हुए और कुछ ही घटों मे दोनों मर गये।

चारों ओर खबर फैल गई। मुझे भी यह मालूम हुआ कि लोग गिरजों मे जाकर नये जार एलेक्जेण्डर तृतीय के प्रति राजभक्ति की शपथ ले रहे हैं।

मैं तुरन्त ही घर लौट आई। बाजारों में चारों ओर जार की हत्या, उसके खून, घाव आदि बातों की चर्चा हो रही थी। मैं भी खूब रोयी। परन्तु मेरे आँसू हर्ष के आँसू थे। वे आँसू ऐसे थे जैसेकि बडे भयानक स्वप्न के बाद खतरे से छुटकारा पाकर आदमी हर्ष से गद्गद होकर रो पडता है। दस वर्ष से हमारी आँखों के सामने रूस के लाखों नौजवानों पर, जार

शाही के पाशविक और बर्बरतापूर्ण अत्याचार हो रहे थे, हजारों आदमी निर्वासित हो चुके थे, बहुत से देशभक्त जेलों की चहारदीवारी में बन्द थे और बहुत से शहीदों का खून बह चुका था। इन सब बातों का खयाल करके ही, हम आज अपने हाथों से उसका बदला चुका कर हर्ष के मारे गद्गद हो उठे। यह भी कुछ कम सन्तोष की बात नहीं थी कि हमारे इन्हीं कामों के फलस्वरूप रूस में नव्य राष्ट्र का नये सिरे से निर्माण होने की आशा थी।

सुखानोव जब लौटकर हमसे मिला तब उसके हर्ष और जोश की सीमा नहीं थी। उसने हमें रूस के उस भविष्य के नाम पर बधाई दी, जिसके लिए यह सब उद्योग किये जा रहे थे।

हमारी कमेटी ने कुछ दिन बाद एलेक्जेण्डर तृतीय के नाम एक चिट्ठी भेजी। उसमें हमारी पार्टी की मनोवृत्ति स्पष्ट रूप से झलकती थी। वह चिट्ठी इतनी विनम्रता, राजनैतिक नैपुण्य और सहानुभूति के साथ लिखी गई कि रूस भर की जनता ने उसका समर्थन किया। विदेशों में उसके छपने पर बड़ी सनसनी फैलगई। यहाँ तक हुआ कि, उदार और दकियानूसी विचार के पत्र पत्रिकाओं ने भी रूसी क्रान्तिकारियों की माँगों का पूर्णतया समर्थन किया। उन्होंने यह भी लिखा कि वे माँगे उचित, न्याय-पूर्ण और ऐसी हैं जो पश्चिमी यूरुप में लोगों के दैनिक जीवन का अङ्ग बन गई हैं।

कमेटी की चिट्ठी इस प्रकार थी —

"राजन्,

आपके दु:ख को पूर्णतया अनुभव करते हुए भी, हमारी कार्यकारिणी कमेटी आपको पत्र द्वारा वर्त्तमान स्थिति बतलाने में समय बर्बाद न करती, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति का देश के प्रति कर्त्तव्य, मानवीय भावनाओं के भी ऊपर है। इस कर्त्तव्य का पालन करने में मनुष्य को अपनी, अथवा दूसरों की भावनाओं और सुविधाओं की आहुति देनी पड़ती है, इसलिए हमने आप को तुरन्त ही लिख देने का निश्चय कर लिया है, क्योंकि ऐति हासिक घटना-चक्र के गर्भ में रूस के लिए खून की नदियाँ और बड़ी भयानक क्रान्तियाँ दिखाई दे रही हैं।

आपके पिता की हत्या न तो आकस्मिक ही थी, और न आश्चर्यजनक। जो कुछ विगत दस वर्षों में हो चुका है, उसके बाद यह हत्या अनिवार्य थी, और इसका वास्तविक आशय उस व्यक्ति के लिए अत्यन्त महत्त्व पूर्ण है, जो रूसी साम्राज्य का मुकुट है। यदि कोई इस हत्या का यह अर्थ लगावे कि यह किसी एक व्यक्ति, अथवा किसी खास समुदाय का काम है तो यह कहना पड़ेगा कि वह देश के जीवन प्रवाह को समझता ही नहीं। दस वर्षों में सरकारी दमन के द्वारा, देश में बेहद अत्याचार हुए, उद्योग धन्दों और लोगों की आज़ादी को कुचला गया, और साथ ही, इन सब कामों से आपने पिता ने अपने गौरव से भी तिलाञ्जलि दे दी। इसका नतीजा यही

था कि लोगों के मन मे क्रान्ति की भावना जम गई और उसने
ा की जीवनोपयोगी शक्तियो को अपनी ओर आकर्षित कर
िया। आपके पिता की सरकार को अकर्मण्यता का दोष नहीं
गाया जा सकता। उसने हमारे उन साथियों को, जो अपराधी
, और उन्हे भी, जो बिल्कुल निर्दोष थे, फाँसी पर लटका
या, जेलों और साइबेरिया प्रान्त को कैदियों और निर्वासित
ोगों स भर दिया, और उन्हें बहुत बडी सख्या मे पकड कर,
नके साथ ऐसा व्यवहार किया गया जो दुनियाँ की नजर मे,
ारशाही के मुँह पर कलङ्क की कालिमा थी।

राजन, आप यह समझ ले कि क्रान्तिकारी आन्दोलन
यक्ति-गत रूप मे नही चल रहा, बल्कि यह तो, समूचे राष्ट्र का
क अङ्ग है। पतित समाज के आत्मोद्धार के लिए जब ईसा को
ूली पर प्राण देने पडे थे, तब उससे, उस महात्मा का समाज-
ुधार का काम बन्द नही होगया था। इसी तरह, आपकी सर-
ार के दमन, फाँसी आदि मे हमारे क्रान्तिकारी आन्दोलन का
ाल भी बाँका नहीं हुआ।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि आप क्रान्तिकारियों को
कड सकते है, उन्हें फाँसी पर चढा सकते हैं, और सम्भवत
ुख्य से मुख्य क्रान्तिकारी दलों को नेस्तनाबूद भी कर सकते हैं।
यह आन्दोलन जनता के असन्तोष तथा सरकार के अनुत्तर-
दायित्वपूर्ण शासन पर निर्भर है, और यही क्षेत्र है जिसमे नये
नये क्रान्तिकारी पैदा होते चले जारहे हैं। इसलिए क्रान्तिकारी

आन्दोलन को बिल्कुल नष्ट कर देना, तमाम रूसी जाति
मार डालने के बराबर है। परन्तु यह दोनों ही बातें
असम्भव हैं। सरकार के अधिकाधिक दमन से, क्रान्तिकारि
प्रबल वेग से बढ़ने के साथ ही उनका कार्य्यक्षेत्र भी बढ़ता
जाता है। सन् १७८४ का इतिहास, सन् १८७८ से अबतक
घटनाएँ और हमारी कार्य्यकारिणी का जन्म इसका प्रमाण है

यदि सरकारी कूटनीति का यही हाल रहा, तो, क्रान्ति
आन्दोलन भविष्य में मार-काट और खून-खराबी से कि
विकराल रूप धारण करेगा, यह हम धमकी के तौर पर
नहीं कहते, बल्कि इतिहास आपको बता देगा और आप
ही समझ लेंगे। हमारे देश की भावी स्थिति की वह कल्पना
दुखदायी है। यह खयाल हमारे हृदय को इसलिए टूक टूक
रहा है कि हमारे देश की जीवनोपयोगी और अनोखी
क्रियात्मक शक्ति का, जो देश के विकास के लिए रचनात्
कामों में लगाई जा सकती है, विप्लव में सहार होगा।
खुद ही विचार कर लीजिए कि इस दुखद दृश्य को देखने
क्या जरूरत है?

यह कहने के लिए हमें क्षमा कीजिए कि इस समय
कोई सरकार नहीं है। क्योंकि, सरकार ऐसी होनी चाहिए
जनता के सच्चे भावों को प्रकट करे और उसके कामों में
की आकांक्षा का प्रतिबिम्ब झलकता हो। सरकार ने उन
को गुलामी की जंजीर में जकड़ दिया है, और वह उस

ज़मींदारों के हाथ मे दे रखी है। अब जनता को और भी ज़्यादा चूसने के लिए वह पूँजीपतियों की एक जाति अलग बना रही है। फलस्वरूप चारों ओर दरिद्रता फैल गई है और बर्बादी का बोलबाला है। घरों से भी आज़ादी का नामोनिशान मिट चुका है, और वह अब अपमानजनक निगरानियों मे परिणत होगई है। गाँव के पञ्चायती मामलों में भी लोग पराधीन हैं। कानून और सरकार केवल उन्हीं लोगों की रक्षा करती है जो सार्वजनिक दोहन और नाश के लिए ज़िम्मेदार हैं। जो आदमी सार्वजनिक हित के पक्ष में आवाज़ उठावे, उसके लिए निर्वासन और फाँसी के सिवा और है ही क्या? इस दशा मे, हुज़ूरवाला ही समझ ले कि ऐसी सरकार, बदमाशों और लुटेरों का गरोह नहीं है, तो है क्या? यही कारण है कि रूसी सरकार जनता का एक अङ्ग नहीं है, और न उसमें उसका विश्वास ही है। इसीलिए यहाँ क्रान्तिकारी इस बडी संख्या मे उपजते हैं, और ज़ार का प्राण घातक बडा लोक प्रिय और आदरणीय व्यक्ति माना जाता है। आप चापलूसों की बातों में आकर धोखा न खाजावें।

केवल दो ही मार्ग हैं। या तो आपकी सरकार जनता की ओर झुके, या फिर, आप देश को अनिवार्य क्रान्ति के गहरे गर्त्त मे गिरने दें। देश के हित को ध्यान में रखते हुए, और उसे विप्लव के भयङ्कर परिणामों से बचाने के लिए, कार्य्यकारिणी कमेटी आपको यह सलाह देती है कि आप पहले मार्ग का अनुसरण करें। उस दशा में, सरकार जनता के आगे उत्तरदायी

होजायगी, आपको दमन-चक्र चलाने की जरूरत न रहेगा, और हम भी, हिंसात्मक मार्ग को छोड़कर, देश की उन्नति के लिए रचनात्मक कामों में लग जायँगे। विश्वास रहे कि हम इस काम को आपके नौकरों की अपेक्षा, अधिक दुःख के साथ अनिवार्य समझ कर करते हैं।

सरकार के अत्याचारों को भुलाकर, तथा आपको उस सत्ता का राज-मुकुट भी न समझ कर, जिसने लोगों को अब तक धोखा दिया, और उनका बहुत नुकसान किया, हम, आपको एक रूसी नागरिक और प्रतिष्ठित व्यक्ति समझ कर, आपसे अपील करते हैं। आप कर्त्तव्य के सामने अपने पिता की हत्या से पैदा हुई व्यक्ति-गत कटुता को भुला दें। आपने तो केवल अपने पिता को ही खोया है, किन्तु हम न केवल अपने, पिताओं से ही हाथ धो बैठे हैं, बल्कि अपने भाइयों, पत्नियों, बच्चों और प्रिय मित्रों से भी। हम मातृभूमि की आवश्यकता को अनुभव करके अपनी कटुता को भुलाते हैं, और यही, आपसे भी आशा करते हैं।

यह न खयाल कीजिएगा कि हम कोई शर्त्तें पेश कर रहे हैं। क्रान्तिकारी आन्दोलन की प्रवृत्ति शान्ति की ओर मोड़ देने के लिए जिन बातों की जरूरत है, वे हमारी शर्त्तें नहीं, बल्कि वह तो एक ऐतिहासिक आवश्यकता है। वे जरूरी बातें दो हैं—(१) समस्त राजनैतिक क़ैदी छोड़ दिये जावें, इसलिए कि, उनके काम जुर्म नहीं थे, बल्कि नागरिक कर्त्तव्य का पालन था। (२) रूसी

[ज]नता के प्रतिनिधियों की एक एसेम्बली स्थापित की जाय, और [व]ह, देश के वर्त्तमान राजनैतिक और सामाजिक ढाँचे की [जाँ]च-पड़ताल करके, उसे, लोगों की इच्छा के अनुसार बना दे।

हम नये शासन विधान पर, सार्वजनिक अधिकार की छाप [ल]ग जाने के लिए, यह जरूरी समझते हैं कि व्यवस्थापिका सभा [के] प्रतिनिधियों के चुनाव में किसी प्रकार का अड़ङ्गा न डाला [जा]वे। चुनाव के लिए नीचे लिखी बातों का पूरा किया जाना [आ]वश्यक है —

(१) एसेम्बली में मेम्बर सब तरह के लोगों में से उनकी सख्या के अनुसार चुने जावें।

(२) मेम्बरों और उनके चुननेवाली जनता के काम में किसी तरह की रुकावट न हो।

(३) चुनाव की तैयारी, और चुनाव बिल्कुल स्वाधीन वातावरण में किया जाय। और जब तक एसेम्बली बैठकर तय न करदे, तब तक सरकार अस्थायी रूप से लिखने, बोलने, मीटिङ्ग करने और चुनाव के कार्यक्रम के विषय में लोगों को पूरी आजादी दे दे।

केवल यही एक साधन है जिससे अब रूस शान्तिमय जीवन व्यतीत करके उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। हम अपने देश और ससार के सामने घोषणा करते हैं कि जो एसेम्बली ऊपर बताये हुए ढँग से चुनी जायगी, उसका हुक्म मानने के लिए, हम बिना किसी शर्त्त के बाध्य होंगे। जो सरकार ऐसी

एसेम्बली स्थापित करेगी, हम कभी उसका विरोध न करें। अब आप दोनों में से किसी भी एक मार्ग का अनुसरण कर लीजिए, पसन्द करने का भार आपके ऊपर है। हम तो विनय से प्रार्थना करते हैं कि आप देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझ कर उस मार्ग को ग्रहण करें, जिसमें रूस की भलाई हो, और आपका गौरव बढ़े।

१० मार्च १८८१ } कार्य्यकारिणी कमेटी

जार की हत्या के बाद धर पकड़ शुरू हो गई। हमारे बहुत से कार्य्य कर्त्ता पकड़े गये, जिनमें सोफिया पैरौव्स्काया, किबैल्चिह, फ्रौलैङ्को, और पीसारैव का नाम उल्लेखनीय है। सब लिन ने स्वयं गोली से आत्महत्या कर डाली। चौरडानोविच और याकिमोवा के लिए यह तय हुआ कि वे फौरन दुकान छोड़ कर, सेंटपीटर्सवर्ग से चले जावें।

हम यह भी मालूम हो गया कि सरकार के पास ऐसा जरूर कोई आदमी* है जो हम लोगों को नाम से नहीं, किन्तु शक्ल से पहचानता है और जो सडक पर हमारे आदमियों की आर इशारा करके पकड़वा देता है। यहाँ रहने के खतरे की वजह से, कमेटी ने, हममें से कुछ लोगो को सेंटपीटर्सबर्ग से चले जाने का हुक्म दे दिया। मैं भी उनमें से एक थी। हम सब

* यह मज़दूर ग्रौकलाडरकी था, जो सन् १८८० में क्यादकौस्की के मुक़दमे में निर्वासित किया गया था।

'हीं भावों से प्रेरित थे कि अब इस अवसर को, अपनी पार्टी
ा फिर से सङ्गठित किये बिना न जाने दें। यह मौक़ा इस
ाण और भी अच्छा था कि अब लोगों में उत्साह बहुत बढ
या था, और हमारे कार्य्यक्रम से अधिकाधिक लोग सहानुभूति
रखने लगे थे और चाहते थे कि उन्हें भी काम दिया जावे।
भिन्न राजनैतिक समितियों ने हमारे प्रतिनिधियों को माँगा
ौर हमसे सम्बन्ध जोड़ना चाहा, तथा वे हमें अपनी सेवायें
र्पित करने लगीं। इन सब बातों ने हमें बहुत उत्साहित कर
या। कार्यकर्त्ताओं को उस समय, सेंटपीटर्सबर्ग छोड़ना
ाड़रता था। सुखानौव की सहायता से मैं कुछ दिन और
हाँ रह सकी।

एक विश्वासघाती ने इजाइयैव को भी पकड़वा दिया। जो
ोग पहले पकड़े जा चुके थे, उनमें बहुत से मार्च के अन्त तक
ार दिये गये! हम लोगों ने सेंटपीटर्सबर्ग में एक दूसरे की ख़ैर-
ख़बर के लिए यह समझ रक्खा था कि जो रात को घर लौट कर
न आवे, वह किसी तरह सरकार के पञ्जे में फँस गया।

सेंटपीटर्सबर्ग के जिस मकान में मैं रहती थी, वह अब
सामान का एक गोदाम-सा बनता जा रहा था। जो लोग पकड़े
जा चुके थे, उनके चार्ज के डाइनामाइट और बम के सामान से
लेकर क्रान्तिकारी साहित्य, अख़बार, प्रेस, टाइप आदि सामान
सब कुछ मेरे मकान में आगया। मैंने भी सोच लिया कि मकान
छोड़ने से पहले यह सब उपयोगी सामान कहीं इधर-उधर कर दूं।

मैं दूसरी अप्रैल को सामान बाँधने मे लगी रही, जिससे उसके हटाने मे सुविधा हो। माचैव्स्की १ वजे आया और वह इस बात से सहमत था कि सामान किसी भी तरह खो न दिया जाय। मैंने उससे कह दिया कि सुखानौव को खबर दे दो, वह बडा दक्ष हैं, सब काम बहुत खूबी से कर लेगा। माचैव्स्की से मालूम हुआ कि पुलिस बडी सरगर्मी से जाँच-पडताल म लगी रही है।

कुछ घटे बाद, सुखानौव नौसेना के दो अफसरों को लेकर आगया और शाम के ८ वजे तक सारा सामान ढोकर ले गया। केवल दो बक्स रह गये, जिनमें कोई खास सामान न था। सवेरे आकर दो औरतें उन्हे भी उठा लेगईं। सुखानौव ने मुझसे रात ही को यह मकान छोड देने को कहा था। परन्तु मैंने उसकी अनुमति से सवेरे जाने का निश्चय किया। सवेरे जैसेही मैंने मकान छोडा वैसेही एक घण्टे मे पुलिस वहाँ आ पहुँची।

तीसरी अप्रैल को जार की हत्या करने वालों की फाँसी का दिन था। उस दिन आसमान साफ था, बर्फ गल रही थी, और सुरज की सुनहली किरणें चारो ओर छिटक रही थीं। मेरे मकान से बाहर आने के वक्त तक खुले आम फाँसियाँ लग चुकी थीं और चारों ओर उन्हीं की चर्चा थी। लोग उस चौरस्ते मे, जहाँ फाँसियाँ लगी थीं, लौट रहे थे। मेरा दिल पैरोव्स्काया और जैल्यावौव के लिए दुखित हो रहा था।

सोफिया पैरौव्स्काया

सोफिया पैरौव्स्काया के जीवन और उसके अन्त की एक तिहासिक घटना थी। उसके क्रान्तिकारी काम विशेषतया उल्लेखनीय हैं। यह पहली स्त्री थी जो राजनैतिक जुर्म के कारण फाँसी पर चढ़ा दी गई।

यह उस व्यक्ति की लड़की थी, जो जार एलेक्जेण्डर द्वितीय समय में सेंटपीटर्सबर्ग का गवर्नर था, उस व्यक्ति की पोती थी जो प्रथम एलेक्जेण्डर के समय में क्रीमिया का गवर्नर था, और उस व्यक्ति की पत्नी थी, जो रूस के कई प्रान्तों का गवर्नर रह चुका था। संयोग से इसके मुकदमे में सरकारी वकील वह आदमी था, जो बचपन में इसके साथ खेला करता था, और प्स्कोव (Pskov) में इन दोनों के पिता पड़ोसी थे। सरकारी वकील मुराइयैव था, जो बाद में न्याय विभाग का मिनिस्टर हो गया। यह बड़ा जालिम और पतित आदमी था, और सदा जनता के विरुद्ध कानूनी दाव पेचों का उपयोग करने में लगा रहता था।

पैरौव्स्काया के हृदय में बचपन ही से मानव-समाज के प्रति बड़ा प्रेम था और उसे अपने देश के गौरव का बड़ा अभिमान था। मेरी गिरफ़ारी के बाद, खुद मुराइयैव ने उसके बचपन का हाल मुझे बताया था। भूपन्दारों के जमाने में गुलामी की जो प्रथा पड़ गई, पैरौव्स्काया उसके बहुत खिलाफ थी, क्योंकि उससे मानवीय व्यक्तित्व का अनादर होता था। यह प्रथा बचपन ही से

उसे घर में देखने को मिली। इसका पिता पैरीस्की बड़ा निरंकुश था। वह अपनी स्त्री को स्वयं ही अपमानित नहीं करता था, बल्कि अपने जरा से लड़के से भी, जबर्दस्ती उसका अपमान कराता और गालियाँ दिलवाता था। परन्तु वह देवी धार्मिक सौम्यता और मृदुलता की प्रतिमूर्ति थी। घर के इस अत्याचार पूर्ण वातावरण ने सोफिया में मानव-समाज के प्रति प्रेम उत्पन्न कर दिया। और माँ की मुसीबतों ने पीड़ितों और सताये हुए लोगों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर दी।

सोफिया को अपने घर का वायुमण्डल बहुत ही विषैला जान पड़ा। इसलिए वह पिता की, पुलिस के द्वारा पकड़वा देने की धमकी के बाद भी, घर छोड़कर बाहर निकल आई।

सोफिया में सुशीलता और दयालुता के गुण अपनी माँ से आये थे। चैकौव्स्की के साथ काम करने में उसने किसानों के साथ बड़ी सहानुभूति दिखाई और उनके आत्मोद्धार के कामों में बहुत हाथ बँटाया। जब मैं और वह देहात में, डाक्टर की हैसियत से काम कर रही थी, तब वह किसानों की सेवा में इस प्रकार तल्लीन होगई, और कृषक-जीवन में इस प्रकार घुल मिल गई, मानो किसानों के त्राण ही के लिए संसार में वह पैदा हुई थी। जब कमेटी के हुक्म से हम दोनों को सेंटपीटर्सबर्ग चले जाने का हुक्म हुआ तब हमारे दिल तो देहात ही में रह गये, क्योंकि, हमारा विचार था कि रूस के आत्मोद्धार का श्रीगणेश देहात ही से होगा।

कार्यकारिणी कमेटी की मार-काट की जितनी स्कीमें थी, को पूरा कर दिखाने मे यह सबसे आगे थी। सोफिया एक दमी की पत्नी बनकर रेल-रोड वाले झोंपड़े मे रही थी। इसीने र की ट्रेन को डाइनामाइट से उड़ाने के लिए सिगनल दिया, और शाही महल के धड़ाके के बाद इसीने ओडैसा जाकर इक के नीचे डाइनामाइट रखने का इन्तजाम किया था। सन् म जैल्यावौव के साथ यही जार की दिन चर्या की निगरानी लिए नियुक्त की गई थी, और इसीने आत्म-नियन्त्रण द्वारा मेटी का सारा प्रोग्राम एक क्षण भर मे बदल कर, कुछ ही नटों में नये सिरे से जार की हत्या का प्रबन्ध कर डाला। फिया ही ने मौके पर अपने रूमाल से वह सिगनल दिया था, ससे जार के ऊपर बम वर्षा हुई थी। इसीकी कर्मण्यता, त्कालिक निर्णय और प्रबन्ध-कौशल का यह नतीजा था कि ली मार्च को जार की हत्या होसकी, और कमेटी को सफलता ली। यही वीराङ्गना थी जिसने अपने प्राण देकर विजय की मित चुकाई।

सोफिया दयालु तो थी ही, परन्तु सरकार के प्रति जो अत्यन्त र्दयतापूर्ण उसका रोष-भाव था, वह माँ से नहीं, बल्कि अपने ता से उसे मिला था। इसकी निष्ठुरता के सामने सुखानौव ऐसे कट क्रान्तिकारी भी काँप जाते थे।

सोफिया का प्रेम दो आदमियो से—जैल्यावौव और फ्रौलैङ्को —विशेष था। वे दोनो ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के आदमी थे।

सोफिया स्वयं भी बड़ी साध्वी थी। बनावट और दिखाव छू तक नहीं गया था। उसका जीवन हर तरह से बहुत था।

ईमानदारी का गुण तो उसमें पराकाष्ठा को पहुँच चुका है एक बार वह बीमार पड़ी। बीमारी म कमेटी के १५ (रूसी सिक्का) उसने दवा में खर्च कर डाले। यह उसने के खर्च में नही डाले और अपना एक कपडा बेचकर इस को पूरा कर दिया।

फिर उसकी फाँसी का दिन आया। जैल्याबौव पादरी का लडका किवेलचिह, टिमोफे मजदूर, मध्यस्थिति एक नागरिक रीसाकौव और एक रईस युवती पैरौ स्काया, सब मिमैनौव्स्की चौराहे पर फाँसी के लिए लाये गये। ये रूस के साम्राज्य भर के सब श्रेणियों में से थे, और यही क्रान्तिकारी आन्दोलन की देश-व्यापी शक्ति थी। रीसाकौव सिवा, फाँसी के तख्ते पर सोफिया ने सबको छाती से लगाया रीसाकौव से वह इसलिए नहीं मिली कि अपने आपको के लिए, उसने वह मकान बतला दिया जिसमे वह रहा था, और जिसके फलस्वरूप सैबलिन गोली खाकर मर हैल्फमेंन पकडा जाकर जेल में मर गया और टिमोफे जाकर फाँसी पर चढ गया।

सोफिया फाँसी पर भी विचलित न हुई। जीवन-मरण वह अपने-आपके प्रति सच्ची बनी रही। अपने अद्भुत

कारण वह रूस के इतिहास में अमर हो गई। आज स्वतन्त्र में उसके बलिदान के अमर गीत बड़ी श्रद्धा के साथ गाये ते हैं।

सन् १८७७ में, मेरी भेंट सोफिया से सेंटपीटर्सबर्ग में उस हुई थी, जब १९३ अभियुक्तों के मामले में वह जमानत पर ी हुई थी।

हत्या के परिणाम

अपने मारे जाने के समय तक, ज़ार २६ वर्ष तक शासन चुका था। उसकी हत्या का प्रभाव बहुत बड़ा था। उसके सन काल में तीन मुख्य बातें हुईं—गुलामों का छुटकारा, किल गवर्नमेंट के नये विधान की रचना, और अदालतों का धार। गुलामों के छुटकारे से समाज सन्तुष्ट नहीं हुआ। आम- र पर यह कहा जाने लगा कि जमींदारों के दबाव से यह एक सा समझौता है जिससे वास्तविक उद्देश पूरा नहीं होता। ख्य उद्देश था किसानों की आर्थिक दशा का ऐसा सुधार, जससे वे नागरिकों के अधिकार और जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर सकें। जिन लोगों ने रूस की आर्थिक दशा, और किसानों के हन-सहन की जाँच पड़ताल की, वे, तथा सरकारी कमीशन ी, इस नतीजे पर पहुँचे कि किसान के पास जमीन काफी नहीं और उसकी आमदनी और उगाही में जमीन आसमान का न्तर है। यह अन्तर ऐसा है कि सुख और सन्तोष का जीवन

व्यतीत करना उनके लिए बिल्कुल असम्भव है। प्रिंस वोल्
चिकौव ने तो यहाँ तक कह डाला कि रूस के किसानों की द
द्रता और असहाय अवस्था ऐसी है, जैसीकि, फ्रांस का
१७८९ की बडी राज्यक्रान्ति से पहले, वहाँ के किसानों का

इस प्रकार रूस मे गुलामों के छुटकारे की प्रथा का
अभी दिखावटी ही था। इससे गुलामों की आर्थिक दशा प
कुछ असर नहीं पडा। राजनैतिक बन्धनो से वे छूट गये।
कानूनन उनके साथ गुलामों का सा बर्त्ताव तो न हो सक
था, और न वे जमींदारों की निजी जायदाद ही क
रहे थे, परन्तु आर्थिक मामलो मे वे पहले ही की तरह
हुए थे।

बाकी के दोनो सुधार भी इसी तरह खोखले थे। सुधार
विरोधियों, ज़ार की मानसिक वृत्ति के परिवर्त्तन कानून
काट-छाँट और उसकी प्रतिक्रियात्मक व्याख्या ने सुधारों
केवल ढकोसला ही नहीं बना दिया, वल्कि सामाजिक शक्ति
और सरकार को एक दूसरे से अधिकाधिक दूर कर दिया।
सरकार लोकमत के और भी प्रतिकूल होगई।

सन् १८६० के बाद विद्यार्थी-समुदाय की हलचल,
फलस्वरूप चले हुए मुक़दमे, और सन् १८६३ की पोलैण्ड
विद्रोह से पैदा हुई अशान्ति की बातों ने सरकार और जन
को एक दूसरे से बिल्कुल अलग कर दिया। ज्यों ज्यों सरकार
दमन बढ़ता गया, त्यों त्यों जनता की विरोधाग्नि तीव्र होता गई

सन १८८० तक यह हालत होगई कि रूस का आन्तरिक जीवन और राजनीति पारस्परिक सङ्घर्षण में लिप्त होगई।

पहली मार्च की घटना ने जनता की विचार-शक्ति को जागृत कर दिया, क्योंकि स्वभावत वह यह सोचने लगी कि यह क्या हुआ और क्यों हुआ ? पिछली बात ने उसका ध्यान रूस की सामयिक स्थिति की ओर आकर्षित किया। क्रान्तिकारी प्रचार का भी तो यही अर्थ था कि जनता का ध्यान देश की वर्त्तमान स्थिति की ओर आकर्षित करे, तथा लोगों में असन्तोष फैलावे। अत पहली मार्च ने हमारी दोनों बातें पूरी कर दीं, वे यह कि, मार-काट की दृष्टि से जार की हत्या होगई और प्रचार की दृष्टि से जनता मे जागृति फैल गई।

रूस, कृषि प्रधान देश है। वहाँ की आबादी का बडा भाग किसानों का है। इस हत्या से किसानो के ग्रामीण वायुमण्डल मे हलचल मच गई। वहाँ भी यह प्रश्न उठा कि जार को किसने और क्यों मारा ? अपनी अपनी समझ के अनुसार, इस बात के केवल दो ही तरह के जवाब थे। पहला यह कि, जार को साम्यवादियों ने इसलिए मार डाला कि वे किसानो का भला चाहते हैं और साथ ही यह भी कि, किसानो के पास जमीन उनकी जरूरतों के अनुसार काफी हो, और अधिकारी आदि के पञ्जे से वे आज़ाद हो जावे। दूसरा यह था कि, रईस और जमीदारों ने यह हत्या की है इसलिए कि, वे अपने हक़ के लिए जार से लड रहे थे और जो गुलामी की प्रथा बन्द कर दी गई

थी, वे फिर उसे जारी कराने के पक्ष में थे। ऊपर कही हुई द
ही सूरतों में, किसान हमारे पक्ष में थे, क्योंकि हमार और
स्वार्थ मिल गये थे। इस प्रकार इस हत्या ने वह काम क
दिखाया जो हमारे प्रचार की कई दशाब्दियों से पूरा न होसका
था। लोग खुल्लमखुल्ला हमारी कमेटी से कहते थे कि आप
हमारे ऊपर शासन करो। दुःख है कि फ़सल इस प्रकार पका हुई
खड़ी थी, किन्तु हमें उसके काटने वाले पैदा न थे। मतलब
है कि सरकार के मुकाबले में, हमे अपनी सरकार कायम करने के
लिए, विश्वस्त और अनुभवी कार्य-कर्त्ताओं की कमी थी।
किसानों के इस खयाल ने कि रईस और जमीदारों ने मिलकर
उन्हें फिर से गुलामी के पञ्जे में जकड़ने के लिए जार की
हत्या की है, वह वायुमण्डल पैदा कर दिया जिसमें, रईसों
और जमीदारों का ऐसा क़त्लेआम भी सम्भव होगया, जैसा
कि, इटली पर चढ़ाई करते वक्त लौम्बार्डों ने रोमन रईसों
का किया था। अब हमे केवल इन महान शक्तियों का उपयोग
करना था।

पहली मार्च को रूसी सत्ता पर पायी हुई विजय ने यह सिद्ध
कर दिखाया कि एक सुसङ्गठित दल बड़े से बड़े साम्राज्य पर
विजय प्राप्त करने का साधन होसकता है। इस हत्या के बाद
देश-व्यापी विद्रोह इसलिए नही हुआ कि उसके लिए अभी और
भी अधिक परिश्रम और उद्योग की जरूरत थी और इस समय
ऐसा करना हमारी पार्टी के प्रोग्राम में भी नहीं था।

इस घटना से रूस का सामाजिक और राजनैतिक निर्माण नहीं हुआ। हम इस स्थिति म नहीं थे, और सरकार सचाई से ऐसा करती ही क्यों ? इतनी आशा जरूर थी कि दमन, और शासन प्रणाली मे कुछ फर्क पडेगा और थोडी बहुत रियायते तथा कुछ आजादी भी मिल जायगी, जिससे देश के जीवन मे शान्ति रहे। यह खयाल जनता, देश, नौकरशाही और स्वय जार, सभी के लिए झूठा सावित हुआ। न शान्तिमय जीवन के ही कोई आसार थे और न जार ही के सही-सलामत वच रहने क। घटना चक्र भविष्य के गर्भ मे निहित था और भविष्य निराशापूर्ण था।

हमारे पारस्परिक सङ्घर्षण से समाज अधोगति के गर्त्त मे जा पडा। विप्लव के दिनों मे समाज मे मनुष्यता और उदारता नही रहती। हिंसा, राष्ट्रीय जीवन के विकास को धक्का पहुँचाती है और उसमे अराजकता के साथ पशुता और क्रूरता के भावों को जागृत करती है। हत्यारे को डाइनामाइट, पिस्तौल और फॉसी क सिद्धान्त प्रोत्साहन देते हैं। क्रान्तिकारी इतना जल्दबाज होजाता है कि अपने जीवन ही मे किये हुए कामों का प्रतिफल देखने के लिए हत्या ऐसे भयङ्कर कामों को कर बैठता है। इस दशा मे दोनो ओर के अत्याचार सामाजिक जीवन का अङ्ग बन जाते हैं।

क्रान्तिकारियों मे यह बहुत अच्छी बात थी कि उनमे आपस म बहुत मेल था। लोगो मे यह खयाल था कि हम जो कुछ करते

हैं वह उनकी उन्नति के लिए करते हैं। जनता हमारे मार-काट के कामों से इसलिए और भी सहमत थी कि इन बातों से हमारा कोई व्यक्तिगत लाभ न था और फिर भी, हम देश के हित के लिए अपना सर हथेली पर लिये फिरते थे और जेल, कालापानी फाँसी आदि सभी कुछ सहन करते थे। लोग हमें दुर्लभ नागरिक गुणों के लिए आदर्श समझते थे और हमारे आत्म-बलिदान और अद्भुत वीरता की सराहना करते नहीं अघाते थे।

दमन-चक्र

उधर सरकार के हिंसात्मक कार्यों ने कहीं अधिक भयानक रूप धारण कर लिया था। लिखना और बोलना बड़ी सख्ती से बन्द कर दिया गया था और रूसी कौम आजादी से वञ्चित कर के बिलकुल मुर्दा बना दी गई थी। दर्जनों आदमी फाँसी पर चढ़ा दिये गये, जेलें भर दी गईं, और अगणित आदमी इन्तज़ामिया तौर पर निर्वासित कर दिये गये। साइबेरिया की खानें और सेंट्रल जेलों में मजदूरों को बुरी बुरी गालियाँ देकर बहुत अपमानजनक व्यवहार किया जाता था। वहाँ मार पीट एक मामूली बात होगई थी। हवालात में कोड़े लगना और मर्दों के सामने स्त्रियों को नङ्गा कर देना भी एक साधारण बात थी। इन सब बातों से जनता सरकार के विरुद्ध प्रतिहिंसा के भाव से प्रेरित होकर बहुत भड़क गई और चारों ओर से आवाज़ आने लगी—घूँसे का जवाब घूँसे से ही,

और लाठी का जवाब लाठी से। खुले आम दी गईं फाँसियों ने भी लोगों के उभडने में सहायता पहुँचाई। सरकार को वर्त्तमान खतरों से बचाने के लिए एक बडी संख्या मे खुफिया पुलिस नियुक्त करनी पड़ी। शाही रुपये से जासूसों की एक फौज बन गई। उसमे समाज की सब श्रेणियो के आदमी मौजूद थे। सेनापति, शाही घराने की औरतें, अफसर, वकील, अखबार-नवीस, छात्र, छात्राएं और बहुत कम उम्र के बच्चे भी उसमें शामिल थे। हम यह जानते थे कि धन की लिप्सा आदमी से नीच से नीच कर्म करा बैठती है। फारस के सोने के जूते ने, ग्रीस के बडे-बडे व्यक्तियों को अपनी मातृभूमि बेच देने को प्रेरित कर दिया था। मानव-स्वभाव मे स्वभावत जो धन की लिप्सा मौजूद है, हमारी सरकार ने यथाशक्ति प्रत्येक अवसर पर उसका पूरा उपयोग किया। बडी-बडी सुन्दरियों ने पहले तो युवकों को अपने माया-जाल मे फँसा लिया, फिर उनके साथ विश्वासघात किया। जासूसों द्वारा क्रान्तिकारी समितियाँ स्थापित कराई गईं, उनका सङ्गठन कराया गया, और बाद में विश्वासघात करके उनका खात्मा कर डाला गया। बहुत ही कमीनेपन से लोगो के साथ दगा की गई, लोगों को फँसाने के लिए झूठे मुखबिर बनाये, और उनसे मन चाहे बयान कराये गये, विश्वासघातियों को बडे-बडे ओहदे दिये गये, यह काली करतूतें चाँदी के जूते के बल पर की गईं। अधकचरे क्रान्तिकारियों को, रुपये-पैसे, सजा मुआफ करने, जेल से छोड

देने आदि के प्रलोभन देकर फोड़ लिया गया। यही सबसे जबर्दस्त धक्का था, जो हम लोगों को लगा। हमारे लिए आराम खो देना तो सह्य था, किन्तु यह बात सचमुच असहनीय थी कि जिस आदमी के लिए हम कल तक जान देते रहे हैं, और अपने सगे भाई की तरह हृदय से प्यार करते रहे हैं, वही आज हमें गिरफ्तार कराते हुए हमारा उपहास करता है।

यह सब बातें न्याय के नाम पर की जा रही थीं। इन सब बातों से जारशाही और समूचा अधिकारीवर्ग मनुष्यता की नीचतम पराकाष्ठा को पहुँच चुका था।

हमारे ऊपर एक गहरी मार और पड़ी। हमें अस्त-व्यस्त करने के लिए, क्रान्तिकारी-क्षेत्र में फूट डलवाने के अभिप्राय से, सरकार ने अपनी सारी शक्ति लगा दी। एक ओर तो पुलिस का षड्यन्त्र और जासूसों के हाथ, और दूसरी ओर हममें से कुछ लोगों की अदूरदर्शिता और लापर्वाही ने हमारे क्रान्तिकारी वायुमण्डल को ऐसा बना दिया जिससे सचमुच ही हममें आपस में जूता चल जाता और विगाड़ हो जाता। परन्तु तपे हुए क्रान्तिकारी इन चालबाज़ियों में न फँसे। इसका कारण यह था कि हम सब साम्यवाद के विशुद्ध सिद्धान्तों में रँगे हुए थे, और हमारी कोई व्यक्तिगत आर्थिक आवश्यकताएँ न थीं। दूसरे, हम लोग साधुता के वायुमण्डल में पले और चरित्र की नैतिक कसौटी पर कसे हुए थे।

१२

फौजी अफसरों में



मुझे कमेटी के हुक्म से स्थानीय प्रवन्ध के लिए सेंटपीटर्सबर्ग से ओडैसा जाना पडा। वहाँ मुझे बहुत विश्वासपात्र और कार्यशील व्यक्ति मिले। एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा, जो पहले फौज मे रह चुका था, वहुत से फौजी अफसरो से मेरा परिचय हुआ। जब उनसे मेरी मित्रता होगई, तब मुझे मालूम हुआ कि वे लोग वडे अच्छे आदमी हैं, उनके विचार और आदर्श ऊँचे हैं, और काम भी करना चाहते हैं, परन्तु उनमें सङ्गठन और प्रचार करने की शक्ति नहीं है। उन लोगों ने कभी असली क्रान्तिकारी ढँग पर काम नही किया था। जब मैंने उनसे मित्रों मे अपना कार्य्यक्षेत्र वढाने को कहा तब उन्होंने कह दिया कि अफसरों मे इस तरह के आदमी ही नहीं हैं। परन्तु वास्तव में बात यह थी कि नौसेना के बहुत से अफसर खूब काम कर रहे थे और फौज से उनका पारस्परिक सम्बन्ध वहुत अच्छा था। उन्होंने अपने यहाँ काम करने के लिए हमारी कमेटी के

सैनिक विभाग से एक आदमी माँगा। इसलिए हमारे यहाँ से वुटसेविच ओडैसा भेज दिया गया। वुटसेविच ने वहाँ आकर खूब काम किया, सब अफ़सरों का बहुत मजबूत सङ्गठन बना दिया और उन्हें सशस्त्र विद्रोह के लिए तैयार कर लिया, और साथ ही उनसे यह भी तय कर लिया कि हमारी कमेटी के आदेशानुसार उस विद्रोह में वे अपनी फौजों सहित शामिल होंगे। अब उत्तर और दक्खिन के उन फ़ौजी अफ़सरों में पार- स्परिक सम्बन्ध होगया जिनके विचार क्रान्तिकारी थे। इस वक्त केन्द्रस्थ फ़ौजी विभाग में ५० मेम्बर होचुके थे।



११

केन्द्र



र की हत्या के बाद क्रान्तिकारी दल का केन्द्र सेंटपीटर्सबर्ग से हटाकर मास्को में बना दिया गया। ६ महीने ओडेसा में काम करने के बाद मैं भी वहाँ पहुँच गई। मेरे जो साथी दमन में पिसने से बच गये थे, उनसे मिलने को मैं बहुत उत्सुक थी। हमारी कार्यकारिणी कमेटी को जो नुकसान हुए, वहाँ उन्हें देखकर मुझे बहुत चोट लगी। हम यहाँ किसी विशेष सुविधा के अभिप्राय से नहीं, बल्कि इसलिए चले आये थे कि सेंटपीटर्सबर्ग में अब हमारा पुलिस से सुरक्षित रह सकना असम्भव था। सेंटपीटर्सबर्ग देश की राजधानी होने के कारण साम्राज्य भर के जीवनोपयोगी कामों का केन्द्र था और इसीलिए वहाँ क्रान्तिकारी आन्दोलन का भी केन्द्र था। हम यह अच्छी तरह जानते थे कि यह जगह छोड़कर मास्को चला आना हानिकारक है, क्योंकि यहाँ हम पार्टी के काम के लिए देश की उत्कृष्ट और प्रातिनिधिक शक्तियों का उपयोग कर

सकते थे। यहीं से देश के सभी प्रान्तों को, सामानिक और राजनैतिक सुधारों में प्रोत्साहन मिलता था। देश भर का क्रान्तिकारी समितियो का उद्गम-स्थान यहीं था। प्रचार के लिए देश के कोने कोने मे पहुँचनेवाले हमारे अखवार केवल यहीं से निकलते थे। बडी से बडी साहित्यिक शक्तियाँ यही केंद्रित थीं। हमारे सब मुकदमे यही आते थे। इन्ही सब कारणों से हमें अपने दल की भरती के लिए यहाँ बहुत बडी सख्या मे आदमी मिल जाते थे। रूस भर के शहरों की अपेक्षा सेटपीटर्सवर्ग म उद्योग धन्दे, कारखाने आदि बहुत थे, और यहाँ के मजदूरों में प्रचार के लिए क्षेत्र बहुत उपयुक्त था। यहाँ के विद्यार्थी-समुदाय म काम करने का भी उतना ही अच्छा अवसर था। इसीलिए यह जगह छोड देने से ऐसा मालूम पडता था कि मानो हमारा क्रान्तिकारी आन्दोलन मास्को मे निर्वासित कर दिया गया है।

मास्को मे क्रान्तिकारी आन्दोलन कभी लगातार जारी नहीं रहा, किन्तु सेंटपीटर्सबर्ग में उसकी शृङ्खला कभी टूटी ही नहीं। मास्को में जब यह आन्दोलन उमडा, तभी दमन ने उसे खत्म कर डाला, किन्तु सेंटपीटर्सबर्ग मे दमन से यह अधिकाधिक बढता ही गया।

कमेटी की वर्त्तमान दशा

कमेटी के २३ मेम्बरों में से अब केवल ८ बचे थे और उनमें भी हम तीन स्त्रियाँ थीं। मेरे सिवा, ओशानीना और कौर्वा भी थीं। जो लोग हमारी पार्टी के आधार-स्तम्भ थे और जो अपनी

ज्वल कृतियों के कारण, ससार में बहुत प्रसिद्ध होचुके थे, वे फाँसी पर चढ चुके थे, या चढने को थे। हमारे अन्य ऐसे साथी थे, जो प्रत्येक दिशा मे देश के पथ-प्रदर्शक थे, अब कार्य क्षेत्र मे नहीं थे। सन् १८७९ की अपेक्षा अबकी स्थिति में जमीन आसमान का अन्तर था। न वे दिमाग ही रहे और न काम करने वाले वे हाथ ही।

इस प्रकार पुरानी कमेटी तो खत्म होचुकी थी, और वर्त्तमान केन्द्रस्थ कमेटी अपना पुराना चरखा चलाने में असमर्थ थी। अब हममें से ऐसा कोई आदमी नहीं था जो देश का सर्वमान्य नेता होता। हम देश-व्यापी सशस्त्र विद्रोह खडा करने में असमर्थ थे। किसी भी तरह से क्रान्तिकारी क्षेत्र को विस्तृत और सुदृढ बनाने के लिए प्रचार और सङ्गठन की जरूरत थी। प्रान्तों और देहात में काम करने के लिए हमें बहुत से नौजवान मिल गये और हमें किसी भी प्रकार की कमी न रही। सरकार के दमन, चाँदी के जूते के प्रयोग, अथवा जासूसों की हरकता से, हमें केन्द्र और कमेटी में काम करने को आदमी चुनने के नियम बहुत ही कडे और आदर्श बहुत ऊँचा कर देना पडा। मतलब यह कि हमें अब ऐसे आदमियों की जरूरत पडी जो बहुत अनुभवी और उपयुक्त हों।

जनता की आशा

ज़ार की हत्या से चारों ओर खलबली तो मच ही उठी थी, परन्तु जनता हमारी वास्तविक शक्ति से परिचित नहीं थी। उसे

आशा थी कि अभी हमारी ओर से जारशाही पर बहुत से आक्रमण होंगे, क्योंकि, हम अपने अखबारों में यह घोषणा कर चुके थ कि हम एक के बाद दूसरे जार की हत्या तब तक करते रहेंगे, जब तक कि निरंकुश सत्ता की जगह देश में बिल्कुल स्वतन्त्र सस्थाएँ न स्थापित होजायँगी।

असल बात यह है कि एलेक्जेण्डर द्वितीय की हत्या के बाद मेरा विचार नये जार को मारने का भी हुआ था। अपने बाप के मारे जाने के एक-दो दिन बाद नया जार हमारी उस पनीर वाली दुकान की सडक से निकला था। इससे पता चलता है कि पुलिस को हमारी दुकान के गुप्त रहस्य का पता न था। कमेटी ने मेरी यह सलाह अस्वीकार करदी। दुकान तोड दीगई और साथ ही इस खयाल का भी खात्मा होगया। जनता और सरकार ने यह समझा कि हम लोग किसी नये आक्रमण की तैयारी मे लग रहे हैं, इसीसे वातावरण शान्त है। चारों ओर हमारी कार्यकारिणी कमेटी की धाक जम गई। लोग यह देखने लगे कि अवकी बार हमारी ओर से किस प्रकार का आक्रमण होता है। जनता यह समझ गई थी कि हमारी कार्यकारिणी कमेटी ही रूस के भाग्य का अन्तिम निपटारा करनेवाली महान शक्ति है।

इधर नौकरशाही ने घोषणा कर दी कि कम से कम २५ वर्ष तक रूस में भयङ्कर दमन के बिना काम न चलेगा। अप्रैल की शाही घोषणा से शासन सुधार का स्वप्न मिट्टी में मिल गया।

औरिस मेलिकौव ऐसे केवल दिखावटी उदार आदमी भी, निकाल देये गये।

हमारे डर से नये ज़ार का राज तिलक नहीं हुआ। अपनी गेरफ्तारी के समय तक पैरौव्स्काया ने ज़ार के ऊपर निगाह बरूर रखी। ज़ार भी अपने महल में छिपा हुआ क़ैदी की तरह हता था, और उसके पास लोगों के आने की मनाही थी। यह न होते हुए भी, हमारे पास उसकी हत्या के लिए कोई साधन हीं था। श्रन कमेटी में इस प्रश्न पर कभी विचार तक न होता ा। नये ज़ार एलेक्ज़ेण्डर तृतीय के नाम हमारी कमेटी का ो पत्र भेजा गया, उसके मुताबिक कोई कार्रवाई नहीं हुई। सलिए जनता इस बात के लिए उत्सुक थी कि हमारा काम राबर जारी रहे।

मास्को-दल का अन्त

मास्को पहुँचने पर हमारे रहने और काम करने की उचित यवस्था न हो पाई। पकड़ धकड़ के मारे सारे वायुमण्डल में लबली मच रही थी, और हममें से किसी को भी, किसी क्षण कड़े जाने की सम्भावना थी। उधर यह भी अफ़वाह फैल गई कि थानीय कार्य्यकर्त्ताओं में से कोई पुलिस से मिला हुआ है। इधर मारी कमेटी की यह घोषणा हुई कि १८ मार्च को एक मुख्य अधिकारी मार डाला जायगा। इससे पुलिस के और भी कान खड़े हो गये। मुझे भी यह सलाह दी गई कि अपनेदल के किसी

मेम्बर से मिलने में भी देर किये विना तुरन्त ही मास्को छोड़ना चाहिए। इसलिए यह निश्चय हुआ कि मैं खारकौव जाकर काम करूँ, क्योंकि वहाँ काम करने वाली मेरिया अपने स्वामी के निर्वासित हो जाने पर, खुद भी साइबेरिया चली गई थी।

मास्को में खूब पकड़-धकड़ हुई। पार्टी का छापाखाना बन्द हो गया। उसमें काम करने-वाले सब आदमी तितर बितर हो गये। इस प्रकार मास्को के दल का अन्त हो गया।



१४

खारकौव में



रकौव में मुझे योग्य और कार्यशील आदमियों की एक छोटी सी समिति मिली। उसके आदमियों का काम था जनता में प्रचार तथा मजदूरों में साम्यवाद की शिक्षा फैलाना। उद्योग-धन्धों, शिक्षा और संस्कृति की दृष्टि से खारकौव कोई महत्त्वपूर्ण जगह नहीं थी। इसलिए यहाँ के युवक-समुदाय में हमारे लिए कोई उपयोगी क्षेत्र न था। यहाँ की समिति के पास कोई आर्थिक साधन नहीं था, इसलिए आस पास के शहरों में प्रचार के लिए जाना भी बहुत कम हो पाता था।

जून में यह खबर आई कि हमारी कार्य्यकारिणी कमेटी के बाक़ी मेम्बर पकड़े गये और हमारे केन्द्रों तथा वैज्ञानिक प्रयोगशाला पर पुलिस का कब्जा हो गया। ओशानीना और टीखौमीरौव देश के बाहर थे, इसलिए अब कमेटी के प्रतिनिधियों में रूस में केवल मैं ही अकेली थी।

पुलिस के प्रयत्नों से हमारी पार्टी मृतक प्राय हो चुकी थी। अत मैंने केन्द्रस्थ शक्ति को पुनस्सङ्गठित करने के लिए, अधिक स

अधिक उपयुक्त और शक्तिशाली शक्तियों को एकत्रित करने में अपनी जान लड़ादी। सेंटपीटर्सवर्ग, मास्को, और ओडैसा में हमारे कामों का खात्मा होचुका था। कियैव और खारकौव के स्थानीय दल अनुभव हीन थे। मैंने सोचा कि क्रान्तिकारी आन्दोलन के उन नेताओं को, जो कार्य्यकारिणी कमेटी के मेम्बर नहीं हैं, किन्तु देश भर मे तितर बितर होचुके हैं, और जो, दमन के पञ्जे से अछूते वच गये हैं, एकत्रित करके एक मीटिङ्ग कर डालूं, और उसमें नये सिरे से काम करने के लिए एक कार्य्यक्रम बनवालूं। यह काम मैंने अपने ऊपर ले लिया। जो सामग्री तैयार था, उसका उपयोग करके, तथा नये आदमियों की भरती करके मैंने जो केन्द्रस्थ कमेटी बनाई, उसमे शायद कुछ कमी थी। इसका कारण यह था कि हम सबने अपने काम को वहीं से आरम्भ कर दिया, जहाँ कि पहली कमेटी ने उसे छोड़ा था। यह न करके यदि हमने किसी दूसरी तरह से काम शुरू किया होता, तो सम्भवत अधिक अच्छा होता।

पुरानी पार्टी को काम करने के लिए जो सामग्री मिली थी, वह उस समय के अनुसार उपयोगी थी, क्योंकि जारशाही और पुलिस के जुल्मों के होते हुए भी, वह मुर्दा और अकर्मण्य रूस के जगाने के अपने उद्देश में सफल हुई, और उसने देश की भावी सन्तति की नस नस में क्रान्तिकारी भाव भर दिये। इस प्रकार देश के उदार पथ प्रदर्शकों के इतिहास मे पार्टी का नाम सदा के लिए अमर होगया। पहली मार्च के वाद, हमारी पार्टी ने सोच

रखा था कि ज़ार की हत्या के फल स्वरूप, आर्थिक कठिनाइयों से प्रेरित होकर जनता राजनैतिक मैदान में कूद पड़ेगी, और सरकार के सामने अपने राजनैतिक अधिकारों की माँग पेश करेगी। परन्तु जनता कान में तेल डालकर चुपचाप बैठी रही, और उसकी यही चुप्पी हमारी पार्टी के अन्त का कारण होगई। यही कारण है कि पुरानी पार्टी का रास्ता अख़्तयार करके, हमने भूल की, हमें अब मार-काट के काम से अलग रह कर, रचनात्मक काम में लग जाना चाहिए था। वह कार्य्यक्रम रूस की दरिद्रता के निवारण के लिए बनना चाहिए था। देश के किसानों के पिछड़े रहने और अपने आर्थिक साधनों में पंगु बने रहने, अथवा घोर दरिद्रता में जकड़े रहने, उद्योग-धन्दे न होने के कारण प्रभावशाली मज़दूर-सङ्घों के अभाव, और पुलिस के नियन्त्रण से हमारे निज के अख़बारों के बन्द होने से हमारी पार्टी शक्तिहीन होगई। इसलिए ज़रूरत इस बात की थी कि अब काम करने-वाली पार्टी आर्थिक समस्या के नाम पर राजनैतिक काम करे। सन् १८८३ में एक ऐसा दल बना भी जिसका उद्देश था मज़दूरों की तक़लीफ़ों को दूर करना। यही दल सन् १८९८ में सामाजिक प्रजातन्त्रवादी मज़दूर-सङ्घ (Social Democratic Lebour Party) के नाम से प्रसिद्ध होगया और उसने श्रमजीवियों में काम करना आरम्भ कर दिया। आगे चल कर इसीमें से वह कम्युनिस्ट पार्टी निकली, जो कि आज समस्त रूसी साम्राज्य पर शासन कर रही है।

पुरानी पार्टी ने, जो ज्वलन्त और साहसिक काम किए थे उससे हमारे कार्यकर्त्ताओं का मानसिक क्षितिज बहुत विस्तृत होगया। उनके लिए अब ऐसे कामों को छोड़कर अधिक श्रम और देर में लाभ पहुँचाने वाले रचनात्मक कामों में जुट जाना प्राय असम्भव ही था।

मेरी स्कीम थी कि केन्द्रस्थ कमेटी मे वे पाँच फौजी अफसर ले लिये जायँ जो चरित्र और योग्यता मे विशेषतया उपयुक्त हों। मैं चाहती थी कि फौज से इस्तीफा देकर, तथा हमारे सैनिक विभाग से हटकर वे कमेटी मे आजावें। मैंने स्पैण्डोनी और डिगाइयैव को कमेटी का मेम्बर बना लिया था। वे दोनों ही मेरी बात से सहमत थे। यह तय हुआ कि डिगाइयैव फौज मे चक्कर लगाने, और सेंटपीटर्सबर्ग, ओडैसा और निकोलाइयैव से लौट कर वह अपनी पत्नी के साथ ओडैसा में रह कर प्रेस का प्रबन्ध करे। मैं ओडैसा में प्रेस का आयोजन कर रही थी।

सन्धि की बातचीत

१५ अक्टूबर को मिरेलोव्स्की, डिगाइयैव की अनुपस्थिति मे मुझसे मिलने के लिए खारकौव आया। उसने आकर मुझे खबर दी कि सरकार ने निकोलैज से कहा है कि वह सरकार और कार्यकारिणी के बीच पड़कर सन्धि करा दे। सरकार अब झगड़े से ऊब गई है, और वह इस शर्त पर शासन सुधार के लिए तैयार है कि हम मार-काट बन्द कर दें और

नय ज़ार का सकुशल राज तिलक हो जाने दें। शासन-सुधारों के अतिरिक्त, राज-तिलक के अवसर पर एक शाही घोषणा होगी, जिसमें समस्त राजनैतिक क़ैदियों की रिहाई, प्रेस की आज़ादी, और शान्तिमय साम्यवादी प्रचार की इजाज़त दे दी जायगी। अपनी सचाई को साबित करने के लिए सरकार इस्राइयेव ऐसे कैदियों को छोड़ने को तैयार थी, जिनके लिए, फाँसी का हुक्म हो चुका था। मिरेलौव्स्की ने निकोलैव से कह दिया कि मैं इस मामले में कार्यकारिणी कमेटी में पूछ-ताछ करूँगा।

अब चूँकि रूस में इस समय कार्यकारिणी कमेटी की मैं ही अकेली मेम्बर थी, इसीलिए मिरेलौव्स्की ने मुझे इन सब बातों की रिपोर्ट लाकर दी, और यह भी कहा कि निकोलैव से सरकार के एक ख़ास आदमी काउण्ट डैशकौव ने यह सब बातें कही हैं। इससे मैं यह समझी कि सरकार जो चाल गोल्डेनबर्ग के साथ १८७९ में चल चुकी है वही चाल अब वह मेरे साथ चल रही है। सरकार ने इसी तरह गाल्डेनबर्ग को भी सुधार वगैरह करने का विश्वास दिलाया था। और यह कहा था कि अपने साथियों को बलि चढ़वा कर देश में शासन-सुधार करा लो। धोखे में आकर उस देशभक्त ने अपने साथियों की हुलिया तो बतला दी, किन्तु नाम किसी का भी नहीं बताया, और न किसी के साथ विश्वासघात ही किया। जब उसे मालूम हुआ कि वह धोखे में फँस गया, तभी उस वीर ने अपनी आत्महत्या कर डाली।

पुरानी पार्टी ने, जो ज्वलन्त
उससे हमारे कार्यकर्त्ताओं का मा
होगया। उनके लिए अब ऐसे
और देर मे लाभ पहुँचाने वाले
प्राय असम्भव ही था।

मेरी स्कीम थी कि केन्द्रग्न्थ
ले लिये जायँ जो चरित्र और
मैं चाहती थी कि फौज से इस्तीफा
मे हटकर वे कमेटी मे आजावे।
कमेटी का मेम्बर बना लिया था।
मत थे। यह तय हुआ कि
सेटपीटर्सबर्ग, औडैसा और
अपनी पत्नी के साथ औडैसा में
औडैसा में प्रेस का आयोजन कर

सन्धि की वार

१५ अक्टूबर को मिरोलौव्स्की, टि
ने मुझसे मिलने के लिए खारकौव अ
खबर दी कि सरकार ने निकोलैज
और कार्यकारिणी के बीच
अब झगडे से ऊब गई है, अ
सुधार के लिए तैयार है कि हम

१५

डिगाइयैव



गाइयैन कार्य्यकारिणी कमेटी का मेम्बर नहीं रहा था, परन्तु उसके मेम्बरों का उस पर विश्वास था। सेंटपीटर्सबर्ग के हमारे गुप्त रहस्यों का उसे पता न था, किन्तु इस कारण नही कि वह विश्वासपात्र न था, बल्कि इसलिए कि, प्रत्येक बात को गुप्त रखना हमारी पार्टी का सिद्धान्त था। वह वहाँ के हमारे अनेक थानों में केवल इसलिए आता-जाता न था कि पुलिस उसे पहचानती थी और उसके आने-जाने से हमारे आदमी पकड लिये जाते। यह पासशुदा रेल्वे इन्जीनियर था और रेल्वे मे नौकरी भी कर चुका था। यह परिश्रमी तो इतना था कि १० से ४ बजे तक रेल्वे दफ्तर का काम करता, ट्यिशन पढाता, तोप खाने में अपने मित्रो से मिलता-जुलता, क्रान्तिकारी कामों मे भाग लेता, और इस पर भी कमेटी के हुक्म को बहुत सावधानी और खूबी के साथ पूरा करने के लिए तैयार रहता था। जो कुछ कमाता था, वह सब परिवार के पालन पोषण में लग जाता था।

मेरे सब एतराज़ों के जवाब में मिरेलौव्स्की ने यह कहा कि इस वक्त तुम्हारी पार्टी मार-काट करने में असमर्थ है, अतः ऐसा मौक़ा हाथ से क्यों खो रही हो जिसमें हानि कुछ नहीं पर लाभ ही हो सकता है ।

समझ-सोचकर मैंने यह निश्चय किया कि निकोलैज से रूस में इस मामले में कोई बातचीत न की जाय, बल्कि विदेश में बसे हुए टिकौमीरौव और ओशनीना से बातें हों, और मैं उन्हें पहले ही से इस बात की सूचना दे दूँ, तथा यह भी लिख दूँ कि इस सम्बन्ध में मेरा क्या मत है। साथ ही मैं उन्हें यह भी सूचित करने को थी कि इस सम्बन्ध में उनका जो कुछ भी मत हो उसीके अनुसार काम करें, किन्तु रूस में हम उसे मानने को बाध्य न होंगे। मेरा विचार था कि यदि स्थिति अनुकूल होगई तो हम मार-काट करने के लिए स्वतन्त्र होंगे। मैंने यह भी तय कर दिया कि निकोलैज से यह कह दें कि मुझे यहाँ कमेटी का कोई मेम्बर नहीं मिला, जो मेम्बर हैं भी, वे विदेशों में हैं। डिगाइयैव और स्पैगडोनी भी मेरे विचार से सहमत हुए। मैंने सैलोवा को ओडैसा से बुलाकर, इस काम के लिए टिकौमीरौव के पास पैरिस भेज दिया।

१५

डिगाइयैव



गाइयैव कार्यकारिणी कमेटी का मेम्बर नहीं रहा था, परन्तु उसके मेम्बरों का उस पर विश्वास था। सेटपीटर्सवर्ग के हमारे गुप्त रहस्यों का उसे पता न था किन्तु इस कारण नहीं कि वह विश्वासपात्र न था, बल्कि इसलिए कि, प्रत्येक बात को गुप्त रखना हमारी पार्टी का सिद्धान्त था। वह वहाँ के हमारे अनेक स्थानों में केवल इसलिए आता-जाता न था कि पुलिस उसे पहचानती थी और उसके आने-जाने से हमारे आदमी पकड़ लिये जाते। यह पासशुदा रेल्वे इन्जीनियर था और रेल्वे में नौकरी भी कर चुका था। यह परिश्रमी तो इतना था कि १० से ४ बजे तक रेल्वे-दफ्तर का काम करता, हिसाब पढ़ाता, तोपखाने में अपने मित्रों से मिलता-जुलता, क्रान्तिकारी कामों में भाग लेता, और इस पर भी कमेटी के हुक्म को बहुत सावधानी और खूबी के साथ पूरा करने के लिए तैयार रहता था। जो कुछ कमाता था, वह सब परिवार के पालन-पोषण में लग जाता था।

काला। मौक़ा पाकर अचानक उसने पुलिस के दोनों सिपाहियो की आँखों मे हुलास झोंक दिया और गाडी से कूद कर साफ़ ही दा ग्यारह होगया। औडेसा आकर वह अपने उन मित्रो मे, जी फौजी अफ़सर थे, छिपा रहा, वाद में निकोलाइयेव के फ़सरा के साथ बना रहा, और फिर ख़ारकौव चला आया।

डिगाइयैव से यह भी मालूम पडा कि औडेसा में कोई ऐसा आदमी है, जो क्रान्तिकारियों के सम्बन्ध मे पुलिस को ख़बर दिया करता है। यहाँ मैंने उसमे कह दिया कि मुझे मरक्युलौव ख़तरा है, क्योंकि वह पार्टी से फूट गया है और मुझे पहचानता है। मैंने डिगाइयैव को अपने मकान पर आने-जाने के सब रास्ते बता दिये।

पुलिस के पञ्जे में

दो एक दिन बाद मै मकान से निकल कर, थोडी ही दूर चल गई थी कि मरक्युलौव का सामना होगया। वहाँ पुलिस के सिपाही न थे, इसलिए उसने मुझे फौरन ही नही पकडा, और मैं चलती गई। मैंने सोचा कि मेरे पास कोई आपत्तिजनक चीज तो नहा है ? मुझे तुरन्त ही डाकख़ाने की एक रसीद का ख़याल आगया, और मैंने उसे फाड देने का निश्चय कर लिया। ज़रा आगे वढने पर कहीं से दो सिपाही आ धमके और मैं गिरफ़ार करके, एक गाडी में कोतवाली भेज दी गई।

वहाँ मैं एक कमरे में खडी कर दी गई और एक औरत मेरी

तरह इस जिन्दगी से छुट
मेरी मनोव्यथा, अथवा म
का पता, मुझे बाहर से देख
मेरी एक परिचित लड
बिल्कुल पिस चुकी थी, केवल
देख रही थी, किन्तु मेरी गिरह
नीचे कट-मरी। चलते समय
मेरा आगे का प्रोग्राम क्या है
धागों को इकट्ठा करके फिर से
की बिखरी हुई शक्तियों को फिर इ
करूँगी। मेरे चरित्र की हार न मा
सराहना की, यह उस समय मालूम
बाद, वे कवितायें छपीं, जो कि उसने

फरार

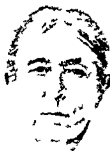
२० दिसम्बर को ओडैसा में प्रवे
२३ या २४ जनवरी को मैं एक
जब मैंने खडा हुआ
सीमा न रही। फरार
बतलाया। कि
घोडागाडी में लिए
रास्ते में से

[illegible]

[illegible]

([illegible])

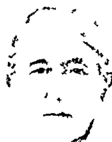
देवी वीरा



वीरा फिगनर

(जेल से लौटने पर सन् १६२६ में)

देवी वीरा



वीरा फिगनर
(जेल स लौटने पर सन्) १८२५ में)

१७

मुकदमे से पहले



मेरी गिरफ़ारी से अधिकारी बहुत खुश हुए। नये ज़ार एलेक्ज़ेण्डर तृतीय ने कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है कि ऐसी खतरनाक औरत पकड़ी गई।" ज़ार ने मेरी एक बहुत अच्छी तस्वीर खिँचवा कर अपने पास मँगवा ली।

न्याय विभाग के मिनिस्टर मुराइयैव, पुलिस के डाइरेक्टर आदि के सामने मेरी पेशी हुई। उनसे विभिन्न विषयों पर अनेक प्रकार की बातें हुईं। एक मिनिस्टर काउण्ट टालस्टाय ने, ज़ारों की हत्या के सम्बन्ध में, पार्टी के सिद्धान्तों पर बातें कीं। मैंने कहा कि यदि मेरे पास वक्त होता, तो इस सम्बन्ध में आपके विचारों को सुधार देती, और आप अपनी ग़लती मान लेते। सरकारी वकील ने मज़ाक में पूछा कि क्या तुम सचमुच यह उम्मीद करती हो कि काउण्ट टालस्टाय को भी तुम अपने विचारों में रँग लोगी? इस पर मैंने उत्तर दिया—"क्यों नहीं?"

१३

पीटर और पॉल के दुर्ग में

तीन दिन बाद में मेंट्स पीटर और पौल के किले में पहुँचा दी गई। यह वह जगह थी, जो शाही इच्छा के अनुसार किसी भी व्यक्ति विशेष को बन्द रखने के काम आती थी। यहाँ जो आदमी पहुँच जाता था उसका ईश्वर ही मालिक था। असल मुक़दमे से पहले २० महीने तक मुझे यहाँ बन्द रहना पड़ा। इस बीच में मुझे पुलिस ने कई बार बुलाया। मैंने साफ़ कह दिया कि पहली मार्च सन १८८१ तक के क्रान्तिकारी कारनामों के बता देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु बाद के मामलों के लिए मैं बिल्कुल चुप रहूँगी। मैंने यह भी कह दिया कि बार बार पूछ-ताछ करने की जरूरत नहीं है, मुझे कागज-कलम दिया जाय तो मैं सब बातें लिख भी सकती हूँ।

कुछ हफ़्ते बाद सैरीडा नामका एक फौजी जनरल मेरे पास आया। उसने कहा कि फौजों में राजनैतिक प्रवृत्तियों की जाँच करने के लिए जार ने मुझे नियुक्त किया है। यह बहुत अच्छा आदमी था। बात चीत से मालूम पड़ा कि यह भी रूस की वर्त्तमान स्थिति से असन्तुष्ट है, और निरकुश शासन का समर्थक नहीं है। परन्तु वह राजनैतिक क्षेत्र में हत्याओं के विरुद्ध था। उसने साफ साफ कहा कि यदि मेरे सर पर कर्ज़ का बोझ न लदा होता तो आज मैं इस जगह पर न होता। उसने यह भी ज़ाहिर किया कि वह बहुत से आदमियों को फाँस कर अपने इस ऊँचे अधि

कार का दुरुपयोग नहीं करना चाहता। यदि वह चाहता तो अपने अधिकार से दर्जनों आदमियों को बलि का बकरा बना सकता था। वह बात का धनी निकला। उसने केवल हम खास २४ आदमियों ही पर, जिनमें ६ फौजी अफसर थे, मुकदमा चलाया।

जनरल सैरीटा, उस लेख को पढ़ कर आया था जो मैंने लिखकर अधिकारियों को दे दिया था। उस लेख का बड़ा असर पड़ा। एक उच्च अधिकारी ने तो यहाँ तक कह डाला कि वह लेख हम लोगों में उपन्यास की तरह पढ़ा जा रहा है। न्याय विभाग के मिनिस्टर मुराइयैव ने तो स्वयं उस लेख की नकल करके अपने पास रखली और कई वर्ष बाद उसे पढ़ने के लिए मेरे भूतपूर्व स्वामी फिलीपौव के पास भेज दिया। फिलीपौव न्याय विभाग में मुराइयैव के नीचे एक अफसर थे।

किले में, मैं दो हफ्तों में अपनी माँ और बहिन से केवल २० मिनट के लिए मिल सकती थी। मिलने वालों और मेरे बीच में एक गज का फासला रहता था और बीच में लोहे के जङ्गले लगे रहते थे। एक बार माँ और बहिन मुझसे मिलने आईं। मैंने बहुत कोशिश की कि अपनी प्यारी माँ का हाथ चूम लूँ, और बहिन औंगा ने मुझे एक फूल देना चाहा, परन्तु हम दोनों ही को अपनी इच्छा के अनुसार ऐसा करने की इजाजत नहीं मिली। ग्रीष्म के आरम्भ में मेरी माँ कैजाँ चली गई और बहिन इलाज कराने के लिए औसैल चली गई।

अब मेरे जेल-जीवन का एकान्तवास आरम्भ होगया। धीरे धीरे मेरी आवाज़ कम हो गई और साथ ही बोलने की इच्छा भी। एकान्त मे चुपचाप पडी रहना मैं पसन्द करने लगी। जब तब मेरी माँ और बहिन मुझसे मिलने आती थीं, परन्तु किसी से भी मिलना और बात-चीत करना मुझे सुहाता न था और मैं केवल इस कारण उनसे मिल लेती थी कि उनकी तबीयत दुखे नही।

सन् १८८४ के बसन्त मे, मैं किले के दफ़्तर मे बुलाई गई। वहाँ मुझे सरकारी वकील डौब्रिन्स्की और जेनरल सेराडा मिले। उनके सामने बडी किताबे रक्खी हुई थीं। डौब्रिन्स्की ने मेरे हाथ में एक नोटबुक दे दी और मुझसे पूछा कि इस लिखत को पहचानती हो कि नहीं? मैंने कहा कि नही। उस नोटबुक में एक जगह डिगाइयैव के दस्तख़त थे, और २० नवम्बर लिखा हुआ था। पहले तो मुझे यह ख़याल हुआ कि कोई गलती है, क्योंकि २० दिसम्बर को तो प्रेस ही ज़ब्त किया गया था। फिर डौब्रिन्स्की ने कई जगह से पन्ने उलट कर मुझे दिखाये। अब सन्देह करने की कोई अधिक गुञ्जाइश न रही। डिगाइयैव देश-द्रोही होगया था। मेरे सामने बडे महत्त्वपूर्ण काग़ज़ पड़े थे, उनमे लिखनेवाले ने, सरकार के हाथो में ऐसी हर एक बात सौंप दी थी जो उसे पार्टी के सम्बन्ध से मालूम पडी थी। उसने पार्टी के बडे काम के आदमियों के नाम ही नहीं बता दिये, बल्कि उन आदमियों की भी चर्चा कर दी जो पार्टी के बहुत ही गुप्त

सहायक थे। उत्तर और दक्खिन के फौजी अफसरों के साथ भी विश्वासघात किया गया और सैनिक-विभाग का एक भी आदमी ऐसा नहीं बचा जो उसके विश्वासघात का शिकार न हुआ हो! उसने पार्टी की सारी शक्तियाँ सरकार को सौंप दीं, और जो आदमी पार्टी से जरा भी सम्बन्ध रखते थे, उनकी सारी कलई सरकार के सामने खोल दी! मैं उठ खड़ी हुई और कमरे में टहलने लगी। फिर बैठने पर, दक्खिन के फौजी अफसरों के तहरीरी बयान मुझे दिखाये गये। हरएक बयान इस प्रकार शुरू होता था—"मैं अपनी कृतियों पर पश्चाताप करते हुए निम्न-लिखित बयान देता हूँ।"

ओफ़! जो लोग क्रान्तिकारी कामों में बड़े उत्साह से भाग ले रहे थे, और जो प्रतिक्षण क्रान्तिकारी सिद्धान्तों पर बड़ी सरगर्मी से बहसें किया करते थे और सशस्त्र क्रान्ति के पक्ष में थे, उनका विश्वासघात मेरे लिए सचमुच एक हृदय विदारक घात थी। डिगाइयैव का मुझसे मकान आदि के बारे में पूछ-ताछ करना, और पुलिस के दो सिपाहियों की आँखों में हुलास झोंककर भागना, यह सब हमारी आँखों में धूल झोंकना और हमारे आदमियों को फँसाने का एक जाल था। इस विश्वासघात से मुझे अनुभव हुआ कि स्वार्थ-लिप्सा में फँसजाने पर मनुष्य का कितना नैतिक पतन हो जाता है!

मेरे हृदय में अब मरने की इच्छा प्रबल हो उठी। परन्तु

साथ ही मुझे एक काम के लिए जीवित रहना आवश्यक था। मुझसे पहले मेरे बहुत से साथियों ने अन्त तक अपना कर्तव्य पालन किया था। मेरा भी एक अन्तिम कर्त्तव्य रह गया था। वह यह था कि अवसर मिलने पर, कार्य्यकारिणी कमेटी के मेम्बर की हैसियत से बयान देते समय, संसार के सामने अपना वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डाल दूँ, और अन्त में, जिन दल-भक्तों के साथ डिगाइयेव ने विश्वासघात किया है, उन्हींके साथ खड़ी होकर, अपना और उनके भाग्य का अन्तिम फैसला मा लेख लूँ।

इस काम के लिए अब यह आवश्यक था कि अपने दुर्भाग्य की ओर ध्यान ही न दूँ। इसलिए इन सब बातों से अपने दिमाग को आज़ाद रखकर पुस्तकें पढने में तत्पर हो गई। मैंने अँगरेजी में, मैकाले का इँग्लेंड का इतिहास और स्पेंसर के ग्रन्थ प' डाले। राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों पर भी मैंने बहुत सी किताबें पढ डालीं। उन दिनों मैंने अपनी बहिन औल्गा को प्राय ५० पत्र लिखे थे। उनमें इन विषयों पर मेरे विचारों की झलक है।

मेरी उँगली का आपरेशन किया गया। डाक्टर ने कहा कि यदि इसका आपरेशन न होता तो शरीर में, जहर फैलजाने से बचना असम्भव हो जाता। मैं ४३ नम्बर की बहुत ही गन्दी कालकोठरी में बन्द रहती थी। यह देखकर डाक्टर ने मुझे उससे अच्छी कोठरी दिलवा दी।

१६ या १८ सितम्बर सन् १८८४ को मुझपर फ़र्द-जुर्म लगा दिया गया, और मामले के लिए मेरी ओर से एक वकील नियुक्त कर दिया गया। जब वकील मेरे पास आया तब मैंने उससे मुआफ़ी माँगी और कह दिया कि मुझे आपकी सेवाओं की ज़रूरत नहीं है। उसने मुझसे धीरे से कहा कि डिगाइयैव शुडेकिन को मारकर लापता होगया है। अब तो, दो विरोधी बातों के अन्धकार में, मैं और भी चक्कर में पड गई कि किसने, कैसे और क्या किया ?



१८

मुकदमा और सज़ा



सितम्बर को मैं किले मे से निकाल कर "हवालात भवन" मे पहुँचा दी गई। यह जगह विचाराधीन कैदियो के रहने की थी। उस रात सिपाहियों की आपस की बात-चीत से मैं सो नहीं सकी। दूसरे दिन माँ से भेंट हुई। अबकी बार बीच में कोई जङ्गला न था, इसलिए पहली बार माँ का हाथ चूमने का मुझे अवसर मिला। परन्तु अपनी मनोवृत्ति के कारण थोड़ी देर बाद ही मैंने माँ से चले जाने को कह दिया। दूसरे दिन सोमवार को मुकदमा शुरू होने लगा।

सोमवार को मैं उस कमरे मे पहुँचा दी गई, जहाँ कि मेरे १३ और साथी थे। हर दो आदमियों के बीच में नङ्गी तलवार लिये हुए एक आदमी खड़ा था, इसलिए एक दूसरे से गले मिलना तो दूर, हाथ से छूना तक असम्भव था। जो लोग सत्य साहस और वीरता की उमङ्गों में फूले न समाते थे, आज उनका शरीर जर्जर हो गया था और चेहरे पीले पड़ गये थे। जरा खयाल तो कीजिये कि इस दशा में हमारी कटुता और शोक की कोई

ीमा हो सकती थी ? अपने एक साथी के विश्वासघात के कारण न आज यहाँ खड़े हुए थे । मुक़दमे की हर एक कार्रवाई और टनाओं में डिगाइयेव का हाथ साफ़ मालूम पड़ता था ।

सरकारी गवाह और विशपत्र पेश हुए और हमारे विरुद्ध स सबूत पढ़ कर सुनाये गये जिनका अन्त ही न था । किसी भियुक्त ने कोई जवाब नहीं दिया । केवल चैगोडानोवा ने अपने ई अन्छ भाषण में, अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने का प्रयत्न ना । यहाँ तक कि हुन्र्नर भी, जिसने उस खारकौव में बुलाया , चक्कर में पड़ गई । वास्तव में शायद वह अपने किसी निजी ाम से खारकौव आई हो, और संयोग से क्रान्तिकारियों में पड़ र उसका सम्बन्ध प्रेस से हो गया हो । लुडमिला वोल्केन्स्टाइन दालती कार्रवाई से अलग रही । वह धीरे धीरे बातें करती ी । अदालत के प्रेसीडेंट को कई बार उससे बातें करने की नाही करनी पड़ी ।

मुक़दमों का यह क़ायदा था कि सबूत की गवाही आदि हो ने के बाद प्रेसीडेन्ट अभियुक्त से कहता था—"मुलज़िम, अब ुह कुछ कहना हो तो कहो ।" यदि अभियुक्त इस मौक़े को हाथ खो दे, तो फिर उसके लिए कुछ भी कहने को कभी मौका नहीं । । चाहे उसे फाँसी पर चढ़ना हो, या आजीवन जेल में रहना है ।

अपने दल के सर्वनाश का वर्णन मैं कर ही चुकी हूँ, और ो कुछ बाकी भी था, उसका खात्मा डिगाइयेव के विश्वासघात

ने कर डाला। याद रहे कि डिगाइयैव मे वातें होने के एक-दो दिन वाद ही मेरी गिरफ़ारी हुई थी और मरक्युलौव को मेरे मकान का पता लग गया था। सन् १८८४ के मामले में डिगाईव की वदौलत फँसे हुये १४ अभियुक्तों मे मैं मुख्य थी। हमारा जो क्रान्तिकारी दल निरंकुश सत्ता के विनाश में लग रहा था, और जिसने हमारी मातृभूमि में हलचल मचा कर दुनियाँ को हिला रखा था, वही आज पशु बनकर मुँह के बल पड़ा हुआ था।

मैं भी अपने उस समय के चित्त के विकार के लिए क्या कहूँ? जो बात होने वाली थी उससे हम अच्छी तरह परिचित थे, किन्तु उसका हमें तनिक भी डर न था। मैंने अधिकारियों को जो लेख लिख कर दिया था, उसमे अपने आन्दोलन के विषय में साफ साफ बातें लिख दी थी और उसमे अपनी जिम्मेदारी ज़रा भी कम नहीं की थी। इसलिए मैंने सफाई देने की क़तई ज़रूरत न समझी। पिछले मुक़दमे से मेरा नाम कार्य्यकारिणी के सम्बन्ध मे बहुत आचुका था, इसलिए अधिकारीवर्ग और वर्तमान जज भी मेरे नाम से अच्छी तरह परिचित थे।

जब मेरी बोलने की बारी आई तब सब अभियुक्त, दर्शकों की भीड़ तथा मैं स्वय भी, यह अनुभव कर उठी कि कार्यकारिणी कमेटी के अन्तिम मेम्बर और अपनी पार्टी की प्रतिनिधि की हैसियत से, इस अवसर पर मुझे ज़रूर कुछ कहना चाहिए। इधर मेरी अजीब हालत थी। अपनी मातृभूमि की वर्तमान दशा से मेरा हृदय टुकड़े टुकड़े होचुका था। मैं अनुभव कर रही

..ो कि झगड़ा और विरोध दोनों ही समाप्त होचुके हैं। जो ..मन सरकार ने किया था उसके परिणामों से भी मैं अच्छी ..रह परिचित थी। मुझे डर था कि अदालत में बोलते वक्त ..चानक मैं कहीं रुक न जाऊँ।

..एक फ्रांसीसी औरत ने, जिसने मुझे कैर्जां मे पढाया था, ..ौर १२ वर्ष की उम्र से मुझे जानती थी, पहचान लिया और ..झसे बड़े प्रेम से मिली।

मैं अपनी माँ से एकान्त मे नहीं मिलने पाती थी। मुझे एक ..न्तिम प्रबन्ध करना था। इसके लिए मैंने लियौनदीएफ नामके ..क वकील को माँग लिया, जिससे मुझे एकान्त मे उनसे बात-..ीत करने का अवसर मिल जाय।

अदालत में भाषण

मैंने अदालत के सामने निम्नलिखित आशय का एक भाषण ..िया —

"सरकारी वकील ने मेरे क्रान्तिकारी कामों की रूप-रेखा ..ौर उनके विस्तार के सम्बन्ध में आश्चर्य प्रकट किया है। यह ..ब बातें इतिहास से सम्बन्ध रखती हैं, और मेरे व्यक्तिगत ..ामले में इनका सम्बन्ध मेरे जीवन के इतिहास से ही है। मेरा ..न्म बहुत सम्पन्न घराने मे हुआ था। आर्थिक दरिद्रता से ..सका कभी कोई सम्बन्ध न था। चारों ओर लोगों को दुखी और ..रिद्र देखकर मैंने अपने जीवन का यह उद्देश बना लिया कि

भूखे और दीन-दुखियों की सेवा करूँ। उन दिनों की अखबार नवीसी और फेमनिस्ट आन्दोलन ने मेरे मन में यह भाव जमाया कि परोपकार और सेवा के लिए डाक्टरी का पेशा सबसे अच्छा है। इसलिए ज़्यूरिच जाकर मैंने विश्वविद्यालय में चार वर्ष अध्ययन किया। परन्तु जब मैंने डाक्टरी का अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त कर लिया, तब देश की सेवा के लिए ज़रूरत पड़ते ही, मैं बिना डिप्लोमा लिये रूस चली आई।

साम्यवादी विचारों की ओर मेरा झुकाव पहले ही से हो चुका था। इसलिए मेरी बहिन लिडीआ का जो क्रान्तिकारी आन्दोलन था, उसमें मैं शामिल हो गई। २-३ महीने तक हम के लोगों ने मजदूर बनकर कारखानों में काम किया। इस अपराध में मेरी बहिन तथा और लोगों को जेल, निर्वासन आदि की सजायें दे दी गईं।

इसके बाद मैंने कुछ बचे हुए लोगों को साथ लेकर एक प्रोग्राम बनाया, जिसके आधार पर बाद में नैरोडनोकी अर्थात् पौपुलिस्ट पार्टी बनी।

फिर मैं देहात में काम करने चली गई। मैं समझती थी कि काम करने का वास्तविक क्षेत्र गावों में ही है। वहाँ लोगों में घुलमिल गई। परन्तु जमींदार, अधिकारियों तथा पुलिस की आँखों में खटकने लगी। उन्हीं दिनों 'लैण्ड एण्ड फ्रीडम' पार्टी ने मुझे अपने साथ काम करने को निमंत्रित किया, परन्तु मैंने इस वजह से इन्कार कर दिया कि मैं देहात ही में प्रचार करना

चाहती थी। जब गाँवों में काम करना असम्भव होगया तब मैंने उक्त पार्टी को लिख दिया कि मैं अब खाली हूँ।

उसके बाद मैं वोरोनै वाली कान्फ्रेंस में शामिल हुई। सेंट पीटर्सबर्ग आने के कुछ दिन बाद यह पार्टी टूट गई और मुझे 'विल आफ़ दी पीपुल' पार्टी की कार्यकारिणी में शामिल होने के लिए निमंत्रण मिला। इस वक्त तक मेरा यह विचार दृढ़ हो गया था कि बिना हिंसा और मार-काट के वर्त्तमान दशा में परिवर्त्तन नहीं हो सकता। स्वतंत्र प्रेसों के अभाव से, जनता में शान्तिमय उपाय से विचारों का फैलाना भी असम्भव था। यदि शासन-पद्धति को बदलने के लिए देश की स्थिति में कोई और साधन दीख पड़ता, तो, मैं हिंसात्मक कामों में प्रवृत्त न होकर, उसका प्रयोग ज़रूर करती। परन्तु उस वक्त न तो कोई ऐसा साधन ही था, और न, इस प्रकार का साहित्य ही। इस दशा में, सशस्त्र क्रान्ति के प्रोग्राम के सिवा और कोई चारा ही न था। मैंने इस प्रोग्राम पर पूरे तौर से अमल किया।"

लियोनटीएव मेरे भाषण को लिखता गया। न्याय विभाग के मिनिस्टर नैबोकौव ने उसकी एक नकल मेरे वकील से माँग ली। इस प्रकार मैंने अपने देश, समाज और पार्टी के प्रति अपना अन्तिम कर्त्तव्य पालन कर दिया। अब एक साम्य वादी की दृष्टि से मेरी मृत्यु हो चुकी थी, क्योंकि, एक सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्त्ता की मृत्यु उसी समय हो जाती है जब वह अपने समाज और देश की सेवा करने से वञ्चित

हो जाता है। एक कार्यशील व्यक्ति मृत्यु से पहले, अपने किए हुए कामों पर दृष्टिपात करके जो गौरव अनुभव करता है वही अपने कामों पर नज़र डालते हुए मैंने भी किया।

मेरे साथ अन्य अभियुक्तों को फाँसी का हुक्म सुनाया गया। उनमें ६ फौजी अफसर थे। अदालत से जेल में वापस लौटने पर, जेल के सुपरिन्टन्डेन्ट ने आकर कहा—"जिन अफ़सरों को फाँसी का हुक्म हुआ है, उन्होंने फाँसी की सजा बदलवाने के लिए अपील करने का निश्चय किया है। केवल वैरन स्ट्रौमवर्ग ने अभी तक निश्चय नहीं कर पाया कि वह भी अपील करे या नहीं। उन्होंने आपकी राय पूछी है कि उन्हें क्या करना चाहिए।

मैंने उत्तर दिया—"स्ट्रौमवर्ग से कह दो कि जिस काम को मैं खुद नहीं करती, उसे करने के लिए, दूसरे को सलाह नहीं दे सकती।"

१० दिन

मुकदमे के बाद, इतवार को मेरी माँ और बहिन मुझसे मिलने आईं। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं था कि मैं उनसे अन्तिम बार मिल रही हूँ। माँ की वह अन्तिम भेंट सचमुच बड़ी मार्मिक और करुणा-जनक थी। उसकी मार्मिक दशा का वर्णन मैंने अपनी एक कविता में किया है। उस दशा को, एक क्षण भर भी मैं सहन न कर सकी। उसी समय सदा के लिए जेल का फाटक बन्द होगया।

फाँसी के हुक्म के बाद, मैं "हवालात भरन" से सेंट्स पिटर और पौल के दुर्ग में पहुँचा दी गई। यहाँ मुझे अपनी सादी पोशाक उतार देनी पड़ी जो माँ ने लाकर दी थी, और एक कैदी के फटे-पुराने कपड़े मुझे पहनाने को द दिये गये। अब मैंने एक ऐसा सफेद सूती चुगा पहन लिया, जिसकी पीठ पर ताश की शक्ल का पीला थेगरा लगा हुआ था।

मगर वह शान्त वातावरण, जिसमें पहुँच कर कुछ दिन तक मुझे शान्ति मिली थी, बदल गया। अब मेरी विचार धारा उमड़ने लगी। अपनी और अपने परिवार की वर्तमान दशा, तथा उस अन्त पर, जो मेरी प्रतीक्षा कर रहा था, मेरा ख्याल तक न गया। मेरा ख्याल किसी कारण पश्चिम तथा अपने देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन के भाग्य, अपने विचारों और एक देश से दूसरे देश म उनके प्रसार की ओर गया। बीते हुए दिनों, तथा उन लोगों की पुण्य-स्मृति, जो बहुत दिन पहले इस दुनियाँ से चल बसे थे, मेरे दिमाग में फिर से हरी हो गई। मेरी कल्पना शक्ति ऐसा काम करने लगी, जैसाकि पहले उसने कभी नहीं किया था। मेरे पास पुस्तक नहीं थीं, पर उन दिनों मैं अपना ध्यान अपने सिवा और बाहरी किसी चीज पर जमा ही नहीं सकती थी। मुझे पढने को धार्मिक पुस्तकें दी गईं। बचपन में एक बार उनके विचार मेरे हृदय में प्रवेश कर चुके थे, परन्तु अब मुझे कोई सन्तोष नहीं होता था। फ्रेञ्च और जर्मन भाषाओं का भी मुझे अच्छा अभ्यास था। हर शनिवार को, पीटर-

और पौल-दुर्ग के कैदियों को डाक्टर देखता था। इस शनिवार को भी वह आया। मेरी ओर देखकर बोला—

"आपका स्वास्थ्य कैसा है ?"

जिस व्यक्ति को फाँसी का हुक्म दिया जाचुका था, उसके सामने यह प्रश्न रखना सचमुच बड़ा विचित्र था। परन्तु फिर भी, मैंने उत्तर तो दिया ही—"बहुत अच्छा !"

आठवें दिन शाम को मैंने द्वार खुलने और बन्द होने की आवाज सुनी। उस समय सचमुच कोई आदमी कोठरियों को देखने आरहा था। मेरी कोठरी भी खोल दी गई। दुर्ग का कमाण्डर मेरी कोठरी में आगया। उसके साथ एक इन्सपैक्टर तथा कुछ और आदमी थे। अपने हाथ में से एक कागज निकाल कर उसने पढ सुनाया—"श्रीमान् सम्राट् ने कृपा कर यह हुक्म दिया है कि तुम्हारी फाँसी की सजा बदल कर, तुम्हें जीवन भर के लिए क़ैद कर दिया जाय !"

पहली मार्च के बाद उन्होंने सोफिया पैरोव्स्काया को फाँसी पर लटका दिया था। ऐसा मालूम पडता है कि इस पहली महिला के फाँसी पर चढने से जनता मे बहुत हलचल मच गई थी और इससे वह बहुत दु खी थी। उस समय स्त्रियों का फाँसी पर चढ जाना कोई साधारण बात न थी। सोफिया को फाँसी पर चढे हुए तीन वर्ष बीत चुके थे।

यदि मेरी फाँसी की सजा बहाल रहती, तो मैं बिल्कुल निश्चिन्त होकर फाँसी पर चढ जाती। मेरा मन मृत्यु के लिए

तैयार था। मैंने घुल घुल कर मर जाने की अपेक्षा फाँसी के तख्ते पर झूल कर एक दम समाप्त हो जाना अच्छा समझा! उस समय मैं इसकी अनिवार्य आवश्यकता को अच्छी तरह अनुभव करती थी।

इसके उस दिन बाद १२ अक्टूबर को मुझे और कहीं जाना था, कहाँ, यह मैं उस समय नहीं जान सकी।



१९

निर्वासन



मेरी कोठरी का निरीक्षक एक एक आदमी था, जिस ओर जुल्म आदि बातें देखते हुए ज़माना बीत चला था। वह मौका पाते ही हर एक से अपने दुर्भाग्य का रोना रोया करता था। जब मैं पकड़ कर ४१ नम्बर की कोठरी मे पहले ही लाई गई तब उसने कहा कि यहाँ गाने की मुमानियत है। उस समय मैंने न तो गाने की इच्छा की थी, और न, उससे पूछा ही था। इससे मुझे और भी आश्चर्य हुआ। बीती हुई बातो का खयाल ही ऐसा था जिसमे गाना कौन सूझ कैसे सकती थी ? यह वह जगह थी, जहाँ का इतिहास पीढियों से दु ख और यातनाओं की जीती-जागती कहानियाँ कह रहा था। यदि उस वातावरण में गाने का विचार भी किया जाता, तो उन महान आत्माओं की स्मृति के विरुद्ध एक अनैतिक काम होता, जो कि इस क़िले में नाश को प्राप्त हो चुके थे।

१२ अक्टूबर सन् १८८४ को वही निरीक्षक मेरी कोठरी में

छ कपड़े फेंक कर कह गया कि खूब गर्म कपड़े पहन कर जल्दी यार हो जाओ। अब प्रश्न यह था कि मेरा क्या होगा? मैंने ख्याल किया कि शायद मैं फाँसी पर चढ़ा दी जाऊँगी। परन्तु फिर मुझे भी ख्याल आया कि जनरल ने तो कहा था कि फाँसी से बदल कर मुझे आजन्म कैद की सजा दी गई है। उसकी यह बात याद थी कि मुझे 'सख्त सपरिश्रम कैद' की सजा भुगतनी होगी। मैं सोचने लगी कि शायद टॉल्स्टॉय की तरह, मुझे अपनी आँखों के सामने, अपने उन साथियों को फाँसी पर चढ़ते हुए देखना पड़ेगा, जिनके कन्धे से कन्धा मिलाकर मैं काम कर चुकी हूँ। परन्तु जब निरीक्षक की गर्म कपड़ों वाली बात का ख्याल आया तब मैं मन में कहने लगी कि शायद मैं साइबेरिया, अथवा कारा की खानों में भेज दी जाऊँगी। इसके बाद मेरे हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी गईं। इस पर मैंने बड़ा रोष प्रकट किया। क्या वे समझते थे कि मेरे विचारों और इच्छाओं को भी जंजीर से बाँध लेंगे? मैंने सुपरिण्टेण्डेण्ट से कह दिया कि मेरी माँ से कह देना कि मेरे साथ कुछ भी हो, मैं बड़ी खुशी रहूँगी। वह मेरा आप रंज न करें, इन्हें [illegible] देती रहें। यदि इन्हें मन की पुस्तक मिलती रही, तो मेरा समय अच्छी तरह कट जायगा।

फिर मैं सिपाहियों के बीच में बैठकर निकाली गई। [illegible] पहुँचने पर एक गाड़ी मिली, जिसमें मैं बैठा दी गई। [illegible] पूछने पर कि मैं कहाँ जा रही हूँ, उत्तर मिला कि [illegible]

नीवा के बन्दरगाह के किनारे किनारे हम चले। फिर जहाँ मैं उतरी, वहाँ मुझे उठाकर एक जहाज पर रख दिया गया। जहाज के जिस कमरे मे में चढा दी गई उसके चारो ओर पर्दे पड हुए थे। मैंने पीटर और पौल के दुर्ग मे यह पढा था कि "विल आफ दी पीपुल" पार्टी के ४० आदमियो के लिए श्लूसैलवर्ग के किले में एक जेल बना कर तैयार करदी गई है। मैं सोचने लगी कि शायद वहीं लेजाई जा रही हूँ, अथवा फिनलैण्ड में कैक्सौम को। मुकदमे के समय भी हमारे एक साथी ने पुकार कर कहा था कि हम सब श्लूसैलनर्ग को रवाना होरहे हैं।

५ घटे बाद जहाज रुका। अब इस बात मे कोई सन्देह नहीं रह गया कि हम श्लूसैलवर्ग आगये। किले के फाटक के ऊपर चील का, रूस का राष्ट्रीय चिह्न बना हुआ था, और "इम्पीरियल" शब्द लिखा हुआ था। यह शब्द मुझे बहुत अखरा इसलिए कि, यह मुझे व्यक्तिगत बदले का भाव लिये हुए जान पडा, क्योंकि जिस जारशाही के यह दोनों चिह्न और विशेषण थे, उसीका नाश करना मेरे जीवन का उद्देश था, और जिसने हमारी यह दुर्दशा हुई थी।

अफसर और सिपाहियो के बीच में होती हुई मैं किले में पहुँची। जगह वास्तव मे बडी रमणीक थी। चारों ओर हरियाली थी और वह एक कृषक उपनिवेश सा मालूम पडता था। एक दृष्टि से वहाँ के मकान ग्रीष्मावास भवन से मालूम पडते थे। बाएँ हाथ को एक दुमंजिला सफेद इमारत खडी हुई थी। यह

ड़कियों के बोर्डिङ्ग स्कूल के लिए बड़ा उपयुक्त स्थान हो सकता था। वास्तव मे यह सिपाहियो के रहने की जगह थी। दाईं ओर बहुत से सुन्दर मकान बने हुए थे। हर एक मे छोटा सा बाग था। जगह जगह हरी हरी दूब और हरी भरी झाड़ियाँ लगी हुई थीं। जाडों के दिन थे, इस कारण पेडों के पत्ते झड चुके थे, परन्तु गर्मियों में, जबकि, नये पत्ते छाजाते होंगे, तब यह जगह कितनी सुहावनी और सुरम्य प्रतीत होती होगी। थोड़ी ही दूर पर एक गिर्जा था। उसका शान्त वातावरण मुझे अपने गाँव की याद दिला रहा था। आगे बढने पर लाल ईंट की एक दुमञ्जिली इमारत नज़र पडी। उसकी खिडकियाँ छोटी छोटी थी और उसकी ऊपर निकली हुई दो चिमनियाँ एक फ़ैक्टरी की याद दिलाती थीं। यहाँ पर लाल रँगे हुए लोहे के फाटक दीख पडते थे।

मैं दफ़्तर में पहुँची। सुपरिंटेंडेंट ने मेरे हाथ अपने सामने निकलवाकर मेरी हथकडी खोल दी। अब वहाँ एक जवान जर्मनी डाक्टर और वहाँ की एक औरत के सिवा मेरे पास कोई न रहा। डाक्टर मेरी ओर पीठ करके कुर्सी पर बैठ गया। उस औरत ने मेरे सब कपडे उतरवा लिये, और मैं बिल्कुल नंगी कर दी गई। फिर डाक्टर उठा और मेरे चारो तरफ घूम कर मुझे गौर से देखा और कुछ लिख लिया।

यह सब कार्रवाई इसलिए कीगई थी कि मेरे बदन पर अगर पहचान के लिए कोई खास चिह्न हो तो देख लिया जावे। मुझे उस वक्त स्त्री होने के कारण शर्म आई या नहीं? और दुखित

हुई या नहीं ? नहीं। मेरा भरोसा ईश्वर पर था, और मेरा धर्म था स्वाधीनता, समता, और बन्धुत्त्व। अपने इस धर्म के गौरव के लिए मुझे सब कुछ सहन करना ही चाहिए था। चार वर्ष पहले यही व्यवहार मेरी वहिन ईव्जीनिया के साथ हुआ था और गिरफ़ारी के बाद यही मेरे साथ होचुका था। उस वक्त मुझे यह सहन नहीं हुआ था और होममेम्बर काउण्ट टालस्टा से बिगड कर मैंने कहा था कि यह हरकत बहुत बुरी है, और यह भविष्य में कभी न होनी चाहिए। शायद उस वक्त मेरे रोष प्रकट करने के कारण ही मेरे साथ यह दुबारा घृणित व्यवहार किया गया।

इस लाल ईंट के मकान मे ४० कोठरियाँ थीं। हर एक में लोहे का एक दरवाज़ा था। बाहर छज्जे से, इस जेल का भीतरी दृश्य खूब दिखाई पडता था और सब कोठरियाँ नजर पडती थीं। मुझे २६ नम्बर की कोठरी मिली।

अब मेरा एक नया जीवन आरम्भ हुआ। इस जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर न था। मृत्यु से भी आदमी सदा के लिए शान्त होजाता है और यहाँ भी हम लोग सदा के लिए शान्त थे। इस जीवन की यह खूबी थी कि एक स्वप्न ही जीवन मालूम पडता था, और जीवन बिल्कुल स्वप्न-वत् था। रात में जब कभी निरीक्षक की लालटेन का प्रकाश छेद मे होकर कोठरी में पहुँच जाता था, तब प्रकाश का क्षण भगुर अस्तित्व जीवन की वास्तविकता में परिणत होकर मेरी नस नस में

बिजली दौड़ा देता था। रात को स्वप्न देखती थी कि लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा है, वे फाँसी के लिए लेजाये जा रहे हैं, और भाप और बिजली से उन्हें अनेक प्रकार की शारीरिक यन्त्रणाएँ दी जारही हैं। परन्तु यह सब होते हुए भी मेरा हृदय यह कहता था कि मैं इन सब बातों को, अपनी घोर विपत्तियों को, जनता के दुःख को, और अपने साथियों की कशमकश और सर्वनाश को भूल जाऊँ। साथ ही हृदय यह भी कह रहा था कि अदृश्य होते हुए भी, वे सब बलिदानी वीर मेरे साथ रह कर मेरी रक्षा कर रहे हैं और मैं अकेली नहीं हूँ।



२०

जेल-जीवन



म अपने देश, मनुष्यता, परिवार, मित्र, साथी आदि सबसे वञ्चित हो चुके थे। किसी जीवित वस्तु से हमारा सम्बन्ध नहीं रहा था। हमारी कोठरियों के नीले शीशों ने सूरज की किरणों को भी मन्द कर दिया था। आसमान पर भी हमारा उतना ही अधिकार बाकी था, जितना कि वह दीखता था। दिन, महीने और वर्ष आये और चले गये, और बादल होने के समय लिये हुए चित्र की तरह हृदय पर एक धुंधला प्रतिबिम्ब छोड़ गये।

मेरी कोठरी का फर्श काला, ऊपर से दीवारें भूरी तथा नीचे से ४-५ फुट तक जस्ती रंग दी गईं। वहाँ जलने-वाले लैम्पों के प्रकाश में हमारी कोठरियाँ ऐसी लगती थीं मानों ४० अर्थियों के बक्स लम्बे खड़े कर दिये गये हैं। वहाँ का वातावरण बिल्कुल कब्रस्तानी था।

हम लोग किसी से मिल नहीं सकते थे, और न, अपने परिवार से पत्र व्यवहार कर सकते थे। न कोई खबर हमारे पास आने पाती थी, और न, हमारे पास से जाने पाती थी। किसी आदमी को यह जानने तक की इजाजत नहीं थी कि हम

कहाँ और कैसे रहते हैं। मेरी माँ के पूछने पर असिस्टेंट होम-मेम्बर ने जवाब दिया था कि जब तुम्हारी लड़की कब्र में पहुँच जायगी तब तुम्हारे पास खबर भेजेगी। हमारा नाम तक बिसरा दिये गये, और हम इस प्रकार नम्बरों से पहचाने जाते थे, जैसेकि स्टेट की निजी कोई सम्पत्ति हो।

जेल के इधर-उधर का तो हमें कुछ पता ही नहीं था। हम सब कैदी तक एक दूसरे से परिचित न थे। मुर्दों की तरह क़ब्रों में अलग अलग पड़े हुए थे।

जो क़ैदी श्लूसैलबर्ग भेजे जाते थे, उनकी बहुत दिनों तक जान की आशा नहीं की जाती थी। पहले पाँच वर्षों में १५ आदमी मर गये। मिनाकौव और मिश्किन दोनों ही प्रतिरोध करने के अपराध में गोली से मार दिये गये, तथा एक ने फाँसी से आत्म हत्या कर डाली। ग्रेचैव्स्की ने अपना बदन जलाकर आत्म हत्या कर डाली। कुछ पागल होगये। एक औरत मेरे जेल-जीवन के आँठवें वर्ष में अपना गला काट कर मर गई। उसे यहाँ के एकान्त में एक महीना काटना भी असह्य हो गया था। यहाँ से छूटने पर भी लोग अधिक समय तक जीवित न रहते थे, क्योंकि उनकी जीवनोपयोगी शक्तियों का श्लूसलबर्ग में पहले ही खात्मा हो चुकता था।

मेरी भी जीवित रहने की इच्छा कुचली जा चुकी थी। हमारी पार्टी के जो लोग यहाँ लाये गये थे उन्हें सहारा किस बात का था? क्रान्तिकारी आन्दोलन असफल हो चुका था।

उसका सङ्गठन निनष्ट कर दिया गया था। आखिरी दम तक कार्यकारिणी कमेटी निर्मूल कर दी गई थी। जनता और समाज ने हमारा साथ नहीं दिया। सरकार ने हम लोगा के गले में फाँसी का फन्दा और भी कड़ा कर दिया था। हमने अपना जगह पर काम करने के लिए रूस के रङ्ग-मञ्च पर कोई वारिस नहीं छोडे। मुझे एक विशेष दुःख यह था कि मित्र, परिवार, देश, काम और सारे ससार से नाता तो टूटा हा, किन्तु साथ ही, मेरी माँ से, मेरा एक मात्र सम्बन्ध भी टूट गया। माँ ही दुनियाँ मे मेरी सबसे प्यारी चीज थी, वह भी मुझसे सदा के लिए छुडवा दी गई, क्योंकि अपने कार्यक्षेत्र से 'अलग हो जाने के बाद, मैं व्यक्ति गत रूप से रूस की नहीं, किन्तु केवल अपनी माँ की पुत्री ही रह गई थी।

अपने श्लूसैलबर्ग के जीवन मे, अनेक कठिनाइयाँ सहते हुए भी, मैंने इस बात पर कभी पश्चाताप नहीं किया कि जिस मार्ग का मैंने अनुसरण किया है, उस पर मुझे नहीं चलना चाहिए, अथवा वह अनुचित मार्ग है। मैने जो कुछ किया था, वह खूब सोच-समझ कर किया था, अब उसके ऊपर पश्चाताप का कोई प्रश्न ही नहीं था। जो हानियाँ सार्वजनिक रूप से, अथवा निजी तौर पर भुगतनी पडी थीं, उन सबने मेरे अन्दर बहुत कटुता पैदा कर दी थी और उन बातों से मैं भीतर ही भीतर घुली जा रही थी। उस समय की अपनी मानसिक दशा का खयाल करते हुए मुझे मृत्यु का जरा भी डर न था। वह तो स्वागत करने की बात

थी, किन्तु मुझे डर यह था कि कहीं मैं पागल न हो जाऊँ। इसलिए अपनी मानसिक वृत्ति को स्वस्थ रखना बहुत आवश्यक था।

जेल में अपने मित्रों के साथ हमने दरवाजे पर उँगलियों के ठक्के से, अपने मनोभाव व्यक्त करके एक दूसरे के पास पहुँचाने का ऐसा तरीका अख्त्यार किया, जिससे वहाँ के एकान्त और नीरस जीवन में कुछ अन्तर पड़ा। एक साथी की नसीहत से मैंने लाभ उठाया। उससे मेरे हृदय को सान्त्वना मिली।

मेरी यह मनोवृत्ति कि मैं एक क्रान्तिकारी और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता की अपेक्षा, अपनी माँ की लड़की और केवल एक प्राणी हूँ, अनुचित और गलत थी, क्योंकि, क्रान्तिकारी की हैसियत से हम लोगों ने रूस के इतिहास पर अपनी एक गहरी छाप लगा दी थी। जैसे कि देशभक्तों ने फ्रास में, नैस्टील मे कैद रह कर अपने आपको गौरवान्वित बना लिया था, वही हाल हमारा रूसी वैस्टील श्लूसैलवर्ग में था। मैंने अपनी कैद के पाँचवें वर्ष में एक बार अनशन किया। मैं मृतक प्राय हो चुकी थी। उस दशा में मैंने अपने एक प्रसिद्ध साथी को दूसरे साथी से यह कहते हुए सुन लिया—"वीरा, अब केवल अपने मित्रों ही की नहीं, बल्कि समस्त रूस की सम्पत्ति है!" इन शब्दों ने मेरे हृदय में यह भावना दृढ कर दी कि मेरा व्यक्ति-गत जीवन अब भी रूस ही की सेवा के लिए रहेगा और इस उद्देश को पूरा करने के लिए मुझे पागलपन और साक्षात् मृत्यु तक पर विजय प्राप्त करनी है।

२१

वीरोचित बलिदान

मीनाकौव



मीनाकौव और मिरिकिन वर्षों से क्रान्तिकारी काम में लगे थे। मीनाकौव को सन् १८७९ में ओडेसा में सज़ा हुई थी। पहले वह साइबेरिया भेजा गया, पर वहाँ से उसने भागने की कोशिश की, इसलिए पहले वह पीटर और पौल के दुर्ग में, और बाद में श्लूसैलबर्ग भेज दिया गया। जेल में घुल घुल कर मर जाना उसे असह्य था, इसलिए कोई ऐसा काम करना चाहता था कि एक दम ही इस जीवन से छुटकारा मिल जाय। उसने तुरन्त ही बहुत सी सुविधाओं के लिए माँग पेश करदी। उसने चाहा कि उसे मित्रों और परिवार से मिलने-जुलने और उनसे पत्र-व्यवहार करने की इजाजत दे दी जाय, खाने पीने की सुविधा हो, और पुस्तकें, तमाखू आदि जरूरी चीजें भी मिलती रहें। एक दिन मीनाकौव ने डाक्टर के मुँह पर थप्पड मारा। इसी जुर्म में

वह गोली से मार दिया गया । उसने अपनी रिहाई के लिए मुआफ़ी माँगने तक से इन्कार कर दिया था ।

मिश्किन

सन १८८४ के बडे दिन जब हमारी कोठरियो मे खाना लाया गया, तब एक कोठरी से तश्तरियो के गिरने, और किसी की हाथापाई की आवाज आई । रुँधे हुए गले से मिश्किन पुकार रहा था—"मुझे पीटो मत, जान से मार दो !"

रूस के क्रान्तिकारियो मे मिश्किन उन लोगो मे से था, जिन्होंने सबसे अधिक समय तक कष्ट सहन किये थे । वह मास्को का निवासी था । वहाँ वह गैरकानूनी पुस्तके प्रकाशित करने के लिए प्रेस चलाता था । प्रेस के सब आदमी पकड लिये गये और मिश्किन को चेतावनी दे दी गई । फलस्वरूप वह देश छोड़कर बाहर चला गया । साइबेरिया के विलिस्क शहर मे चैर्नीशैव्स्की कैद था । मिश्किन पुलिस अफसर की पोशाक पहन कर चैर्नीशैव्स्की को छुडाने के लिए जेल अधिकारी के पास गया, और उसे एक जाली हुक्म दिखाकर कहा कि चैर्नीशैव्स्की को सेंटपीटर्सबर्ग लेजाने के लिए मेरे हवाले कर दो । अधिकारी को सन्देह हो गया, और उसने कहा कि याकुट्स्क में गवर्नर से भी पूछ लो । उसने मिश्किन के साथ उसकी रक्षा के बहाने दो सिपाही और कर दिये । मिश्किन भी ताड गया कि काम होना तो दूर, अपनी जान और खतरे मे पड गई । इसलिए याकुट्स्क

के पास उसने एक सिपाही को गोली से मार डाला, पर दूसरा अपनी जान बचा कर भाग गया।

बाद में मिरिकिन पकडा गया और १९३ अभियुक्तों वाले मामले मे उसे १० बरस की सजा हो गई। उस मामले में मिरिकिन ने अभियुक्तों का नेतृत्व ग्रहण किया था और सबकी ओर स उसने एक बडा जबर्दस्त क्रान्तिकारी भाषण दिया था सन १८८० तक, दो बरस वह बडी भयानक मुसीबतों में खारकौव-जेल मे रहा। बाद मे वह कारा भेज दिया गया। वहाँ दो बरस रह चुकने के बाद, वह अपने कई साथियों को लेकर भाग गया। परन्तु व्लैडीवोस्टौक में पकडा गया। फिर वह सेंटपीटर्सबर्ग मे रैव्लिन मे कैद कर दिया गया। उस जगह हमारी पार्टी के आदमी धीरे धीरे काल के ग्रास हो रहे थे। मिरिकिन ने यहाँ भी कई बार अधिकारियों के दुर्व्यवहार के प्रतिरोध में विद्रोह खडा करने का उद्योग किया, परन्तु साथी नहीं मिले, इसलिए वह असफल रहा। बाद मे रैव्लिन के सब लोग श्लूसैलबर्ग भेज दिये गये। मिरिकिन १० बरस से, एक के बाद दूसरा जेल की कठोर यातनाये भुगत चुका था। परन्तु रूसी जेलों मे अपनी भीषणता के लिए प्रसिद्ध श्लसैलबर्ग ने उसकी नसें ढीली कर दी। यहाँ उसने अपने प्राण देने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा कि जेल इन्स्पेक्टर का अपमान करूँ, तो इस जुर्म मे मेरे ऊपर मुकद्दमा चलेगा। मुकदमे मे, मैं श्लूसैलबर्ग में होनेवाली निर्दयता-पूर्ण गुप्त कारर्वाइयों का रूसी जनता

के सामने भण्डाफोड़ कर दूँगा, और इस प्रकार अपने प्राण देकर अपने साथियों के जीवन को सुखद बना सकूँगा। २५ सितम्बर सन् १८८४ को यही उसने सत्य कर दिखाया। जहाँ दान महान पहले मीनाकोव गोली से मार डाला जा चुका था, वहां मिरिकन भी गोली से मार दिया गया।

इसके फलस्वरूप असिस्टेंट होममेम्बर श्लूसैलवर्ग आ पहुँचे। उन्होंने खुद हर एक क़ैदी को जाकर देखा। अब ऐसे दो आदमियों को, जो बहुत कमजोर और बीमार थे, जोड़े से टहलने का हुक्म मिल गया। मोरोज़ोव और बुट्सैविच का एक जोड़ा बना। इनमें से कुछ ही दिन बाद तपैदिक से बुट्सैविच मर गया। ट्रीगोनी और ग्राचैव्स्की का एक जोडा बनाया गया। फ्लैङ्को और इज़ाइयैव का तीसरा जोडा बना दिया गया। इज़ाइयैव तपैदिक से बीमार था। एक नियम यह भी था कि जिनका चाल-चलन अच्छा होगा, उन्हें एक साथी के साथ टहलने की इजाज़त मिल जायगी। यह नियम अमल में नहीं लाया गया।

ग्राचैव्स्की

अपनी प्रारम्भिक युवावस्था में ग्राचैव्स्की समाज-सेवा के काम में लग गया, और चैकौव्स्की-दल में सम्मिलित होगया। दो बार जेल गया। अन्त में आर्केञ्जल प्रान्त में निर्वासित कर दिया गया। वहाँ से वह साफ ही भाग खडा हुआ और सेटपीटर्सबर्ग में आकर हमारी पार्टी में मिल गया। बाद में वह

हमारी कार्यकारिणी कमेटी का मेम्बर बन गया। सन् १८८७ में विस्फोटक पदार्थों की प्रयोगशाला के सञ्चालन के जुर्म में उसे फाँसी का हुक्म हुआ। परन्तु फिर सजा बदल कर उसे आजन्म कैद का हुक्म दिया गया। आरम्भ में वह रौलिन में रखा गया और बाद मे श्लूसैलबर्ग पहुँचा दिया गया। वहाँ उसने जेल के अत्याचारी शासन के विरुद्ध बड़ा जबर्दस्त आन्दोलन खड़ा कर दिया। इसलिए १८८६ में उसने १८ दिन तक अनशन किया। श्लूसैलबर्ग के इन्स्पैक्टर सौकौलौव ने उसे पुरानी जेल में रख दिया। तुरन्त ही ग्राचैव्स्की ने पुलिस विभाग के पास एक अपील भेजी। यह कहने की जरूरत नही कि वह अपील वहाँ पहुँची तक नही। ग्राचैव्स्की से कागज, कलम-दवात भी छीन ली गई।

अब ग्राचैव्स्की को जेल यातनाएँ असह्य हो उठीं। उसने भी मिरिकिन की तरह काम करने का निश्चय कर लिया, जिससे कि श्लूसैलबर्ग के अमानुषिक शासन का भण्डाफोड कर सके। अपने निश्चय के अनुसार उसने जेल के डाक्टर को पीटा। अधिकारियों ने उसे अपनी शिकायत करने और शोर-गुल मचाने का मौका न देने की गरज से, उस पर कोई अभियोग नहीं चलाया और यह बहाना कर दिया कि उसका दिमाग सही-सलामत नहीं है। परन्तु ग्राचैव्स्की, जब अपने इस उद्योग में सफल न हो सका, तब वह वहाँ के कष्ट और अत्याचारों के विरुद्ध देश मे लोकमत जागृत करने के लिए, २४ अक्टूबर सन १८८७ को

अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डाल, उसमे आग लगा कर जल मरा।

तीन दिन बाद जनरल पैट्रौव रलूसैलबर्ग आये और इन्स्पैक्टर सौकोलौव को बर्खास्त कर दिया। इससे हमारे बलिदानी वीर जिन्दा तो नहीं हो गये, किन्तु हमारी मुसीबतें कुछ कम जरूर हो गईं और हमें अब पहले की अपेक्षा अधिक आजादी से सास लेने का अवसर मिल गया। सौकोलौव बडा ही जालिम था। ६ महीने बाद उसकी जगह फैडोरौव नियुक्त हुआ। इस आदमी को अनुशासन पसन्द था। पर था यह चुगलखोर और जिद्दी, परन्तु निर्दयी नहीं था।



२२

एक वीराङ्गना



नवरी सन् १८८६ मे मैंने इन्स्पेक्टर से यह पूछा कि मुझे एक साथी के साथ टहल की इजाजत क्यो नही दे देते ? उसने दिया—"यह सुविधा हम हैं, परन्तु तुम्हारा कोठरी खट खट करना मुझे मुझे यह मालूम था कि दूसरी औरत एलक्जाण्ड्रोवना वौल्कैन्स्टाइन इसीलिए उसका नाम न लेकर मैंने यह

१४ जनवरी को मुझे बाहर ले जा। वौल्कैन्स्टाइन खड़ी हुई मिली। हम एक इस पोशाक मे एक दूसरी को पहचानना कारण मुझे पहचानने में कठिनता हुई। यह अवसर हर्षित होने का था या रोने नही जानती थी, मुकदमे के समय मैंने हम दोनों ही एक दूसरे के नामों से परि सचाई और सहृदयता ने मुझे बड़ी था भी स्वाभाविक, क्योंकि अपनी

दूसरी के सिवा कोई था ही नहीं, और न, कोई दूसरी चीज ही थी। मुझे पौलीवानौव की वह आत्म-कथा, जो उसने अपने रैलिन के जीवन की लिखी थी, बहुत उपयुक्त जान पड़ी। हमारी-सी स्थिति मे, दो आदमियो के मिलते समय, मानसिक विचारों से जो प्रसन्नता होती है, वह मनुष्य-स्वभाव के सर्वथा अनुकूल है, और उसको प्रकट करना असम्भव है।

रलूसैलनर्ग के जीवन का, मेरी अपेक्षा ग्लेक्जाएड्रौव्ना पर बहुत कम प्रभाव पड़ा था। जब मैं भूत और वर्त्तमान दशा से व्यथित होउठती थी तब वह अपनी मृदुल मुसकान, सहृदयता और मीठी बातों से ढाढस बँधा कर मुझे प्रफुल्लित कर देती थी। हम लोग एक दिन बीच मे छोड कर मिला करते थे, इसलिए और भी मिलने की उत्सुकता रहती थी।

जब कोई अपनी कोठरी मे मरता था, अथवा मृत्यु के कष्ट से चिल्ला उठता था, तब हम भी एक दूसरे को व्यथित पाते थे। ऐसे वक्त हम दोनों को एक दूसरी से आँख मिलाना असम्भव-सा होजाता था। केवल व्यक्तिगत भावों को, एक दूसरी से गले मिलकर, चूमकर, तथा जमीन पर पास बैठकर व्यक्त कर लेते थे। सन् १८८६ के एक खास महीने मे तीन बार ऐसे अवसर आय, जबकि, कौन्लिइयैन्स्की, इज़ाइयैव और इज़ानौव विभिन रागों के शिकार होगये।

इज़ाइयैव की बड़ी बुरी दशा थी। वह तपैदिक से पीडित था। जगह जगह बर्फ के ऊपर, जहाँ हम लोग टहलते थे, उसका

२२

एक वीराङ्गना



नवरी सन् १८८६ मे मैने इन्स्पेक्टर से यह पूछा कि मुझे एक साथी के साथ टहलन की इजाजत,क्यों नहीं दे देते ? उसनेजवाब दिया—"यह सुविधा हम तुम्हे दे सक्त हैं, परन्तु तुम्हारा कोठरी की दीवारों में खट खट करना मुझे पसन्द नहीं है।" मुझे यह मालूम था कि श्लूसैलबर्ग म एक दूसरी औरत एलेक्जाण्ड्रोव्ना वोल्कैन्स्टाइन भी मौजूद है, और इसीलिए उसका नाम न लेकर मैंने यह प्रार्थना की थी।

१४ जनवरी को मुझे बाहर ले जाया गया। वहाँ मुझे वौल्कैन्स्टाइन खडी हुई मिली। हम एक दूसरी से गले मिल। इस पोशाक में एक दूसरी को पहचानना बडा कठिन था, इस कारण मुझे पहचानने में कठिनता हुई। हम नहीं जान सके कि यह अवसर हर्षित होने का था या रोने का। मैं उसे पहले स नही जानती थी, मुकदमे के समय मैंने उसे देखा था। परन्तु हम दोनों ही एक दूसरे के नामों से परिचित थीं। उसकी सादगी, सचाई और सहृदयता ने मुझे बड़ी जल्दी मुग्ध कर लिया। यह था भी स्वाभाविक, क्योंकि अपनी दुनियाँ मे, एक के लिए

एलेक्जाएड्रोव्ना बडे कोमल स्वभाव की थीं। वह कभी कीडों-मकोडों, अथवा और किसी जीव को कभी न मारती थी। चिड़ियाँ उससे इतनी हिल गई थीं कि उसके घुटनो पर बैठ कर जूठी रोटी आदि खाया करती थीं। कोई कीडा-मकोडा रास्ते मे मिल जाता, तो वह हट जाती और मुझे भी रास्ते मे खीच लेती। यदि कोई कीडा किसी पौदे पर बैठ जाता, तो, वह पौदे का नष्ट होजाना तो सहन कर सकती थी, किन्तु कीडे को मार डालना उसे गवारा न था। एक बार उसने अपनी कोठरी मे एक खटमल पकड कर कागज़ मे बन्द कर लिया। जब वह घूमने बाहर गई, तब उसने बड़ी होशियारी के साथ कागज़ में स निकाल कर, उसे आज़ाद कर दिया। वह किसी व्यक्ति के गुण को ग्रहण कर लेती थी और अवगुण पर नजर भी न डालती था। उसका यह दृढ विचार था कि भलाई और प्रेम से बुराई पर विजय प्राप्त की जा सकती है,कठोरता और जबर्दस्ती से नही।

अब यह प्रश्न उठता है कि ऐसी कोमल-हृदया महिला ने हमारी पार्टी के खूनी प्रोग्राम को कैसे स्वीकार किया? और वह इस चक्कर में फँसी ही क्यो? यह देखकर कि देश के श्रमजीवी दिन-रहाड चूसे जारहे हैं, वह सम्यवादी बन गई। रूस मे सार्वजनिक हित के काम करने के लिए स्वतन्त्र वातावरण न होने के कारण वह क्रान्तिकारी बन गई, और अमानुषिक दमन ने उसे खूनी प्रोग्राम का समर्थक बना दिया। उसकी प्रेममयी बलिदानी आत्मा ने क्रान्तिकारी मार्ग से वह सुनहला आदर्श खडा किया, जो

थूका हुआ खून देखते थे। अधिकारी इतना तक न करते थे कि उसके खून को घर्फ ही से ढकवा दें। हमारे पास भी फावडा आदि ऐसी कोई चीज न थी, जिससे घर्फ खोदकर उस खून को ढक देते। उसके खून का दृश्य और हृदय विदारक खाँसी हमें बडी व्यथा पहुँचाती थी। इजाइयैव को मरते वक्त बडी तक्लीफ हुई और उससे हम लोगों को भी बडी व्यथा पहुँची। उसकी असहाय अवस्था, तथा उसकी कुछ भी सहायता करने म हमारी बेबसी बहुत ही करुणाजनक थी। यदि अधिकारी उसे जरा-सा अफीम दे देते, तो, मृत्यु से उसने जो सङ्घर्षण किया, वह आसान होजाता, और वह शान्ति के साथ मर सकता।

वसन्त आने पर मुझे और एलेक्जाएड्रौना को तरकारी के बगीचे में जमीन के दो टुकडे दे दिये गये। हर एक टुकडा नौ फुट लम्बा और ढाई फुट चौडा था। इसमें सूरज की रोशनी बिल्कुल नहीं आती थी। एक ओर पत्थर की दीवार थी और बाक़ी तीन ओर नौ फुट ऊँचे तख्ते लगा दिये गये थे। फिर भी वहाँ की मिट्टी को देखकर हम बडे खुश हुए, क्योंकि यहाँ की मिट्टी ऐसी ही थी, जैसीकि, हमारे गाँव में थी। हम लोग मिट्टी ढोकर इधर उधर डाल दिया करते और बो भी लेते थे। जब बीज उगने लगता तब हमारे हर्ष की सीमा न रहती। पहरे वालों को हमसे बोलने की बिल्कुल मनाही थी। यहाँ तक कि, वे हमसे कोई हिदायत भी न कर सकते थे। कोई खास जरूरत पडने पर इशारे से हमसे कोई बात कह सकते थे।

एलेक्जाएड्रौव्ना बडे कोमल स्वभाव की थी। वह कभी कीडों-मकोडों, अथवा और किसी जीव को कभी न मारती थी। चिडियाँ उससे इतनी हिल गई थीं कि उसके घुटनों पर बैठ कर जूठी रोटी आदि खाया करती थीं। कोई कीडा-मकोडा रास्ते में मिल जाता, तो वह हट जाती और मुझे भी रास्ते से खींच लेती। यदि कोई कीडा किसी पौदे पर बैठ जाता, तो, वह पौदे का नष्ट होजाना तो सहन कर सकती थी, किन्तु कीडे को मार डालना उसे गवारा न था। एक बार उसने अपनी कोठरी में एक खटमल पकड़ कर कागज़ में बन्द कर लिया। जब वह घूमने बाहर गई, तब उसने बडी होशियारी के साथ कागज़ में से निकाल कर, उसे आज़ाद कर दिया। वह किसी व्यक्ति के गुण का ग्रहण कर लेती थी और अवगुण पर नजर भी न डालती थी। उसका यह दृढ विचार था कि भलाई और प्रेम से बुराई पर विजय प्राप्त की जा सकती है,कठोरता और जबर्दस्ती से नहीं।

अब यह प्रश्न उठता है कि ऐसी कोमल हृदया महिला ने हमारी पार्टी के खूनी प्रोग्राम को कैसे स्वीकार किया? और वह इस चक्कर में फँसी ही क्यों? यह देखकर कि देश के श्रमजीवी दिन-दहाड़े चूसे जारहे हैं, वह साम्यवादी बन गई। रूस में सार्वजनिक हित के काम करने के लिए स्वतंत्र वातावरण न होने के कारण वह क्रान्तिकारी बन गई, और अमानुषिक दमन ने उसे खूनी प्रोग्राम का समर्थक बना दिया। उसकी प्रेममयी बलिदानी आत्मा ने क्रान्तिकारी मार्ग से वह सुनहला आदर्श खडा किया, जो

प्राण देकर भी, भावी सन्तति के हित के लिए प्राप्त करने योग्य था।

हममें से जब कोई किसी सुविधा के अथवा और किसी मामले में इन्स्पैक्टर से जिक्र करता था, तब वह हमेशा झिडक कर कह देता था कि सिर्फ अपनी बात करो, दूसरों से कुछ मतलब नही। जब हम टहलते थे तब हमारे साथी केवल इसी सुविधा के लिए घुले जारहे थे। वे चाहते थे कि किसी का मुँह देखने को मिले। कुछ तो हमारे कौव्लियेन्स्की और लैटीपौलुस्की, ऐसे साथी थे, जिन्होंने मरते दम तक किसी साथी का मुँह ही नही देखा। एलेक्जाण्ड्रोव्ना ने यह विचारा कि हमें अपना साथियो के साथ टहलने का हक खुद ही तब तक के लिए छोड देना चाहिए, जब तक कि, यह अधिकार के रूप मे सबके लिए एक साधारण नियम न बना दिया जाय। पहले तो कई आदमी हमारा साथ देने को तैयार होगये, परन्तु अन्त में हम पाँच ही व्यक्तियो ने इसे छोड दिया। पाँच मे, एलेक्जाण्ड्रोव्ना, वौग्डा नोविच, पौपौव, शैवलिन और मैं, ये ही व्यक्ति थे। डेढ वर्ष तक हमारा टहलना बन्द रहा। जब नया इन्स्पैक्टर फैडौरौव आगया, तब टहलने के अधिकार से कोई भी वञ्चित न रह गया। इस अधिकार को प्राप्त करने का श्रेय, मुख्यत एलेक्जा एड्रौव्ना को था। वह सचमुच एक वीराङ्गना थी। न्यायोचित अधिकारों के लिए सङ्घर्षण करना वह खूब जानती थी।

२३

पुराने किले की कोठरी



सा शूली पर चढा था। उसने वडे वडे कष्ट सहन किये थे। उसने किसी कष्ट से मुँह न मोडा था। मैंने बचपन ही से धार्मिक पुस्तकें पढी थीं, अब कष्टों से मुँह मोड कर भी, क्या मैं ईसाई बनी रह सकती थी? उस दशा मे क्या मैं अपने आपको ईसा की अनुगामिनी कह सकती थी?

पौपौव की कोठरी मेरी कोठरी से नीचे थी। उसने खटखट किया। ऐसा करते समय वह पकडा गया और पुराने किले की कोठरी में भेज दिया गया। यहाँ हम लोग सब एक ही जगह रहते थे और एक दूसरे की चीं पुकार की आवाज सुन सकते थे। इन्सपैक्टर ने पौपौव से कहा कि मैं तुम्हें ऐसी जगह ले जाऊँगा जहाँ कोई जीवित आदमी तुम्हारी आवाज़ नहीं सुन सकता। थोड़े ही दिन पहले पौपौव एक बार वहाँ हो आया था और वहाँ उस पर बडी क्रूरता से मार पड चुकी थी। मैंने सोचा कि फिर भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जायगा और बहुत से सिपाही उस पर एक साथ ही टूट पडेंगे। मैंने निश्चय

कर लिया कि पौपौव की सान्त्वना के लिए मुझे भी वहाँ पहुँचना चाहिए। मैंने इन्स्पैक्टर से कह दिया कि जब हम दो आत्मा बातें कर रहे थे तब उनमें से केवल एक को सजा देना अन्याय है, इसलिए मुझे भी वहाँ पहुँचा दो। इन्स्पैक्टर मुझे भी ले चला। पुराने किले के रास्ते मे पाँच बरस बाद आसमान और तारे देखने को मिले। क़िले में लेजाकर मैं एक कोठरी में बन्द कर दी गई। कोठरी छोटी, ठण्डी और बहुत गन्दी थी। उसकी दीवारें भी, पुरानी होने के कारण बुरी दशा मे थीं। वहाँ एक छोटी मेज, कुर्सी और एक बेञ्च पड़ी हुई थी। न बिस्तर था और न बेञ्च पर बिछाने के लिए कोई चटाई। मैं सूती कपड़े पहने हुई थी। सर्दी से काँपने लगी। पहले तो मैंने समझा कि सिपाही बिस्तर और कपड़े लावेंगे, परन्तु कुछ नही आया और ठण्ड मेरी नस नस में भर गई। मैंने जूते उतार कर उनका तकिया बनाया और पड़ रही। यहाँ खाने को बहुत बासी और कड़ी रोटी मिली थी।

एक दिन वहाँ शोर-गुल शुरू हुआ। पौपौव की चुप रहने की इच्छा न थी। उसने किवाड़ खटखटा कर शोर-गुल मचाना शुरू कर दिया। मैंने भी यही किया। लोग दरवाजा खोलकर पौपौव को पीटने ही को थे कि मैंने इन्स्पैक्टर को पुकार कर, उससे कहा—मत मारो, तुम एक बार उसे पीट चुके हो, याद रहे कि किसी दिन इस काम के लिए तुमसे भी जवाब तलब किया जा सकता है। उसने कहा कि हमने उसे नही पीटा, हम केवल उस

बाँध रहे थे और वह हाथापाई कर रहा था। मैंने बिगड कर कहा—नहीं, तुमने जरूर पीटा है और इस बात के गवाह मौजूद हैं। वह अब खटखट नहीं करेगा, मैं उससे कह दूँगी। इन्सपेक्टर ने कहा—बहुत अच्छा। इसपर मैंने पौपौव को बुला कर उसे ऐसा करने से मना कर दिया और कह दिया कि मुझे दुख होता है। सवेरा होते ही कर्मचारी मेरे लिए पलँग और चाय ले आये, परन्तु पौपौव के लिए नहीं। मैंने चाय इन्सपैक्टर के पैरों की तरफ फेंक दी और पलँग लेने से इन्कार कर दिया। मैंने रोटी का एक टुकडा इन्सपैक्टर को दिखाया और बिगड कर बोली—याद रखो कि तुम हमें ऐसी रोटी और पानी पर रख रहे हो! इन्सपैक्टर घबड़ा गया और उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि अच्छी रोटी लाकर दो। ५ मिनट के भीतर ही एक सिपाही ने ताजा और मुलायम रोटी लाकर मुझे दे दी। मैं कोई ऐसी वजह ढूँढ निकालने की कोशिश मे थी, जिस पर प्राणों की बाजी लगाई जा सके। बचपन की शिक्षा मे हम समझते थे कि शहीद होना बडा अच्छा काम है!

मुझे इस कोठरी में रहते हुए ५ दिन हुए थे, जबकि, इन्सपैक्टर ने आकर खबर दी कि नम्बर ५ (पौपौव) को पलँग, आदि जरूरी चीजें दे दी गई हैं। मैं बहुत कमजोर हो गई थी, इसलिए पड रही। मेरे कान मे गाने की आवाज आई। ग्राचैस्की गा रहा था। यह वही आदमी था जो डाक्टर को पीटने के जुर्म म इस पुराने किले में बन्द कर दिया गया था और जो

अपने बदन पर मिट्टी का तेल डाल कर जल मरा था।

सातवें दिन इन्स्पैक्टर ने मुझसे कहा कि तुम्हारी यहाँ की सजा पूरी हो गई, अब पहले वाली जगह को चलो। मैंने जवाब दिया कि अगर केवल मुझे ही ले जा रहे हो तो नहीं जाऊँगी। इस पर उसने कहा कि नम्बर पाँच तो चला गया। मैंने अपने पहले की कोठरी मे लौट कर एक चमकीली स्लेट पर पानी लगा कर अपना मुँह देखा। मालूम हुआ कि साल दिन पहले की अपेक्षा मेरे मुँह पर ऐसी झुर्रियाँ पड गई हैं जैसी कि १० बरस मे पडतीं। यह झुरियाँ बहुत जल्दी मिट गई, परन्तु उन सात दिनों की याद कभी भुलाई नही भूलती।



२४

काव्य-रुचि



सैलवर्ग में तीन बरस रहने के बाद हम लोगों को एक एक कापी दे दी गई। इस कापी का हम स्वेच्छानुसार उपयोग कर सकते थे। परन्तु शर्त उसमें यह लगा दी गई कि कापी भर जाने के बाद हम उसे इन्सपैक्टर को दे दें और दूसरी कापी ले लें। इस कारण यह सुविधा एक असुविधा में परिणत हो गई। इस दशा में यह निश्चय करना बड़ा कठिन था कि इस कापी में हम क्या लिखें और क्या नहीं? इस प्रकार अधिकारियों ने जो चीज एक हाथ से दे दी, वही दूसरे हाथ से ले ली।

हम १६ आदमी अपनी अपनी कापियों में कविताएँ बना-बनाकर लिखने लगे। इससे हमें एक बड़ा लाभ यह हुआ कि हमारे दिलों में जो गुबार थे, उन्हें हमें प्रकट करने का अवसर मिल गया। इस प्रकार हमें अपनी मानसिक दशा ठीक रखने में बड़ी सहायता मिली। हम लोग सामयिक कविताये भी लिखा करते थे। किसी के जन्म दिवस पर, बधाई के रूप में

उसके सम्मान मे, कविता लिख दिया करते थे। लोपाटिन ने अच्छी कविताएँ लिखीं। हर एक कविता मे उसकी वर्त्तमान असहाय अवस्था के चित्र खिंचे हुए थे। एक कविता का भाव था—

"उस दिन में आग लगे, जिसके प्रकाश मे वह मार्ग सूझ था, जिस पर चलकर मुझे आजादी से वञ्चित रह, इस चहार दीवारी मे बन्द होना पड़ा। उस दिन में भी आग लगे, जिसमें मेरा जन्म हुआ था और न जाने, उसी क्षण मेरी माँ ने बुद्धि मानी मे मुझे मार क्यो नहीं डाला ?" इस प्रकार श्लूसैलबर्ग का सारा वायुमण्डल काव्यमय बनगया। विभिन्न छन्दों में कवितायें लिखी गई। लोगों ने गीत तक लिख डाले। पैंक्राटौव ने रौस्टौव मे होनेवाली बीभत्स कृतियों के ऊपर कविताएँ लिखीं। मैं जब जेल के बाहर थी तब कविता नहीं लिखती थी। परन्तु यहाँ मैंने भी, माँ, बहिन और घर के ऊपर तीन कवितायें लिख डाला। मैंने निम्नलिखित आशय की भी एक कविता लिखी—

"हमे इस बात का सौभाग्य है कि हम अपनी शक्तियों को इसलिए दे रहे हैं कि आजादी जिन्दा रहे। हम भले ही मर जावे, कितने ही कष्ट सहे, पर मुँह नहीं मोड़ेंगे। सरकार के शिकार बनने के लिए हम सहर्ष आगे बढते हैं, पर उसकी शिकायत नहीं करते। सब कुछ सहन करते हुए, शान्ति से स्वतन्त्रता और न्याय के नाम पर युद्धक्षेत्र मे कूद पड़ने के लिए, हम अपने युवक बन्धुओं का आह्वान करते हैं।"

पहले तीन वर्षों में शनिवार के दिन हर एक कैदी की तलाशी ली जाती थी। तलाशी लेते समय हमें बहुत परेशान किया जाता था। इस ढँग से तलाशी लेना बिल्कुल व्यर्थ था, क्योंकि वहाँ हमारे पास हो ही क्या सकता था ? मार्टिनोव हमारा एक मजदूर साथी था। उसने कविता करने में भाग नहीं लिया, किन्तु उसने एक डायरी लिख डाली। उसमें अन्य सब बातों का उल्लेख करते हुए, उसने शनिवार की तलाशियों की कार्रवाई पर भी अच्छा रंग चढ़ाया। कापी ख़त्म करके उसने इन्स्पैक्टर को दे दी, और उसने पुलिस विभाग में भेज दी। फलस्वरूप हमारी तलाशियाँ बन्द होगई।



२५

अनशन



र्ष मे दो बार उच्च अधिकारी हमारी जेल क निरीक्षण करते थे। हमें यह ढँग इसलिए अखरता था कि हमारे दैनिक कामों में विघ्न पडता था, और इससे यह जाहिर होता था कि हम कैदी हैं। बेचारे इन्स्पैक्टर को यह ढग इसलिए अखरता था कि उस प्रबन्ध मे व्यस्त होना पडता था। सन् १८८९ के अन्त म इन्स्पैक्टर फैडैरौव को यह खबर मिल गई कि निरीक्षण के लिए कोई अधिकारी आ रहा है। उसने हम लोगों को चेतावनी दे दी कि किताबों को छिपाकर रखदो या लाइब्रेरी में पहुँचा दो। उसका मतलब उन पुस्तकों से था, जो हम क़ैद होते समय, जेल में अपने साथ लाये थे, और जो कि यहाँ की लाइब्रेरी में ऊँचे अफ़सरों के बिना जाने रहती थीं। हम सबने इन्स्पैक्टर की नेक सलाह को मान लिया। अकेले इवानौव ने नहीं माना।

डुर्नौवो इस समय पुलिस विभाग का डाइरेक्टर था। बाद में सन् १९०५-६ में यह होममेम्बर होगया और फ़ौजी दमन द्वारा

क्रान्तिकारी आन्दोलन को दबा देने मे उसे सफलता मिली। आगे चलकर वह क्रान्तिकारियों के हाथ से मारा गया।

डुर्नोवो ने २८ नवम्बर को हम लोगों को आकर देखा। ल्वानोव की २८ नम्बर की कोठरी में, मिगनेट-रचित फ्राँस की राज्यक्रान्ति के इतिहास के ऊपर उसकी नजर पड गई। उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए इन्स्पैक्टर को आज्ञा दी कि कैदियो के सामाजिक और राजनैतिक विचारों पर जितनी किताबे यहाँ हों, वे सब हटा दी जावें। फलस्वरूप समाजशास्त्र की पुस्तकें, डच और अमेरिका के प्रजातन्त्र के इतिहास, प्रेसीडेण्ट लिङ्कन की जीवनी, पाँच जिल्दों म उन्नीसवीं शताब्दी का इतिहास, 'शरीर और आत्मा' नामकी पुस्तक, और पीसारेव की एक पुस्तक हटा दी गई। यही किताबे हम अपने साथ लाये थे।

हम लोगों ने सोचा कि हमे इस बात का विरोध करना चाहिए। यदि हम विरोध न करें तो शायद हमारी और सब पुस्तकें भी छीन ली जायँ, और हम अन्य सुविधाओं से भी वञ्चित कर दिये जायँ। विरोध के सम्बन्ध मे हम लोगों की तीन प्रकार की विचार धाराएँ थीं। एलेक्जाण्ड्रोव्ना और उसके समर्थक यह कहते थे कि प्रतिवाद में टहलने की सुविधा छोड दी जाय। मेरा और मेरे समर्थकों का यह कहना था कि प्रतिवाद मे अनशन किया जाय, और वह तब तक जारी रखा जाय, जब तक कि, हमे पुस्तके फिर से वापस न मिल जायँ। हम कहते थे कि या तो पुस्तकें ही लेकर रहेंगे, या इसी उद्योग मे मर मिटेंगे।

तीसरे विचार के वे लोग थे जो कहते थे कि हम इस बेबसी की दशा में कर ही क्या सकते हैं, इसलिए हमें चुप रहना चाहिए। बहुमत एलेक्ज़ाण्ड्रोव्ना के विचारों का था। हम लोग केवल पाँच ही थे। लोपाटिन तीसरी विचार धारा का आदमी था। एण्टौनौव को विवश होकर उसका साथ देना पड़ा, क्योंकि वह अकर्मण्यता के विरुद्ध था और व्यावहारिक रूप से काम करना चाहता था। तीन आदमी—एश्चैननैनर, इवानौव, मैंश्नूरौव—इस कारण हमारे साथ न पड़े कि अगर किसी कमजोरी की वजह से उन्हें बीच में खालेना पड़ा, तो उद्देश की हानि और होगी। पिछले दो आदमियों ने, खुल्लम-खुल्ला हमारा साथ न देकर यह जरूर किया कि वे गुप्त रूप से खाने को पाखाने में फेंक देते थे।

आखिर हमारा अनशन आरम्भ हुआ। उसमें मेरे और एलेक्ज़ाण्ड्रोव्ना के विचारों के समर्थक थे। मुझे बाद में मालूम हुआ कि पिछले आदमियों ने यह तय कर लिया था कि वे पहले तो अनशन का विरोध करेंगे, पर जब मैं आरम्भ कर दूँगी, तब वे भी साथ देंगे और अन्त तक डटे रहेंगे।

यह भी निश्चय हुआ कि चाय ले लेंगे, परन्तु शक्कर नहीं, और स्त्रियाँ पुरुषों से दो दिन बाद अनशन आरम्भ करेंगी।

अनशन आरम्भ करके मैंने बड़ी गलती की। कारण यह कि इस काम में बहुमत नहीं था, केवल अल्पमत था, इसलिए अधिकारियों पर क्या असर पड़ता? यही नहीं कि, यह आन्दोलन

प्रातिनिधिक नहीं है ? दूसरी बात यह है कि ऐसी बातों में, अपने साथियों को देखकर अधकचरे, या ऐसे आदमी, जो इस सिद्धान्त के बिल्कुल विरुद्ध हैं, पर दूसरों को कष्ट सहते हुए देखकर सहानुभूति से साथ देने लग जाते हैं, और उसकी वास्तविकता में सहमत न होने के कारण पिछड़ कर कार्य्य को हानि पहुँचाते हैं। जिन कामों में जान पर खेलना होता है उनमें जबर्दस्ती से लोग टहरे नहीं रह सकते, बल्कि उनमें वेही लोग काम आते हैं जो सिद्धान्त में तन्मय हो, अपना सर हथेली पर रखकर काम करते हैं।

बुटसिन्स्की अनशन में खून के कुल्ले करने लगा। उसे देखने को डाक्टर बुलाया गया। सोचने की बात है कि जो आदमी अपने हाथों से अपनी क़ब्र खोद रहा है, वही मौत से बचने के लिए डाक्टर को बुलाता है। स्वभावत डाक्टर उसकी सहायता करने में असमर्थ था। उसने आने से साफ इन्कार कर दिया।

नवें दिन एक आदमी ने यह कहा कि अब अनशन तोड़ देना चाहिए। बहुमत से यह बात स्वीकार करली गई। पौपौव ने मुझे यह सूचना दी और कहा कि मैं अनशन तोड़ दूँगा। मार्टीनौव तीसरे ही दिन खाने लगा था। मैंने उसके साथ अपना सम्बन्ध तोड़ दिया। स्टैरौडवौस्की ने अपने खून की नसें काट कर आत्महत्या करने की कोशिश की, परन्तु वह पकड़ा गया, और उसकी कोशिश बेकार गई। अन्त में वह भी खाने लगा। युकौव्स्की और मैं, केवल हम दोही डटे रहे। बाक़ी सबने अनशन तोड़ दिया।

मुझे अपने साथियों की इस कमजोरी से बड़ा ही धक्का

लगा। पाँच बरस पहले, जब मैं यहाँ आई थी, तब क्रान्तिकारी चरित्र के सम्बन्ध में, विशेषकर क्रान्तिकारी समुदाय के ऐक्य में, मुझे बड़ा भरोसा था। इस ऐक्य की प्रतिछाया मुझे कार्य्य कारिणी कमेटी में अपनी आँख से देखने को मिली थी, और मेरे हृदय में यह बात जमी हुई थी कि सामूहिक क्रान्तिकारी अन्तःकरण भी कोई चीज़ है। जैल्यावौव, फ्रौलैङ्को आदि ने यह स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया था कि सच्चा क्रान्तिकारी वह है, जिसकी अप्रति हत गति हो, और जो पीछे मुड़कर देखे तक नहीं। आज जबकि, एक मौका आया, तब उनमें से कुछ लोगों ने काम अधूरा छोड़ दिया। मुझे यह ख़याल और भी व्यथा पहुँचा रहा था कि जो लोग श्लूसैलबर्ग में थे, वे रूस के नर-रत्नों में से थे। परन्तु इन सब बातों से मुझे और भी अधिक बल मिला। मैंने निश्चय कर लिया कि मैं अनशन जारी रखूँगी। वर्त्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए, अब मैं ज़िन्दा रहने की अपेक्षा मरने को अधिक आसान समझने लगी।

मुझ और युर्कोव्स्की को, अनशन करते हुए, औरों की अपेक्षा दो ही दिन अधिक हुए थे कि एक ऐसी घटना घटी, जिससे हमें भी अनशन तोड़ देना पड़ा। पौपौव और स्टैरौड वौर्स्की ने बिना एक दूसरे की राय लिये, मुझसे कहा कि यदि मैं अनशन से मर गई तो वे भी आत्महत्या कर डालेंगे। उनकी इस नैतिक धाँधली से मुझे बड़ा क्रोध आया। उन्होंने एक तो मुझसे पूछे बिना अनशन के उद्देश को चौपट किया, और दूसरे

खुद मौत से बचने के लिए मुझे जिन्दा रखने की कोशिश की, और तीसरे उन्हें अपने पुरुषत्व के गौरव का खयाल हुआ कि उनके मुकाबले एक औरत बाजी मारे ले जारही है। मैं अपने ऊपर अपने साथियों की हत्या का कलङ्क नहीं लेना चाहती थी, इसलिए मुझे भी अनशन तोड़ने को विवश होना पड़ा। परन्तु यह मैंने सदा के लिए निश्चय कर लिया कि ऐसे आदमियों के साथ जेल में कभी किसी प्रतिरोध में शामिल नहीं हूँगी। मुझे किसी बात का विरोध करना होगा, तो सोच-समझ कर खुद ही करूँगी।

कैद के वक्त हम लोगों का जो रुपया जमा था, उसके सम्बन्ध में हमें सूचना दी गई कि वह हमारे सम्बन्धियों के पास भेज दिया जायगा। परन्तु असल में हुआ यह कि, हमारे अनशन के कारण वह जप्त कर लिया गया।

९ दिन के अनशन मे मुझे भूख नही लगी, और न, साथियो की तरह मुझे किसी तरह की तकलीफ हुई। मैं पडी पडी किताबे पढ़ा करती थी। बाद में जरूर मैंने मानसिक और शारीरिक निर्बलता अनुभव की। कभी कभी चौंक कर मैं पुकार उठती और रो पड़ती थी। यदि लोपाटिन के शब्द मेरे कान मे न पडते, तो न जाने, मेरी क्या दशा होती। उन शब्दो का मतलब था कि मेरे लिए अब भी कुछ समाज-सेवा का काम बाकी है। इसी भाव ने मेरी मानसिक दशा सुधार दी और मैं जेल की चहारदीवारी के बाहर भी भविष्य देखने लगी।

२६

मनोरञ्जन



मेरे मुकदमे के बाद माँ ने मुझे एक मूर्ति दी थी। उसे में बहुमूल्य वस्तु की तरह सदा अपने साथ रखती थी। श्लूसैलबर्ग में भी मुझसे उसे किसी ने लिया नहीं। मेरी माँ उसे हर्ष का चिह्न समझती थी। असल बात यह है कि श्लूसैलबर्ग में भी कोई न कोई खुशी की बात होती ही रही।

पुराने किले में एक दिन हम लोग कुछ काम कर रहे थे। वहाँ एक अफसर अपने हाथ में से एक अखबार पड़ा छोड़ गया। उसका मतलब यही था कि हम उसे जरूर पढ़ें, और हुआ भी यही। वह अखबार जेल भर में एक हाथ से दूसरे में घूम गया। उत्तरी ध्रुव की बर्फ में नैन्सन के फ्रेम नाम के जहाज की गति, मध्य अफ्रिका में स्टैनले की जंगलात की खोज, जर्मनी में साम्यवादी प्रजातन्त्र की पार्टी का विकास और उसके मेम्बरों का विस्तार, और वहाँ के शाह विल्हैल्म का मजदूरों के कानून के लिए यूरुपीय देशों की कान्फ्रेंस करना, इत्यादि बातें हमने पढ़ीं। जर्मनी का हाल पढ़ कर तो साम्यवादी की हैसियत से हम बड़ा

र्ण हुआ। सेंसर की कृपा के कारण हम अखबार मे कोई ऐसी बात नहीं पढ सके जिससे पता चलता कि हमारी मातृभूमि का क्या हाल है और उसकी भूमि में आज़ादी का अंकुर जमा है, या नहीं। इतने वर्षों मे यह पहला ही अवसर था कि हमे अपनी चहारदीवारी की बाहरी दुनियाँ की झलक देखने को मिली।

गैनगार्ट श्लूसैलबर्ग का क़िलेदार था। वह बहुत उदार विचारों का आदमी था। उसने अपने यहाँ के कैदियों के लिए बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त करली। वह कैदियों के मानसिक और शारीरिक विकास के कामों के लिए सदा उद्यत रहता था। उसने हमारे लिए सेंटपीटर्सबर्ग की लाइब्रेरियो से वे पुस्तकें मँगादीं, जो हमने पसन्द करली थी। उन किताबों में वर्णित लन्दन मैञ्चेस्टर, लिवरपूल आदि शहरों की औद्योगिक दशा, और अँगरेज़ी मज़दूरसङ्घ, हडतालें, सहयोग समितियों, यूनिवर्सिटियों, आदि के वर्णन ने हमारे जेल-जीवन पर पर्दा डाल दियाँ। आगे चलकर पुलिस विभाग ने हमारा इस प्रकार लाइब्रेरियों से पुस्तके मँगाकर पढना बन्द कर दिया।

मौरौज़ौव को जेल के डाक्टर से मालूम हुआ कि सेंटपीटर्सबर्ग म प्रकृति विज्ञान का एक ऐसा अजायबघर है, जो बाहर भी अपनी चीज़ भेज देता है। उसने गैनगार्ट से प्रार्थना की कि उस अजायबघर से कुछ ज़रूरी चीजें हमारे लिए भी मँगा दी जाया करें। गैनगार्ट ने यह कह दिया कि मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं, पुलिस विभाग से मंज़ूरी ले लो। मौरौज़ौव ने एक

२६

मनोरञ्जन



मेरे मुकदमे के बाद माँ ने मुझे एक मूर्ति दी थी। उसे मैं बहुमूल्य वस्तु की तरह सदा अपने साथ रखती थी। श्लूसैलबर्ग में भी मुझसे उसे किसी ने लिया नहीं। मेरी माँ उसे हर्ष का चिह्न समझती थी। असल बात यह है कि श्लूसैलबर्ग में भी कोई न कोई खुशी की बात होती ही रही।

पुराने किले में एक दिन हम लोग कुछ काम कर रहे थे। वहाँ एक अफसर अपने हाथ में से एक अखबार पड़ा छोड़ गया। उसका मतलब यही था कि हम उसे जरूर पढ़ें, और हुआ भी यही। वह अखबार जेल भर में एक हाथ से दूसरे में घूम गया। उत्तरी ध्रुव की बर्फ में, नैन्सन के फ्रेम नाम के जहाज की गति, मध्य अफ्रिका में स्टैनले की जगलात की खोज, जर्मनी में साम्यवादी प्रजातन्त्र की पार्टी का विकास और उसके मेम्बरों का विस्तार, और वहाँ के शाह विल्हैल्म का मजदूरों के कानून के लिए यूरुपीय देशों की कान्फ्रेंस करना, आदि बातें हमने पढ़ीं। जर्मनी का हाल पढ़ कर तो साम्यवादी की हैसियत से हमें बड़ा

हर्ष हुआ। सेंसर की कृपा के कारण हम अखबार मे कोई ऐसी बात नही पढ सके जिससे पता चलता कि हमारी मातृभूमि का क्या हाल है और उसकी भूमि मे आजादी का अंकुर जमा है, या नहीं। इतने वर्षों मे यह पहला ही अवसर था कि हमे अपनी चहारदीवारी की बाहरी दुनियाँ की झलक देखने को मिली।

गैनगार्ट श्लूसैलबर्ग का क़िलेदार था। वह बहुत उदार विचारो का आदमी था। उसने अपने यहाँ के क़ैदियों के लिए बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त करलीं। वह कैदियों के मानसिक और शारीरिक विकास के कामो के लिए सदा उद्यत रहता था। उसने हमारे लिए सेंटपीटर्सबर्ग की लाइब्रेरियो से वे पुस्तकें मँगादीं, जो हमने पसन्द करली थी। उन किताबो में वर्णित लन्दन मैञ्चेस्टर, लिवरपूल आदि शहरों की औद्योगिक दशा, और अँगरेजी मजदूरमद्य, हड़तालें, सहयोग-समितियों, यूनिवर्सिटियों, आदि के वर्णन ने हमारे जेल-जीवन पर पर्दा डाल दिया। आगे चलकर पुलिस विभाग ने हमारा इस प्रकार लाइब्रेरियो से पुस्तके मँगा कर पढना बन्द कर दिया।

मौरोज़ौव को जेल के डाक्टर से मालूम हुआ कि सेंटपीटर्स-बर्ग में प्रकृति विज्ञान का एक ऐसा अजायबघर है, जो बाहर भी अपनी चीजें भेज देता है। उसने गेनगार्ट से प्रार्थना की कि उस अजायबघर से कुछ जरूरी चीजें हमारे लिए भी मँगा दी जाया करें। गैनगार्ट ने यह कह दिया कि मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं, पुलिस विभाग से मजूरी ले लो। मौरोज़ौव ने एक

दरख्वास्त भेजकर कहा कि मैं प्रकृति विज्ञान के पदार्थों के समन्वय के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिख रहा हूँ, इसलिए अजायबघर से कुछ खास चीजें मँगादी जायँ। मैं भी इसी विषय का अध्ययन करना चाहती थी, परन्तु मौरौजौव की इस दरख्वास्त के मजूर होने की कोई आशा नहीं थी, और उस पर सब हँसते थे। सयोग से कभी कोई ऐसी बात भी होजाती है जिसकी कि पहले मे आशा नही होती। जिस विभाग ने पुस्तकें मँगाने की इजाजत नहीं दी थी, उसीने मौरौजौव की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

चार वर्ष तक यही सिलसिला जारी रहा कि डाक्टर वैजरौडनौव हर चौदहवें दिन नये वैज्ञानिक यन्त्र और पदार्थ मँगा देता और पिछली देखी हुई चीजे वापस कर देता था। धीरे धीरे इस ओर हमारी सुविधाएँ बहुत वढ गईं। डाक्टर महोदय वैज्ञानिक तथा अन्य विषयों पर भी पुस्तकें लाने लगे, और बाद में अजायबघर की ओर से हमसे वैज्ञानिक प्रयोगों का काम भी लिया जाने लगा। हमारे बाग में कई-सौ तरह के पौदे लगे हुए थे, और श्लूसैलबर्ग-द्वीप की जमीन में सदियों की पुरानी चट्टानें मौजूद थी। वैज्ञानिक दृष्टि से यह सब बातें बडे काम की थी। अजायबघर हम लोगों से प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के लिए अनेक वस्तुएँ तैयार कराता था। हमारा वह समय बडे आनन्द से बीता। जब वैजरौडनौव और गैनगार्ट श्लूसैलबर्ग से चले गये, तब हमारे काम का चर्चा भी बन्द होगया।

२७

कुछ साथियों की विदाई



सैलवर्ग के सम्बन्ध म यह बात मशहूर थी कि यहाँ मे आन्मी वाहर लेजाये जाते हैं, खुद जाते नहीं हैं। परन्तु यहाँ कुछ लोग ऐसे भी मौजूद थे जिनकी सजा का समय नियत था। जिनका समय नियत था, उसके पूरे होजाने पर वे चले गये।

यूराचैव

यूवाचैव अपने निश्चित समय से बहुत पहले ही छोड दिया गया। मेरे साथ यह भी अभियुक्त था। ऐशैनत्रैनर ने उसे हमारी पार्टी के फौजी विभाग में रखा था। यह निकोलाइयैव के नौसेना के अफसरों मे था। यह बडा जबर्दस्त क्रान्तिकारी था। बडा काम करनेवाला था। उसे भी फाँसी की सजा हुई थी, किन्तु दया की प्रार्थना करने पर, फाँसी की सजा बदल कर १५ वर्ष की कैद कर दी गई थी। श्लूसैलवर्ग आते ही उसकी प्रवृत्ति धार्मिक होगई। दिन दिन भर वह घुटनो के बल पूजा किया

करता, बाइविल पढता और बुधवार और शुक्रवार को उपवास करता था। उसकी यह दशा पुलिस विभाग को मालूम होगई और दो ही वर्ष मे सैखलिन मे निर्वासित करके, उससे नौसेना के अफसर का काम लिया गया। रूस लौटने पर, बाद में वह सेंटपीटर्सवर्ग मे सरकार की ओर से जेल-कमेटी का एक अफसर बना दिया गया। हमारे सामने सबसे पहले यहाँ से यही आदमी छोडा गया।

कैरोलॉव

दूसरा आदमी यह था। सन् १८८४ मे इसे कियैव में हमारा पार्टी के १२ आदमियों के साथ चार वर्ष की सजा मिली थी। सन् १८८१ में जब मैं आजाद थी, तब सेंटपीटर्सवर्ग में इससे एक-दो बार मिल भी चुकी थी। यह आदमी शरीर से मजबूत और विचारों का अच्छा था। जेल मे यह हमेशा बीमार रहता था। इस कारण कि ४ वर्ष मे छूटने की उम्मेद थी, वह हमारे झगडों मे कभी शामिल न होता और अधिकारियों के आगे सीधा-सादा बना रहता था। हममे से बहुत आदमियों ने उसके द्वारा अपने परिवारो के पास बहुत सन्देश भेजे, पर उसने बाहर जाकर एक भी वादा पूरा न किया। श्लूसैलवर्ग ने उसके राजनैतिक विचारों को बदल दिया और वह बहुत ढीला पड गया। सन् १९०५ की क्रान्ति के बाद रूस की सबसे पहली पार्लामेंट ड्यूमा में वह उदार दल की ओर से भेजा गया। अब वह, हमारी पार्टी की

भूमि-सुधार और सार्वजनिक वोट के अधिकार सम्बन्धी बातों के पक्ष में नहीं रहा था, क्योंकि चुनाव मे धनिक ही उसके सहायक थे। कैरौलोव ने ड्यूमा मे बहुत सम्मान पाया और उसने धार्मिक स्वतन्त्रता के प्रश्न का समर्थन किया। उसे जब ड्यूमा मे 'सजायाफ्ता' के नामसे पुकारा गया तब उसने उत्तर दिया—"मेरा खून वह चुका है, इसीलिए तुम आज इस कमरे मे बैठ कर मीटिङ्ग कर रहे हो।" कैरौलोव सन् १९०७ में मर गया।

लैगौन्स्की

हमारे लिए तो मुकदमे का स्वॉग रचा गया था, किन्तु लेगौन्स्की बेचारा केवल होममेम्बर के हुक्म से ५ बरस के लिए जेल मे डाल दिया गया था। यह पैदल सैनिकों का अफसर था और हमारी पार्टी मे शामिल था। इसके पास विस्फोटक पदार्थ बनाने का एक नुस्खा पकड़ा गया था, इसलिए अक्टूबर सन् १८८५ मे विना किसी मुकदमे के यह यहाँ भेज दिया गया। इसका वर्त्ताव यहाँ अच्छा नही था और अधिकारी इससे नाराज थे। इसलिए सजा पूरी हो चुकने पर किलेदार ने आकर उसे हुक्म दिया कि होममेम्बर ने तुम्हारी ५ वर्ष की सजा और बढा दी। जब यह सजा पूरी होगई तब वह छोड दिया गया। बाद में सन १९०३ में वह स्वोपरा नदी मे नहाते वक्त पानी में डूब कर मर गया।

मैंनूचारोव

यह आदमी खारकोव में पकड़ा गया था, पर बाद में भाग गया। सन १८८४ में फिर पकड़ कर १० वर्ष के लिए यहाँ भेज दिया गया। इसके पूर्वज,आर्मीनिया के रहने वाले थे। यह बहुत ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था, और शक्ल से भद्दा था, परन्तु इससे अधिक दयालु और प्रेमी मनुष्य, अथवा अच्छा साथी मिलना कठिन है। यह हमसे इतना हिल मिल गया था कि १० वर्ष की सज़ा पूरी हो चुकने पर यहाँ से जाना ही नहीं चाहता था। किन्तु यहाँ से जबर्दस्ती बाहर निकाल दिया गया। साइबेरिया में जाकर उसने शादी कर ली और एक छोटा-सा लड़का छोड़ कर सन् १९०९ में इस दुनियाँ से चल बसा। हम लोगों को उससे इतना प्रेम था कि हम पूरा नाम न लेकर उसे बहुत छोटे नाम से 'मेंन' ही कह कर पुकारते थे। उसके छूटने के एक-दो वर्ष बाद मैंने सन् १८९६ का एक अखबार उठा कर देखा तो उसमें अपनी ही लिखी हुई एक कविता देखी। उसके दूसरे पन्ने पर मेरी कविता के जवाब में एक दूसरी कविता थी जिसके नीचे (एम) लिखा हुआ था। मैं फौरन समझ गई कि एम का मतलब मिखेलौव्स्की से है, और मेंन ने मेरी कविता द्वारा मेरी श्लूसैलबर्ग की आवाज़ मिखेलौव्स्की और अन्य मित्रों के पास पहुँचा दी है।

मेरी कविता का भाव यह था—"परमेश्वर की सुन्दर प्रकृति स्थली में क्या मुझे घोंटने वाली कोठरी ही रह गई है ?" इसके

जवाब में था—"घबड़ाने की जरूरत नहीं है, आशा रखो, क्योंकि अन्धकार का अन्त हो रहा है और अरुणोदय होने वाला है।"

सन १८९४ मे अपने बाप के मरने पर *निकोलस द्वितीय* तख्त पर बैठा। अधिकारियों का खयाल था कि खुशी में श्लूसैलबर्ग के सब कैदी छोड दिये जायँगे। उस समय तो कुछ हुआ नहीं, परन्तु सन् १८९६ मे किलेदार ने हम लोगों से कहा कि राजतिलक की खुशी में जार ने इवानौव, ऐशनब्रैनर, स्टैरौटवौर्स्की और पौलीवानौव की आजन्म कैद की सजा घटा कर २० वर्ष की कर दी गई है और पैड्क्राटौव, सूरौसैव, यानोविच और एलेक्जा एड्रौव्ना की सजा घटा कर तिहाई कर दी गई है। फल-स्वरूप पिछले तीन कैदी छोड दिये गये। एलेक्जाएड्रौव्ना इस खबर से गुस्सा हुई और उसे हमारा साथ छोडना अच्छा न लगा। परन्तु २३ नवम्बर को उसे छूटे हुए साथियो के साथ यहाँ से चला जाना पडा। उसी दिन १२ वर्ष की सजा भुगत चुकने पर मार्टीनौव और शैवलिन भी छोड दिये गये। जहाँ तक हम एक दूसरे को दिखाई दिये, वहाँ तक रुमाल हिलाते रहे। एलेक्जाएड्रौव्ना जनवरी सन १८९६ में, विद्रोही नौसेना के सिपाहियो के साथ व्लैडीवौस्टौक मे एक जुलूस मे निकलते वक्त सरकारी मशीनगन से मारी गई।

पैड्क्राटौव

यह आदमी सन् १८९८ में छोड दिया गया। इसका पेशा बढई का था। गिरफ्तारी के वक्त इसने एक सिपाही को घायल कर दिया था। यह हमारी पार्टी का मेम्बर था। इसकी कोठरी

मेरे पास थी। इसकी उम्र केवल २० वर्ष की थी और मेरी ३^ की। पढने लिखने मे मैं उसे सहायता दिया करती थी। यहाँ क अध्ययन ने उसे साइबेरिया मे वैज्ञानिक खोजों का काम करन योग्य बना दिया।

ट्रीगोनी और पौलीवानौव

यह लोग सन् १९०७ मे छोड दिये गये। पौलीवानौव सैरगौव प्रान्त के एक धनी जमींदार का लडका था। स्कूल ही में उसे जनता से सहानुभूति होगई थी। सन् १८७८ मे सर्विया ने अपनी स्वतन्त्रता के लिए जो लडाई लडी थी, उसमें उसने भाग लिया था। चार वर्ष बाद हमारी पार्टी के एक आदमी को बचाने का कोशिश करने मे यह गिरफ्तार कर लिया गया। यह बडा तेज पढनेवाला था। उसने स्वय मुझसे कहा था कि उसे १५ लाइनें दीखती हैं और एक साथ उन्हे पढ डालता है। वह समझता भी खूब था। उसकी स्मरण-शक्ति इतनी तेज थी कि लन्दन के साप्ताहिक पत्र 'टाइम्स' को पढकर वह प्राय प्रत्येक शब्द बिना देखे दुहरा देता था। उसकी साहित्यिक सूझ-बूझ भी बहुत अच्छी थी। सन १९०३ में, उसने कुछ रहस्यपूर्ण कारणों से फ्रास मे आत्म-हत्या कर डाली।

श्लूसैलबर्ग से छूटकर सब लोगों को साइबरिया में रहने का इजाजत थी, और कहीं न रह सकते थे। उनमें से जो कुछ लोग बाहर गये भी, वे छिपकर गये।

२८

वैज्ञानिक अध्ययन



प्राय यह देखा गया है कि जब आदमी बड़ा होकर अपने काम में लग जाता है, तब स्कूल और कालेज में पढ़ी हुई बातों को भूल जाता है। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में एक ऐसा आन्दोलन चला था कि जो लोग अपने विद्यार्थी-जीवन में पढ़ी हुई बातों को फिर से ताजा करना चाहें वे शोटौका नामके शहर में जाकर अभ्यास कर लें। इस आन्दोलन का केन्द्र वहीं था। वहाँ अपने ज्ञान को विकसित करने के लिए बहुत से स्त्री-पुरुष एकत्रित होने लगे। मैंने भी सोचा कि मेरी उम्र ४० वर्ष की हो चुकी है, इसलिए मैं नियमानुसार बचपन में पढ़ी हुई बातों को फिर से ताजा कर लूँ।

जूरिच में मुझे कैमिस्ट्री (रसायन-शास्त्र) पढ़ने का सबसे अधिक शौक़ था। मैं बर्न में एक अध्यापक की प्रयोगशाला में काम भी करती थी। वैसे तो वहाँ धातु विद्या, बनस्पति-शास्त्र, जीव-शास्त्र, प्रकृति विज्ञान, रसायन-शास्त्र आदि विषय अनिवार्य

होने के कारण सभी पढने पडे थे। में प्रकृति की सुन्दरता को अनुभव जरूर करती थी, किन्तु प्राकृतिक विषयों के अध्ययन की ओर मेरा ध्यान अधिक आकर्षित नहीं हुआ।

श्लूसैलवर्ग में इन सब विषयों को दुहराने का बहुत अच्छा मौक़ा मिल गया। डाक्टरी की जिन पुस्तकों को में यहाँ अपने साथ लाई थी, उन्हींसे मैंने दुहराने का श्रीगणेश किया। परन्तु मैंने बहुत जल्दी यह अनुभव किया कि अब जीवन में मुझे डाक्टरी से कभी काम ही नहीं पड़ेगा। इसलिए मैंने उन किताबों का देखना छोड दिया। अब मैंने वनस्पति-शास्त्र पढना आरम्भ कर दिया। इसके लिए श्लूसैलवर्ग मे विशेष सुविधा थी। जार पीटर प्रथम के समय मे, उसके हुक्म से श्लूसैलवर्ग पर चढ़ाई करते समय जो सिपाही मारे गये थे, उनकी कब्रों के चारों ओर एक घेरा बनाने के लिए हमारे साथियों ने ५० रूबल कमाये थे, उनसे गैनगार्ट ने कृपा कर एक खुर्दवीन मँगा दी थी यह खुर्दवीन पौदों को देखने में बहुत काम आई। डाक्टर रेमीसौव उन चीजों को मँगा देते थे जिनकी हमें जरूरत पडती थी।

हम लोगों में एक आदमी पदार्थ विज्ञान का वडा पण्डित था। उसका नाम था लुकाशेविच। वह सन् १८८७ में पकड़ा गया था। उसने विश्वविद्यालय में भी बहुत नाम पाया था। विश्वविद्यालय स्वय उसे अपने यहाँ रखना चाहता था। वह अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता था, और हर एक बात का निश्चित उत्तर देने के लिए तैयार रहता था। था वह बडा विनम्र। वह

हर एक साथी को यथाशक्ति सहायता देने के लिए हर समय तैयार रहता था। वह हमे पढाने के लिए तैयार हो गया। उसने हमे जीव-शास्त्र भी पढाया। वह जापानी मोम से बडी सूयी के साथ आकृतियाँ बना कर हमे समझाया करता था। वह ड्राइङ्ग भी बहुत अच्छी जानता था।

सेंटपीटर्सबर्ग के अजायबघर मे वनस्पति-सम्बन्धी जो वैज्ञानिक चीजें हमने बनाकर भेजीं, वे पैरिस की एक प्रदर्शिनी में भेज दी गईं। वहाँ उन चीज़ो का बडा नाम हुआ। किन्तु अजायबघर के अधिकारियों ने यह बात छिपाली थी कि वे चीजें किसी रूसी कैदखाने से बनकर आई हैं। यहाँ हमें समय तो काफी मिलता ही था, साथही हमारे हृदय मे यह बात भी जम गई थी कि छोटे मोटे साधनों से हम बडे बडे काम करके कीर्त्ति कमावें। इसलिए हमने यहाँ बडे बडे करिश्मे कर दिखाये। हमने यहाँ बिजली की कई उपयोगी मशीनें भी बना डालीं। हमारे एक साथी ने जीव-शास्त्र का बडा ही विशद और व्यावहारिक अध्ययन किया। उसने कीडे-मकोडो की रीति-नीति खूब ही देखी-समझी और काच के एक छोटे घर मे कीडे मकोडों को पाला और पैदा किया। इस प्रकार उसने जन्तु-जीवन की विभिन्न दशाओं का गहन अध्ययन कर लिया।

भूगर्भ विद्या के अध्ययन के लिए लुकाशेविच ने हमारे लिए रङ्गीन चार्ट तैयार किये। खनिज पदार्थो और चट्टानों के विभाजन का काम हमने खुर्दबीन की सहायता से किया। जिस प्रकार

कोई आदमी चीन या जापान पहुँच कर, वहाँके सब आदमियों का एक ही रूप-रंग देखता है, और बाद में धीरे धीरे उनकी सूरत अलग अलग पहचानता है, इसी प्रकार धीरे धीरे उक्त सब चीजों से हम परिचित होगये।

सेंटपीटर्सबर्ग के अजायबघर के लिए हमने काच में बहुत ही अच्छी चीजें बनाकर भेजीं। रसायन-शास्त्र को भी हम भूल नहीं गये। हमने इसकी भी एक प्रयोगशाला बनाली थी।

इस प्रकार कई वर्षो से हमने प्रकृति-विज्ञान की मुख्य शाखाओं का, लुकाशेविच की सरक्षता में, सद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों रूप से अध्ययन कर लिया। जितना आनन्द हमें अपने अध्ययन में मिलता था, उसमे भी अधिक आनन्द अपने अध्यापक के परिश्रम, उनकी कृपा और उदारता से मिलता था। प्रयोगशालाओं में अपने हाथों से बनाई हुई चीजों को देखने से हमें सचमुच बडा हर्ष होता था, किन्तु साथ ही, यह भी कुछ कम सन्तोष की बात नहीं थी कि हम ऐसे कामों में लग रहे थे जो संस्कृति की दृष्टि से भी बहुमूल्य थे।

हम लोगों में नौवरुस्की सबसे अधिक दक्ष और कार्य-कुशल था। दूसरा नम्बर मेरा और तीसरा मौरौजौव का था। लुकाशेविच तो हमारी गिनती मे ही नहीं आसकता। इस काम से हम लोगों मे इतनी घनिष्टता होगई कि श्लूसैलबर्ग-जीवन के बाद भी, बहुत दिनों तक हम एक दूसरे के सच्चे साथी बने रहे।



पत्र-व्यवहार



श्लूसैलबर्ग में जब हमें १३ वर्ष बीत गये, तब अपने परिवार के लोगों से पत्र व्यवहार करने की इजाजत मिल गई। स्वभावतः हमारी मनोवृत्ति ऐसी होगई थी कि पास न रहने के कारण अपने सम्बन्धियों और परिवारवालों से कोई प्रेम ही न रह गया था। मुझे तो मन सम्बन्धी मरे हुए से जान पड़ते थे, क्योंकि उस जुदाई में मिलने की तो कोई आशा ही न हो सकती थी। यदि आरम्भ ही से हमारा यह अधिकार छीन न लिया गया होता तो सम्भव था कि परिवार के लोगों से प्रेम का तार जुड़ा रह जाता। हम पत्र व्यवहार का लाभ, अपने परिवार के लोगों को वर्ष में केवल दो बार पत्र भेजकर ही उठा सकते थे। जो पत्र हमारे पास आते थे वे हमसे ले लिये जाते थे। कभी कभी पुराने पत्रों को बार बार पढ़कर आनन्द होता है और लिखना पहचानकर, लिखने-वाले के व्यक्तित्व का ध्यान आता है और उसके पिछले प्रेम-सम्बन्ध की याद आती है। पत्र वापस लिये जाने के कारण यह सब बातें

त्या होगई। इसपर भी आने जानेवाले पत्रों पर बडी सख्त निगरानी थी, और पत्र-व्यवहार में अनेक ऐसी रुकावटें था जिनसे एक दूसरे के मन का भाव आजादी से व्यक्त नहीं कर पाते थे। यदि पहले मुझसे पूछ लिया जाता तो मैं ऐसी सुविधा को कभी स्वीकार न करती, परन्तु यह बात अपनी माँ को न मालूम होने देती।

इस दशा मे जो पत्र हमारे पास आते थे, उससे हमे हर्ष की अपेक्षा दु ख और होता था। लोपाटिन तो खाने के समय आये हुए पत्र को, इसलिए नहीं खोलता था कि खाना नहीं खाया जायगा, और बाद मे इसलिए नही खोलता था कि खाने के बाद आराम में फर्क पडेगा। एक साथी के पास खबर आई कि गरीबी के कारण उसकी माँ एक शहर से दूसरे शहर में मारी मारी फिरती है। बहुत दिन तक इधर उधर भटकने के बाद एक अनाथालय मे भरती होगई। हमारे साथी ने चाहा कि अपने कमाये हुए रुपये मे से उसके लिए खर्च भेज दे, किन्तु पुलिस विभाग ने उसे ऐसा करने से रोक दिया और अपने पास से ५० रूबल (रूसी सिक्का) बुढिया को भेज दिये। थोड़े दिन बाद पुलिस-विभाग की ओर से हमारे साथी को सूचना दी गई कि रुपया पहुँचने से पहले ही उसकी माँ मर गई। एक दूसरे साथी की चिट्ठी मे उसके परिवार के तितर बितर होजाने का हाल था। जो मुसीबतें उसके सम्बन्धियों को उठानी पडी थीं, और जो दुखद घटनायें कई वर्षों मे उसके परिवार मे घटी थीं, वे सब

एक ही साथ इस पत्र की कुल्हाड़ी के रूप मे उसके सर पर आ गिरीं। माँ पागल होगई और कई वर्षो से पागलखाने में पडी हुई थी। बाप जो एक जमींदार था, अपनी जमींदारी के कस्बे में बीमार पड़ा हुआ मर रहा था! बिल्कुल गैर-आदमी उसकी जायदाद हड़प करने के लिए उसे घेरे हुए थे। दो बहिनों में परस्पर मन-मुटाव होगया, यहाँ तक कि, एक दूसरी से बोलचाल भी बन्द होगई। तीसरी बहिन ने वेश्या-वृत्ति अख्त्यार करली। एक चौथे साथी की माँ ने लिखाया था कि बुढापे मे उसके खाने पीने का कोई सहारा नहीं है। वह असहाय अवस्था मे अपने लडके से अलग होने के कारण दुखी थी। मेरी बहिन औल्गा ने १६ पृष्ठ का एक लम्बा पत्र मेरे पास भेजा। उसके पत्र से कोई यह ताड नहीं सकता था कि १३ वर्ष से हममें परस्पर पत्र-व्यवहार नहीं है। उसने सन् १८९६ की निज्नीनौव्गौरौड की औद्योगिक प्रदर्शिनी, और वहाँ की कान्फ्रेंस के उत्साह का हाल लिखा। विट की आर्थिक नीति का उल्लेख करते हुए उसने लिखा कि इससे रूस के उद्योग धन्धे की हालत बहुत सुधर गई है और उससे साम्यवादी प्रजातंत्र-आन्दोलन को बहुत लाभ पहुँचा है। पत्र मे रूस की राजनैतिक स्थिति पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया था।

हमारे पास जो पत्र आते थे, उनमें घर की बात लिखने की इजाजत थी। प्राय गेहूँ और फलों की फ़सल, गमी, शादी, जन्म, घरेलू बातों आदि से पत्र भरे रहते थे। औल्गा ने बडी होशि-

यारी से पत्र लिखा था। घरेलू बातों के बीच बीच में उसने और विषयों की चर्चा भी करदी थी। कहीं घरेलू बातों के रूप में सामाजिक दशा की वास्तविक झलक थी। इसी कारण शायद यह पत्र अधिकारियों की नजर से बचकर हमारे पास तक पहुँच सका। सबके पत्र सब पढ लेते थे। औल्गा के पत्र ने तो सब लोगों में एक विशेष आनन्द पैदा कर दिया। हम लोगों को पत्र मे अपने साथियों, जेल की दशा, यहाँ के शासन, सार्वजनिक मामले आदि के सम्बन्ध में कोई भी बात लिखने की इजाजत नही थी। लोपाट्किन ने अपने भाई को उन्निद्र रोग की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखा, और उसमे पुश्किन की कविता की एक लाइन उद्धृत करदी। उसका भाव था—"सन्तरी का सङ्गीन में आधी रात का चन्द्रमा प्रकाशित होरहा है!" पुलिस विभाग ने वह पत्र वापस कर दिया और कहा कि इस पत्र को बदल कर दूसरा लिख दो। इस पत्र का आशय यही तो था कि किले की दीवार के सहारे सिपाही टहल रहा है, और सारे किले पर तथा दुनियाँ मे चन्द्रमा चमक रहा है। परन्तु सेंसर ने पुश्किन की कविता का अर्थ यह लगाया कि इसमें कैदियों की कोठरियो का नक्शा बताया गया है। अधिकारियों के इस हुक्म का कि पत्रो में हम केवल निजी बातें ही लिखें, मतलब यह जानना था कि जेल में आकर हमारी मनोवृत्ति मे कुछ अन्तर पडा है कि नही? अन्त में वे असन्तुष्ट हुए।

बडे बडे कागज, जो हमें लिखने को दिये जाते थे, उन्हे भरना

मुश्किल पड जाता था। इधर अधिकारी भी, वर्ष मे दो ही बार के हमारे पत्रों के पढने से थक गये थे, इसलिए व हमे छोटे छोटे कागज देने लगे।

अपने परिवार से हम लोग इतने अलग होगये थे कि अपने सबसे प्यारे चाचा की मृत्यु का समाचार सुनकर मुझे कोई विशेष दु ख नहीं हुआ। एक दिन मेरी वह चिडिया मर गई, जो हर वक्त मेरी कोठरी में रहती थी। उसका मुझे इतना दु ख हुआ कि मैं १४ दिन तक रोती रही। अन्त मे मुझे प्रार्थना करनी पडी कि मेरी कोठरी बदल दी जाय। मौरोजौव ने अपनी माँ को एक पत्र लिखा और मुझे सुनाया। मैंने कहा कि इस पत्र मे तो तुम्हारी मृत्यु के समाचार का बडा अच्छा मसाला निकलेगा।

अपने परिवार की ओर से मेरा चित्त इतना फिर गया था कि मे सन १९०३ मे तब टस से मस हुई जब सुना कि माँ बीमार और मृत प्राय है।



३०

वर्कशाप और बाग



न् १८९३ और ९४ में इतनी शिल्प शालाएँ खुल गईं कि उनमें जाकर शारीरिक श्रम करना हमारे जीवन का मुख्य अङ्ग बन गया। हमे जिन चीजों की जरूरत पड़ी, वे सब सरकार ने मँगा दीं। उसने बढ़िया और कीमती चीजें मँगाने के लिए भी कोई बात उठा नहीं रखी। हम लोगों में से कुछ लोग तो बहुत अच्छा फर्नीचर बना लेते थे, और बाकी लोग आराम-कुर्सियाँ, मेजें और बहुत-सी मामूली चीजें बना लिया करते थे। कुछ लोग खास तौर पर लकड़ी के बक्स, तश्तरियाँ, प्लेटें, घमले आदि अपने काम के लिए बना लेते थे। चूँकि हमारा बनाया हुआ काम सुशिक्षित लोगों का था, इसलिए सुन्दर होता था, और खास तौर पर उस काम में सजावट होती थी। जो लोग रोटी के लिए परिश्रम करते हैं, और जो लोग विशेष प्रेम से उस काम को करते हैं, उनमें यह अन्तर

होता है कि प्रेम से काम करने वाले उसके कई तर्ज निकाल लेते हैं और छोटे-मोटे आविष्कार भी कर लेते हैं। हमारी बनाई हुई विशेषतया सुन्दर चीजें बरामदे में सजा कर सबके देखने के लिए रखी जाती थीं। एण्टौनौव ने ६ महीने में खाद्य पदार्थों की एक बेल-बूटेदार आलमारी बनाकर वहाँ रखी थी। उसकी उजरत में उसे ७५ रूबल मिले। उसने उन्हें हम सबमें बाँट दिया।

कई वर्ष तक कोशिश करने के बाद सन् १९०० में एण्टौनौव को सरकार से तालों के लिए भट्टी बनाने का हुक्म मिल गया। भट्टी पुराने किले के उस चौक में बनाई गई, जहाँ होकर मैं पौपौव वाले मामले में गई थी और जो जगह तब बिल्कुल सुनसान और मनहूस मालूम पड़ती थी। वहाँ अब हमारे कारखाने के लकड़ी आदि के औजार पड़े हुए थे। लुहारखाने में खुद ही हमने भट्टी बना ली। वहाँ हम लोगों ने उस्तरे, चाकू, कुल्हाड़ी, तथा लुहार और बढ़ई के बहुत से औजार बना डाले। एण्टौनौव कहता था कि वह मोटर का एञ्जिन और मेरे लिए प्यानो बाजा भी बना सकता है।

बागवानी के काम में भी हमने खूब तरक्की की। हम सूची-पत्रों में देखकर हर तरह के बीज मँगा लिया करते थे। अब हमने बाग में साढ़े चार सौ प्रकार के फूल लगाये। हमारे बाग की तरकारियों में से तो कुछ अच्छी तरकारियाँ प्रदर्शिनी तक में भेजी गई थीं। लुकाशेविच की शलजम, एण्टौनौव की प्याज

मेरी स्ट्रॉबेरी, ईवानौन का गुलाब और पौपौव की टमाटर का फसल बहुत अच्छी हुई और चीजें सब बड़ी बड़ी आईं।

हम लोगों का तमाखू बिल्कुल नहीं मिलती थी। लुकाशविच ने यह चाल चली कि बीजों का आर्डर देते वक्त, उसमें निकोटि आना के लैटिन नाम से तमाखू का बीज भी मँगा लिया। जब तमाखू की फसल तैयार हो गई तब लोग उसे पहले छिपकर और बाद में खुल कर पीने लगे। हमारे पास दियासलाई नहीं थी, इसलिए आग जलाने के लिए हमने वे सब तरीके अख्त्यार किये, जिनसे समय समय पर समस्त मानव जाति काम ल चुकी है। सन् १८९६ मे होम मिनिस्टर हमारे यहाँ आये। उन्ह नेजरौडनौव ने यह समझा दिया कि खून-खराबी की बीमारियों के लिए तमाखू राम-बाण औषधि है। तभी से तमाखू पीने की इजाजत मिल गई। इधर जेल के अधिकारी तमाखू के धुएँ और उसकी खुशबू से परेशान थे कि यह आती कहाँ से है, और चाहते थे कि तमाखू का हुक्म हो जाय तो अच्छा है।

हमारे ६ बाग तो थे ही, गैनगार्ट के हुक्म से दो बाग और लगा दिये गये। फ्रौलैङ्को और पौपौव ने बागवानी के लिए पुराने किले का बड़ा चौक और ले लिया। अब वहाँ की सुहावनी घास भी खोद डाली गई। बाग बनने से यहाँ अब उस दृश्य का नाम तक मिट गया, जिसमे मिरिकिन और मीनाकौव गोली से मार दिये गये थे, सन् १८८४ में रौगाचैव और स्ट्रौमबर्ग नाश को प्राप्त हुए थे, तथा एलेक्जाण्डर यूलियानौव (लैनिन

का भाई) और अन्य चार आदमी सन् १८८७ मे मर मिटे थे। अब यहाँ खरबूजा, तमाखू, टमाटर, ककडी आदि चीजें सब जगह दिखाई देती थीं। इन सबमे फ्रौलैङ्गों की कार्यपटुता की झलक थी।

समाज-सेवा, अथवा परोपकार के काम से वञ्चित रह कर, श्रम के ऐसे कामों के सिवा और हमारे लिए दूसरा कोई क्षेत्र ही न था, जिसम हम अपनी शक्तियों का उपयोग कर सक्ते। इसलिए श्लूसैलबर्ग ऐसी मोद विहीन चट्टानी भूमि को हरी-भरी और उर्वरा बनाने म हम संलग्न होगये। लुकाशेविच और नौवौरुस्की ने अपने बाग मे टीन के नल द्वारा ५ फुट ऊँचा एक फौव्वारा बना लिया। मुझे खुश करने के लिए उन्होंने एक फौव्वारा मेरे बाग में भी बना दिया। इससे इस जगह की शोभा और भी बढ गई।

पुरानी जेल के पीछे जो खाली मैदान पडा हुआ था वह मेरे साथियों की आँखों मे बहुत खटकता था। उन्होंने वह जगह लेने के लिए जेल अधिकारियों के सामने बडी वकालत की। सन १८९८ ९९ मे वह जगह उन्हे मिल गई। यह जगह बिल्कुल निकम्मी पडी हुई थी। तीन फुट तक नीची जमीन चूना मिली हुई और कँकरीली थी। एक कोने मे १०० वर्ष का पुराना एक बहुत बडा पेड था। जमीन के ऐसे टुकडे को हमारे साथी एक स्वर्ग बनाना चाहते थे।

उन्होंने जमीन खोदना आरम्भ कर दिया। वहाँ की कँक-

रीली मिट्टी हटाकर वे बागों की रौसें बनाने को लेगये। एक जगह खूब गहरा गड्ढा खोदा, जिसमें से उन्होंने बहुत सी मिट्टी तख्ते भर के लिए निकाल ली। फिर गड्ढे में नीचे कँकरीली मिट्टी भर कर, तमाम जमीन के टुकडे में बहुत गहराई तक उम्दा मिट्टी बिछा दी।

मुझे वहाँ जाने की इजाजत नहीं थी इसलिए कि, साथी लोग उस जमीन को हरी भरी दशा में दिखाकर मुझे अचम्भे में डालना चाहते थे। ऐसा ही हुआ भी। मैंने वहाँ जाकर विभिन्न प्रकार के फूल फूलते हुए देखे। उस १०० बरस के पुराने पेड पर लाल लाल फल लग रहे थे। वास्तव में वहाँ एक बहुत अच्छा बाग लग गया था।



३१

साहित्यिक जीवन



उपयोगिता की दृष्टि से हमारे यहाँ की लाइब्रेरी कुछ नहीं के बराबर थी। धीरे धीरे हमारी लाइब्रेरी सुधरने लगी। और विभिन्न विषयों पर पुस्तकों की संख्या भी बढ़ने लगी। गैनगार्ट ने इस काम में हमें बहुत सहायता दी।

हम लोग जिल्दसाजी का काम भी करते थे। सिपाहियों के पास जो सस्ती पत्रिकाएँ आती थीं, वे हमें जिल्द बाँधने को दे दी जाती थी। उन्हें पढने से हमारा मनोरञ्जन खूब होजाता था। सिपाहियों ने मुफ्त मे जिल्दें बाँधने के लिए हमे इतनी पत्रिकाएँ दे दीं कि आगे चलकर ऐसी बेगार करने से हमें इन्कार करना पड़ा। आरम्भ के १० वर्षों में हमने लाइब्रेरी मे पुस्तकें बढाने की बहुत कोशिश की, किन्तु जवाब यही मिला कि रुपया नहीं है। उपन्यास आदि मनोरञ्जक पुस्तकें मँगाने की प्रार्थना पर यह जवाब दिया जाता था कि ऐसा साहित्य तुम्हारी हार्दिक

भावनाओं को भड़का देगा। जब कभी अधिकारी निरीक्षण
लिए यहाँ आते थे, तब मोरोजोव पुस्तकें मँगाने के लिए उन
पीछे पड जाता था। उसीके उद्योग से हमारे यहाँ वैज्ञानि
पुस्तकें बहुत बढ गईं। सन १८९५ में लाइब्रेरी मे बहुत स
पुस्तकें मँगा ली गईं। गेनगार्ट की देख-रेख में हम काम करं
थे। उसकी उजरत से हमे जो रुपया मिलता था, वह हम पुस्तं
मँगाने मे खर्च कर देते थे। पुस्तकें चुन कर हम पुलिस विभाग
की मंजूरी से मँगा लेते थे। कभी कभी अधिकारी किसी पुस्तक
के नाम मे भडक जाते और उसे नामंजूर कर देते। इस बात पर
तो वे खयाल ही न करते थे कि पुस्तक किस विषय की है, केवल
उसका नाम ही उन्हे भडकाने के लिए काफी था।

अगले वर्ष सन् १८९६ में सरकार ने लाइब्रेरी के लिए १४०
रूबल वार्षिक देना मंजूर कर दिया। हम लोगों ने इस बात पर
विचार किया कि प्रत्येक व्यक्ति की रुचि के अनुसार पुस्तकें कैसे
मँगाई जा सकती हैं। मनोरञ्जन की पुस्तकें कम दामों पर आती
थी, किन्तु वैज्ञानिक पुस्तकों के लिए अधिक मूल्य देना पडता था।
इसलिए सबने निश्चय किया कि कुल रकम २० हिस्सों मे बाँट
कर, प्रत्येक की रुचि के अनुसार पुस्तकें मँगा ली जायँ, और
अधिक मूल्य की पुस्तकें एक दूसरे की पारस्परिक सहायता से
खरीद ली जाया करें। हमने इग्लेड, जर्मनी आदि बाहरी देशों से
भी पत्र पत्रिकाएँ मँगवाईं। हमारे यहाँ हर एक को नई नई
वैज्ञानिक चीजों का बहुत शौक था। रेडियम आदि के नये विषयों

को पढ कर हम लोगों में खलबली मच गई। सबसे पहले हवाई जहाज के आविष्कार की खबर पढ कर तो हमारे उत्साह का वारापार न रहा! टहलते वक्त आपस में हम हवाई जहाज की चर्चा करते थे। इससे सिपाहियों को सन्देह हुआ कि हम लोग श्लसैलवर्ग से उड कर निकल जायँगे!

मोरोजौव ने बादलों की गडगडाहट और आँधी पर जो पुस्तक लिखी, और उसने ज्योतिष-शास्त्र-सम्बन्धी आसमान का जो चार्ट बनाया, उससे हम लोगों में बड़ा जोश फैला। एएटौनौव तो हर्ष से गद्गद हो उठा और कहने लगा कि मोरौजौव अद्वितीय विद्वान है और वह यूरुप भर म नाम करेगा।

रूसी मासिकपत्र, बहुधा छपने के एक वर्ष बाद हमे मिलते थे। कभी कभी उनमें स वर्त्तमान समाचार फाड दिये जाते थे। फिर भी हमे रूस की जागृति, विद्यार्थी आन्दोलन, सार्वजनिक अशान्ति और हलचल, देश की औद्योगिक उन्नति आदि बातों का पता चल गया। आपस मे हम लोगों म आर्थिक समस्याओं पर वाद विवाद हुआ करता था। हमारे यहाँ सबसे अन्तिम क़ैदी सन् १८८८ का था। उसके बाद की स्थिति का हमे कुछ पता नही था। सन १८९६ के आरम्भ मे गैनगार्ट ने हमारे यहाँ 'न्यूवर्ड' (नया शब्द) नाम का मासिकपत्र जिल्द बँधने के लिए भेजा। रूम में कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों का यह पहला मासिक-पत्र था। इससे हमारे यहाँ नये विचारों की बाढ आगई।

देश के युवक-समाज ने हमारे 'पौपुलिस्ट' विचारों को एक

चुनौती दे डाली। कृषक-सङ्घ के ऊपर आक्रमण किया गया। लेखकों ने पूँजी की उपयोगिता दिखलाई और साम्यवादी बनन के लिए किसानों को, खेत से कारखानो की ओर जाने का रास्ता सुझाया, और कृषक सङ्घों को पूँजीवादी बताया। इसलिए 'न्यूवर्ड' द्वारा साम्यवादी प्रजा-सत्ता का सन्देश देश में मानसिक बम की तरह फट पडा! लुकाशेविच और नौवरुस्की ऐसे आदमी, जो कि सन् १८८७ के मार-काट के प्रोग्राम के समर्थक थे, और जो पहली मार्च का दृश्य दुहराना चाहते थे, इस पत्र के विचारों से साम्यवादी प्रजातन्त्र के हामी बन गये। शैवलिन, यानोविच और मौगैजौव भी उनके समर्थक होगये। बाकी के हम लोग, जो 'लैंड और फ्रीडम' तथा 'विल आफ दी पीपुल' के मेम्बर थ 'पौपुलिस्ट' बने रहे। सन् १८८४ मे साम्यवादी प्रजातन्त्र के वातावरण का कोई चिह्न न था। उस समय रूस में पूँजी की उपयोगिता पर उँगली उठाई जारही थी, और क्रान्तिकारी युवक-समाज उसके विरुद्ध था। परन्तु अब स्थिति दूसरी थी।

हमारी दोनों विचार के लोगों की बडी गरमागरम बहसें होने लगीं, और पारस्परिक कटुता बढने लगी। वह लुकाशेविच, जिसका हम बडा आदर करते थे, विपक्षियों से झगड़ा करने पर उतारू होजाता। एक बार मामला इतना बढ गया कि मुझे यह कहना पड़ा कि सैद्धान्तिक वाद विवाद की अपेक्षा यह बहुत जरूरी है कि हममें आपस में मेल बना रहे, इस पर आपस का तू-तू मैं-मैं बन्द होगई और बाद में कटुता भी दूर होगई।

लाइब्रेरी का क्षेत्र विस्तृत होजाने से लोग लिखने में जुट गये। मीरोजौव ने 'पदार्थ की बनावट' (The Structure of Matter) नाम की एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक उसके मुख्य ग्रन्थों में से एक थी और बड़े आकर्षक ढँग से लिखी गई थी। उसने रसायन, प्रकृति, ज्योतिष आदि विषयों पर भी बहुत से लेख लिखे। जब वह यहाँ से छूटकर गया तब यह सब चीजें अपने साथ लेगया। यानोविच ने आर्थिक समस्याओं पर बहुमूल्य आँकड़े तैयार किये। लुकाशेविच ने पृथ्वी का एक बड़ा भारी इतिहास लिखा। उसके छूटने पर वह इतिहास दो जिल्दों में प्रकाशित किया गया। उस पर 'ज्योग्रेफिक सुसाइटी' ने उसे स्वर्णपदक दिया और विज्ञान-समिति ने उसे पारितोषिक दिया। अन्य साथियों मे, किसी ने उपन्यास, किसी ने आत्म-कथा और किसीने पत्रिका के रूप में ही कुछ लिख डाला।

कागज ऐसी चीज की उपयोगिता उस समय मालूम पड़ती है, जबकि यह मिलती नहीं, और जिस समय यह इच्छा प्रबल होती है कि अपने विचारों को प्रकट करें। जेल-जीवन में ऐसा ही होता है। जरूरत बड़ी चीज है। लुकाशेविच ने, आरम्भ मे जब भूमि सम्बन्धी नकशे तैयार किये थे, तब उनमें काला रँग देने के लिए, लैंम्प से काला, कोठरी की दीवार से प्लास्तर खुरच कर नीला और अपना रक्त निकाल कर लाल रँग भरने का काम लिया।

३२

साहसी युवक



गालेपौव रूस का शिक्षा-मन्त्री था। विद्यार्थियों के लिए उसका शासन असह्य होरहा था। सन् १९०० के विद्यार्थी विद्रोह के बाद, सजा के रूप में, कियेव विश्वविद्यालय के १८३ छात्र और सेंटपीटर्स-यूनिवर्सिटी के २७ छात्र फौज मे सिपाही बना दिये गये। उनमें। अनेक छात्रों ने बारकों में आत्महत्या कर ली। इस कारण रूस के शिक्षित समाज और विद्यार्थियों मे बडी हलचल मच गई। कारपौविच पर इसका बहुत असर पडा। यह एक विद्यार्थी था, जो यूनिवर्सिटियों के बलवों में दो बार निकाला जा चुका था। यह समझता था कि राजनैतिक दृष्टि से विद्यार्थी-आन्दोलन बडा महत्त्वपूर्ण है। यूनिवर्सिटी से निकाले जाने के बाद यह बर्लिन चला गया। क्रान्तिकारी पार्टी का मेम्बर न होते हुए भी, उसने स्वयं ही कुछ ऐसा काम कर डालने का निश्चय किया, जिससे सशस्त्र प्रतिरोध करके उस आदमी को दण्ड दे सके, जो यूनिवर्सिटी के युवकों का गला घोंटने-वाला समझा जाता था।

१४ फरवरी सन् १९०१ को शिक्षा-मन्त्री का स्वागत होने को था। कारपौविच अचानक अकेला ही १२ फरवरी को बर्लिन से सेंटपीटर्सबर्ग आ धमका। १४ फरवरी को स्वागत के समय उसने शिक्षा-मन्त्री की गर्दन में गोली मार दी। मन्त्री महोदय मार्च में इस दुनियाँ से चल बसे! कारपौविच को २० वर्ष की सज़ा देकर श्लूसैलबर्ग भेज दिया गया। इस काम से युवकों ने एक वीर की तरह उसका सम्मान किया। एक वर्ष के बाद उसीका अनुकरण कर बाल्माशोव नामके एक आदमी ने फिर ऐसा ही काम कर दिखाया। कारपौविच के काम का नतीजा यह निकला कि फिर यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी जबर्दस्ती कभी पल्टन में भर्ती नहीं किये गये। हमारे यहाँ नई स्थिति का दिग्दर्शन कराने वाला, सन १८८८ के बाद, अब १९०१ में यही एक व्यक्ति आया। हमने बड़े प्रेम से उसका नाम बेञ्जमिन रख लिया।

सब लोग नये आगन्तुक को देखने को उत्सुक थे। परन्तु मैं बहुत दुखी हुई इसलिए कि, आज वह ताक़त जिससे कि अभी काम नहीं लिया गया वह चैतन्य शक्ति, जो कि अभी तक खर्च नहीं हुई, और वह जीवन, जो कि अपने विकास की प्रारम्भिक दशा में था, सदा के लिए श्लूसैलबर्ग की कब्र में दफनाया जारहा था! यहाँ आते समय हमारे हाथों में हथकड़ियाँ पड़ी हुई थीं, परन्तु उस युवक के हाथों में न तो हथकड़ी ही थी, और न बदन पर जेल के कपड़े ही। मुस्कुराते हुए तथा कोठरियों की खिड़कियों

की ओर अपना टोप हिला कर हमें सलाम करते हुए उसने यहाँ की चहारदीवारी मे प्रवेश किया।

हमे इस बात की बडी उत्कण्ठा थी कि हम लोगो में और आज के रूसी युवक मे कुछ सामञ्जस्य भी है, या नही? हम लोग पुराने थे, और हमारे निर्वासन काल मे ही युवक सन्तति बढ कर मनुष्यत्त्व को प्राप्त हुई थी।

उस युवक से देश की वर्त्तमान स्थिति का समाचार पाकर हमारे हृदय फिर से आशापूर्ण होगये। उसने बतलाया कि समस्त रूस मे जीवन-ज्योति जगमगा रही है। वह मजदूर समुदाय, जो कि सन् १८८० के लगभग देखने को भी नही था, पश्चिमी यूरुप के ढाँचे पर आगे बढ रहा है। वह सयुक्त है, तहलका मचाकर सार्वजनिक क्षेत्र मे प्रवेश कर रहा है, आर्थिक दशा सुधारने के लिए माँगे पेश कर रहा है, हजारों मजदूरों की सगठित हडतालें हो रही है, और उनकी सङ्गठित शक्ति का प्रभाव शहरों की सडकों और गलियों तक पर आँखो से देख पडता है। यूनिवर्सिटियों के युवकों की सख्या बहुत बढ गई है और अखिल रूस म उनकी एक संयुक्त सस्था है। वे सर्व सम्मति से पुलिस-शासन का विरोध कर रहे हैं। विद्यार्थी आन्दोलन के फलस्वरूप सैकडों युवक पकड़े गये और हजारों ही देश के बाहर निकाल दिये गये। गैरकानूनी छापेखाने हर शहर में क्रान्तिकारी पर्चे, अखबार और घोषणायें छापते हैं। जो प्रेस जप्त हो जाता है, उसकी जगह फौरन दूसरा

प्रेस खुल जाता है। इस प्रकार आन्दोलन नई नई शक्तियों के द्वारा बराबर जारी है। युवक ने यह भी कहा कि ५ वर्ष मे रूस मे क्रान्ति होगी। यह बात हुई भी सच, क्योंकि रूसी क्रान्ति, युवक के कथनानुसार, ५ की अपेक्षा ४ ही वर्ष मे होगई।

हमारे आन्दोलन के समाप्त होजाने पर, देश की जो स्थिति होगई थी, उसे ध्यान मे रखकर, इस युवक की बातो पर विश्वास करना कठिन होगया। हमारे लिए विश्वास करना इसलिए और भी कठिन था कि यहाँ कैदी के रूप मे और साथी नही आये, दूसरे इसलिए कि, कापोविच अभी युवक है, उसके लिए ऐसा कहना बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि हाल ही मे वह राजनतिक अखाडे से पकड कर लाया गया है।

जेलवालो से कापोविच के झगडे बहुत हुआ करते थे। उनके मना करने पर भी वह खूब गाता था। एक बार इसी जुर्म मे उसे दो-तीन दिन तक पुराने क़िले की हवा भी खिलाई गई थी।

वह हमारे लडके की तरह, हम लोगों का आदर करता था। हम सब उम्र मे उससे बहुत बडे थे। हमारा भी उसपर बडा प्रेम था। उसकी बच्चो की सी उछल-कूद हमे बडी अच्छी लगती थी। इस बात से हमे विशेष सन्तोष था कि नये और पुराने क्रान्तिकारियों के बीच में कोई खाई नही है, और न, एक दूसरे के मनोभावों को समझने में कोई रुकावट ही है।

सन् १९०७ मे यह युवक साइबेरिया से भाग गया। मार्च

१९१७ की रूसी क्रान्ति के बाद, यह इँग्लैण्ड से रूस के लिए जहाज में रवाना हुआ। सन् १९०७ से '९१७ तक यह अधिकतर इँग्लैण्ड ही में बना रहा। रूस लौटते वक्त इसका जहाज जर्मन सबमरीन ने डुबो दिया, और उसके साथ ही कार्पोविच भी डूब गया।



३३

१६००



मरते-गिरते सन १९०७ के अन्त में श्लूसैलबर्ग में हम १३ आदमी रह गये थे। कुछ छोड दिये गये थे, और तीन आदमी पागल होने के कारण अस्पताल भेज दिये गये थे। कुछ लोग तपैदिक ऐसे भयानक रोगों के शिकार हो चुके थे। बाकी के हम सबने, लड झगड कर धीरे धीरे बहुत सी सुविधायें प्राप्त करके अपना जेल-जीवन सुखद बना लिया था। हालाकि, सन् १८८४ के रेग्यूलेशन अभी टँगे हुए थे लेकिन अब अमल मे उनकी चर्चा तक नहीं थी। पुस्तके प्राप्त करने के लिए अनशन करने के बाद, अधिकारियों ने किताबों के रूप मे मानसिक भोजन न देकर, हमें खाना अच्छा देने लगे। सफेद रोटी, चीनी और चाय भी मिलने लगी। खाने की मिकदार दूनी से ज्यादा हो गई। पहले ४० मिनट तक बाहर घूमने की इजाजत थी, पर अब हम प्राय दिन भर बाहर घूमते फिरा करते थे, यहाँ तक कि, खाने के बाद रात को भी टहल लिया करते थे। हमारी कोठरियों का रग भी

बदल गया था, और उनमें हमारी इच्छा के अनुसार हवा और प्रकाश का प्रबन्ध था। अब अकेले रहने का तो कोई सवाल ही नहीं था।

सन् १९०० के लगभग रूसी अधिकारीवर्ग को ध्यान भी न रहा कि सेंटपीटर्सबर्ग से ३५ मील के फासले पर, महत्त्वपूर्ण राजनैतिक कैदी श्लूसैलबर्ग मे सड़ रहे हैं। साम्यवादी प्रजातन्त्र आन्दोलन के विकास, विद्यार्थियों की हलचल, और मजदूरों के राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश करने के कारण अधिकारियों के हाथ पैर फूल गये थे। अब उन्हें इतनी फुर्सत कहाँ थी कि सन् १८८० के आरम्भ के, एक चोथाई शताब्दी पहले के राजनैतिक कैदियों का खयाल करते।

इधर जेलवालों के भी पञ्जे ढीले होने लगे। अब वे लोग तो नही, बल्कि हम ही उन्हें डाँटा फटकारा करते थे। हालांकि सुविधायें प्राप्त करने मे आरम्भ ही से हमारी विजय होती चली आरही थीं, फिर भी हम थे रौबिन्सन क्रूसो ही की तरह से, क्योंकि मानव-समाज में फिर से सम्मिलित होने की हमें कोई आशा ही नहीं थी। दुनियाँ की ओर से तो, हमारे दिमागों पर पर्दा पड़ा हुआ था।

सन् १९०२ में यहाँ आये हुए मुझे भी २० वर्ष हो गये। इस जमाने में हमारी इच्छा ने बीती हुई बातों को बिल्कुल दबा दिया था। हमारे मन में समता का ऐसा भाव जम गया था कि दुःखों की तीखी जलन और वेदना ढूँढ़े नहीं मिलती थीं।

इस बात पर तो विश्वास ही कैसे करते कि हमारे वे सम्बन्धी अथवा अनुयायी, या पीटर्सबर्ग के अधिकारी, जिन्हें हम भूल चुके थे, हमारी याद करते होंगे। स्वयं हमारा भी यह हाल था कि हम, लोगों के व्यक्तित्व को भूल गये थे और उनके नाम भी बड़ी मुश्किल से याद आते थे।



३४

इन्स्पैक्टर की मरम्मत



दूसरी मार्च को किलेदार ने आकर कहा कि आज से जेल के सब नियम-कानून पूरे तौर पर बर्त्ते जायँगे। मैंने उससे पूछा कि क्या मामला है, कहीं कुछ हो तो नहीं गया? उसने कहा कि मुझे नहीं मालूम। मैंने उसका हुक्म मानने और जेल के कायदे-कानून बर्त्तने से साफ इन्कार कर दिया। इसी तरह की बात चीत सब कोठरियों में हुई। सब जगह जेल में यही चर्चा होने लगी कि न जाने अब कैसी बीतेगी। मैं सोचने लगी कि जब हमारा कोई कसूर नहीं है, तब इतनी सख्ती क्यों होरही है, यदि यही हाल रहा तो जेल के अधिकारियों से हमारा खून सङ्घर्षण होगा।

एक दिन जेल में बड़ा कोलाहल मचा। कुछ आदमी, एक आदमी को एक कोठरी से हाथ-पैर पकड़ कर बाहर लारहे थे, और उसके मुँह से वेदना की आहें निकल रही थीं। हमारा खयाल हुआ कि किसी ने आत्महत्या करने की कोशिश की है।

हमने असली बात जानने के लिए बड़ा शोर-गुल मचाया। क़िलेदार ने कहा कि नम्बर ७८ (ईवानौव) ने जेल के कायदों को तोड़ा है।

असल बात यह थी कि ईवानौव ने कोठरी के किवाड़ के उस सूराख़ के काच पर कागज चिपका दिया, जिसमें होकर सिपाही क़ैदी को देख लिया करते थे। उसे ऐसा करने से रोका गया, परन्तु उसने नहीं माना। इसलिए उसे सज़ा देने को दूर की अँधेरी कोठरी में चलने का हुक्म दिया गया। फिर भी, जब वह न उठा, तब सिपाही उसे हाथ बाँधकर उठालेजाने लगे। बाहर लाया जाने पर ईवानौव को मृगी का दौरा हो गया, इसलिए डाक्टर बुलवाया गया। फिर उसके हाथ पैर खोल दिये गए। डाक्टर के आने के समय तक, वह ४० मिनट बेहोश पड़ा रहा। बाद में बड़ी मुश्किल से उसे होश आया।

हम लोगों में इस घटना की बड़ी चर्चा हुई। अब हमें इस बात की फ़िक्र हुई कि यह सब बातें कैसे दूर की जायँ। मैंने सोचा कि उच्च अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करदूँ। इसलिए मैंने अपनी माँ के नाम निम्नलिखित पत्र भेजा —

'प्यारी माँ !

मैं आपके पत्र का उत्तर देने ही को थी कि एक ऐसी घटना होगई जिससे सब बातें उलट-पलट गईं। आप होममिनिस्टर, या पुलिस के डाइरेक्टर से प्रार्थना करें कि यहाँ फौरन जाँच कराईजावे।

३ मार्च सन १९०२ }

आपकी
वीरा"

मैंने इस पत्र का हाल अपने मित्रों को भी बतलाया। सबका ख्याल यह था कि यह पत्र यहाँ के अधिकारी ऊपर नहीं जाने देंगे। मैं इस सम्भावना को ध्यान ही में नहीं लाई। मेरे कोठरी में लौटते ही इन्स्पैक्टर ने आकर सूचना दी—

"तुम्हारा खत भेजा नहीं जा सकता, दूसरा लिखो।"

मैं—क्यों ? तुम्हें भेजना पड़ेगा। खत रोकने का पुलिस विभाग का काम है, तुम्हारा नहीं।

इन्स्पैक्टर—कायदे के मुताबिक खत में केवल तुम अपनी ही चर्चा कर सकती हो।

मैं—कायदा तो मैं जानती हूँ, तुम खत रवाना कर दो।

इन्स्पैक्टर—कायदे के मुताबिक उस खत को रवाना नहीं कर सकता। मैं तुम्हें नियम दिखाऊँगा।

वह जाकर सरकारी किताब ले आया और उसमें से नियम पढ़ कर सुनाया।

मैं—रहने दो, यह मैं सब जानती हूँ। सब खत पुलिस विभाग में पहुँच जाने चाहिए। फिर उनका काम भेजने या रोकने का है।

इन्स्पैक्टर—चीखो मत। मैं विनम्र हूँ, तुम भी वैसी ही बनी रहो।

मैं—तुम हमको घोंटना चाहते हो, फिर कहते हो कि विनम्र बनी रहो ! खत रवाना कर दो।

इ०—मिहरबानी करके चिल्लाओ मत, दूसरा खत लिख दो, तब भेज दूँगा।

मैं—नहीं लिखूँगी।

इन्स्पैक्टर—तो फिर, हम तुम्हे खत लिखने की सुविधा से वञ्चित कर देंगे।

मैं—मैंने कोई अपराध नही किया, इसलिए तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? बातों में समय काटकर मैं यह सोचने में लगी कि इसी क्षण मुझे निश्चय कर लेना है कि अब मै किस ढँग से काम लूँ।

इ—तुम दुबारा खत लिखने मे इन्कार करती हो, इसलिए यह सुविधा हम छीनते हैं।

मैं—तो तुम मुझे लिखने से रोकोगे?

इ—हाँ।

यह ख़याल बिजली की तरह मेरे दिमाग मे दौड गया कि केवल काम पडने पर ही अपनी शक्ति की परीक्षा होती है। बस, फिर क्या था, फ़ौरन मेरे हाथ इन्स्पैक्टर साहब के कन्धो पर जा पहुँचे और उनके दोनो कन्धों से परतले दाएँ बाएँ गिर पडे। इन्स्पैक्टर ने पुकार कर कहा कि, क्या कर रही हो? फिर वह मेरी कोठरी से साफ भाग गया। उसके साथ के सार्जेण्ट ने ज़मीन पर पडे हुए परतले उठा लिये। वह सचमुच इस समय भौचक्का सा रह गया।

मैंने सब साथियों को सूचना दे दी। अब जेल मे बडी भारी हलचल मच गई। मैंने अपने साथियो से यह प्रार्थना कर दी कि कृपा कर अशान्ति न फैलाव, क्योंकि इस वक्त मुझे आत्म निय

त्राण की बडी भारी आवश्यकता थी। मैं जानती थी कि मुझे पुराने किले की हवा खानी पडेगी।

इधर श्लूसैलवर्ग मे फाँसी का आयोजन किया जाने लगा। फ्रौलैङ्को ने अपनी खिडकी मे से सिपाहियों को फाँसी का सामान लेजाते हुए देखा। इस पर जेल मे सन्नाटा छा गया। लोग दु:खित होगये। एएटौनौव ने तो यह कहा कि हमें अब वीरा को अन्तिम प्रणाम करना पडेगा। असल में फाँसी का आयोजन वाल्माशैव के लिए होरहा था, वीरा के लिए नही। परन्तु वीरा के इस साहसिक कार्य्य का फल जरूर हुआ। होममिनिस्ट्री का एक प्रतिनिधि श्लसैलबर्ग के किले मे जाँच करने के लिए आया। वह अन्य कैदियों के सिवा मुझसे भी मिला। उसकी रिपोर्ट के अनुसार किलेदार और इन्स्पैक्टर दोनों ही हटा दिये गये। कैदियो की विजय हुई और पुराना ही शासन कायम रहा। मुझे खत लिखने की सुविधा नही रही। अब मुझे इसकी पर्वा भी नहीं थी।



३५

शूली पर !



सरी मई को सुबह ७ बजे किले में एक क़ैदी लाया गया। मुझे खुशी और रञ्ज दोनों ही थे। रञ्ज इस बात का था कि हमारे साथ ही एक युवक श्लूसैलबर्ग की क़ब्र में दफ़नाया जारहा है। ख़ुशी इस बात की थी कि इस चहारदीवारी के बाहर लड़ाई जारी है।

शाम के खाने के बाद एण्टोनौव से मालूम हुआ कि कोई फाँसी पर चढ़ाया जायगा। उसके लिए एक पादरी भी आगया है। हम सभी चाहते थे कि जो आदमी फाँसी पर बलि चढ़ेगा, उसके साथ जाने के लिए अपनी आँखों ही को भेज दें। परन्तु रात के ३ बजे हमारे सबके बिना जाने सिपाही चुपचाप उसे निकाल लेगये। हमारे मन में यह भाव घात कर रहा था कि जैसे जैसे क्षण बीतते जाते हैं, वैसे ही वैसे एक आदमी के जीवन का तार छोटा होता जारहा है।

अरुणोदय होते ही इन्स्पैक्टर, किलेदार, किले का फौजी

अफसर, डाक्टर, सिपाही, पादरी, जल्लाद आदि एक के बाद दूसरे फाँसी-घर की ओर जाते हुए दिखाई दिये। एक सिपाही ने फाँसी घर के फाटक तक पहुँच अपने कलेजे पर हाथ रख कर यह भी कहा—"हुजूर, मुझे क्षमा कीजिए, मैं सहन नही कर सकता। मैं नही . !"

फॉसी होगई। यह व्यक्ति बाल्माशैव था। इसने साम्यवादी क्रान्तिकारियो के हुक्म से होम मिनिस्टर को मार डाला था। फाँसी हो चुकने पर, पादरी उस दृश्य से दुखित होकर गिरज के पास एक वैञ्च पर जा वैठा।

३६

माँ का अन्त



१३ जनवरी सन् १९०३ को क़िलेदार ने मेरी कोठरी मे आकर सूचना दी कि तुम्हारी माँ की दरख्वास्त पर, सम्राट ज़ार ने कृपा करके तुम्हारी आजन्म क़ैद की सजा केवल २० वर्ष की करदी है, और २८ सितम्बर सन् १९०४ को तुम्हारी सज़ा ख़त्म होजायगी। मेरे पूछने पर यह भी कहा गया कि रिहाई का हुक्म सब लोगो को नही है, केवल मेरे ही लिए है। अब मुझे अपने परिवार से पत्र-व्यवहार करने की इजाज़त भी मिल गई। पहले तो मेरी भावना यह हुई कि अपनी माँ से नाता ही तोड दूँ, परन्तु सोच विचार कर मैंने यह निश्चय किया कि मेरे सम्बन्धी जब ख़त लिखेंगे तब में जवाब दे दूँगी।

मुझे इस बात का बड़ा दुःख था कि जो माँ इतनी वीरा और धैर्य्यशीला थी कि अपनी दो लडकियो को साइबेरिया मे निर्वासित होते देख कर भी विचलित नही हुई थी, और जिसने मेरे सम्बन्ध में सजा कम कराने के लिए प्रार्थना न करने का

अफ़सर, डाक्टर, सिपाही, पादरी, जल्लाद आदि एक के बाद दूसरे फाँसी-घर की ओर जाते हुए दिखाई दिये। एक सिपाही ने फाँसी घर के फाटक तक पहुँच अपने कलेजे पर हाथ रख कर यह भी कहा—"हुजूर, मुझे क्षमा कीजिए, मैं सहन नहीं कर सकता! मैं नहीं . !"

फाँसी होगई! यह व्यक्ति वाल्माशीव था। इसने साम्यवादी क्रान्तिकारियों के हुक्म से होम मिनिस्टर को मार डाला था। फाँसी हो चुकने पर, पादरी उस दृश्य से दुखित होकर गिरजे के पास एक बैञ्च पर जा बैठा।



३६

माँ का अन्त



जनवरी सन् १९०३ को किलेदार ने मेरी कोठरी में आकर सूचना दी कि तुम्हारी माँ की दरख्वास्त पर, सम्राट ज़ार ने कृपा करके तुम्हारी आजन्म कैद की सजा केवल २० वर्ष की करदी है, और २८ सितम्बर सन् १९०४ को तुम्हारी सजा खत्म होजायगी। मेरे पूछने पर यह भी कहा गया कि रिहाई का हुक्म सब लोगों को नहीं है, केवल मेरे ही लिए है। अब मुझे अपने परिवार से पत्र-व्यवहार करने की इजाजत भी मिल गई। पहले तो मेरी भावना यह हुई कि अपनी माँ से नाता ही तोड दूँ, परन्तु सोच विचार कर मैंने यह निश्चय किया कि मेरे सम्बन्धी जब खत लिखेंगे तब मे जवाब दे दूँगी।

मुझे इस बात का बडा दुख था कि जो माँ इतनी वीरा और धैर्यशीला थी कि अपनी दो लडकियो को साइबेरिया में निर्वासित होते देख कर भी विचलित नहीं हुई थी, और जिसने मेरे सम्बन्ध में सजा कम कराने के लिए प्रार्थना न करने का

वादा कर लिया था, उससे आज यह कैसे वन पडा ? ज़ार से प्रार्थना कर माँ ने मेरी इच्छा के विरुद्ध काम किया। मै अपने साथियों का साथ अन्त तक नहीं छोडना चाहती थी। शाही कृपा ने मुझे और मेरी माँ को अपमानित किया। मुझे अपनी पूजनीया माता के हाथो अपमानित होना पडा।

तीन दिन के वाद वात खुल गई। माँ का खत आया। उससे मालूम पडा कि वह मर रही थी और तीन महीने से वीमार थी। दो वार वगन्दर का आपरेशन होचुका था। शाही कृपा के सम्बन्ध मे माँ से मुझे जो असन्तोष था, वह सव जाता रहा। मुझे अपने निर्दय हृदय के ऊपर क्रोध आया और मै बहुत विनम्र होगई। मुझे अपने वचपन की उस अवस्था की याद आई, जव माँ ने मेरे हृदय मे आध्यात्मिक अकुर जमाया था। मैं सोचने लगी कि मुकदमे के दिनों मे उसस मिलकर मुझे कितनी खुशी होती थी, और उससे कितनी नैतिक सहायता मिलती थी। मुझे यह भी दु ख हुआ कि पहले तो कम उम्र मे शादी होजाने के कारण माँ के पास न रह सकी, और फिर, क्रान्तिकारी कामों ने मुझे उसके पास न रहने दिया। मै माँ की उन भलाइयों का कहाँ तक वर्णन करूँ,-जो वह जीवन भर मेरे साथ करती रही। अन्त में घुटनों के वल खडी होकर मैं खूव रोई और मैंने अपने विचारों के लिए क्षमा चाही। इस पर मेरे अन्त करण से जवाव मिला कि माँ के हृदय में सन्तान की ओर से कोई जलन नहीं होती।

माँ का अन्त

१५ नवम्बर सन १९०३ को माँ चल बसी। फरवरी सन् १९०४ मे मुझे अपनी बहिनो के पत्रो से यह भी मालूम हो गया कि माँ को, उसके इच्छानुसार नीकीफ़ौरोवो मे दफ़ना दिया गया।



३७

क्या करूँ ?



इस प्रकार २० महीने बाद श्लूसैलवर्ग में २२ वर्ष की क़ैद का अन्त होने वाला था। यह २० महीने इसलिए थे कि मैं भविष्य के लिए अपना प्रोग्राम निश्चित करलूँ। यह ख़याल कम उम्रवाले ऐसे आदमी के लिए नहीं था, जिसके लिए भूतकाल कुछ नहीं, और भविष्य ही सब कुछ है। मैं तो ५० वर्ष की हो चुकी थी मेरे पीछे ही सब कुछ था, भविष्य मे अधिक से अधिक २० वर्ष की आशा और हो सकती थी। मुझे विभिन्न प्रकार का अनुभव था। एक तो मैंने क्रान्ति का वह समय देखा था जो अग्नि की तरह तपता था, दूसरे में जेल-जीवन की उस लम्बी सड़क को पार कर चुकी थी जिस पर चलकर ख़ून भी बर्फ बन जाता था। इस अनुभव के बल पर मुझे आगे का कार्यक्षेत्र ढूँढना था। इन २० २२ वर्षों मे क्या से क्या होगया, इसका भी मुझे कुछ पता नहीं था। कार्पोविच ने ज़रूर खुशख़बरी सुनाई थी, परन्तु उसकी वास्तविकता का क्या भरोसा हो सकता था? जो लोग श्लूसैलवर्ग से ज़िन्दा निकले थे उन सबको

साइबेरिया में रहना पडा। इसी प्रकार शायद मुझ भी वहीं जाकर अपने बाक़ी दिन बिताने पड़ें। जहाँ गाली-गलौज, और कोडेबाजी का अखण्ड राज था, और जहाँ का शासन काटने को दौडता था, वहाँ निर्वाह कैसे होता? और फिर ख़ूबी यह कि, देश के ऐसे लोगों के समाज मे जाकर रहना पडता था जो लालच के कामों, मार-काट, लूट आदि जुर्मो के अपराध म वहाँ बसा दिये गये थे। या फिर, यह सम्भव था कि उत्तरी ध्रुव के पास बफिस्तान में असभ्य जातियो मे, जहाँकि उनसे बात-चीत करने का भी सहारा न हो, भेज दी जाऊँ।

इस दशा में श्लूसैलबर्ग की अपेक्षा वहाँ का अनिश्चित जीवन बिताना कैसा होगा? यह प्रश्न उठता था कि मैं वहाँ कैसे रह सकूँगी? इसी तरह की बहुत-सी बातें मेरे दिमाग मे घूम रही थीं।

मैंने ९ मार्च सन १९०४ को अपनी बहिनो का उनके पत्र का जवाब लिख दिया। उसमे पुरानी स्मृतियो की चर्चा करना भी मैं रोक न सकी।

३८

सेंटपीटर्सवर्ग में



सितम्बर सन १९०४ को मुझे सजा पाये हुए २० वर्ष हो चुके थे। उस दिन मैं श्लूसैलवर्ग से रवाना होने वाली थी। २७ सितम्बर को ही मैं अपने उन ९ साथियों से विदा होली थी, जो यहाँ रह गये थे। किसी की आँखें भर आईं, और किसी का गला रुँध गया। मैंने सबको सान्त्वना दी।

पूछने पर मैंने अपने साथियों से कहा था कि इस जगह को छोडते हुए कौन रोवेगा? यह जवाव देते वक्त मुझे श्लूसैलवर्ग के पिंजडे की याद थी, अगर साथियों का ध्यान होता, तो मैं ऐसा कभी न कहती। इन लोगों के साथ समता, वन्धुत्त्व, और प्रेम में मैंने २० वर्ष विताये थे। यह समय भी, हमने एक दूसरे के बहुत ही घनिष्टतम संसर्ग मे रहकर विताया था। केवल उन्हीं मे मुझे सहायता, हर्ष और सुख मिलता था। मेरी नजरों म वेही परिजन, वेही समाज, वेही मातृभूमि और वेही मानव

जाति थे। असाधारण परिस्थितियों ने हम सबको असाधारण प्रेम पाश में बाँध दिया था, और अब मेरी रिहाई मेरे लिए इन्हीं बन्धनों को तोड़ देना चाहती थी। यही कारण मेरे आँसुओं का, और यही कारण मेरी निराशा का था।

२९ सितम्बर को मैं कोठरी से बाहर निकाली गई, और उन उन जगहों से होकर लेजाई गई, जहाँ कि हजारों बार मैं पहले घूम फिर चुकी थी। अब अन्तिम बार वहाँ होकर निकल रही थी। जब तक मैं परिचित जगह से रही तब तक मेरी हालत ठीक रही, पर आगे बढ़ कर अपरिचित स्थान में पहुँचते ही, मेरी हालत बदल गई। यह मालूम होने लगा कि जमीन मेरे पैरों के नीचे से फिसली जा रही है, और वह दीवार, जिसका सहारा लेने को मैंने अपना हाथ बढ़ाया, नाटकीय दृश्य की दीवार की तरह, खिसकी जा रही है। मैं सिसकियाँ भर कर रोने लगी। मैंने कहा कि मैं चल नहीं सकती, यह दीवार चल रही है। सिपाहियों ने पकड़ कर मुझे गिरने से बचा लिया।

क्षण भर के बाद हम बाहर होगये। मैंने अन्तिम बार कैदियों की कोठरियों की ओर देख,मस्तक नवा कर प्रणाम किया। मेरे साथी सीकचों से लगे हुए, विदाई के समय अपने रूमाल हिला रहे थे। सेंटपीटर्सबर्ग जाने वाला जहाज अभी आया नहीं था, इसलिए क़िलेदार के दफ़्तर में बैठ कर मैं प्रतीक्षा करने लगी।

क़िलेदार ने कहा—"वीरा निकोलायेवना, थोड़ी चाय पियोगी ?" मैं, जो कि अभी १० मिनट तक, नम्बर ११ थी एक

साथ २० वर्ष बाद वीरा निकोलायेवना हो गई। मैं उनकी कृपा का लाभ उठाना नहीं चाहती थी, इसलिए चाय पीने से इन्कार कर दिया।

पौलएड्रा नाम के जहाज पर मैं सवार कराई गई और सट पीटर्सबर्ग की ओर रवाना हो गई। मुझे अपने भाई से, बाद में मालूम हुआ कि 'पौलएड्रा' शब्द का अर्थ, नौसैनिकों की बोल चाल में, 'सावधान रहो'—से है।

सटपीटर्सबर्ग के निकट पहुँच कर मैंने इन्स्पेक्टर से पूछा कि मैं कहाँ ले जाई जा रही हूँ? उसने जवाब दिया कि कल तो मैं तुम्हारे दो साथियों को "हवालात-भवन" में ले गया था, लेकिन तुम 'पीटर और पौल' के दुर्ग को जा रही हो! यह सुनते ही मेरा दिल बैठ गया और सोचने लगी कि क्या मुझे अभी किसी और भी किले में रहना पड़ेगा?

रात को १० बजे "पौलएड्रा" इसी दुर्ग के पास जा पहुँचा। मैं भी पौल के दुर्ग में दाखिल हो गई। पहले की तरह अब यहाँ की कोठरियों में मिट्टी के तेल का नहीं, बल्कि बिजली का प्रकाश था। आते समय मैं रास्ते में ४३ नम्बर की उस कोठरी के सामने होकर भी निकली, जिसमें पहले २ वर्ष रह चुकी थी।

थोड़ी देर बाद एक ऊँचे कद का बूढ़ा सा अफसर आया। उसने बिजली तथा हाथ मुँह धोने के सामान की तरफ उँगली उठा कर कहा कि पहले की अपेक्षा अब तो सब प्रकार की सुविधा हो गई है। वह बड़ी बेतकल्लुफी के साथ मेरे पलँग पर बैठ गया।

उसके इस असभ्य व्यवहार से नाराज होकर मैंने बड़े जोर से फटकार बताई—"चले जाओ यहाँ से।" मैं इस उधेड़-बुन में थी कि साइबेरिया की अपेक्षा मुझे यही तो नहीं भेज दिया गया? मैंने एक सिपाही से लाइब्रेरी से एक पुस्तक लाने को कहा। वह किताब लाकर दे गया। पढ़ते पढ़ते मैं सो गई। सचमुच पौलएड्रा शब्द का अर्थ ठीक था।

तीन दिन तक कोई मुझसे मिल नहीं सका। चौथे दिन मैं कार्लाइल की 'वीर और वीर-पूजा' (Heroes and Hero worship) नाम की पुस्तक पढ़ रही थी कि इन्स्पैक्टर ने मुझे खबर दी कि तुम्हारे भाई-बहिन आये हैं, और उनसे कह दिया गया है कि वे ऐसी बातें करें जिससे बीती हुई बातें ध्यान में न आवें। इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि हम सब अपने हृदय की उस आग को दबा दें, जो विगत २० वर्षों के इतिहास से प्रज्वलित हो रही है।

यह बात मेरे काबू के बाहर थी कि मैं अपने हृदय की उन भावनाओं को दबा दूँ, जो अधिकारियों के जोर जुल्म और जेल की असहनीय यातनाओं से मेरे हृदय में उमड़ रही थीं। जेलवालों ने परिवार के लोगों से मिलने का अवसर तो मुझे जरूर दिया, किन्तु इस शर्त्त पर कि, बीती हुई बातों के ऊपर पर्दा डालने की शर्त्त के रूप में, नाटक खेले बिना ही, उसका सारा दृश्य दिखा दें। इस दशा में हमें ऐसा असम्भव और विचित्र नाटक खेलने को विवश किया गया, जो हमारी कल्पना के एक दम बाहर था।

मैं अपने भाई बहिनों के सामने लाई गई। मैंने इन सबको बच्चों की शक्ल में देखा था। अब वहाँ परिपक्व अवस्था का एक स्वस्थ और सुन्दर ऐसा इञ्जीनियर बैठा देखा, जिसने अपने जीवन के कार्यक्षेत्र का राजमार्ग बना लिया था। यह भाई था। उसी अवस्था की ऐसी मोटी ताजी स्त्रियाँ बैठी हुई थी, जो परिवारों की मातायें थीं। मैं वहाँ डिकेन्स के उपन्यास की उस महिला की तरह बैठी हुई थी, जिसने कि, पति के उपस्थित न होने पर, घडी की सुई बारह पर ठहरा दी थी, और जिसकी शादी की पोशाक चिथडों के रूप मे परिणत हो गई। मेरा जीवन २० वर्ष पहले बीत चुका था। मैं भी उस पागल औरत की तरह यही समझ रही थी कि जीवन की घडी मे अब भी बारह बजे हैं।

मैं अपने भाई-बहिनो मे जाकर मिली। मेरे भाई ने अपने हाथों मे मेरे हाथ ले लिये। मैं धीरे धीरे भाई को पहचानने लगी। बातें बहुत मामूली और ऊपरी ही हो पाई थीं कि इन्स्पैक्टर ने कहा कि भेंट का समय समाप्त हो गया।*



---

*वीराफ़िगनर के श्लूसैलबर्ग के साथियों में से अधिकतर मर गये। सन् १६०४ में वीराफ़िगनर २० वर्ष की क़ैद के बाद वहाँ से छोड़ तो दी गई, परन्तु फिर साइबेरिया में निर्वासित कर दी गई। आगे चल कर वहाँ से वह किसी समय रूस में वापस आगई।